दिसंबर १९७० (अग्रहायण १८९२)

रु० ४५०

Original Title ANTHOLOGY OF TAMIL SHORT STORIES

सचिव, नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, ए-५, ग्रीन पार्क, नयी दिल्ली-१६, द्वारा प्रकाशित और नालंदा प्रेस, माडल एक्सटेंशन, नयी दिल्ली-४९ द्वारा मुद्रित ।

प्रस्तावना

भारत एक विशाल देश है । सांस्कृतिक दृष्टि से एक होते हुए भी इसे अभी एकता के उन सूत्रो को और मजबूत बनाना है जो इसे एक शक्तिशाली और प्रगतिशील राष्ट्र बना सकें ।

हमारा भारत एक बहुभाषी देश है । ससार के शायद किसी भी देश मे भाषाओ की सख्या इतनी अधिक नही है जितनी हमारे देश मे। लेकिन दुर्भाग्य से अपने पडोसी प्रदेश की भाषा या भाषाओ के प्रति हम लोगो मे बहुत कम दिलचस्पी दिखायी देती है । उनकी सास्कृतिक व साहित्यिक सपदा की जानकारी तो हमे और भी कम है। अंग्रेजी, फ्रेंच, जर्मन आदि योरुपीय भाषाओ के साहित्य और समाज की जितनी जानकारी हमे है उतनी अपने देश की भाषाओ के साहित्य और समाज की नही है ।

देश की भावनात्मक और सास्कृतिक एकता के लिए यह नितात आवश्यक है कि हमारे नागरिक, देश की विभिन्न भाषाओ की श्रेष्ठ साहित्यिक कृतियो से अच्छी तरह परिचित हो और उनके माध्यम से विभिन्न प्रदेशो के रहन-सहन, आचार-विचार और सपूर्ण सस्कृति का बोध प्राप्त करे ।

पश्चिमी जगत मे अनेक राष्ट्र है और हर राष्ट्र की अपनी निजी भाषा है, तब भी वहा के लोगो को एक दूसरे के साहित्य और चिंतन का जितना गहन और व्यापक ज्ञान है उतना हमे अपनी भाषाओ का नही है, यह एक विचित्र विरोधाभास है। योरुप की किसी भी भाषा मे किसी भी श्रेष्ठ पुस्तक का सभी भाषाओ मे तुरत अनुवाद हो जाता है । भारत एक बहुभाषी राष्ट्र है लेकिन हम देखते है कि हम मे यह जानने की विशेष जिज्ञासा नही है कि हमारी पडोसी भाषाओ मे क्या हो रहा है। यह स्थिति बदल तो रही है, लेकिन बहुत धीमी गति मे ।

इस स्थिति को दृष्टि मे रखकर भारत सरकार ने हर भारतीय भाषा के समकालीन साहित्य की चुनी हुई पुस्तको का अन्य सभी भाषाओ मे अनुवाद करवाने की योजना बनायी है। इसके अतर्गत ऐसी ही पुस्तको का चुनाव किया जायेगा जो साधारण पाठक के लिए रोचक हो, अर्थात कहानिया, उपन्यास,

मनोरंजक यात्रा-साहित्य या आत्मकथाएं आदि। इस माला मे पुस्तको का चुनाव करते समय यह ध्यान रखा जायेगा कि ऐसी पुस्तके ली जाये जो उत्तम व लोकप्रिय हो और साथ ही वहा के समाज का रहन सहन, उसकी भावनाए और आकाक्षाए प्रतिबिंबित करती हो।

आशा की जाती है कि यह योजना विभिन्न भाषाओ के बीच एक दूसरे के संबंध मे अधिक जानकारी, समझ और भावनात्मक एकता पैदा करने मे एक बडी हद तक सहायक सिद्ध होगी।

विभिन्न भारतीय भाषाओ की प्रमुख कृतियो का चुनाव और उनका अनुवाद आसान काम नही है। हम अपनी परामर्शदात्री समितियो और अनुवादको के कृतज्ञ है जिनके मार्ग दर्शन और सहयोग के बिना इस प्रकार की योजना को सफलतापूर्वक कार्यान्वित करना संभव न होता।

बालकृष्ण केसकर

भूमिका

विश्व की सभी भाषाओं मे आज कहानी साहित्य को अत्यधिक महत्व प्राप्त है। लोग इसकी समृद्धि पर विशेष ध्यान दे रहे है। इसका मुख्य कारण यह है कि कहानी आधुनिक युगधर्म का प्रमुख अग बनकर, सतत विकसित नव-युग के साहित्य को समृद्ध बनाती जा रही है।

अन्य भारतीय भाषाओ के समान आज तमिल कहानी का विकास भी बडी तेजी से हो रहा है। यह सत्य है कि तमिल मे कहानी-कला का उदय मौखिक साहित्य-परपरा के रूप मे अनेक वर्ष पूर्व ही हो गया था और वह कई वर्षों तक तमिलनाडु के घरो, चौपालो, शहरो तथा साहित्यिक सभाओ मे सुनायी जाने-वाली कहानियो के रूप मे विकसित होती रही। आज तमिल मे प्राप्त कहानी-साहित्य के आकार-प्रकार पर पश्चिमी प्रभाव स्पष्ट है। पश्चिमी प्रभाव के कारण ही आज तमिल मे नये-नये रूपो और आकार की, नवीन भावो से सवलित तथा नवीन पद्धतियो पर, असख्य कहानिया रची जा रही है।

कुछ समय पूर्व एक प्रसिद्ध साहित्यिक सस्था ने अपने सर्वेक्षण के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला था कि तमिल मे प्रति वर्ष एक सहस्र से अधिक कहा-निया प्रकाशित होती है। यह सख्या निस्सदेह बहुत बडी है लेकिन यह स्पष्ट है कि इसमे से कुछ कहानिया ही स्थायी महत्व की है।

प्रति वर्ष प्रकाशित सहस्रो रचनाओ मे से, पिछले तीस-चालीस वर्षों मे प्रकाशित कहानियो मे से बीस सर्वश्रेष्ठ कहानियो का चयन करना आसान नही। इस बात को अस्वीकार नही किया जा सकता कि बीस कहानियो के इस सग्रह मे अनेक श्रेष्ठ लेखको और उनकी अच्छी रचनाओ को स्थान नही दिया जा सका है। एक ही स्तर की दो कहानियो मे से किसे चुना जाये और किसे छोडा जाये, इस बात का निर्णय करना भी सरल नही था।

इस सग्रह की बीस कहानियो के चयन मे मुझे पर्याप्त परिश्रम करना पडा। प्रोफेसर के० स्वामीनाथन और डा० मु० वरदराजन के परामर्श का लाभ उठाते हुए मैंने अपने द्वारा चुनी गयी कहानियो मे से कुछ को निकाल दिया और कुछ नयी कहानियो को सम्मिलित कर लिया। इतना होते हुए भी इस बात को अस्वीकार नही किया जा सकता कि इन बीस कहानियो मे तमिल की सभी

प्रतिनिधि कहानिया नही आ पायी है। मैं आशा करता हू कि द्वितीय कहानी सग्रह का प्रकाशन होने पर यह कमी कुछ सीमा तक दूर हो जायेगी और दोनो कहानी-सग्रह मिलकर तमिल कहानी साहित्य का सही प्रतिनिधित्व कर पायेंगे।

स्थान, सख्या एव कहानी की लबाई की सीमाओ के कारण मैं, बहुत चाहते हुए भी, कुछ कहानियो को इस सग्रह मे स्थान नही दे सका तथापि मेरा विश्वास है कि इस सग्रह की सभी कहानिया उच्चकोटि की हैं। कहानियो के स्तर की चर्चा करते हुए यहा एक अन्य विषय की ओर भी ध्यान दिलाना आवश्यक है। नेशनल बुक ट्रस्ट के अध्यक्ष डा० बालकृष्ण केसकर ने इस प्रकार के सग्रहो के प्रकाशन के उद्देश्य की चर्चा करते हुए एक महत्वपूर्ण तथ्य की ओर हमारा ध्यान आकृष्ट किया। उनका कहना था कि इस प्रकार के कहानी-सग्रह को दूसरी भाषा मे प्रस्तुत करते समय साहित्यिक दृष्टि से हम इस बात को सर्वाधिक महत्व प्रदान करते है कि कहानिया पर्याप्त उच्चस्तर की हो तथा वे दूसरी भाषा मे अनूदित होने योग्य हो। यदि इन कहानी-सग्रह के माध्यम से अन्यान्य भाषा-भाषी तमिलनाडु के लोगो के रीति-रिवाजो, विचारो, भावनाओ और परपरागत सस्कारो को जान सकें, तो यह बहुत अच्छी बात होगी। उनके इन विचारो का महत्व समझते हुए, तथा राष्ट्रीय एकता की भावना को ध्यान मे रखते हुए, मैंने कुछ कहानियो को विशेष रूप से इस सग्रह के लिए चुना है।

इन बीस कहानीकारो के विषय मे अन्यान्य भाषा-भाषी लोग थोडा-बहुत जान सकें, इसी दृष्टि से इस पुस्तक के अत मे लेखको का सक्षिप्त परिचय भी दिया गया है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि तमिलनाडु के लेखको ने सामाजिक गठन, सास्कृतिक गौरव, भाषागत रूढियो, तमिलनाडु की जनता की प्राचीन प्रथाओ, कलागत परम्पराओ आदि के सुदर चित्रो को तथा जीवन-सबधी गभीर विचारो को अपने शब्दो द्वारा किस प्रकार व्यक्त किया है, इसे भी यह सग्रह भली भाति स्पष्ट कर रहा है।

यदि यह सग्रह अन्यान्य भाषा-भाषियो को तमिल कहानियो की समृद्धि का परिचय देने के साथ-साथ उनमे इसी प्रकार, तमिल मे प्राप्त अन्य कहानियो को पढने की रुचि जगा सके तो मैं अपने परिश्रम को सार्थक समझूगा। मेरा विचार है कि इस दृष्टि से यह सग्रह राष्ट्रीय एकता की भावना को समझने का एक महत्वपूर्ण साधन सिद्ध होगा।

इस महत कार्य मे मुझे जिन अन्यान्य भाषा-भाषी भाइयो से प्रेरणा और सहयोग मिला मै उन सबके प्रति कृतज्ञ हू और उन सबको हार्दिक धन्यवाद देता हू ।

मद्रास
१९७०

मी० प० सोमसुंदरम

विषय सूची

देवानै

रामनाथ अय्यर और उनकी पत्नी सीतालक्ष्मी ने अपनी मोटर मे 'चाइना बाजार' जाकर कुछ वस्तुए खरीदी। वही के एक रेस्तरा मे जलपान करके वे फिर अपनी गाडी मे बैठ गये। रामनाथ अय्यर ने पूछा, "समुद्र तट पर चले ?"

"समुद्र तट पर ? हा चलिए। गाडी को ऐसे स्थान पर खडा करने के लिए कहिए जहा भीड न हो। भीड मुझे बिलकुल पसद नही है। वह देखिए खिलौने-वाला ! एकाध खरीद लीजिए, बच्चो के लिए ले जायेगे "

सीतालक्ष्मी ने अपनी बात समाप्त भी न की थी कि मानो उसके विचारो को खिलौनेवाले ने जान लिया और वह गाडी के पास आ गया। गाडी मे बैठे-बैठे उन्होने मोल-भाव करके कुछ वस्तुए ले ली। तभी गाडी के दूसरे किवाड के पास एक युवती-भिखारिन आयी। उसने अपनी गोद के बच्चे की ओर सकेत करते हुए कहा, "श्रीमन दया कीजिए। मा जी, बच्चे की ओर तो जरा देखिए !"

इधर रामनाथ अय्यर ने पूछा, "सभी खिलौने जापानी है न ?"

व्यापारी ने उत्तर दिया, "जापानी नही तो फिर क्या है ? हमारे देश मे ऐसे खिलौने कही बनते है ?"

भिखारिन ने पुन याचना की।

सीतालक्ष्मी बोली, "सौदा करते समय यह दुष्टा कहा से आ गयी। इस शहर मे भिखारी लोग बहुत परेशान करते है।"

"भूख लगी है, मा जी। जरा इधर देखिए तो सही—आप राजरानी होगी," भिखारिन ने कहा।

"जाती है कि पुलिसवाले को बुलाऊ ?" कह कर सीतालक्ष्मी ने उसे धमकाया।

"मा जी, बच्चा दूध के बिना बिलख रहा है। एक आना दे दीजिए माताजी ! महाराज आप कितना पैसा यो ही खर्च कर देते है।"

उसकी बातो की ओर ध्यान न देते हुए, दाम तय कर खरीदी हुई वस्तुओ को गाडी मे रखते हुए रामनाथ अय्यर बोले, "गाडी चलाओ, समुद्र तट की ओर चलो।"

ड्राइवर ने भिखारिन को गाडी से दूर हटने के लिए कहकर गाडी चला दी।

"श्रीमन ! श्रीमन !" पुकारती हुई, गाडी पकडे हुए भिखारिन कुछ दूर तक दौडती रही।

"भाग मत, मर जायेगी !" रामनाथ अय्यर ने उससे कहा। तभी उनकी दृष्टि भिखारिन के चेहरे पर पडी। उन्हे लगा कि उसे कही देखा है।

गाडी तेजी से चल पडी। वह बोले, "हाय बेचारी ! छोटी-सी लडकी ! उसके चेहरे को देखने से लगता है कि वह हमारे प्रात की है।"

"किसी भी प्रात की हो, उस दुष्टा से हमे क्या लेना देना ? वह क्या नयी-सी चीज है, हवाई जहाज है क्या ? दीजिए तो जरा, मै भी देखू। यह चाबी से चलनेवाला है या साधारण खिलौना है ?" कहते हुए सीतालक्ष्मी एक-एक करके खिलौनो को देखने लगी और वे समुद्र तट पहुच गये।

२

सेलम जिले के पोन्नम्मापेट्टै के पेरियण्णा मुदली नामक गली मे एक निर्धन जुलाहा परिवार रहता था। उस परिवार के तीन सदस्य थे—तीस वर्षीय वैयापुरी, उसकी अविवाहित बहन देवानै जो कि बीस वर्ष की थी तथा उनकी माता पत्तनियम्माल्। तीनो कपडा बुनने के अपने पारिवारिक व्यवसाय द्वारा बडी कठिनाई से जीवन-यापन कर रहे थे। दिन भर परिश्रम करने के बाद वे तीनो मिलकर सप्ताह मे चार रुपये कमा लेते थे।

धीरे-धीरे हथकरघा वस्त्रो का व्यापार घटता गया और उनकी मजदूरी भी घटती गयी। इसके बाद ऐसी स्थिति भी आयी कि थोडी भी मजदूरी न मिलने पर लोग अत्यन्त दुखी होने लगे। सेलम मे अनेक लोगो के करघो के साथ वैयापुरी का करघा भी बेकार पडा रहा। देवानै दो ब्राह्मण अफसरो के घरो मे सफाई आदि छोटे-छोटे काम करने लगी। इससे उसे महीने मे तीन रुपये मिल जाते थे। उनकी मा पत्तनियम्माल् भी एक घर मे सफाई का काम करके एक रुपया महीना पाने लगी। वैयापुरी नौकरी के लिए मिल मालिको के यहा टक्करे मारता रहा। इस प्रकार कुछ दिन बीत गये, उसे कही भी नौकरी नही मिली। तब वह मा से कहकर बंगलूर चला गया। वहा किसी मिल मे नौकरी करने के विचार से, सेलम से वैश्य परिवार के कई व्यक्ति

उसके साथ गये थे।

वहा पहुच कर कुछ दिन तक भटकने के पश्चात वैयापुरी ने पत्र लिखा कि वह एक मिल मे लग गया है। वैयापुरी लिखना-पढना जानता था। बचपन मे पिता ने उसे पोन्नम्मापेट्टै के सरकारी स्कूल मे भरती कराया था। उन दिनो जुलाहो का जीवन इतना कष्टमय न था।

"अत्यत कष्ट उठाने के के वाद, कई लोगो को घूस देकर, मैं एक मिल मे लग गया हू। दिन मे आठ आने मजदूरी मिलती है। महीने मे छब्बीस दिन काम करना पडता है। इस प्रकार मुझे तेरह रुपये मिलेगे। इस महीने का वेतन खाने-पीने मे और उधार चुकाने मे लग जायेगा। आगे से मैं तुम लोगो को दो रुपये महीना भेज सकूगा। आगे भगवान ही हमारा मालिक है।" वैया-पुरी के इस पत्र को पडोस मे रहने वाले मारियप्पमुदलियार के पुत्र ने पढकर सुनाया। वृद्धा और देवानै की प्रसन्नता की कोई सीमा ही न रही।

दस दिन वाद दूसरा पत्र प्राप्त हुआ।

"माता जी को साष्टाग प्रणाम। भगवान की कृपा से मैं यहा कुशलपूर्वक हू। मेरा विश्वास है कि आप और देवानै कुशलपूर्वक होगे। मुझे इस मिल मे काम करना बिलकुल भी अच्छा नही लगा। उन दिनो को याद करता हू जब घर पर अपने करघे पर बुनाई का काम किया करता था तो आखो मे आसू भर आते है। यहा मुझे ऐसा लगता है कि मैं पागल हो गया हू। मेरा सिर चकराने लगता है। मैं अपनी मनोवेदना और दूसरे कष्टो का वर्णन नही कर सकता। मन मे यही आता है कि अपना देश छोडकर यहा क्यो चला आया। पडोस के लडके से कहकर पत्र लिखवा सको तो लिखना। मल्लेश्वरम की मजदूर गली मे, सेलम स्थित पोन्नम्मापेट्टै के वैयापुरी को मिले—पता इस तरह लिखना।"

२

देवानै जिन घरो मे सफाई आदि का काम करती थी उनमे एक घर, नौकरी से अवकाश प्राप्त एक अफसर का था। उनकी पत्नी बहुत अच्छी थी। काम के समय कसकर काम करवाती थी, लेकिन वैसे बहुत स्नेहपूर्ण व्यवहार करती थी। उन्होने देवानै को एक साडी दी थी। जब-तब उसे बचा हुआ भात, सब्जी आदि भी दे देती थी। इस प्रकार कुछ दिन बीते।

उसका इस प्रकार सुखी रहना गभवत देवना को भी सहन न हुआ। उस घर मे एक रसोइया था जो कि देवानै का बचा हुआ भोजन आदि देता था, उससे मजाक भी किया करता था। एक दिन उसका व्यवहार धृष्टता की सीमा तक पहुच गया।

देवानै के क्रोध की सीमा न रही। परन्तु किसी से भी उस बात की चर्चा करते हुए उसे लज्जा आती थी। "किसी से भी मत कहना। म तुझे महीने मे दो रुपये दूगा," कहकर उस नीच सेवक ने उसे अपना मुह बद रखने को विवश कर दिया।

भारी हृदय से देवानै घर पहुची और अपनी मा से बोली, "मा मैं नीम के पेडवाले उस घर में अब काम नहीं करूगी।"

मा ने कारण पूछा तो अत्यत लज्जित तथा दुखी हृदय से देवानै ने वहा जो कुछ हुआ था वह सब कह सुनाया। उसकी बातें सुनते ही वृद्धा मा बोली, "मै अभी जाकर उस घर की मालकिन से सब कहे देती हू।" कहकर चल पडी।

"नहीं मा! उन लोगो से कहने से क्या लाभ? मैं अब उनके घर काम नहीं करूगी," देवानै ने कहा।

उन्होने और कई घरो मे नौकरी तलाश की। उन्हे हर घर मे कोई न कोई सहरी काम रखती हुई मिली। दो महीने तक इधर उधर भटकने के बाद उसे एक घर मे नौकरी मिली।

छ महीने बीत गये। बेंगलर मे वैयापुरी की मिल मे हडताल हो गयी। मजदूरो के एक मुखिया को किसी अफसर ने चाटा मार दिया। इतना ही नहीं, उसको और उसके साथी कुछ मजदूरो को नौकरी से निकाल भी दिया था। इस पर कर्मचारी सघ ने एक सभा बुलायी। अपने निश्चय के अनुसार उस महीने का वेतन लेकर उन्होने हडताल कर दी। वैयापुरी को भी इस हडताल मे सम्मिलित होना पडा।

एक महीने तक हडताल चलती रही। कर्मचारियो ने अनेक सभाए की, दगा मचाया। पहले उनमे काफी उत्साह था परन्तु बाद मे उनके पास पैसे खर्च हो गये तो उनका उत्साह भी घट गया। कुछ सरकारी अफसरो ने उन्हे शात करने का प्रयत्न किया। सभी पुन मिल मे काम करने लग गये। एक सप्ताह के बाद मिल के द्वार पर यह नोटिस लगा दिया गया कि बीस कर्मचारियो को

नौकरी से निकाल दिया गया है और मिल में उनका प्रवेश निषिद्ध है। इन बीस व्यक्तियों में वैयापुरी भी एक था।

वैयापुरी ने अपने अफसर से जाकर कहा, "श्रीमन्, मैंने कोई गलती नहीं की। मैं यहां नया आया हूं। मैंने हड़ताल में भाग नहीं लिया।"

उस अफसर ने उत्तर दिया, "यह तो बड़े अफसर का आदेश है। यह सब उस दुष्ट टाइमकीपर रंगस्वामी नायकन की करतूत है। उसने औरों के साथ तेरा नाम भी बड़े अफसर को लिखकर दे दिया। मैं अब कुछ भी नहीं कर सकता हूं।"

अब वह रंगस्वामी नायकन के पास जाकर गिड़गिड़ाया। वह बोला, "मैं कुछ नहीं जानता। यह तो वेतन बांटनेवाले ब्राह्मण क्लर्क का काम है।" किसी की भी मिन्नतें करने का कोई लाभ नहीं हुआ। मैनेजर के पास जाने पर वह बोला, "तू पढ़ा-लिखा है। तूने ही औरों को भड़काया है। हम तुझे फिर से नौकरी पर नहीं रख सकते।"

कई दिनों तक भटकते रहने के बाद और अपने हाथ के पैसों के खर्च हो जाने पर, वैयापुरी बड़ी कठिनाई से मद्रास पहुंचा। उसके समान नौकरी से निकाले गये मिल के अन्य कर्मचारी भी, नौकरी की खोज में, उसके साथ मद्रास गये। उनमें से कुछ लोगों के पास पैसे थे जिसे उन्होंने आपस में बराबर-बराबर बांट लिया। उन पैसों से खा कर वे आठ दिनों तक विभिन्न मिलों के चक्कर काटते रहे। आखिर वैयापुरी को एक मिल में नौकरी मिल गयी।

जैसा कि कायदा था, 'गेट' पर खड़े रहने वाले चौकीदार को और अन्य कुछ कर्मचारियों को कुछ देने के लिए, उसे पांच रुपयों की आवश्यकता पड़ी। इसके लिए और भोजन के लिए, लिये गये ऋण को चुकाने के लिए वैयापुरी ने अपने कानों की लौंग को गिरवी रखकर पैसे उधार लिये। मद्रास में एक मिल में नौकरी पाने के कुछ दिन बाद ही, अपने दुःखों को भुलाने के लिए, वह शराब पीने लगा। जब वह सेलम में रहता था, तो इसका आदी नहीं था। कुछ समय के बाद मित्रों ने सुझाया कि जुआ खेलकर पैसा कमाया जा सकता है। उसने वह भी शुरू कर दिया। मजदूरी के पैसों में से भोजन का खर्च और झुग्गी का किराया देने के बाद जो कुछ बचता था, उसे वैयापुरी अपने घर न भेजकर, इस प्रकार के कामों में खर्च करने लगा। महाजन का कर्ज बढ़ता गया। इन कष्टों को सहन न कर सकने के कारण वह और अधिक शराब पीने लगा।

वैयापुरी ने पहले तो काफी बहानेबाजी की परन्तु बाद मे स्पष्ट रूप से लिख दिया कि वह घर के लिए थोड़े से पैसे भी नहीं भेज सकता है, चाहे तो देवानै भी मद्रास आकर किसी मिल मे काम कर ले। उस पत्र को पाकर देवानै और पलनियम्माल् का हृदय काप उठा।

काफी दिन बीतने के बाद एक दिन देवानै ने मा से पूछा, "मा, मैं भी मद्रास क्यो न चली जाऊ ? मैं वैयापुरी के साथ काम करके कुछ कमाकर तुम्हे भेज दूगी। मद्रास मे तो बहुत सी लडकिया दफतरो मे काम करती है न ?"

पहले तो मा नहीं मानी। वह बोली, "ऐसा कभी हो सकता है ? तुझ जैसी अबोध बालिका वहा जायेगी ?" कुछ दिनो तक इस प्रकार तर्क-वितर्क करने के पश्चात अत मे वृद्धा मा मान गयी। उसने पड़ोसी मारप्पन के पास अपने सोने के कर्णफूल गिरवी रखकर बारह रुपये कर्ज लिये। देवानै मद्रास के लिए चल पड़ी।

मद्रास मे वैयापुरी ने देवानै को एक मिल के 'कताई विभाग' मे लगवा दिया। वैयापुरी की मिल दूसरी थी। उस मिल मे देवानै के समान डेढ सौ लडकिया काम करती थी, जिनमे कुछ छोटी आयु की थी और कुछ बड़ी आयु की। देवानै तथा उसके साथ की दस लडकियो के ऊपर एक सरदार था। उसने पहले तो देवानै से बहुत अच्छा व्यवहार किया परतु बाद मे वह उसे डाटने-डपटने लगा। कभी-कभी वह गाली भी दे देता था परन्तु अकेले मे, अकारण ही, वह उससे बहुत प्यार से बोलता था।

"यह सरदार इस प्रकार का व्यवहार क्यो करते है ?" देवानै ने अपने साथ काम करनेवाली एक स्त्री से पूछा। उसने हसते हुए उत्तर दिया, "तू यह सब नहीं जानती ? जाने भी कैसे, तू तो बेचारी गाव की है। उनसे अच्छा व्यवहार न करने से आधे से भी अधिक वेतन जुर्माने के रूप मे दे देना पडता है। उनको प्रसन्न रखना हमारे लिए बहुत जरूरी है।"

गरीबो के कष्ट को कौन जानता है ! निर्धन परिवार मे कन्या के रूप मे जन्म लेकर, मिल मे मजदूरी करना पूर्व जन्म के पापो का फल है, ऐसा कहना अनुचित न होगा।

देवानै कुछ दिन तक सब कुछ सहती रही। कुछ दिनो बाद उसने निश्चय किया कि सरदार का खोट सहना नहीं है और अपने मुखिया का विरोध

करना छोड दिया। अपने आपको समझा बुझाकर, वह उससे हसने-बोलने लगी। धीरे-धीरे उसे इन बातो मे आनद आने लगा और उसकी मजदूरी भी बढ गयी।

कुछ महीने और बीते। देवानै को अपने शरीर मे कुछ परिवर्तन दीख पडे। वह जान गयी कि वह गर्भवती हो गयी है। अब वह नाना देवताओ को मनाने लगी। 'मै इसे किससे जाकर कहू ?'' यह सोच-सोचकर वह चिता मे व्याकुल हो गयी। उसकी दशा शिकारी के प्रहार मे बचकर भागने वाली भयभीत हिरणी के समान थी। भाई वैयापुरी से कहते हुए वह घबराती थी। उसकी इस दशा को देखकर उसके साथ काम करने वाली कुछ स्त्रिया उसका उपहास करने लगी। एक बार उसने सोचा कि वह देश लौट जाय, परतु साथ ही यह भय था कि उसे अपनी जाति मे बहिष्कृत कर दिया जायगा। मा उसकी इस दशा को कैसे देख सकेगी। यह सोचकर उसने देश लौटने का विचार छोड दिया। भगवान को ही अपना एकमात्र आश्रय मानकर वह उसी दशा मे, धैर्यपूर्वक मिल मे काम करती रही।

एक दिन वह फिर चिंतित हुई। वह अपनी साथिन के पास जाकर रोयी, "हाय! मै क्या करु ? मैंने तो अपने कुल को कलकित कर दिया है।"

साथिन ने कहा, 'देवानै तू मत घबरा। यह तो एक साधारण-सी बात है। इसका भी एक इलाज है, जिसमे तू शीघ्र ठीक हो जायेगी।"

"हा मैने भी यह सुना है परतु इलाज करवाते हुए डर लग रहा है कि कही प्राण न चले जाये! हे भगवन, मै कहा जाकर छिपू," देवानै बिलख उठी।

"मुत्तुस्वामी बटई की गली मे एक स्त्री रहती है। दो रुपये देने पर वह सब कुछ ठीक कर देगी," सखी ने कहा।

"पर पुलिस को पता चल गया तो पकड कर न ले जायेगी ?" देवानै ने पूछा।

"उसकी चिता न कर। उस स्त्री की पुलिसवालो से अच्छी पहचान है। रुपया सब कुछ कर सकता है, इसे तू नही जानती ?" सखी ने कहा।

"हाय! मै रुपयो के लिए कहा जाऊ ? हे भगवन! तूने मुझे कैसे भुला दिया! मैं इस पापी शहर मे क्यो आयी ? सेलम मे बिना भोजन के मर जाती तो कितना अच्छा होता!" कहती हुई वह जोर-जोर से रोने लगी।

कुछ दिनों बाद एक अन्य स्त्री उसे सलाह देती हुई बोली, "बच्चे को जान से नहीं मारना चाहिए। इससे जो पाप लगता है वह तो तीन जन्मों तक भी नहीं उतर सकता। गणेश मंदिर की गली में एक बुढ़िया रहती है। वह बहुत अच्छी है। उसके पास जाने पर वह सब कुछ ठीक कर देगी। तेरी तरह कई लड़कियों ने उसके घर में रहकर बच्चे जने हैं। तू चिंतित मत हो।"

"बहन तुम सुखी रहो!" कहकर देवानै ने उसे आशीर्वाद दिया। उसके बाद वह गणेश मंदिर की गली में रहने वाली उस परोपकारिणी स्त्री के घर जा पहुंची। उसका प्रसव भली प्रकार से संपन्न हुआ। शिशु के जन्म के बाद देवानै के लिए संसार का रूप ही बदल गया। वह अपने सभी कष्टों को भूल गयी। शिशु को ही वह अपना संसार मानने लगी।

"यह तो भगवान की देन है, इस बेचारे ने क्या किया! मैं ही कुल-कलंकिनी हूं," यह सोचकर वह बच्चे को दूध पिलाती। इस प्रकार कई दिन तक वह चिंताओं को भूले रही।

"देवानै, अभी तू काम पर नहीं जा सकती। थोड़े दिन और यहीं रह," गणेश मंदिर गली में रहने वाली उस परोपकारिणी स्त्री ने बड़े प्रेम से कहा।

"इतने अच्छे लोगों के रहते हुए मैंने प्रभु की निंदा की," ऐसा सोचकर देवानै प्रभु की महिमा गाने लगी।

एक महीना बीतते ही उसे सच्चाई का ज्ञान हुआ। वह बुढ़िया, लोगों के धोखे जाल में फंसने वाली अनाथ कन्याओं को अपने घर में रखकर उनसे नीच कर्म करवाती है। देवानै भी बुढ़िया के जाल में फंस चुकी थी। उसके बाद वह लौटकर मिल न जा सकी।

/

"तुम्हें सेलम में हमारे घर में काम करने वाली देवानै की याद नहीं है? यह मीनाक्षि उसी के समान लग रही थी," रामनाथ अय्यर बोले।

सेलम में शुरू-शुरू में देवानै जिस घर में काम करती थी उस घर के मालिक नौकरी से अवकाश प्राप्त कर चुके थे। उसी अफसर के सबसे बड़े पुत्र थे रामनाथ अय्यर। वह मद्रास के एक बड़े बैंक में खजांची थे।

"सेलम की लड़की यहां क्यों आयेगी? यह आपका भ्रम है," मीना-

लक्ष्मी ने कहा।

"चाहे कुछ भी हो, यह चाहे कोई भी हो, युवतियो को बच्चो को उठाये हुए भीख मागते देख मन मे यही आता है कि हमारे देश की हालत कैसी हो गयी है!" रामनाथ अय्यर बोले।

"आपको हमेशा देश की चिंता लगी रहती है। क्या अपने परिवार की चिंता कम है?" पत्नी ने पूछा।

अगले दिन सध्या को भी रामनाथ अय्यर उस भिखारिन को न भूल सके। वह दफतर से सीधे ही 'चाइना बाजार' पहुचे। उसी स्थान पर उसे फिर देखा जा सकता है, उससे मिलकर उसके विषय मे पूछा जा सकता है, यह सोचकर वह पहले दिन वाले रास्ते से होकर उसी रेस्तरा के पास पहुचे। उन्होने गाडी को रेस्तरा के पास थोडी देर खडी किये रखा। अनेक भिखारियो ने आकर, पुकारते हुए उन्हे घेर लिया परतु वह भिखारिन नही दीख पडी।

अगले शनिवार की शाम को रामनाथ अय्यर और उनकी पत्नी पुन 'चाइना बाजार' गये। एक ओर इशारा करती हुई सीतालक्ष्मी बोली, "वह रही आपकी भिखारिन।"

बच्चे को गोद मे लिये हुए "मा जी, एक आना दे दो। इस बच्चे के लिए मा जी!" कहकर भीख मागती हुई वह भिखारिन दूर आकर खडी हुई एक दूसरी मोटर की ओर दौड पडी।

रामनाथ अय्यर की गाडी को देखते ही वह जान गयी कि उसमे बैठे हुए व्यक्ति उसे कुछ नही देंगे, अत वह दूसरी गाडी की ओर चल दी। भिखारियो को यह ज्ञान अनुभव द्वारा प्राप्त होता है। हर कार्य के लिए तेज बुद्धि और कार्य-कुशलता की जरूरत होती है न? दूर खडी हुई भिखारिन को बुलाते हुए रामनाथ अय्यर को लज्जा आयी। अत वह कुछ देर तक चुपचाप खडे रहे। वह सोचते रहे कि उस गाडी का अपना काम समाप्त करके वह उनके पास आयेगी, परतु वह भीड मे कही अदृश्य हो गयी और पुन नही दीखी।

"अच्छा तो चले," सीतालक्ष्मी ने कहा।

आठ दिन बाद रामनाथ अय्यर और सीतालक्ष्मी सिनेमा देखने गये। कथा थी—नलोपाख्यान।

गेट पर अपार भीड थी। नयी अभिनेत्री टी० के० धनभाग्यम् दमयती का पार्ट खेलने जा रही थी।

टिकट मांगने पर उत्तर मिला, "आप अगला शो ही देख सकते हैं, इस शो के सभी टिकट बिक चुके हैं।"

"घर ही आये ?" रामनाथ अय्यर ने पूछा।

मीनालक्ष्मी के उत्तर देने के पूर्व ही एक भिखारिन ने मोटर के पास आकर कहा, "मां जी ! भीख दे दीजिए।"

कहीं सेलमवाली लड़की तो नहीं है, यह जानने के लिए रामनाथ अय्यर ने मुड़कर देखा। उन्हें तो बस एक ही धुन सवार थी। परन्तु वह तो कोई और थी।

"यहां गाड़ी खड़ी करने पर भिखारी परेशान करते हैं। रामन नायर, शीघ्र घर चलो,' मीनालक्ष्मी ने ड्राइवर से कहा।

उसी समय एक पुलिस वाले ने डंडा घुमाकर उस भिखारिन को वहां से भगाया।

उस रात रामनाथ अय्यर ने स्वप्न में उस भिखारिन को देखा।

उन्होंने उससे पूछा, "तू सेलम की है न ? तू किस प्रान्त की है ?"

भिखारिन की आंखें प्रसन्नता से खिल उठीं। वह अपने बच्चे पर हाथ फेरती हुई बोली, "हुजूर ! आप सेलम के हैं न ? आप नीम के पेड़वाले घर में रहनेवाले अफसर के बेटे हैं न ?"

'नायर ! इसे आगे बैठा लो," उन्होंने मोटर ड्राइवर से कहा।

घर पहुंचते ही पत्नी ने पूछा, "यह कौन है ? इस दुष्टा को घर क्यों ले आये ?'

रामनाथ अय्यर बोले, "इसे अपने यहां नौकरी पर क्यों न लगा लें ? इसे भोजन के साथ चार रुपए दिये जा सकते हैं।"

'आपने अच्छा सोचा। इस तरह के नीच व्यक्तियों को अपने घर में रखें ' बड़ी बुद्धिमानी की आपने," कहकर मीनालक्ष्मी ने भिखारिन को वहां से भगाया।

भिखारिन बोली "मां जी ! मैं चोरी नहीं करूंगी। सब भी काम बनायेगी करूंगी।

मीनालक्ष्मी बोली, "ऐसा नहीं हो सकता। निकल जा बाहर !"

उसे एक रुपया देने के लिए रामनाथ अय्यर अपना बटुआ निकालने लगे। जेब में बटुआ न मिला। वह बटुए को टटोलते रहे। भिखारिन का बच्चा

जोर-जोर से रोने लगा वह जाग गये वह तो स्वप्न था। उनकी पुत्री राधा बिस्तर पर बैठी रो रही थी।

"अच्छा हुआ वह सब स्वप्न था। सीतालक्ष्मी वास्तव मे इतनी क्रूर नही है" यह सोच रामनाथ अय्यर प्रसन्न हुए।

इसके बाद बहुत दिनो तक रामनाथ अय्यर बाजार, रेलवे स्टेशन सिनेमा-घर आदि स्थानो मे उसे ढूढते रहे। उस भिखारिन को उन्होने फिर नही देखा। कौन जाने उसका क्या हुआ!

शाप-विमोचन

पथ पर एक प्रस्तर-प्रतिमा पड़ी थी। शिथिल एवं क्षीण काया में भी उसके मोहक रूप में आवेग का संचार करने की क्षमता थी। वह प्रतिमा ऐसी उन्मत्त कर देने वाली थी कि ऐसा प्रतीत होता था मानो किसी अपूर्व शिल्पी ने मात्र इसके लिए इस भूलोक में जन्म लेकर अपने स्वप्नों को प्रस्तर में साकार कर दिया है। परंतु उस प्रतिमा के नेत्रों में अवर्णनीय शोक का भाव व्यक्त हो रहा था। वह दर्शकों के ऐंद्रिय प्रेम रूप काम वासना का हनन कर उन्हें भी शोकमग्न कर देती थी। वह किसी शिल्पी का अपूर्व स्वप्न नहीं थी, शाप का परिणाम थी। वह थी अहिल्या।

उस जंगली मार्ग में, प्रस्तर निर्मित शोक की साकार प्रतिमा के रूप में, वह उस प्रकृति की गोद में पड़ी थी जो उसके दुख को निरपेक्ष दृष्टि से निहारनेवाली तपस्विनी के समान थी। सूर्य तप रहा है। ओस पड़ रही है। वर्षा हो रही है। गज, पतंगे, चिड़ियें और कुछ उल्लू बैठे हैं, कुछ उड़ रहे हैं। वह सत्वहीन तपस्विनी के समान प्रस्तर खंड के रूप में---पड़ी है।

कुछ दूरी पर मछियारों का एक टीला है। ध्यान-मग्न होकर आत्म-चेतना पर आत्म-दुख को भवतार गौतम तप कर रहा है। प्रकृति निरपेक्ष भाव से उसका भी पालन करती है।

ततिक और दूर उस दंपति को छाया प्रदान करने वाली छत, जीर्ण-शीर्ण होकर धराशायी हो गयी थी और उसके कण वायु में मिल गये, जिस प्रकार उनकी गृहस्थी आधार विहीन होकर नष्ट-भ्रष्ट हो गयी थी। उसकी दीवारें ढह गयी थीं। केवल खंडहर ही शेष रह गये थे। वह उनके मन पर लगे दुख के घाव के समान दिखायी दिये।

दूर गंगा का कलकल निनाद सुन पड़ रहा था। गंगा माता न जाने उनके सदाचार से परिचित थी या नहीं!

इस प्रकार उस दंपति के अनेक युग बीत गये।

एक दिन

दिन के प्रथम प्रहर के दूर का ताप कुछ प्रचंड था, परंतु लताओं की हरियाली छाया तथा मन्द-मन्द बहने वाला पवन, मन को एक प्रकार की शांति देता था।

लता प्रदान कर रहे थे, ठीक उसी प्रकार जैसे धार्मिक सिद्धांत हमें सांसारिक दुखों को भूलने की शक्ति प्रदान करते हैं और हममें विश्वास-भावना तथा नव-शक्ति का उदय होता है।

पुष्प सिंह के समान ठाठ से चलते हुए और अपने काम के पूर्ण हो जाने की खुशी में मन ही मन गुनगुनाते हुए, विश्वामित्र आ रहे हैं। मारीच और सुबाहु कहाँ गये, इसका कुछ नहीं पता। ताड़का नामक क्रूर वृद्धा का नाश हो चुका था। उन्हें इस बात का संतोष था कि उन्होंने अपने आपको भक्ति में निमग्न होकर तथा होमादि करके, धर्म-कार्यों में लगे हुए व्यक्तियों को शांति प्रदान करने वाला साधन बना लिया है।

वह बारबार पीछे मुड़कर देख रहे हैं। उनकी दृष्टि में कितना स्नेह भरा हुआ है। दो बच्चे दौड़कर एक दूसरे को पकड़ने का खेल खेल रहे हैं। वे और कोई नहीं—ईश्वरावतार बालक राम और लक्ष्मण हैं। राक्षसों के नाश के कार्य को आरंभ कर, उसके महान उत्तरदायित्व को न जानते हुए दौड़कर एक दूसरे को पकड़ रहे हैं।

उनके दौड़ने से धूल उड़ती है। आगे लक्ष्मण दौड़ रहा है, उसका पीछा करने वाला है राम। धूल का ढेर शिला पर छा जाता है—

उनके उत्साह का कारण जानने के लिए, कौतूहलवश विश्वामित्र मुड़कर देखते हैं और खड़े-खड़े देखते रह जाते हैं।

धूल का ढेर शिला पर छा जाता है।

शिला के भीतर हृदय धड़कने लगता है जो कभी किसी समय रुककर पत्थर बन गया था। विभिन्न स्थानों पर जाकर जो रक्त जम गया था वह पुनः प्रवाहित होने लगता है। पत्थर में चेतनता का संचार होता है और वह सजीव काया बन जाती है। खोई हुई प्रज्ञा लौट आती है।

अहिल्या आँखें मूंद कर फिर उन्हें खोलती है। उसकी चेतनता व्यक्त होती है। उनके शाप का विमोचन हो गया! शाप-विमोचन हो गया!

हे देव! इस कलंकित देह ने पवित्रता प्राप्त कर ली।

स्वयं को पुनः नव जीवन प्रदान करने वाला वह दैवी पुरुष कौन है? क्या यह बालक है?

उसके चरणों पर गिरकर वह प्रणाम करती है। राम आश्चर्य से ऋषि की ओर देखते हैं।

विश्वामित्र जान गये कि वह अहिल्या है, जिसने अज्ञानवश इन्द्र के मायावी वेश से धोखा खाया था। पति के प्रति अपार प्रेम के फलस्वरूप, मायावी वेश से धोखा खाकर उसने अपनी देह को अपवित्र कर लिया था। वह गौतम की पत्नी है। वह राम को सारी कथा बताते है। गौतम सामने स्थित टीले पर रेशमी तार से लिपटे हुए अण्डे में मौन तप करनेवाले रेशम के कीड़े के समान आत्मचेतनाहीन होकर ध्यान मग्न हैं। अरे वह उठ गया!

तप से विरत उसके नेत्र सान पर तीक्ष्ण की गयी तलवार के समान घूमते है। शरीर में शक्ति का संचार होता है, मानो जादू कर दिया गया हो। अपनी चातुरी से नारी के माया-जाल में अपने को मुक्त न कर सकने के कारण मानो वह धीरे-धीरे आ रहा है।

पुनः वह दुःख-जाल? शाप-विमोचन के बाद जीवन कैसा होगा, इस प्रश्न पर उसने विचार नहीं किया था। परन्तु अब तो वह एक विशाल दीवार के रूप में उसके जीवन को आवृत्त किये हुए है। वह भी मन ही मन घबराती है।

राम का सारा धर्म चक्षुओं से देखता था। उसमें स्पष्टता का प्रकाश था, परन्तु उसे अनुभव रूपी सान पर तीक्ष्ण नहीं किया गया था। ऐसे वशिष्ठ ने उन्हें शिक्षा दी थी जो कि जीवन की उलझनों को, उसके एक-एक तार को अलग करके सुलझाते थे परन्तु तोड़ना नहीं जानते थे। उनकी शिक्षा, बुद्धि को नवीन मार्ग पर धैर्यपूर्वक बढ़ने का प्रोत्साहन देती थी।

अहल्या की मनोव्यथा है जो उसे विषम स्थिति में जकड़ कर दुःख दे रही है। मानसिक तथा शारीरिक शक्ति से न रोके जा सकने वाली एक घटना से फिर उन्हें यह दंड दिया गया है? "मा" कहकर राम उसके चरणों पर गिरकर प्रणाम करते है।

गौतम, उसकी पत्नी और आधार विहीन एव खडहरो मे युक्त वह टीला अपने स्थान से नही हटे। पहले जहा निर्जीवता थी वहा चेतनता ने सचरण करना चाहा।

कोडे की चोट के समान जो शक्तिया जीवन व्यवहार को वदलने आयी थी वे सब उस स्थान से चली गयी। सध्या तक मिथिला नही पहुचना ? गृहस्थी दोनो हाथ फैलाये बुला रही है न !

गौतम पूर्ववत मनोमालिन्य रहित होकर उससे बोल न सका। उस दिन उसे वेश्या कहकर जलाया था। उसे लगा कि उस अग्नि ने उसकी जिह्वा को जला दिया है। "क्या बोलू ? क्या बोलू ?"

"क्या चाहिए ?" गौतम ने पूछा। उसका सपूर्ण ज्ञान जैसे भावना के प्रवाह मे वह गया था, अत सारहीन शब्द ही उसके मुख से निकले।

शिशुवत अहिल्या बोली, "भूख लगी है।"

गौतम समीपस्थ खेत मे जाकर फलादि एकत्र कर लाया। उस दिन उसके मन मे वही प्रेम एव स्नेह की भावना जाग्रत हुई जो पहले उसके अग-प्रत्यगो मे प्रकट होती थी।

यद्यपि हृदय मे प्रेमोदय के वाद ही वे विवाह सूत्र मे आवद्ध हुए थे तथापि उसके मूल मे भी धोखे की भावना थी ! वैलो को नाथ कर ही उसने उसे पाया था न ![1] इस प्रकार गौतम का मन दूसरी दिशा मे सचरण करने लगा। वह आत्म-ग्लानि मे जल उठा।

अहिल्या ने अपनी क्षुधा-तृप्ति कर ली।

उनके मनो मे प्रेम का भाव पूर्णरूपेण विद्यमान था, परतु दोनो दो भिन्न प्रकार की चिताओ मे पडे तडप रहे थे।

अहिल्या की चिता थी कि क्या वह गौतम के अनुरूप है ?

गौतम की चिता थी कि क्या वह अहिल्या के योग्य है ?

सडक के किनारे खिले पुष्पगण उन्हे देखकर हसने लगे।

---

[1] प्राचीन काल मे, तमिल प्रात की कुछ जातियो मे पुरुष, सात वलशाली वैलो को नाथ कर, अपने वीर्य का प्रमाण देकर किसी कन्या को पत्नी के रूप मे प्राप्त करता था।

२

अहिल्या की इच्छानुसार अयोध्या की बाहरी सीमा से कुछ हटकर, मनुष्य गंध रहित सरयू नदी के किनारे एक झोपड़ी में रहते हुए, गौतम धर्म चिंतन करने लगा। अब गौतम को अहिल्या पर पूर्ण विश्वास था। उसे इंद्र की गोद में पड़े हुए देखकर भी उस पर संदेह नहीं करेगा। वह उसे ऐसी पवित्र नारी समझने लगा। वह ऐसी स्थिति पर पहुंच गया कि उसे लगा कि उसकी सहायता के बिना उसका संपूर्ण धर्म-चितन नष्ट-भ्रष्ट हो जायेगा।

अहिल्या ने मन में भी मापे न जा सकने वाले प्रेम भाव में उसे झुका लिया था। उसका चिंतन करते ही उसका मन तथा अंग-प्रत्यंग नव विवाहिता के अंग-प्रत्यंगों के रूप में प्रफुल्लित हो उठते थे, परंतु उसके हृदय पर रखा बोझ दूर नहीं हुआ। वह इस प्रकार से रहने की इच्छा करने लगी कि कोई उस पर संदेह न कर सके और वह किसी को गौर से देखने का अवसर भी न दे सके। इससे उसके स्वाभाविक व्यवहार में अंतर आ गया। उसे अपने चारों ओर खड़े सभी व्यक्ति इंद्र के रूप में दीख पड़ते थे। अहिल्या के मन में भय बस गया। हंसी की बातें और क्रीड़ाएं बिलकुल समाप्त हो गयी। सहस्रों बार मन में दोहराकर उसका यह कथन ठीक है अथवा नहीं—यह भली प्रकार सोच कर ही वह कुछ बोलती थी। गौतम द्वारा कहे गये साधारण वाक्यों को सुनकर भी, इनमें कोई गूढ़ार्थ तो नहीं है, यह सोच-सोच वह व्यथित होती थी।

जीवन उसके लिए नरक-वेदना बन गया था।

उस दिन मरीचि आए थे। एक दिन पूर्व दधीचि ऋषि आये थे। वाग-ग्मी ज्ञान सम्पन्न [illegible] ऋषि भी गौतम का कुशल-क्षेम पूछने आये थे। उनके मन में यद्यपि ममत्व एवं स्नेह का भाव था तथापि अहिल्या का शरीर संकोच-वश सिमटा पड़ा रहा। ऐसा लगता था कि उसके अतिथि-सत्कार में भी कोई कमी आ जायेगी। साधारण रूप से जो उसे सिर से पांव तक देखता था, उसे भी वह संदेहपूर्ण दृष्टि से देखने में संकोच का अनुभव करने लगी। वह झोपड़ी में जाकर छिप गयी।

गौतम की चिंताधारा अब नयी दिशा की ओर मुड़ गयी। उसका कहना था कि दम्भ के वश [illegible] इन्होंने किया है जो जानबूझ कर उसमें फंसना है। [illegible] दूषित कर्म करना भी पाप नहीं है, जिससे

सपूर्ण मानव-जाति का नाश हो सकता है । जिस कर्म को हम तल्लीन होकर तथा आत्म-ज्ञान से युक्त होकर करते हैं, वे ही हमें कलकित करते हैं । अपनी टूटी-फूटी झोपडी में रहते हुए, जिससे उसका नाता औरो ने पुन जोड दिया था, गौतम ने अपनी चिताधारा को नवीन दिशा मे मोड दिया । उसके मन मे अहिल्या का कलकहीन रूप ही बसा हुआ था । उसे लगा कि स्वय उसमे कोई रोगग्रस्तता नही है, शाप की अग्नि को प्रज्वलित करनेवाले क्रोध ने उसे कलकित कर दिया है ।

सीता और राम समय-समय पर अपने मनोविनोद के लिए रथ पर चढकर उस ओर आते थे । अवतार शिशु (राम) गोतम के मन मे एक आदर्श युवक के रूप मे बस गये । उनकी मुक्त हसी और क्रीडाए, स्वय प्रकाशित दीप के समान, उनके धर्मशास्त्र की व्याख्या करने लगी । उस युवा दपति के मध्य कितना घनिष्ट प्रेम था ! उनका प्रेम गौतम को उसके पहले जीवन की याद दिलाता था ।

अहिल्या के मन के भार को दूर करने आयी थी—सुदरी सीता । अहिल्या को लगा कि उसकी बाते, उसकी हसी उसके कलक को धो रही है । उसके आने पर ही अहिल्या के अधरो पर मुस्कान खेलती थी, नेत्रो से उल्लास व्यक्त होता था ।

वह वशिष्ट की निगरानी मे पलने वाले भावी राजा थे न ! सरयू नदी के किनारे, शेप समाज से दूर हो, एक अन्य लोक मे सचरण करनेवाले प्राणियो के मध्य उन्होने पुन चेतना का सचार किया ।

अब तक बाहर घूमने की तथा अन्यत्र कही जाने की इच्छा अहिल्या मे नही थी । सीता के सामीप्य ने उसके मन के भार को दूर किया और उसमे उत्साह का सचार किया ।

उसने राज्याभिषेक के समय अयोध्या आना स्वीकार कर लिया । परतु महल मे घूमते हुए भावना चक्र मे कितनी शक्ति थी ! उसने एक ही सास मे दशरथ के प्राण हर लिये, राम को वन भेज दिया, भारत को दुखाभिभूत कर अश्रुपात करते हुए नदिग्राम मे रहने के लिए विवश कर दिया ।

यह सब कुछ बहुत तीव्रता से हो गया । ऐसा लगा मानो मनुष्य की शक्ति से न बधने वाली किसी अदृश्य शक्ति ने उन्मत आवेश मे पासा फेक कर शतरज की बाजी जीत ली हो ।

२

अहिल्या की इच्छानुसार अयोध्या की बाहरी सीमा मे कुछ हटकर, मनुष्य गध रहित सरयू नदी के किनारे एक झोपडी मे रहते हुए, गौतम धर्म चितन करने लगा। अब गौतम को अहिल्या पर पूर्ण विश्वास था। उसे इद्र की गोद मे पडे हुए देखकर भी उस पर सदेह नही करेगा। वह उसे ऐसी पवित्र नारी समझने लगा। वह ऐसी स्थिति पर पहुच गया कि उसे लगा कि उसकी सहायता के बिना उसका सपूर्ण धर्म-चितन नष्ट-भ्रष्ट हो जायेगा।

अहिल्या ने मन से भी मापे न जा सकने वाले प्रेम भाव से उसे झुका लिया था। उसका चितन करते ही उसका मन तथा अग-प्रत्यग नव विवाहिता के अग-प्रत्यगो के रूप मे प्रफुल्लित हो उठते थे, परतु उसके हृदय पर रखा बोझ दूर नही हुआ। वह इस प्रकार से रहने की इच्छा करने लगी कि कोई उस पर सदेह न कर सके और वह किसी को गौर से देखने का अवसर भी न दे सके। इससे उसके स्वाभाविक व्यवहार मे अतर आ गया। उसे अपने चारो ओर खडे सभी व्यक्ति इद्र के रूप दीख पडते थे। अहिल्या के मन मे भय बस गया। अतीत की वे बाते और क्रीडाए बिलकुल समाप्त हो गयी। सहस्रो बार मन मे दोहराकर, उसका वह कथन ठीक है अथवा नही—यह भली प्रकार सोच कर ही वह कुछ बोलती थी। गौतम द्वारा कहे गये साधारण वाक्यो को सुनकर भी, उसमे कोई गूढार्थ तो नही है, यह सोच-सोच वह व्यथित होती थी।

जीवन उसके लिए नरक-वेदना बन गया था।

उस दिन मरीचि आये थे। एक दिन पूर्व दधीचि ऋषि आये थे। वाराणसी जाते समय मतग ऋषि भी गौतम का कुशल-क्षेम पूछने आये थे। उनके मन मे यद्यपि ममत्व एव स्नेह का भाव था तथापि अहिल्या का शरीर सकोच-वश सिमटा पडा रहा। ऐसा लगता था कि उसके अतिथि-सत्कार मे भी कोई कमी आ जायेगी। साधारण रूप मे जो उसे सिर से पाव तक देखना था, उसे भी वह दोषहीन दृष्टि से देखने मे सकोच का अनुभव करने लगी। वह झोपडी मे जाकर छिप गयी।

गौतम की चिताधारा अब नयी दिशा की ओर मुड गयी। उनका कहना था कि धर्म के बधन मात्र उन्ही के लिए है जो जानबूझ कर उनमे फसता है। आत्म-ज्ञान शून्य होने पर ऐसा दूषित कर्म करना भी पाप नही है, जिससे

सपूर्ण मानव-जाति का नाश हो सकता है। जिस कर्म को हम तल्लीन होकर तथा आत्म-ज्ञान से युक्त होकर करते हैं, वे ही हमे कलकित करते हैं। अपनी टूटी-फूटी झोपडी मे रहते हुए, जिससे उसका नाता औरो ने पुन जोड दिया था, गौतम ने अपनी चिताधारा को नवीन दिशा मे मोड दिया। उसके मन मे अहिल्या का कलकहीन रूप ही बसा हुआ था। उसे लगा कि स्वय उसमे कोई दोषयुक्तता नही है, शाप की अग्नि को प्रज्वलित करनेवाले क्रोध ने उसे कलकित कर दिया है।

सीता और राम समय-समय पर अपने मनोविनोद के लिए रथ पर चढकर उस ओर आते थे। अवतार शिशु (राम) गौतम के मन मे एक आदर्श युवक के रूप मे बस गये। उनकी मुक्त हसी और क्रीडाए, स्वय प्रकाशित दीप के समान, उनके धर्मशास्त्र की व्याख्या करने लगी। उस युवा दपति के मध्य कितना घनिष्ट प्रेम था! उनका प्रेम गौतम को उसके पहले जीवन की याद दिलाता था।

अहिल्या के मन के भार को दूर करने आयी थी—सुदरी सीता। अहिल्या को लगा कि उसकी बाते, उसकी हसी उसके कलक को धो रही है। उसके आने पर ही अहिल्या के अधरो पर मुस्कान खेलती थी, नेत्रो से उल्लास व्यक्त होता था।

वह वशिष्ट की निगरानी मे पलने वाले भावी राजा थे न! सरयू नदी के किनारे, शेष ससार से दूर हो, एक अन्य लोक मे सचरण करनेवाले प्राणियो के मध्य उन्होने पुन चेतना का सचार किया।

अब तक बाहर घूमने की तथा अन्यत्र कही जाने की इच्छा अहिल्या मे नही थी। सीता के सामीप्य ने उसके मन के भार को दूर किया और उसमे उत्साह का सचार किया।

उसने राज्याभिषेक के समय अयोध्या आना स्वीकार कर लिया। परतु महल मे घूमते हुए भावना चक्र मे कितनी शक्ति थी! उसने एक ही सास मे दशरथ के प्राण हर लिये, राम को वन भेज दिया, भारत को दुखाभिभूत कर अश्रुपात करते हुए नदिग्राम मे रहने के लिए विवश कर दिया।

यह सब कुछ बहुत तीव्रता से हो गया। ऐसा लगा मानो मनुष्य की शक्ति मे न बधने वाली किसी अदृश्य शक्ति ने उन्मत आवेश मे पासा फेक कर शतरज की बाजी जीत ली हो।

वशिष्ठ मुनि पर्याप्त सावधान रहे। मानव धर्म की विजय के प्रतीक रूप एक राज्य की स्थापना के लिए वह आखों मे नेत्र डालकर बैठे रहे (जागरूक रहे)। परतु उनका सारा हिसाब-किताब व्यर्थ हो गया। उनकी वह राज्य कल्पना नदिग्राम मे स्थिरता से जगमगाने वाली ज्योति बनकर रह गयी।

सरयू नदी-तट पर स्थित झोपडी पुन आधार-विहीन होकर गिर गयी—ऐसा कहा जाना चाहिए। इस तूफान मे गौतम का धर्म-चिंतन नष्ट हो गया। मन का विश्वास मिट गया, वह विश्वास-शून्य हो गया।

अहिल्या को क्या हुआ? उसका अपार दुख शब्दो मे न समा सकता था। वह कुछ न समझ सकी। वह क्षीण एव दुर्बल हो गयी। राम वन को गये। उनका भाई भी उनके साथ चला गया, सीता जी भी चली गयी। पहले शिला रूप मे होने पर उसका मन जैसे अधकार मे ग्रस्त था, वैसा ही अब भी था। परन्तु इस समय मन के भार को वह न सह सकी।

तडके ही गौतम नदी मे उतरकर जपादि करके कुटिया को लौट गये।

उनके चरणो को पखारने के लिए हाथ मे जल भरा लोटा लिए खडी अहिल्या के अधर कुछ हिले।

वह बोली, "मुझसे यहा नही रहा जाता। हम मिथिला को चलते है।"

"अच्छा चल! शतानद को देखे हुए बहुत दिन हो गये," कहते हुए गौतम बाहर निकल आये।

दोनो मिथिला की ओर चले। दोनो के मन मे दुख का भाव बसा हुआ था। गौतम कुछ रुक गये।

पीछे आती हुई अहिल्या के हाथ को उन्होने पकड लिया। उससे 'मत डर' कहकर चलने लगे।

३

प्रात हो गयी थी। गगा किनारे दोनो चल रहे थे।

कोई नदी के जल मे खडा होकर ऊचे एव स्पष्ट स्वर मे गायत्री का जाप कर रहा था।

जप के समाप्त होने की प्रतीक्षा मे वे दोनो तट से हटकर खडे रहे।

"शतानद ? गौतम ने आवाज लगायी।

"पिताजी माताजी !" कहते हुए अपने हृदय का आनद जताते हुए शतानद ने उनके चरणो पर गिरकर उन्हे प्रणाम किया।

अहिल्या ने मन मे उसका आलिगन किया। उसे लगा कि ऋषियो के समान दाढी-मूछे बढाये हुए उसका बालक शतानद कैसे पराया-सा हो गया है।

पुत्र की तेजस्विता ने गौतम के मन को तृप्ति प्रदान की।

शतानद दोनो को अपनी झोपडी के भीतर ले गया।

उनके श्रम-परिहरण का प्रबध करके वह जनक के धर्म विचार मडप जाने के लिए तैयार हुआ।

गौतम भी उसके साथ चलने के लिए तैयार हुए। पुत्र उन्हे साथ ले जाना चाहता था परतु रक्तपाश से उत्पन्न उसके प्रेम ने उसे यह सोचने को विवश किया कि यह यात्रा तो बहुत लबी है, अन्यथा जो काया युगो तक तपोमग्न रहकर भी क्षीण नही हुई वह क्या इस यात्रा से शिथिल हो जाती ? वह भी उसके पीछे चल पडे। पुत्र ने उनके धर्म सिद्धात के नवीन तत्वो को जानने की इच्छा की।

मिथिला की सडको से होकर जाते हुए गौतम को लगा कि अयोध्या मे उत्पन्न मनोवेदना और दुख यहा भी व्याप्त है। उनका दबा हुआ दीर्घ विश्वास हवा के साथ मिलकर व्यक्त हुआ।

लोग जा रहे है, आ रहे है, कार्य कर रहे है। निष्काम भाव से सभी कार्य किये जा रहे है। उनमे किसी का लगाव नही है, न ही तल्लीनता है।

प्रभु को स्नान कराने के लिए जल भरे घडे को ले जानेवाले हाथी की चाल मे उत्साह नही है। उसके साथ चलनेवाले पुजारी के मुख पर भगवत्कृपा प्राप्ति का उत्साह नही है।

दोनो राजा के विचार मडप मे प्रविष्ट हुए। सत्सग मडप मे अपार जन-समुह उमड रहा था। 'इस बाजार मे शोध कैसे होगा,' चकित हो गौतम ने सोचा परतु उनका ऐसा सोचना गलत था।

जनक की दृष्टि तुरन्त ही इन दोनो पर पडी।

उन्होने दौडकर आकर मुनि को अर्घ्यादि देकर उनका स्वागत किया और उन्हे लेजाकर अपने समीप बैठा लिया।

जनक के मुख पर शोक का भाव विद्यमान था। परतु उनकी बातो मे

किसी प्रकार की शिथिलता नहीं थी। उससे स्पष्ट था कि उनके चित्त ने धैर्य को नहीं खो दिया था।

क्या बोलूं यह सोचकर गौतम कुछ सकुचित हुए।

जनक ने अपनी दाढ़ी पर हाथ फेरते हुए धीरे से कहा, "वशिष्ठ ने जिस राज्य का निर्माण किया उसमें भावना को कोई स्थान नहीं दिया।"

जनक के इस वाक्य में द्वेष की गंध थी।

गौतम बोले, "भावना के दबाव से ही तो सत्य उत्पन्न होगा।"

जनक ने उत्तर दिया, "भावना को अपने उपयुक्त न बना सकने पर दुख भी उत्पन्न होगा। राज्य बनाने की इच्छा करने पर उसे भी स्थान देना चाहिए अन्यथा राज्य ही न रहेगा।"

"आपका?" गौतम ने सदेहयुक्त हो पूछा।

जनक ने कहा, "मैं राज्य नहीं कर रहा हू, शासन को समझने की चेष्टा कर रहा हू।"

दोनों कुछ देर मौन रहे।

"आपका धर्म-चिंतन किस प्रकार का है," जनक ने विनयपूर्वक पूछा।

"अभी तक उसे आरभ नहीं किया। अब उसे जानने की चेष्टा करूगा। अनेकों समस्याएं इन्द्रियों को अपने जाल में फसा रही हैं," कहते हुए गौतम उठ गये।

वह अगले दिन जनक के विचार मंडप को नहीं गये। उनके मस्तिष्क में अनेकों प्रश्न हिमालय का रूप धारण किये खड़े थे। वह अब एकांत चाहने लगे। परंतु उसकी खोज में नहीं निकले कि कहीं अहिल्या का मन न टूट जाय।

अगले दिन जनक ने उत्कठापूर्वक पूछा, "मुनिवर कहां है?"

शतानंद ने उत्तर दिया, "वह कुटिया के सामने स्थित अशोक वृक्ष के नीचे अपना समय व्यतीत कर रहे हैं।"

"ध्यान में?"

"नहीं, चिंता में।"

जनक ने मन ही मन धीरे से कहा, "अभी उन्हें शांति नहीं हुई है।"

अहिल्या की स्नान में विशेष रुचि थी। वहां गंगा किनारे शांति होगी, ऐसा सोचकर वह अकेली, उषाकाल में ही, घड़ा लेकर चल देती थी।

दो एक दिन अकेले जाकर, निश्चित होकर उसने अपने मन की इच्छा रूपी लताओ को उनकी इच्छानुसार फैलने दिया। इससे उसे मन के भार के दूर होनेकी-सी तृप्ति होती थी। जिससे युक्त हो स्नान कर, नाना क्रीडाए करके वह जल भर कर ले आती थी।

परतु ऐसा अधिक समय तक नही हुआ।

वह नहाकर नीची दृष्टि किये हुए, निश्चित हो लौट रही थी।

सामने नूपुर-ध्वनि सुन पडी। कई ऋषि-पत्निया थी। वे भी स्नान करने के लिए आ रही थी। उसे देखते ही ऐसे दूर भाग गयी मानो उन्होने किसी चाडाली को देख लिया हो। वे अत्यत चकित दृष्टि से उसे देखकर वहा से चली गयी।

दूर यह शब्द सुन पडे, "वही अहिल्या है।" इन शब्दो ने उसे, उसी के अतर मे उत्पन्न शाप की अग्नि से अधिक जलाया।

उसका मन उस क्षण जलते हुए वन के समान दहकने लगा। उसकी चिताधारा बदल गयी। "हे देव! शाप का तो विमोचन हो गया, पाप का विमोचन नही होगा?" ऐसा सोच वह फूट-फूट कर रो पडी।

उस दिन उसने यत्र चालित प्रतिमा के समान गौतम और शतानद को भोजन कराया। "पुत्र भी पराया हो गया है, पराये सभी विरोधी हो गये है, अब यहा रहने से क्या लाभ?" इसी प्रश्न को अहिल्या बारबार मन मे दोहराती थी।

गौतम बीच-बीच मे होश आने पर एक कौर मुख मे डाल लेते थे और पुन चितामग्न हो जाते थे।

उनकी आत्म-परवशता से उत्पन्न वेदना से शतानद की भी सास घुटने लगी।

उनकी वेदना को कुछ हल्का करने के लिए शतानद बोला, "अत्रि मुनि जनक से मिलने आये थे। वह अगस्त्य से मिलकर आ रहे है और मेरु पर्वत की ओर जा रहे है। राम और सीता ने अगस्त्य ऋषि के दर्शन किये थे। उन दोनो से अगस्त्य ने कहा था "पचवटी अच्छा स्थान है। तुम वही रहो।" लगता है कि वह अब वही पर है।

अहिल्या ने धीरे से पूछा, "हम भी तीर्थ यात्रा के लिए चले?"

"चलें," कहते हुए हाथ झाडकर गौतम उठ खडे हुए।

शतानद ने पूछा, "अभी ?"

"क्यो अभी चलने से क्या होगा ?" पूछते हुए गौतम ने कोने मे रखे हुए अपने दड और कमडल को उठाया और द्वार की ओर चल पडे।

अहिल्या भी उनके पीछे-पीछे चल पडी।

शतानद का मन सतप्त हो उठा।

४

सध्या हो गयी थी। उनकी आकृति धूमिल हो गयी। दोनो सरयू नदी के किनारे से होकर अयोध्या जा रहे थे।

चौदह वर्ष जाकर काल के अथाह प्रवाह मे समा गये थे। कोई ऐसा मुनि-पुगव नही था, कोई ऐसा तीर्थ-स्थान नही था जिसे उन्होने न देखा हो, फिर भी उनको शाति नही मिली।

शकराचार्य का सिद्धान्त रूप विराट मदिर जिस प्रकार बौद्धिक शक्तिहीन व्यक्ति की पहुच से परे है, उसी प्रकार जो हिमालय शारीरिक शक्तिहीन व्यक्ति की पहुच से परे है, उसके दर्शन उन्होने उसके हिमाच्छादित शिखरो पर खडे होकर किये थे।

आत्म-विश्वास हीनता से उत्पन्न अपार दुख के साकार रूप मरुभूमि को पार किया।

उनके मन के समान भीतर ही भीतर जलते हुए तथा धुए से आच्छादित होकर राख और मल को उगलने वाले ज्वालामुखियो को भी उन्होने आगे बढकर पार किया।

उनके मन के समान जिस समुद्र मे सतत लहरो की हलचल थी उसके किनारे तक पहुच कर, हारकर वे लौट गये।

अपने जीवन के समान ऊचे-नीचे अनेक मार्गो से होकर वे चलते रहे।

"अब कुछ ही दिनो मे राम लौट आयेगे। तब हमारे जीवन की प्रभात बेला आयेगी—यही आशा उन्हे आगे खीच रही थी।

वे उस स्थान पर पहुचे जहा चौदह वर्ष पूर्व उनके द्वारा निर्मित कुटिया खडहर के रूप मे खडी थी।

रातो रात गौतम ने उसकी मरम्मत कर उसे अपने रहने योग्य बनाया।

काम के समाप्त होने पर आकाश मे बाल-सूर्य मुस्करा रहा था।

दोनो सरयू मे स्नान करके लौटे।

अहिल्या पति-सेवा मे लग गयी। दोनो के मन राम-सीता के आने के दिन की प्रतीक्षा कर रहे थे। परतु समय के अतराल को मन के अतिरिक्त और किसी की सहायता से पार किया जा सकता है ?

एक दिन तड़के ही अहिल्या स्नान के लिए गयी हुई थी।

उससे पूर्व कोई विधवा स्नान करके लौट रही थी। अहिल्या उसे पहचान न सकी। सामने आती हुई उस स्त्री ने उसे पहचान लिया। उसने दौड़कर आकर अहिल्या के चरणो पर गिरकर उसे साष्टाग प्रणाम किया।

अरे यह तो देवी कैकेयी है! यह एकाकिनी है, स्वजनो परिजनो से वियुक्त सन्यासिनी बन गयी है!

घड़े को नीचे रखकर उसने दोनो हाथो से उसे उठाया। कैकेयी की क्रियाए उसकी समझ मे न आयी।

कैकेयी बोली, "धर्म के आवेश मे आकर भरत ने मुझे अपने मन मे स्थान देने से इकार कर दिया।"

उसकी वाणी मे क्रोध नही व्यक्त हुआ, अहकार नही प्रकट हुआ। मैंने जिस कैकेयी के विषय मे सोचा था, और जिस कैकेयी को मै देख रही हू, दोनो भिन्न-भिन्न है। अहिल्या ने आधारहीन होकर तड़पती हुई कैकेयी के मन को जान लिया।

दोनो एक दूसरे को हाथो मे जकड़े हुए सरयू नदी की ओर चल दी।

अहिल्या ने पूछा, "भरत की इस वैराग्य भावना का कारण क्या है ?" उसके अधरो के कोनो मे सहानुभूति से उत्पन्न मुस्कराहट की एक रेखा उदित होकर मिट गयी।

कैकेयी ने पूछा, "बच्चे के द्वारा लगायी गयी अग्नि यदि शहर को जला दे तो क्या बच्चे को मार डालू ?"

अहिल्या ने सोचा कि बच्चे और अग्नि के बीच एक मेड़ बाधना आवश्यक है। उसने प्रकट रूप से पूछा, "परतु जो जल गया वह तो जल गया है न ?"

"जले हुए स्थान को साफ किये बिना राख की ढेरी के चारो ओर बैठ जाना क्या ठीक है ?" कैकेयी ने प्रश्न किया।

अहिल्या ने कहा, "राख को दूर करनेवाला दो एक दिन मे आ जायेगा।"

कैकेयी ने 'हां' कहकर उसे स्वीकार किया। उसकी वाणी में परम संतोष व्यक्त हुआ। राम की प्रतीक्षा भरत नहीं, कैकेयी कर रही थी।

अगले दिन जब वह अहिल्या से मिली उस समय उसका मुख तेजहीन था और मन भी शिथिल हो चुका था।

कैकेयी ने कहा, "गुप्तचरों को चारों दिशाओं में भेजकर देख लिया। राम का कुछ पता न लगा। अब से चालीस घंटे के अंदर ही अंदर वे यहां कैसे पहुंच जायेंगे। भरत प्रायश्चित करने जा रहा है। वह अग्निकुंड बनाने की तैयारी कर रहा है।'

उसकी बातों से लगा कि वह भरत के अग्नि प्रवेश को उस पर लगाये गये राज्य-मोह के दोष के परिहार का उचित उपाय समझ रही है।

कुछ देर बाद कैकेयी बोली, "मैं भी अग्नि में गिर पड़ूंगी परंतु एकांत में और चुपचाप।' इससे उसके मन की विरक्ति व्यक्त हुई।

चौदह वर्ष बाद पुन वही भावना-चक्र चल पड़ा। अयोध्या पर लगा शाप क्या दूर नहीं हुआ?

अहिल्या का मन दिशाहीन हो भटकने लगा। उसे संदेह हुआ कि यह उसके पाप की छाया ही है।

अहिल्या ने पूछा "वशिष्ठ मुनि से कहकर उसे ऐसा करने से नहीं रोका जा सकता है?"

कैकेयी बोली, "भरत धर्म की प्राचीनता मानता है, वशिष्ठ की प्राचीनता नहीं मानेगा।"

अहिल्या आप से बोली, 'जो धर्म मनुष्य के आधीन नहीं है, वह मानव जाति का शत्रु है।"

उसके मन में एक क्षीण आशा थी कि भरत सम्भवत उसके पति का कहा मान लेगा, साथ ही यह भय भी था कि अयोध्या में कहीं फिर से दुखों का चक्र न घूमने लग जाय।

गौतम ऐसा करने को मान गये परन्तु उनकी बातों का कोई लाभ न हुआ।

अग्नि देवता भरत की बलि नहीं लेना चाहते थे। हनुमान आये और अग्नि बुझ गया। दिशाओं का शोक अपार आनंद में परिवर्तित हो गया। जन-चक्र चलने लगा।

चौदह वर्ष बाद अब मेरा स्वप्न पूर्ण होगा—यह सोच वशिष्ठ प्रसन्न हुए। मूछो की ओट मे उनकी मुस्कान व्यक्त हुई।

'इस आनदमय वातावरण मे मेरा क्या काम,' यह सोचकर गौतम लौट गये।

सीता और राम उसे देखने आयेगे, यह सोचकर अहिल्या अत्यत प्रसन्न हुई। स्वागत सत्कार का कार्य पूर्ण होने पर वे अपने परिवार वालो से अलग होकर वहा आये।

रथ से उतरते हुए राम के भाल पर अनुभव की रेखाए खिची हुई थी। सीता की शोभा भी अनुभव पाकर द्विगुणित हो गयी थी। दोनो की हसी मोक्ष की स्थिति के समान उन्मत्त कर देने वाली थी।

राम को लेकर गौतम वाहर घूमने चल दिया।

अपने गर्भ मे पले शिशु के समान अहिल्या सीता को वडे प्रेम से अदर ले गयी। दोनो हसते हुए बैठे बाते कर रही थी।

रावण द्वारा हरण, दुख, उससे मुक्ति आदि वृतात को सीता ने तनिक भी विचिलित हुए विना कह सुनाया। राम से मिलने के उपरात अब दुख का उसके पास स्थान कहा था?

उसने अग्नि प्रवेश की बात कही। उसे सुनकर अहिल्या काप उठी।

"उन्होने ऐसा करने को कहा? तुमने क्यो किया?" उसने पूछा।

'उन्होने कहा, मैंने किया," सीता ने शाति पूर्वक उत्तर दिया।

"उसने कहा!" अहिल्या चीख पडी। उसके तन-मन मे सती कण्णकि[1] का आवेश ताडव नृत्य कर रहा था।

अहिल्या के लिए एक नीति, उसके लिए दूसरी नीति?

यह धोखा है? गौतम का शाप क्या जन्म के साथ उत्पन्न हुआ था?

दोनो काफी देर तक मौन रही।

"ससार के सम्मुख प्रमाणित करना था न!" कहकर सीता धीरे से हसी।

अहिल्या बोली, "मन का इसे जानना पर्याप्त नही है! सत्य को ससार के सम्मुख सिद्ध किया जा सकता है?" उसके शब्दो मे कठोरता थी।

"सिद्ध करने से क्या वह सत्य हो जायेगा? यदि वह हृदय को न छूये तो? अच्छा रहने दो, ससार क्या है?" अहिल्या ने पूछा।

बाहर शब्दो की ध्वनि सुन पडी। वे लौट चुके थे।

---

[1]तमिल महाकाव्य शिलप्पदिकारम की नायिका

राजमहल को जाने के लिए सीता बाहर आयी, अहिल्या नहीं आयी।

उसने राम को दुखाया, पैरो पर पडी धूल ने उसे दुखाया।

रथ चल पडा। चक्रो के चलने से उत्पन्न ध्वनि भी समाप्त हो गयी।

गौतम उसी प्रकार खडे-खडे चिन्ता-लीन हो गया। लक्ष्यहीन हो भटकने वाली त्रिशकु की मडली उसे दीख पडी।

एक नवीन विचार उसकी मन रूपी गुफा मे बिजली के समान उदित होकर मिट गया। मन के भार को दूर कर, प्राचीन स्नेह-सबध को जाग्रत करने के लिए एक शिशु को पा लू? उसकी कोमल उगलिया उसके मन के भार को दूर नही कर देगी?

वह अदर गया।

अहिल्या सज्ञाहीनता की स्थिति मे पहुच गयी। उसके मानस पट पर पुन इद्र का नाटक, वह इद्र का नाटक जिसे कि उसे भूल जाना चाहिए, हो रहा था।

गौतम ने उस पर हाथ फेरा।

उसे गौतम मे इद्र का रूप दीख पडा। उसका हृदय पत्थर बन गया। कैसी शान्ति थी!

गौतम के हाथो मे पडी थी एक पत्थर की प्रतिमा। अहिल्या पुनः प्रस्तर-प्रतिमा बन गयी।

उसकी मनोवेदना मिट गयी।

निर्जन एव कोहरे मे आच्छादित मार्ग मे होकर एकाकी मानवी आकृति कैलाश पर्वत की ओर बढती जा रही है। उसके पैरो मे विरक्ति की दृढता विद्यमान थी।

वह था गौतम।

वह सन्यासी बन गया था।

तनिक-सा प्रकाश

हे ईश्वर ! मुझे कभी लगता है कि उसकी व्यथा मिट गयी। कभी-कभी यह भी सोचकर मेरा दिल काप उठता है कि हाय ! जानबूझकर मैं उसे मृत्यु की गोद मे छोड आया हू।

मैं उसके लिए क्या कर सका ? उसने तो कुछ करने का अवकाश ही नही दिया।

उस घर से बाहर निकल आने के बाद मे कई बार वहा गया परतु उसे न देख सका।

मे कल वहा गया था। पता लगा कि हृदय की गति बद होने से मर गयी।

हृदय की गति बद हो गयी ?

उस के हृदय म न जाने और कौन-कौन सी रहस्यमयी बाते भरी पडी थी जिन्होने मिलकर उसके हृदय की गति को रोक दिया।

मुझे लगता है कि उस रात उसने मुझे कुछ बाते ही बतायी थी।

अत मे वह बोली "बस इतना काफी है। मैं और खोलकर नही कह सकती।'

उसने जो कुछ कहा उन बातो मे ही मेरे हृदय को ऐसी वेदना हुई, जो कि कभी भी मिट नही सकती।

हा यही सोचकर वह चुप हो गयी थी।

अब क्या हुआ ? यही कि उसने मेरे मार्ग मे जो बाधा खडी की थी उसके साथ ही वह भी मेरे मार्ग से दूर हो गयी।

पिछले साल मैं मद्रास मे एक घर के बाहर वाले कमरे मे ठहरा था। उस घर मे एक ही परिवार रहता था। उनके कहे अनुसार वे पति-पत्नी थे। पति किसी बेंक मे काम करता था। दिनभर वह घर से बाहर रहता, रात को भी वह नाम मात्र के लिए घर पर रहता था। खाना खाकर चला जाता था और रात के दो बजे आकर दरवाजा खटखटाता था।

उस घर मे अकेले रहना मुझे कष्टकर लगा। मैं लेखक था। दिन-रात घर मे पडा रहता था। सुबह और शाम कुछ देर के लिए बाहर चला जाता था।

मेरे कुछ कहने से पहले ही एक दिन वह आदमी बोला, "श्रीमन आप यहां अकेले हैं यह सोचकर घबराने की आवश्यकता नहीं है। मैं संदेह करने वाला जीव नहीं हूं। आप तो सदा अपने काम में लगे रहते हैं। मनुष्य के स्वभाव को जानने में कितनी देर लगती है? आपके जैसे एक आदमी के घर पर रहने से मुझे हमेशा घर से बाहर चले जाने में सहायता मिलती है।

"आपके जैसे" कहने लायक उसने मुझमें कौनसा गुण देखा।

वह स्त्री—सावित्री मुझे कभी भी दिखायी नहीं दी। बड़े साहस के साथ सिर उठाकर किसी स्त्री को देखने की आदत मुझमें प्राय नहीं है। अत कुछ समय तक उनके साथ रहने के बाद भी उसके स्वर से ही परिचित हो सका।

पुरुष का नाम था गोपाल अय्यर। उसके दफतर जाने के पूर्व ही मैं आंगन के नल पर जाकर अपना काम कर लेता था। उसके बाद उस ओर तक नहीं जाता था। उसके बाहर जाते ही वह बाहरी कमरे के दरवाजे को अपनी ओर से बंद कर सिटकनी लगा लेती थी। सावित्री किसी से भी व्यर्थ की बहस नहीं करती थी। वह बाहर भी नहीं निकलती थी।

इस प्रकार एक सप्ताह बीता। आधी नींद में मुझे उसका रात को दो बजे आकर दरवाजा खटखटाना, सावित्री का उठकर दरवाजा खोलना, फिर दरवाजे की सिटकनी लगाकर उसके साथ घर के भीतर जाना, आदि बातों का ज्ञान होता था। एक दिन उसने आकर दरवाजा खटखटाया। उस समय वह गहरी नींद में थी। उसने चार-पांच बार दरवाजा खटखटाया। मैंने जाकर दरवाजा खोला।

"अरे आपको आकर दरवाजा खोलना पड़ा! माफ कीजिए!" कहकर वह अंदर चला गया। मैंने अपने कमरे में जाकर दरवाजे की कुंडी लगायी, फिर लेट गया।

अंदर जाकर उसने अपनी सोती हुई पत्नी से न जाने क्या कहा। बाद में पता लगा कि उसने लात मारी थी और वह झटके के साथ उठकर बैठ गयी थी। मैंने उसे कहते हुए, धीरे से यह कहते सुना "क्या आप बहुत देर तक दरवाजा खटखटाते रहे? दोपहर भर सिर में दर्द रहा। अनजाने ही गहरी नींद — —

'हां तुझे कैसे पता लगता। अभी तुझे सब कुछ बताना है,' कहकर उसने

उसे मारा। मारने की आवाज मुझे सुनायी दी। मेरी समझ मे नही आया कि मे क्या करू। मैं यह सोचकर चुप हो रहा कि पति-पत्नी के झगडे मे दूसरे आदमी को दखल नही देना चाहिए।

उसके बाद रात भर कोई बात नही हुई, परतु मै जान गया कि वह रातभर नही सोयी क्योकि मैं भी नही सो सका था।

अगले दिन रात को वह जागती रही और उसने आकर दरवाजा खोला परन्तु उस दिन भी उसे मार पडी। पहले दिन की तरह वह चुप नही रही।

"मुझे क्यो इस तरह से मार रहे हैं? मैं आपको किसी काम के लिए मना करती हू?"

"अच्छा तो तेरे भी जुबान है?"

"कितने दिन तक मै "

"चुप रही! मुह खोलेगी तो दातो को उखाड दूगा।"

"उखाड दीजिये।"

गाल पर जोर से एक चपत लगाने की आवाज सुनायी दी। अनजाने ही मै उठ गया और कमरे के भीतरी दरवाजे के पास जाकर बोला, "श्रीमन दरवाजा खोलिये।"

तब तक मुझसे हस-हसकर बाते करने वाला वह व्यक्ति भीतर से जानवर की तरह गरजा, "किसलिए?"

'आप खोलिए फिर बताऊगा।"

"श्रीमन मै ऐसा नही कर सकता।"

"दरवाजा नहीं खोलेगे तो मै उसे तोड डालूगा।"

उसने दरवाजा खोला और मेरे कमरे मे आकर फिर से दरवाजा बद करके मुझसे पूछा, "क्या बात है श्रीमन्?"

"मुझे लगा कि आप अपनी पत्नी को पीट रहे है।"

"ऐसा हो सकता है परन्तु आपको इसमे क्या?"

"मै आपको ऐसा नही करने दूगा।'

"क्यो क्या करेगे?"

"मै पुलिस को खबर दे दूगा। इससे पहले मैं ही आपको जबरदस्ती ऐसा करने से रोकूगा।"

उसके मुख पर दुख और भय के भाव दिखाई पडे। वह मुझे कुछ देर

तक घूरता रहा। मुझे लगा कि मेरे द्वारा ये कहे गए शब्दों को सुनकर वह घबरा गया है। मैं जान गया कि वह कायर है अन्यथा वह अपनी पत्नी को इस प्रकार क्यों पीटता?

"आप बहुत सीधे हैं, किसी के कामों में दखल नहीं देंगे, यही सोचकर मैंने आपको घर के बाहरी कमरे में रहने दिया। यदि आप व्यर्थ ही मेरे मामलों में दखल देंगे तो आपको सुबह ही यह जगह खाली कर देनी पड़ेगी।"

"कमरा खाली करने की बात बाद में देखी जायेगी। आप सुबह होने तक अंदर नहीं जायेंगे।"

"मुझे ऐसा आदेश देनेवाला तू कौन है?"

"मैं कोई भी हूँ इससे क्या? आपको इस समय मेरे कहे अनुसार सब कुछ करना होगा। मेरा कहा नहीं माना तो अच्छा न होगा।"

"आप मुझे डरा रहे हैं?"

"केवल डरा ही नहीं रहा हूँ—करके भी दिखा दूँगा। आइये मेरे कमरे में। वहीं हम दोनों सो जायेंगे। अंदर की ओर मुँह करके मैं बोला, "माता जी अंदर से दरवाजे की कुंडी लगा लीजिए।"

"वह ऐसा कर सकती है?"

"मेरे यहाँ रहते तक आप उस स्त्री को अंगुली से भी नहीं छू सकते।"

तभी दरवाजा खोलकर सावित्री अंदर आयी। वह मुझसे अब तक नहीं बोलती थी।

मुझसे बोली, "कृपा करके आप हमारे मामले में दखल मत दीजिए" और फिर अपने पति से बोली, "आइए अंदर आइए"।

वह चिल्ला उठा, 'अरी तू चली जा! तुझे यहाँ किसने बुलाया?'

मैंने उस स्त्री से कहा 'माँ जी, यह मामला न आपके बस का है और न मेरे बस का। मैं इस मामले में दखल दिये बिना नहीं रह सकता। पुलिस तो [illegible] आपको बेकार की परेशानी उठानी पड़ेगी। यही सोचकर मैं इस मामले में पड़ गया हूँ।"

वह बोली 'आपका हमारी बात का सुनना और हमारे मामले में पड़ना भी ठीक नहीं होगा।

मैं बोला, अच्छा तो दरवाजे को खुला रहने दीजिए। आप अंदर जाकर सो जाइए। मैं बाहर का दरवाजा बंद करके आता हूँ फिर हम दोनों यहीं सो

जायेंगे।'

'मैं यहा नही सो सकता। मुझे बाहर जाना है। कुछ काम है," कहकर वह आदमी बाहर जाने का प्रयत्न करने लगा।

कैसा विचित्र आदमी था! उसका व्यवहार मेरी समझ मे नही आया।

सावित्री ने अदर आकर दरवाजे की चिटखनी लगा ली। वह बाहर चला गया। मै बाहर का दरवाजा बद करके अपने कमरे मे आकर लेट गया।

मुझे नीद नही आयी। मेरी आखो के सामने सावित्री का रूप था। युवावस्था की शोभा से युक्त उस युवती के हृदय मे गहन वेदना थी। वह वेदना वर्षा के जल के समान उसके पूरे शरीर पर फैली हुई दिखायी दी। वह लगभग अठारह साल की थी। उसका गौर वर्ण आखो को सुख देनेवाला था। उसके होठ आम की लाल वर्ण की कोपलो के समान थे। उसे मैंने पहली बार उस बिजली के प्रकाश मे देखा था। हरे रग का प्रकाश जैसे आखो को एक शीतलता प्रदान करता है, ऐसा ही एक शीतल प्रकाश उसके शरीर से निकल रहा था।

"ऐसी युवती को वह आदमी इस तरह ।"

कुंडी खोलने की आवाज सुनायी दी।

मैं झटपट उठकर बिस्तर पर बैठ गया। मुझे लगा कि वह मेरे कमरे के द्वार पर आकर खडी हो गयी है। मैंने तुरत उठकर बत्ती जलायी।

वह बोली, "नही, बत्ती मत जलाइए। उसे बुझा दीजिए।"

तुरत मैंने उसे बुझा दिया और आकर बिस्तर पर बैठ गया। वह मेरे पैरो के पास आकर बैठ गयी। 'पति एक प्रकार है और पत्नी दूसरे प्रकार की' यह सोचकर मैं चकित हुआ।

"आप यह सोचकर चिंतित मत होइए कि मैंने इस अधेरे मे अकेले ही आपके पास आकर बाते करने का साहस किया है। न जाने क्यो मुझे लगा कि आप मुझसे इस कारण घृणा नही करेंगे। इसी से मै यहा आयी हू।"

"अम्मा "

"मेरा नाम सावित्री है।"

"आप यहा इस आदमी के पास क्यो रह रही है? मायके क्यो नही चली जाती? इस आदमी के पास न रहने से आपका क्या बिगड जायेगा?"

"समाज ने माता-पिता के पास रहने की अवधि निश्चित की है। इसके

साड़ी और ब्लाऊज़ों में भी ऐसी कोई किस्म नहीं है जिसे मैंने न पहना हो। खाना? मुझे उसमें रुचि नहीं। अब और क्या रह गया? शारीरिक सुख—वह मुझे आज तक कभी नहीं मिला।"

"इसका तात्पर्य?"

"मेरे पति ने मेरा उपभोग कर मेरा सत्यानाश कर डाला। मुझे कभी सुख न मिला।"

"तुम सुख किसे कहती हो?"

"मैं अपने दिल की बातें कहाँ तक खोलकर कहूँ, इसकी भी तो एक सीमा होगी? आप मुझे उससे भी आगे बढ़ने के लिए कह रहे हैं।"

"तुम्हारे पति ने तुम्हें क्यों ..."

"इसलिए कि मेरे पति मेरे शरीर से ऊब गये। उन्होंने धन देकर दूसरी स्त्री को खरीद लिया है।"

"सावित्री! तुम साहसी होकर एक काम कर सकती हो।"

"मैं सब कुछ करने के लिए तैयार हूँ परन्तु कोई लाभ नहीं। मैं बस कुछ समय के लिए आपको सन्तुष्ट कर सकती हूँ।"

"मैं तुम्हें सन्तुष्ट करने की चेष्टा करूँगा।"

"आप व्यर्थ ही अपने आपको धोखा दे रहे हैं। आप मेरे रूप पर मोहित हो रहे हैं। अपनी इच्छा पूरी करने के लिए ही आप कह रहे हैं कि आप मुझे सुख देंगे।"

"मैं कुछ भी कहूँ तब भी ..."

"कुछ भी कहने की आवश्यकता नहीं है। अब बत्ती जलाइए।"

मैंने उठकर बत्ती जलायी।

"मैं जाकर सो जाऊँ?"

"क्यों, नींद आ रही है?"

"नींद? इस समय नहीं आ रही।"

"तो फिर कुछ देर ठहर जाओ।"

"आपकी नींद खराब करने के लिए?"

"सावित्री!"

"आप कुछ मत कहिए।"

"मुझे विश्वास है कि जो कुछ तुम कह रही हो वह सब ठीक है।"

"सच !" कहकर वह मेरे पास आकर बैठ गयी।

"झूठ बोलने पर तू भट मुझे • "

"हे ईश्वर ! इस निर्जीव प्राणी को थोडी सी शाति मिली है।"

"सावित्री ! तुम्हारे कारण मेरे विचार पूर्णरूप से बदल गये है।"

"इन बातो को अभी रहने दो। यह रहस्य हम दोनो के बीच ही रहे। मेरे मर जाने के बाद चाहे तो किसी और व्यक्ति से कह दीजिये।"

"ऐसा क्यो कह रही हो ?"

"अब यह शरीर मेरे इस दुख को नही सह सकता है। हा, न जाने क्यो मुझे एक प्रकार की शाति मिल रही है।"

"मैंने कहा था न !" कहते हुए मैं, बेहोश-सी होकर गिरती हुई उस स्त्री, के पास पहुचा और अनजाने ही उसे अपने कधे से लगा लिया।

वह कुछ नही बोली और न ही उसने कोई चेष्टा की। वह आखे मूदे हुए कुछ देर तक उसी दशा मे पडी रही।

यद्यपि मैं इतने महिनो के बाद, बडे शात मन से इस घटना का वर्णन कर रहा हू, तथापि मेरी इच्छा नही है कि उसे कुछ सजा-सवारकर कहू। एक स्त्री ने मन खोलकर जो कुछ कहा उसे मैंने ज्यो का त्यो लिख डाला। उस वर्णन के अत मे मैं एक झूठी बात नही लिख सका।

मैंने धीरे से उसे बिस्तर पर लिटा दिया हा अपने बिस्तर पर ! तब भी वह कुछ नही बोली, उसके खुले हुए होठो मे गति नही थी। इतने रहस्यो को एक साथ प्रकट कर देने के कारण मानो उसके होठ थक गये थे।

सहसा आखें मूदे हुए वह करुण स्वर मे चीख पडी, "हाय मा ! बस करो।"

"सावित्री क्या हुआ ?" पूछते हुए मैंने झुककर अपना मुख उसके मुख से सटा लिया।

"बस !"

"सावित्री, बत्ती . "

वह सहसा उठ बैठी।

"हा बत्ती बुझाकर सो जाइये। कुछ देर के लिए जो प्रकाश था वह काफी है।" कहती हुई वह उठ खडी हुई।

"सावित्री ! मैं तुम्हारी बात नही समझ पा रहा हू।"

"अब मै और खोलकर नही कह सकती । मै जाती हू । कल आप अपने रहने के लिए और कमरा ढूढ लीजिये ।"

"क्यो, पर क्यो ? मैने कौन सी गलती की है ?"

"आपने कोई गलती नही की । अब हम दोनो को मिलकर इस घर मे नही रहना चाहिए । ऐसा करना खतरनाक है" कहकर सावित्री ने मुझे देखा और स्वय बत्ती बुझाकर सीधे अदर जाकर दरवाजा बद कर लिया ।

मेरे हृदय मे जो दीपक थोडी देर के लिए जला था वह सहसा बुझ गया ।

"बस काफी है ।"

"उसने ऐसा किसके लिए कहा ?"

अपने जीवन के लिए, अपने दुखो के लिए, मेरे सात्वना भरे शब्दो के लिए अथवा इस तनिक-से प्रकाश मे ?

पैसे बच गये !

चार पांच घरों के बाद की एक गली में से कुत्ते के रोने की आवाज आयी। रात के नौ बजे के बाद का समय था। अरुणाचल मुदलियार को घेर कर खड़े हुए सभी व्यक्ति कुत्ते के रोने की आवाज को सुनकर कांप उठे। कमरे के मंद प्रकाश में सभी ने एक दूसरे की ओर देखा। बाहर बरामदे में, अंधेरे में बैठे हुए लोग और घर के भीतर हाल में एकत्र स्त्रियां, जो कि बड़ी कठिनाई से मौन साधे हुई थीं, सभी घबराकर उठ खड़े हुए।

बरामदे में बैठा हुआ एक व्यक्ति कुत्ते को भगाने के लिए उठा।

अरुणाचल मुदलियार जिस कमरे में लेटे हुए थे उस कमरे की खिड़कियों को उनके छोटे लड़के जगदीशन ने जल्दी-जल्दी बंद करने की चेष्टा की। मुदलियार ने बड़ी कठिनाई से सिर घुमाकर हाथ से कुछ इशारा किया। बड़ा लड़का वैद्यलिंगम और उनका साला कंदसामी दोनों वृद्ध मुदलियार के पास आ खड़े हुए, वैद्यलिंगम ने पूछा, "पिताजी क्या चाहिए ?"

वृद्ध ने पूछा, "वह खिड़कियों को क्यों बंद कर रहा है ?" यद्यपि वृद्ध का स्वर अत्यंत धीमा था तथापि वह जगदीशन के कानों तक पहुंच गया। वह बोला, "ठंडी-ठंडी हवा चल रही है।" वृद्ध ने कहा, "कोई बात नहीं, उन्हें बंद मत कर।' इस पर जगदीशन ने पहले से बंद एक दरवाजे को भी खोल दिया।

जगदीशन चाहता था कि वृद्ध, कुत्ते के रोने की आवाज को, न सुन सकें परंतु वह जान गया कि उन्होंने उसे सुन लिया है। कमरे में खड़े हुए सभी व्यक्तियों ने चिंता और भय के साथ उन्हें देखा। वृद्ध ने एक नयी थकान से ग्रस्त होकर आंखें मूंद लीं।

पुनः कुत्ते के रोने की आवाज आयी। दूसरे ही क्षण अपने शरीर पर आकर लगे पत्थर के आघात से उत्पन्न वेदना को न सह सकने के कारण कुत्ता और जोर से चीखता हुआ भाग गया।

अरुणाचल मुदलियार की आंखें अब भी बंद थीं। उनके मुख पर मृत्युभय से उत्पन्न वेदना का भाव छा गया था। उनके मन में जो आशा और विश्वास का भाव धीरे-धीरे उदित हो रहा था उसे कुत्ते के रोने की आवाज ने सदा के

लिये दवा दिया । वह मन ही मन कह रहे थे, "प्रातःकाल मद्रास के अत्यधिक प्रसिद्ध डाक्टर आयेंगे । वह अवश्य ही मेरे जीने की अवधि को बढ़ा देंगे । परतु अब उनका मन डाक्टर के आने से पहले उनके पास आते हुए यमराज के विषय मे सोचने लगा । उनके मन मे रह-रहकर यही विचार घूम रहे थे "अब विश्वास को कोई स्थान नही है, अब विश्वास को कोई स्थान नही है ।"

मुदलियार को मद्रास से गाव आये हुए एक महीना हो गया था । मद्रास मे रहते समय ही उनका स्वास्थ्य बिगड गया था । उनकी कार्य करने की शक्ति जो कि किसी समय असीम प्रतीत होती थी, अब क्षीण होती हुई दिखायी दी । वह अक्सर थककर बैठने लगे । स्वय उन्हे यह सभी बाते नयी लगी ।

बालो के सफेद होने का सबध शारीरिक दशा से है परतु वृद्धावस्था का सबध मन से है । हमारे सोचने विचारने की रीति ही हमारी अवस्था की परिचायक है । जब तक मन युवा है तब तक व्यक्ति वृद्धावस्था को नही पहुच सकता है । आदि बाते उन्होने कही पढी थी । इन्ही बातो को उन्होने अपने जीवन मे उतार लिया था । वह सदा मन ही मन कहते थे, "आयु के बढने के साथ-साथ मेरे शरीर मे परिवर्तन अवश्य होगे परतु मेरे हृदय मे वृद्धावस्था को कोई स्थान नही है ।

ऐसे दर्शन के चिन्तन-प्रवाह मे जब बाधाए आने लगी तो वह स्वाभाविक

चारो ओर बहते हुए धन के अपार प्रवाह को छोडकर जाने की अनुमति नही दी।

इस समय डाक्टर के द्वारा सुझाये गए उपाय मे उन्हे अपनी बहुत दिनो की इच्छा को पूरा करने का एक मार्ग दिखायी दिया। वह आराम करने के लिए अपने गाव चल पडे।

२

अरुणाचल मुदलियार के आगमन को गाव मे एक उत्सव के रूप मे मनाया गया। वह उस क्षेत्र के बहुत बडे जमीदार थे। मद्रास मे उनका बहुत बडा व्यापार था। उनकी व्यापारिक सस्थाओ मे लाखो रुपयो का व्यापार होता था। मुदलियार जिस वस्तु को भी छू देते है वह सोना बन जाती है यह विश्वास ग्रामवासियो मे ही नही अपितु नगरवासियो मे भी घर किये हुए था।

कुछ सीमा तक यह बात ठीक भी थी। मुदलियार की व्यापार कुशलता अपनी चरम सीमा पर पहुच चुकी थी। उनका मन इतनी तेजी से काम करता था कि वह व्यापार मे होनेवाले लाभ-हानि के विषय मे पहले से ही जान जाते थे। इस कारण वह केवल उन्ही कामो मे हाथ लगाते थे जिनसे उन्हे लाभ हो सकता था। हानि होने की जहा सभावना होती थी उस व्यापार मे वह हाथ नही लगाते थे।

मुदलियार पच्चीस वर्ष की आयु मे मद्रास आये थे। वहा रहते हुए तीस वर्ष हो चले थे। वह दिनो-दिन उन्नति करते जा रहे थे।

प्रति वर्ष उनकी धन सपत्ति बढती जा रही थी। अब वह गाव गये तो साल मे एक लाख के हिसाब से तीस वर्षों मे उनकी सपत्ति का मूल्य तीस लाख रुपये अधिक हो गया था।

वह आराम करने के लिए ही गाव नही गये थे। उन्होने सोचा था कि वह आराम करने के साथ-साथ अपनी जमीन जायदाद की भी जाच पडताल कर लेंगे। परतु गाव आने के दो तीन दिन बाद ही उनकी हालत बहुत खराब हो गयी। वह तुरत मद्रास लौट सकते थे परतु उन्होने कुछ दिन और रहकर देखने की सोची। अत मे यह स्थिति आ गयी कि डाक्टरो ने उन्हे गाव छोडकर जाने से मना कर दिया।

मद्रास से कई डाक्टर आये। मुदलियार ने बड़े प्रेम से 'ब्यूक' नामक कार खरीदी थी, उनके पुत्र वैद्यलिंगम ने अपने लिए 'आर्मस्ट्रांग सिड्ली' नामक कार खरीदी थी। दोनों कारें मद्रास और गांव के बीच दौड़ती रहीं। डाक्टर कहते "अब घबराने की कोई बात नहीं है। सप्ताह भर में मद्रास लौट सकते हैं।" दो दिन तक सभी उस खुशी में डूबे रहते परन्तु तीसरे दिन जब डाक्टर यह आदेश दे देते "पन्द्रह दिन तक आपको अधिक नहीं बोलना चाहिए" तो वह खुशी रफूचक्कर हो जाती थी।

पिछले दो दिनों से सभी का विश्वास घटता जा रहा था। सब ने सोचा कि मद्रास के एक प्रसिद्ध डाक्टर को बुलाना चाहिए। उनके कार से आने में देर लग जाती। अतः यह सोचा गया कि उन्हें हवाई जहाज से लाकर, गांव से तीन मील की दूरी पर उसे उतार कर, वहां से उन्हें कार से घर लाया जाय। वह अगले दिन सुबह हवाई जहाज से आ रहे थे।

[illegible] दिया था कि उनके आने से पहले ही यमराज आ जाते। मुदलियार का मन [illegible] तेजी से दौड़ने लगा। उनके मन में बार-बार [illegible] आता — अब विश्राम का कोई स्थान नहीं है, अब विश्राम को [illegible] है।

गाव आने के बाद जब उनकी हालत चिंताजनक हो गयी तो धन सबधी इस भावना को बलपूर्वक ठेलती हुई कई बाते उनके मनमे प्रविष्ट हुई । वह सोचने लगे कि उनके मरने के बाद उनकी धन-सपत्ति और व्यापार का क्या होगा। उन्होने सोच लिया कि उन्हे जल्दी से जल्दी उनके सबध मे एक निर्णय ले लेना चाहिए। उन्होने अपने पुत्रो को बुलाकर उनसे इस सबध मे बाते की। उनके साले कदसामी मुदलियार बोले, "उन सबकी चिंता आप अभी क्यो कर रहे है ? हम मद्रास से प्रसिद्ध डाक्टर को बुलायेगे । सप्ताह भर मे हम मद्रास लौट सकेगे । उसके बाद सोच लेगे कि आगे क्या कुछ करना है । उनकी यह बाते अत्यत सुखदायक थी । अपने मरने के बाद धन का बटवारा किस प्रकार हो, यह सोचकर, मुदलियार अपने भावी जीवन के विषय मे सोचना चाहते थे । जब उन्हे कहा गया कि धन के बटवारे की अभी कोई जल्दी नही है तो उन्होने सोचा कि दूसरे विषय पर भी चिंतन न करना ही उचित है । परतु उन्होने यह बात दृढतापूर्वक सोच ली थी कि इस बार ठीक हो जाने के उपरात वह परलोक मे अपने योग्य स्थान सुरक्षित करने के लिए जो कुछ करना होगा उसे अवश्य करेगे ।

कुत्ते के रोने की आवाज को सुनकर वह जान गये कि उन्हे अपने दृढ निश्चय को कार्य रूप मे परिणत करने का अवकाश नही मिलेगा। मुदलियार उद्विग्न हो उठे । उन्होने सोचा कि इस जन्म मे भगवान की जितनी पूजा, आराधना करनी चाहिए थी उतनी किये बिना अपनी जीवन लीला समाप्त करने को तत्पर होना सरासर अन्याय है । उन्होने अतर्यामी प्रभु से यह बात कही । वह गिडगिडाये, "भगवन केवल एक अवसर दे दीजिये ।"

वह बोले, "उसके लिए तू जो भी मूल्य मागेगा, मै दूगा । यह सारा धन मेरा कमाया हुआ है । इसमे से तू जितने लाख चाहेगा उतने मैं दे दूगा ।" भगवान की ओर से कोई उत्तर न मिला । उनका मन बोल पडा, "कुत्ता बता तो रहा है कि यमराज गाव की सीमा पर पहुच चुके है ।" बार-बार यही विचार उनके मन मे उठे ।

उनका मन एक ही छलाग मे यमराज के दरबार मे पहुच गया । "केवल एक वर्ष का समय दे दीजिये । तब तक मुझे जो कुछ करना होगा वह सब कर लूगा, भगवान की उपासना के लिए मेरे लिए एक साल का समय पर्याप्त है ।" यह सोचकर उन्होने इस के लिए प्रभु से प्रार्थना की । उनकी प्रार्थना का कोई

उत्तर नही मिला ।

"वह आ गया है । वह खाली हाथ नही लौटेगा । हाय । मेरे बदले और कोई उसके साथ जाने के लिए मान जाय तो हा उसे खाली हाथ नही जाना पड़ेगा । यदि कोई उसके साथ जाने के लिए तैयार हो जाय तो उसके परिवार के नाम दो लाख रुपए लिख दूगा," आदि विचार मन मे उदित हुए ।

उन्होंने आंखे खोलीं । देखा कि सामने कदसामी मुदलियार, उनकी पत्नी, बच्चे सब चिंतित होकर सिर झुकाये हुए उनकी ओर देख रहे है । कदसामी मुदलियार को देखकर उनके होठ हिले परतु आवाज नही निकली । कदसामी मुदलियार ने झुककर अपने कानो को मुदलियार के होठो मे लगा दिया ।

अन्नामलाई मुदलियार बोले, "मेरी चैक बुक मगा दीजिए और उन्होंने अपनी आंखे बद कर ली ।

"सुई लगाने से नाडी मे शक्ति आ गयी है। मुझे भी ऐसा महसूस हो रहा है । यमराज के मेरे पास आने मे अभी एक घंटा और है। फिर एक सुई एक और घंटे का समय मिल जायेगा। इसी तरह कल तक फिर बडे डाक्टर हवाई जहाज मे आ जायेगे नही यह सब गलत है। मै सुई के भरोसे नही रह सकता हू। इस सुई मे यमराज का सामना करने की शक्ति है ? मेरे बदले उनके साथ जाने के लिए तैयार होनेवाले व्यक्ति के परिवार को एक चैक दूगा अपने साले से कह देना काफी होगा।

अरुणाचल मुदलियार के होठ हिले। उनकी आखे बद थी। उनकी आवाज नही सुनायी दी। जगदीशन ने पिता के पास आकर, झुककर उनकी बाते सुनने की चेष्टा की। सीधे होकर उसने धीमे स्वर मे अपने मामा से कहा, "वह न जाने क्यो दो लाख रुपये कह रहे है।" वह बडी उत्कण्ठा से मुदलियार के होठो के पुन हिलने की प्रतीक्षा मे वहा खडे रहे। परतु उनके होठ नही हिले।

अरुणाचल मुदलियार का अपने शरीर पर कोई वश नही रहा। वह इस बात का अनुभव कर रहे थे कि वह अपने शरीर को मनमाने ढग के काम पर नही लगा सकते है।

उन्हे महसूस हुआ कि एक घंटे के बाद दो सुइया और लगायी गयी। हर बार उन्हे लगा कि दवाई की तेजी पूरे शरीर मे फैल गयी है परतु उनके शरीर पर उनका वश नही रहा।

दूसरी बार सुई के सहारे दवाई को शरीर के भीतर पहुचाने के बाद डाक्टर ने नाडी की जाच की और कहा, "नाडी की गति अब बिल्कुल ठीक हो गयी है। अब घबराने की कोई बात नही है परतु फिर भी मैं यही बाहर बैठा रहूगा।" डाक्टर के यह शब्द उन्हे स्पष्ट रूप मे सुनायी दिये।

इसके बाद उस कमरे मे कोई आवाज नही सुनायी दी। एक दो बार किसी के बहुत धीरे से चलने की आवाज सुनायी दी। किसी के फुसफुसाने की आवाज सुनायी दी, "आप जाकर सो जाइये, मैं यहा हू।"

इसके बाद वहा निस्तब्धता छा गयी। वह निस्तब्धता कितनी देर तक रही कुछ पता नही। सहसा रात की उस निस्तब्धता को चीरते हुए एक चीत्कार सुनायी दी, "हाय रे। हाय रे! वह आ गया।" उसके बाद और अनेक चीत्कारे सुनायी दी परतु मुदलियार उन चीत्कारो को न सुन सके।

"वह आ गया। कौन ? वही! मेरे बदले एक आदमी का इतजाम हो

गया ? मैंने कदस्वामी मुदलियार से कह दिया था न कि दो लाख दे देंगे। आदमी मिल गया होगा ? मैंने यह क्यों नहीं कह दिया कि उतने पैसों में न माने तो उससे अधिक देने में भी मत हिचकिये, वह भी दे दीजिए। अरे वहाँ क्या शोर सुनायी दे रहा है ? क्या वह यमराज की पग-ध्वनि है ? बेटी ! मामा को बुला। आदमी मिल गया ? आप ने कह दिया कि दो लाख का एक चैक दे दूंगा ? डाक्टर साहब नाड़ी की गति साधारण ही है न ? बस एक साल काफी है। मेरे बदले एक आदमी का इन्तजाम मैंने कर लिया है। उसके परिवार को दो लाख रुपये देने जा रहा हूं।

नायुडु की बड़ी बहन का घर उनके घर के ठीक पीछे था न। अत नायुडु की बड़ी बहन का लडका वेंगडस्वामी घर के पीछे की ओर से भागता हुआ आया।

उस समय वह व्यक्ति जिसने छुरा खींचकर नायुडु की पत्नी को डराया था, दीवार फाद कर भागने की चेष्टा कर रहा था। वेंगडस्वामी ने लपक कर उसे पकड लिया। दोनो कुछ देर लडते रहे। वेंगडस्वामी की चीत्कार को सुनकर कुछ लोग दौडकर उस ओर गये। लोगो को अपनी ओर आता देखकर चोर वेंगडस्वामी को छुरा मार कर भाग निकला। उसकी सहायता के लिए वहा आये हुए व्यक्तियो ने चोर का पीछा किया परतु वह बच निकला।

"छुरा वेंगडस्वामी की छाती मे आधा फुट गहरा घस गया था। छाती से खून की धारा बह रही थी। कहते हैं कि लडके का बचना कठिन है।" इन शब्दो के साथ बोलनेवाले ने अपनी बात समाप्त की।

इसके बाद दूसरे आदमी ने पूछा, "डाक्टर साहब ! आपने लडके को देखा था ? वह बच जायेगा ?"

डाक्टर बोले, "मेरे वहा पहुचने से पूर्व ही उसके प्राण निकल चुके थे। छुरे ने उसके हृदय को चीर डाला था।"

तीसरा आदमी बोला, "वह मर गया। हाय बेचारा ! पिछले महीने ही उसकी शादी हुई थी। बहुत नेक लडका था। बडा सयाना था, धैर्यवान था मुझसे कह रहा था "मैं पुलिस मे भर्ती होने के लिए आवेदन-पत्र देने जा रहा हू। उसे इसपेक्टर के काम के लिए बहुत आसानी से ले लेते।"

मुदलियार को लगा कि उनके शरीर मे नयी शक्ति का सचार हो रहा है। उनकी विचारधारा नयी दिशा की ओर तेजी से दौडने लगी। वह मन ही मन कह उठे "अच्छा हुआ ! कुत्ता मेरे लिए नही रोया था। यमराज आये अवश्य पर मेरे लिए नही आये। मुनिरत्नम नायुडु के घर के पिछले भाग मे खडे हुए व्यक्ति को देखकर ही कुत्ता रो पडा था। उसने मेरे बारे मे सोचा भी न होगा।"

उन्होने आखे खोलने की चेष्टा की। कितने आश्चर्य की बात थी ! उनकी आखे खुल गयी। उनकी आवाज बहुत स्पष्ट रूप मे सुनायी दी। उनका साला और दोनो लडके उनके पलग के पास आ खडे हुए।

"इनको पसीना आ गया है" कहते हुए जगदीशन ने तौलिये मे पिता के माथे का पसीना पोछा।

मुदलियार ने माले से कहा, "चैक को फाड कर फेक दीजिये।"

माला बोला, "अभी आपने चैक नही काटा। आपने मुझे चैक बुक लाने के लिए कहा था।

अरुणाचल मुदलियार बीच मे ही बोल पडे, "अभी तक चैक नही काटा? तो चैक बुक अदर रख दीजिये।"

उन्होने उस व्यापार मे कभी हाथ नही लगाया था जिसमे हानि होने की सभावना रहती थी।

र वोला, "जरा उस लडकी को देख।"

उसके साथ चलते हुए उसके दोस्त किट्टू ने हसते हुए उसकी बात का धन किया, "लडकी को नही, लडकियो को ।" दोनो रेतीले मैदान को करके समुद्र की ओर वढते जा रहे थे। जहा-तहा लोग बैठे हुए थे। ा के धूमिल प्रकाश मे वे वहुत सुदर लग रहे थे। उस दिन समुद्र तट पर क भीड नही थी। कुछ दूरी पर समुद्र के जल का स्पर्श करती हुई तीन किया बैठी हुई थी। वे इन दोनो की ओर सकेत करती हुई कुछ कह रही उनकी ओर देखते हुए तथा अपने मित्र किट्टू से बाते करते हुए चलते ा शेखर फिर वोला, "मैं लडकियो को देखने का आदी नही हू। मैं उस ी के वारे मे कह रहा हू।' शेखर ने आखो से जिस लडकी की ओर रा किया था वह उन तीनो मे से कौन है, इसे किट्टू न जान सका। शेखर के जीवन से ऊवकर, उसे भूलने के लिए, शहर मे कुछ दिन रहने के ार से आया था। उसकी वातो को उसका बचपन का दोस्त किट्टू कभी-कभी नही समझ पाता था। पिछले कुछ दिनो से किट्टू को शेखर व्यवहार विचित्र लगने लगा।

"तू किसके वारे मे कह रहा है ? मुह से निकल पडते दातो को कठिनाई ुह के भीतर रोके खडी हुई लडकी के वारे मे कह रहा है...या अपने ाले वालो को उडने से रोकने के लिए जिसने कसकर दो चोटिया बनायी है, उसके वारे मे कह रहा है ? .." कहते-कहते किट्टू चुप हो गया। ी बाते उपहासपूर्ण थी। उसकी यह कल्पनाए उनके वास्तविक रूप को : करनेवाली उपमाए न थी। ऊपरी तौर से कही गयी उन वातो का श्य सुननेवालो को हसाना मात्र था।

तीसरी लडकी का वर्णन करने के लिए अपनी कल्पना को न दौडा सकने ारण अथवा उसके अनुरूप शहरी ढग की कोई उपमा न खोज सकने के ण वह चुप हो गया।

शेखर वोला, "किट्टू तूने जिन लडकियो की ओर सकेत किया उन्हे मैंने लिया है। मैं उनके विषय मे नही कह रहा था, न मैं उन्हे देख ही रहा

एक नस मे, हृदय की एक-एक धड़कन मे बस जायगी ”

किट्टू कारुणिक स्वर मे बोला, “शेखर मैं तेरी बुद्धि की ऊर्वरता और भावना की तीव्रता के विषय मे जनता हू। कल्पना करते-करते तू भावना के प्रवाह मे बह जाता है। इस प्रकार भावना के प्रवाह मे बहते हुए तू कहा पहुच जायगा, मैं नही कह सकता ’

“किट्टू, तेरी बात मुझे एक प्रकार से ठीक लग रही है कुछ दिनो से मेरी समझ मे कुछ नही आ रहा है तू सुशीला को अच्छी तरह जानता है। यह मेरा परम सौभाग्य है कि मैंने उसे पत्नी रूप मे पा लिया। परतु सुशीला भी जो गलती से इस दुनिया मे पैदा हुई है, मुझे पति रूप मे पा लेने के कारण भाग्यशाली है। जब भी उसे देखता हू, मेरे मन मे न जाने कैसे-कैसे विचार उठते है। पति के रूप मे अपनी पत्नी को देखने पर न जाने क्यो मुझे असीम आनद होता है। कुछ दिनो से उसके प्रति मेरे प्रेम की जैसे सीमा ही नही है। मन मे एक तरह का डर भी पैदा हो गया है उसे डर कहना शायद ठीक नही। मन मे एक कृत्रिम भय की भावना होती है। उस भावना मे जैसे एक आकर्षण है जो मुझे अपनी ओर खीचता भी है और दूर-दूर भगाता भी है। इस सब की जिम्मेदारी मेरी पत्नी सुशीला पर है। घर के कार्य करते हुए अकसर खीझ उठता हू। यहा आने पर दिल कुछ हल्का हो जायेगा यह सोचकर मैं यहा आ गया यहा भी लडकियो को देखने पर मुझे लगता है कि मैं उसे देख रहा हू।” अभी दस कदम भी न बढे थे कि उसने तेजी से इतना कुछ कह डाला। उस तेजी के नीचे उसमे एक स्थिरता भी दिखायी दी। हसते हुए शेखर किट्टू से बोला, “मैं कुछ बक रहा हू—तू बुरा मत मानना वह लडकी जो बीच मे बैठी हुई है, मैं उसी के बारे मे कह रहा हू। मैं कह रहा था न कि पिछले कुछ दिनो से सुशीला को देखने पर मुझे विचित्र सी अनुभूति होने लगी है? इसे देखने पर मुझे वह अनुभूति कुछ स्पष्ट होती है। उस अनुभूति को मैं स्पष्ट रूप से नही जान सका हू। उसी की चर्चा मैं तेरे सम्मुख कर रहा था। तू मेरी स्थिति को ठीक तरह से समझ रहा होगा। तुझे छोडकर यदि मैं किसी और से इन बातो की चर्चा करता तो वह मेरी बातो को ठीक तरह से न समझ सकने के कारण मुझे नीच कहता। उसकी ओर देख उसके सौदर्य मे कितना आकर्षण है, जो बलपूर्वक हमे अपनी ओर खीच लेता है। वह अविवाहिता कन्या है। नारीत्व के दर्शन उसमे किये जा

सकते हैं। क्या तू जानता है कि नारीत्व एक प्रचंड शक्ति है? नारी तो किसी पुरुष की पत्नी बनना पड़ता है। विशाल चित्रफलक पर अंकित किये जा सकनेवाले नारीत्व को, पति, विधि के विधान रूपी चौखटे में जकड़ी हुई लघु चित्रपट पर अंकित, पत्नी की प्रतिछवि में देखकर प्रसन्न होने का प्रयत्न करता है। उसमें व्यापक नारीत्व के दर्शन करने पर वह भय की अनुभूति करता है।" इसके बाद शेखर ने हंसते हुए किट्टू से पूछा, "क्यों किट्टू तू अपनी पत्नी को देखकर कभी भयभीत हुआ है?"

जल्दी वहा से चली गयी। उसके चले जाने के बाद शेखर कुछ देर तक बिना हिले-डुले उसी जगह खडा रहा। उसे लगा कि उसने एक मधुर स्वप्न देखा है।

उस दिन शाम को शेखर को अकेले ही समुद्र तट पर जाना पडा। कुछ दूर खडे होकर उसने देखा कि वे उसी स्थान पर बैठकर बाते कर रही है जहा वे पहले दिन बैठी हुई थी। उनके पास पहुचते ही उसने, "बहुत देर से इंत-जार " कहकर अपनी बात शुरू की। कुछ रुककर, "यहा आये हुए बहुत देर हो गयी क्या ?" कहकर उसने अपनी बात बदल ली। वे लडकिया बहुत चकित हुई। वह लडकी बोली, "आये हुए कुछ देर हो गयी है।" वह उनसे कुछ हटकर बैठ गया। वह लडकी औरो को देखती हुई भावनाशून्य स्वर मे बोली, "मैं दोपहर को शहर मे इनसे मिली थी।" दोनो लडकिया एक दूसरे से सट गयी मानो एक ही रस्सी से बधी हुई हो और फिर बारी-बारी से इन दोनो को देखने लगी।

भानु, सुशीला और सुमति तीनो समृद्ध और मान-मर्यादावाले परिवारो की लडकिया थी। पढाई समाप्त करने के बाद शायद उनकी और उनके माता-पिता की समझ मे न आया कि वे आगे क्या करे। शाम का समय बिताने के लिए समुद्र तट जाना और बातें करते हुए अपना समय बिताना उनकी आदत थी। शेखर के उनकी गोष्ठी मे मिल जाने से और शाम के समय की बातचीत मे भाग लेने से, उनका समय सरलता से बीतने लगा। शेखर की बाते बडी मजेदार होती थी। उसका स्वभाव उन्हे अच्छा लगता था। उन तीनो के मन मे अनजाने ही उसके प्रति प्रेम का भाव जाग्रत हुआ। इन थोडे दिनो के परिचय मे ही उन्हे वह अपना घनिष्ठ मित्र लगने लगा। अब तक उन्होने न तो परस्पर एक दूसरे का परिचय प्राप्त किया था और न ही नाम पूछा था। यदि पहली बार मिलते समय इस प्रकार की बातचीत का अवसर नही मिलता तो कालातर मे, कुछ परिचित हो जाने पर, इस प्रकार के प्रश्न पूछना असगत-सा लगता है।

एक दिन शेखर कुछ घबराया हुआ-सा दीख पडा। उसने सुशीला से कुछ कहना चाहा। "सुनो सुशीला " कहकर जैसे घबराकर उसने अपनी बात रोक दी और शून्य की ओर ताकने लगा। बाकी दोनो लडकिया एक दूसरे की ओर देखने लगी। वे दोनो अत्यत चकित हो रही थी।

सोचनेवाली उन लडकियो के बीच जा खडे होने पर वे कितनी चकित होगी। वह उस दिन समुद्र तट पर और दिनो की अपेक्षा जल्दी पहुचना चाहता था। एक ओर वह सोचता था कि उसे अवश्य गाव चले जाना चाहिए परतु दूसरी ओर उन कन्याओ से बातचीत करने का आनद उसे वही रहने का निश्चय कर लेने के लिए बाध्य कर रहा था। इन दो विपरीत भावनाओ के बीच झूलते हुए शेखर की समझ मे न आया कि वह क्या करे। अज्ञान के अधकार मे, ज्ञान के प्रकाश से शून्य चेतना के द्वार पर शेखर धक्के खा रहा था। निद्रा और जागरण की बीच की अवस्था—अर्द्धचेतनावस्था मे पहुच कर वह सासारिक क्रियाकलापो को देखने लगा। उस अवस्था मे माया से आवृत यह विश्व और विभिन्न वस्तुए वास्तविक प्रतीत होती है। निद्रा मे सभी वस्तुए लुप्त हो जाती है और जागरण की अवस्था मे व्यक्ति उन सभी वस्तुओ को भूल जाता है।

उस दिन का समय उसने किसी तरह व्यतीत किया। शाम को समुद्र तट पर जाने के लिए शेखर और दिनो से कुछ पहले ही बस-स्टैंड पर जा खडा हुआ। वहा बहुत भीड थी। भीड मे आगे न बढ सकने के कारण दो बसे चूक गयी। उसे वही छोडकर आगे बढती हुई बसो को देखने पर उसे लगा मानो ससार ही उसे अकेला छोडकर आगे बढा चला जा रहा है। बस समुद्र के किनारे उन लडकियो को नही उतार देगी—वह इस प्रकार सोच ही रहा था कि अगली बस भी चल पडी। दोनो किनारो पर लगे हुए पेडो या दूर खडे हुए बगलो की परवाह न कर, पूर्व से पश्चिम की ओर फैली हुई वह सडक भूमि और आकाश के मिलन स्थल—क्षितिज का स्पर्श करने के लिए लबी, सकरी होती हुई बहुत दूर तक जा रही थी। सडक के किनारे पेड लगे हुए थे। उसके दोनो ओर नाना आकार-प्रकार के, नाना वर्णों के मकान तथा बगले थे जो उन वृक्षो के बीच से झलक रहे थे।

शेखर ने देखा कि सडक के किनारे के वृक्ष और मकान भी उसी के समान विस्मय-विमूढ होने के कारण आगे नही बढ पा रहे है। मद-मद चलती हुई हवा के झोको मे हिलते हुए वृक्षो से फूलो का झड जाना उसे विनोदपूर्ण प्रतीत हुआ। सामने बगले मे कुत्ते के भौकने की आवाज आयी। उसकी प्रतिध्वनि को सुन कर लगा मानो बगले ही कुत्ते के रूप मे भौक रहे है। कुछ दूरी पर एक निर्जीव चीड का वृक्ष सीधा खडा हुआ दिखायी दिया। उसका अपने सिर पर

ऐसा मुखौटा बाँध कर 'राजनीतिक' धुनों में नृत्य करना कितना उपहासास्पद है। पश्चिम दिशा में सूर्य अस्त हो रहा था। उसकी पीली किरणों में रँगा हुआ समाज पीले वस्त्र-धारी संन्यासी का रूप धारण किये हुए था। शेखर का मन भाव-लोड़ित हो रहा था भाव अभिव्यक्ति का मार्ग न पाकर भीतर ही भीतर उमड़-घुमड़ रहे थे। उसके मुख पर कठोरता थी परन्तु अधरों पर एक हल्की सी मुस्कान खेल रही थी। जैसे मंदिर की मूर्तियाँ आज के भक्तों की कृत्रिम भक्ति भावना को देखकर व्यंग्यात्मक हँसी हँसती है, उसी प्रकार शेखर भी मन-मन मुस्कराते हुए नगरवासियों के कृत्रिम व्यवहार को देख रहा था।

स्थान पर बैठी हुई बाते कर रही है। उनके पास पहुचते ही भानु ने हसते हुए, "क्यो शेखर आज बहुत देर हो गयी अपने गाव से सीधे यही आ रहे है न ?" कहकर उसका स्वागत किया। सुशीला ने धीरे से कहा, "आज गाव नही गये ?' उसका वाक्य कहनेवाले की दृष्टि से प्रश्न और सुननेवाले की दृष्टि से एक विस्मय सूचक वाक्य प्रतीत हो रहा था। भानु बोली, "बिना बुलाये वह कैसे जायेगे "

शेखर बोला, "घरवाले नही जानते कि मैं यहा पर हू।"

"अच्छा, तो शेखर गुस्सा होकर घरवालो को बिना बताये यहा आ गये है कहकर भानु जोर से हस पडी।

शेखर ने सुशीला की ओर देखते हुए दीन स्वर से पूछा, "क्यो सुशीला. भानु झूठ बोल रही है न ?"

सुशीला खिन्न सी होकर बोली, "मुझे कैसे मालूम शेखर आज आपकी बाते और दिनो के समान नही है। आप आज कुछ उदास से लग रहे है।"

कुछ दिनो मे सुशीला को शेखर की बाते अटपटी लगती है। वह नही जानती की अन्य लडकियो को उसकी बाते कैसी लगती है। कभी-कभी उसे उसकी बाते अच्छी नही लगती है। कभी अपनी अति सजगता के कारण उसे उसका उन लडकियो से बाते करना अच्छा नही लगता है। कभी उसकी बाते शातिदायक गभीर विचारो से युक्त और आकर्षक लगती है। पिछले एक-दो दिनो मे सुशीला से शेखर की बातचीत को सुनने मे लगा कि वह बहुत सजग है एव घबरा रहा है। उसका कारण खोजते हुए वह यह न जान सकी कि उसके मन मे उसके प्रति कौन-सा भाव है। बार-बार उसे लगा कि उसके मन मे नफरत, भय, दया, घृणा आदि का भाव हो सकता है। इस प्रकार चिंतन करते करते वह थक गयी। इस तरह सोचते हुए वह कभी-कभी दुखी हो जाया करती थी।

अपने गाव, पत्नी, बच्चे को छोडकर उसका उस शहर मे अकेले रहना उन लडकियो को अच्छा न लगा। वे जानती थी कि उनके पिता उनके लिए योग्य वर खोज रहे है। पत्नी का अपने पति के लिए चिंतित होना और उसके आने की प्रतीक्षा करना, एक अविवाहित कन्या का एक अनजान व्यक्ति के विषय मे चिंतित होने तथा उसकी प्रतीक्षा करने के समान कदापि नही है। कन्या एव पत्नी इन दो भिन्न रूपो मे उनकी दशा भिन्न-भिन्न है। नारी के रूप मे

उनका ऐसा करना ठीक प्रतीत होता है। उसका साथ न छोड़ना और उसकी [illegible] का इतनी प्रतीक्षा करते रहना आदि बातें उन्हें अच्छी न लगीं। वे सोचने लगीं कि गौतम [illegible] अनुचित काम कर रहा है। उसमें उनका [illegible] भी अनुचित है। कभी-कभी सुनीता को लगता कि उनके साथ लौटकर न जाने का कारण [illegible] नहीं है। वह सोचती कि जो अपने सामने नारी [illegible] [illegible] उससे [illegible] करने में उसे एक प्रकार का आदर मिलता है। [illegible]

उत्तरदायित्व, ठीक, गलत सभी शब्दो के अनेक अर्थ है। मैं बाते करके और तुझे समझा-समझा कर उबा सकती हू। यह जानते हुए भी कि जीवन और लोक-व्यहार परस्पर एक दूसरे से भिन्न तत्व है मैं उनके सबध मे कुछ भी ठीक तरह से नही कह सकती हू। यदि मै कुछ कहू तो वह तुझे कोरी बकवास ही लगेगी।"

कुछ देर बाद वह फिर बोली, "मैंने शेखर को पुरुष समझ कर उससे मित्रता नही की। पुरुप पुरुपत्व दोनो को हम अच्छी तरह से समझते है। पुरुप भागने के लिए अपने घर के पिछले दरवाजे को खुला छोडकर द्वार पर खडे होकर बोलने वाले मुर्गे के समान है। पुरुपत्व पखविहीन मुर्गी के समान है। मैं जैसे शेखर को लडकी समझकर ही उससे बाते करती हूं। एक लडकी पुरुप मे नारी की शक्ति को कहा देख सकती है? इसी से मेरे मन मे उनके प्रति प्रेम भी है और घृणा भी है। उसकी पत्नी का नाम वही है जो कि मेरा है। मैं क्या शेखर मे उसी के दर्शन करती हू? उसके नारीत्व को क्या इसने अगीकार कर लिया है? मेरी प्रिय भानु, मे जानती हू कि तू मुझे तुच्छ नही समझेगी। मे किसी से चिपट कर रोना चाहती हू" कहते हुए उसने भानु को कसकर पकड लिया और फूट-फूट कर रो पडी। उनके अनजाने ही सुमति उनके पीछे-पीछे चल रही थी। गहन विचार मे डूबी हुई सुमति मूक प्राणी के समान चल रही थी।

उस दिन शेखर की बाते सुशीला को ठीक नही लगी। सुशीला बहुत सरल ढग मे और बडे उत्साह मे बाते कर रही थी। इस प्रकार की बातो द्वारा वह मानो शेखर को देश लौट जाने से रोक रही थी सुशीला ने सोचा कि पुरुप कभी-कभी अपनी चेष्टाओ और बातो द्वारा घृणा भी उत्पन्न करता है। पुरुप के साथ एक स्त्री—पत्नी कैसे रह पाती है उसे देखकर वह मन ही मन आनद या प्रेम भाव की अनुभूति कैसे कर पाती है? मन मे घृणा उपजानेवाले व्यक्ति के साथ रहना कितना कठिन है! सदा उचित रीति से जीवन यापन करने के लिए धर्म के नाम पर कितने कर्म करने पडते है? यदि पति आखो मे दूर हो जाय तो सभवत पत्नी उत्कठापूर्वक उनके आगमन की प्रतीक्षा करने मे आनद का अनुभव कर सकती है। उसने स्वय को शेखर की पत्नी सुशीला के जीवन का आधार समझा था इसी से वह उसे गाव लौट जाने से रोक रही थी। उसे लगा कि ऐसा करने से निर्जन स्थान मे

उनका ऐसा करना ठीक प्रतीत होता है। उसका गाँव न लौटना और उसकी पत्नी का उसकी प्रतीक्षा करते रहना आदि बातें उन्हें अच्छी न लगीं। वे सोचने लगीं कि शेखर यहाँ रहकर अनुचित काम कर रहा है। उससे उसका बोलना भी अनुचित है। कभी-कभी सुशीला को लगता कि उसके गाँव लौटकर न जाने का कारण स्वयं वही है। वह सोचती कि उसे अपने सामने खड़ी देख कर तथा उससे बातचीत करने में उसे एक प्रकार का आनंद मिलता है, इसी से शायद वह लौटकर अपने गाँव जाने के लिए तैयार नहीं होता है। सुशीला अपने मन को अपने वश में न कर सकी। वह अपने मन में उठनेवाले विचारों को न समझ सकी। उसका मन एक विचार पर टिकने के पूर्व ही उड़ कर दूसरे विचार पर पहुँच जाता था। वह स्पष्ट रूप से इस बात को न स्वीकार कर सकी कि शेखर उसके कारण, उसके बचन के कारण ही लौटकर गाँव नहीं गया है। वह नहीं सोच सकी कि वह इतनी क्रूर हृदया है अथवा इतने तुच्छ विचारोंवाली है। एक पत्नी को उसके पति से विलग कर देना क्या एक निठुर काम नहीं? यदि एक लड़की ऐसा काम करे तो? फिर वह सोचती है, यदि ऐसी बात है तो मैं कौन हूँ? ऐसा क्यों कर रही हूँ? मैं, मेरा स्वभाव, मेरा गुण, यह सब क्या है? जिस काम का करना उचित नहीं है उसे उचित समझ कर, उसी का बारबार करके क्या मैं उसे सत्य सिद्ध करना चाहती हूँ? जो बात असत्य है उसे सत्य सिद्ध करने के लिए ही क्या मैं यह सब कुछ कर रही हूँ? यदि ऐसी बात है तो इन्हें स्थिर कैसे समझा जा सकता है? वास्तव में यह सब क्या है—इसे सुशीला स्पष्ट रूप से न समझ सकी। रूपहीन, स्थान-हीन होकर विचरण करनेवाले गुण, अहम, स्वभाव आदि ही उसे छेद रहे हैं और उस नाम तथा रूप को अपनाने में बाधा पहुँचा रहे हैं। यदि वह उस नाम और रूप को धारण कर ले तो? सुशीला के मन में इस तरह से विचित्र विचार उठने लगे। वह एक अजानी लड़की है न? उसका मन अस्थिर और [illegible] हो चुका था।

उसे छोड़कर आते समय सुशीला ने भानु से पूछा "भानु, उनका यहाँ रहना ठीक है या गाँव लौट जाना ठीक है? तू क्या सोचती है? तुझे जो कुछ लगता है तू कह दे। तू यही कहेगी कि वह यहाँ रहकर जाने अनजाने एक अनर्थ कर रहा है। उनके [illegible] हैं—[illegible], [illegible] अनजाने अपने ऊपर उत्तरदायित्व ले लेते हैं—

उत्तरदायित्व, ठीक, गलत सभी शब्दो के अनेक अर्थ है। मैं बाते करके और तुझे समझा-समझा कर उबा सकती हू। यह जानते हुए भी कि जीवन और लोक-व्यहार परस्पर एक दूसरे मे भिन्न तत्व है मैं उनके सबध मे कुछ भी ठीक तरह से नही कह सकती हू। यदि मै कुछ कहू तो वह तुझे कोरी बकवास ही लगेगी।"

कुछ देर बाद वह फिर बोली, "मैंने शेखर को पुरुष समझ कर उससे मित्रता नही की। पुरुष पुरुषत्व दोनो को हम अच्छी तरह से समझते है। पुरुष भागने के लिए अपने घर के पिछले दरवाजे को खुला छोडकर द्वार पर खडे होकर बोलने वाले मुर्गे के समान है। पुरुषत्व पखविहीन मुर्गी के समान है। मैं जैसे शेखर को लडकी समझकर ही उससे बाते करती हू। एक लडकी पुरुष मे नारी की शक्ति को कहा देख सकती है? इसी से मेरे मन मे उनके प्रति प्रेम भी है और घृणा भी है। उसकी पत्नी का नाम वही है जो कि मेरा है। मैं क्या शेखर मे उसी के दर्शन करती हू? उसके नारीत्व को क्या इसने अगीकार कर लिया है? मेरी प्रिय भानु, मै जानती हू कि तू मुझे तुच्छ नही समझेगी। मै किसी से चिपट कर रोना चाहती हू" कहते हुए उसने भानु को कसकर पकड लिया और फूट-फूट कर रो पडी। उनके अनजाने ही सुमति उनके पीछे-पीछे चल रही थी। गहन विचार मे डूबी हुई सुमति मूक प्राणी के समान चल रही थी।

उस दिन शेखर की बाते सुशीला को ठीक नही लगी। सुशीला बहुत सरल ढग मे और बडे उत्साह मे बाते कर रही थी। इस प्रकार की बातो द्वारा वह मानो शेखर को देश लौट जाने से रोक रही थी सुशीला ने सोचा कि पुरुष कभी-कभी अपनी चेष्टाओ और बातो द्वारा घृणा भी उत्पन्न करता है। पुरुष के साथ एक स्त्री—पत्नी कैसे रह पाती है उसे देखकर वह मन ही मन आनद या प्रेम भाव की अनुभूति कैसे कर पाती है? मन मे घृणा उपजानेवाले व्यक्ति के साथ रहना कितना कठिन है! सदा उचित रीति से जीवन यापन करने के लिए धर्म के नाम पर कितने कर्म करने पडते है? यदि पति आखो मे दूर हो जाय तो सभवत पत्नी उत्कठापूर्वक उनके आगमन की प्रतीक्षा करने मे आनद का अनुभव कर सकती है। उसने स्वय को शेखर की पत्नी सुशीला के जीवन का आधार समझा था इसी से वह उसे गाव लौट जाने से रोक रही थी। उसे लगा कि ऐसा करने मे निर्जन स्थान मे

अकेली-सी खडी हुई उसको एक आश्रय मिल गया है। पहले जिन कर्मों को वह क्रूर समझती थी वे ही अब उसे तृप्ति प्रदान करने लगे।

अंधेरा हो गया था। समुद्र तट पर बैठे हुए अनेक व्यक्ति उठकर चल पड़े। कुछ वहा से चलने की तैयारी करने लगे। शेखर और लडकिया भी चलकर सडक तक पहुच चुके थे। तिराहे को पार करके सामने की सडक से कुछ दूर जाने पर एक गली आती थी। वहा पहुचकर शेखर उनसे अलग हो जाया करता था। जब वे लोग सडक पार कर रहे थे उसी समय बायी ओर से एक मोटर की आवाज आयी। उसे अकेला छोडकर वे लडकिया लौटकर पटरी पर चढ गयी। सडक के बीचो-बीच खडे शेखर की समझ मे न आया कि आगे जाय या पीछे लौटे। वह भ्रमित-सा सडक के बीच ही खडा रहा। ड्राइवर के बडी चातुरी से गाडी चलाने पर भी दूर से आती हुई वह कार शायद शेखर को छूती हुई निकल गयी। मोटरवाला शायद यह सोचकर अपनी मोटर को भगाकर ले गया कि सडक पर कोई भी उसे नही देख रहा है। शेखर पहले तो कुछ घबराया और फिर अपने आपको सभाल न पाने के कारण जमीन पर गिर पडा। इससे पहले कि कोई आकर गिरते हुए शेखर को पकड ले 'मृत्यु' ने आकर उसे दबोच लिया शेखर जमीन पर गिर पडा था

अपने सामने नीचे गिरे हुए शेखर के पास पहुचकर भानु ने झुककर उसके शरीर पर हाथ फेरा और "रोती हुई बोली, "हाय हमारा शेखर! बेहोश पडा है।" पास खडी सुशीला ने धीरे से कहा, "हाय हमारा शेखर!" इसके बाद उसने भानु को पकड कर खडा किया और धीरे से बोली, "आओ भानु भीड इकट्ठी होने से पहले यहा से निकल चलते हैं" और उसे लेकर वहा से चल पडी। सुशीला को निश्चय हो गया कि शेखर मर गया है "हाय हम उसे अनाथ की तरह बीच सडक मे छोडे जा रहे है " मन मे उठती हुई इस भावना को भानु व्यक्त न कर सकी। उसकी छाती मे मुह गडाये हुये चलती हुई सुशीला भी मन की हलचल को व्यक्त न कर सकी। गहन दुख से पीडित सुमति भी उनके पीछे-पीछे चलने लगी।

सुशीला को लगा कि क्षण भर मे ही वह स्थान जहा वह खडी थी, शून्य हो गया है। उस शून्य वातावरण में उस मार्ग पर सुशीला निर्जीव प्राणी के समान चल रही थी। पति-पत्नी के बीच अपना स्थान बनाकर [illegible]

'कन्या सुशीला" को जैसे 'मृत्यु' ने जोर का धक्का दे दिया।

एक पत्नी को अपने पति के आगमन की प्रतीक्षा का चिरतन सुख देने के लिए जिस सुशीला ने उसके पति को रोके रखा और पति-पत्नी के बीच अपना स्थान बना लिया, उसे धक्का देकर 'मृत्यु' ने उसके स्थान को अपना लिया। शेखर का मर जाना सरासर अन्याय था। अब उसको शरण देनेवाला कौन है? यही सोचती हुई किकर्त्तव्यविमूढ-सी सुशीला आगे बढी।

कुछ दिनो से उन लडकियो ने शाम के समय समुद्र के किनारे मिलना छोड दिया है। सुशीला शाम के समय घर की ऊपरी मजिल के एक कमरे की खिडकी के पास खडे होकर दूर क्षितिज की ओर देखा करती है। पहले उसे अपने विचार ही भार रूप लगते थे। परतु उस समय उसे अपार शोक और अपार हर्ष का अनुभव होने लगता है। उसे लगता है कि विशिष्ट नामधारी उसका रूप नाम से अलग हो गया है और उसका नाम अकेला ही उस वातावरण मे सचरण कर रहा है। वह सोचती कि यदि सुशीला नामक वह नाम फिर से रूप धारण करे तो वह कौन होगी? अधेरे मे शरीर से अलग हुई परछाई प्रकाश के पडते ही स्वय ही उस शरीर से जा चिपकती है जिससे कि वह अलग हुई थी। जब सुशीला ने अपने नाम को अपने से अलग कर दिया तो क्या वह नाम शेखर की पत्नी का रूप धारण करके उसके मन मे बस गया था?

गाँवो मे व्यक्ति सुबह शाम अपने कामो को किये बिना नही रह सकते। सुबह मुह अधेरे उठकर घर के बाहर जल छिडक कर, झाड़ू देकर, अल्पना बनानी पडती थी। रात को भली प्रकार न सो सकने के कारण अल्पना ठीक नही बन पाती है। पूर्व दिशा मे, जहा से प्रकाश की प्रथम किरण फूटने वाली थी, ध्यान से देखने पर भी वहा कुछ नही दीख पडता। रात का अधकार गाढा होता जाता है। सूर्योदय के पूर्व चारो ओर घना अधकार फैला हुआ दिखायी देता है। वह अपने पति को नही देख पाती है। लबे दिन के बीतने के बाद रात आती है। जब बच्चा उसके पैरो से न लिपट कर पालने पर सो

जाता है तब उसका दिन और लंबा हो जाता है। दिन की उस लंबाई को कम करने के लिए ही मानो रात आती है। शाम होते ही सूरज छिप जाता है। रात होते ही वह दिया जलाकर द्वार पर रख देती है और बरामदे के खंभे के सहारे छायामूर्ति के समान खड़ी रह जाती है। पश्चिम दिशा में जहा सूर्य छिपा था उस ओर कुछ दूर तक दृष्टि दौड़ाती है। आंखों में देखने की शक्ति होते हुए भी वह कुछ भी नहीं देख पाती है। सुशीला बरामदे से नीचे उतर कर सामने के मंदिर में जाकर भगवान के दर्शन करके लौटती है और दिये को लेकर घर के भीतर चली जाती है। उसके बाद रात भी लंबी होती चली जाती है। यदि उसका दुखी मन सो जाय तो वह मधुर स्वप्न देखने की आशा कर सकती है परंतु उसे तो जैसे जीवन में वेदना का सुख ही मिला था।

स्वयं अपनी इच्छा से हर वस्तु में अपने को खोजती हुई-सी 'कन्या सुशीला' पश्चिम दिशा की ओर स्थित अपने ऊपरी मंजिलवाले कमरे की खिड़की में आकाश की ओर शून्य दृष्टि से ताकती है। शेखर की पत्नी सुशीला के दर्शन अपने भीतर करके जैसे उसने अपने को भी उसी रूप में देख लिया था।

अपने पति के आगमन की प्रतीक्षा करती हुई पत्नी सुशीला के रूप में प्रेमिका सुशीला—कन्या सुशीला अपने घर के ऊपरी मंजिलवाले कमरे की खिड़की पर खड़ी थी।

यदि ऐसा हो सकता तो जिसे शेखर का प्रेम मिल चुका था उस कन्या का विवाह के पहले विधवा हो जाना क्या विडंबना नहीं!

अंगूठी

मैं अपने साले परशु के विवाह मे नही गया। मेरी पत्नी मरकतम को इस बात का दुख था। पर मैं क्या करूं? मुझे वह गांव पसद नही है। वहा के विचित्र लोगो को देखने से मन मे घृणा उत्पन्न होती है। मुझे वे असभ्य लगते है। उसका एक उदाहरण स्वय मेरा साला है। शिष्ट लोगो के साथ उठना-बैठना उसे नही आता। उसके मजाक बहुत ही निम्न कोटी के हुआ करते है। यह ठीक है कि पिताजी ने ऐसी जगह से एक लडकी चुनकर मेरे माथे मढ दी। इसमे आश्चर्य की बात यही है कि मैंने समझ बूझकर इस परशु की बहन मरकतम से विवाह कर लिया। नियति ने मेरी आंखो मे धूल झोंक दी थी।

वह निखट्टू मेरा साला था—पढाई की गंध से बिल्कुल अपरिचित। सभवत सात जमाते पढा हुआ था। वह किसान था। ऐसे व्यक्ति को पत्नी रूप मे मिली थी, सुदरी अबुजम। वह अत्यत चतुर थी। आपसे क्या छिपाऊ? उसे देखकर मुझे अपने साले मे ईर्षा होती थी।

परशु के विवाह के एक साल बाद मुझे अपने ससुर के घर जाना पडा। मैं ऐसे समय वहा गया जबकि किसी को भी मेरे वहा आने की आशा नही थी। जब मैंने घर मे प्रवेश किया उस समय परशु घर के अगले भाग मे आगन के पास के बरामदे मे बैठा हुआ एक बडे मे पके हुए कटहल को काट रहा था। उसके हाथ मे एक ओर तेल लगा हुआ था और दूसरी ओर कटहल की लेस। मुझे सहसा वहा देखकर वह चकित रह गया। छुरी को वही पटक कर वह अदर की ओर दौडा और जोर से चीख पडा, "मा! मा! देखो कौन आया है।" मानो आस-पास के खेतो मे काम करनेवाले सभी लोगो को पुकार रहा हो। तभी मैंने स्वर्ण प्रतिमा के समान एक सुदरी को हाल के खबे के पीछे खडी देखा। थोडी देर मे ही परशु लौट आया। वह हसते हुए बोला, "आप शादी मे तो आये नही, खैर अब यहा आने का मन तो किया।" इसके बाद खबे के पीछे खडी हुई युवती की ओर देखकर, बोला, "अबुजा, इनसे शर्म क्यो करती हो? यह जीजा जी है। इनसे सकोच करने की कोई जरूरत नही। तू कह रही थी न कि तूने कोई कहानी लिखी है, लाकर इन्हे दिखा दे। ये किसी पत्रिका मे काम करते है इन्हे यो ही मत छोड देना।"

न जाने किस दैव शिल्पी ने उस सौंदर्य प्रतिमा का निर्माण किया था। वह तनिक भी उस घर के लायक नहीं थी। उसे अपने सामने खड़ी देख एक अजीब सी वेदना मेरे हृदय को बेधने लगी।

कुछ देर बाद मेरी सास वहां आयी और बोली, "आइए! आपने हम पर दया करके अब यहां आना स्वीकार तो किया। हमें इस बात की बड़ी प्रसन्नता है। सरस्वती और बच्चे सब कुशल तो हैं? हमें इस बात का अफसोस है कि आप विवाह में नहीं आये। आप आते तो हम गौरव का अनुभव करते।"

मैंने सिर झुका लिया और "बहुत काम था, तनिक भी फुर्सत नहीं मिली" कहकर उन्हें टाल दिया।

उसी समय पके कटहल के दो कोये लिए हुए परशु मेरे पास आया।

उसे देख कर सास बोल पड़ी, "अरे अभी रहने दे। उन्होंने तो हाथ-पैर भी नहीं धोये। उन्हें फिर दे देना।"

सास की उस बात को सुनकर अबुजम कुएं की ओर दौड़ी। मेरे लिए तौलिया और साबुन लाकर वह लौट ही रही थी कि मैं भी उसी ओर बढ़ गया। तनिक मेरी ओर देखकर वह संकुचित होकर बोली, "यहां साबुन, तौलिया सब कुछ रखा हुआ है।" मन में तीव्र इच्छा थी कि मैं उसे गौर से ध्यान से देखूं। किन्तु अबुजम कुलीन स्त्री थी न? वह मेरे साले की पत्नी थी न?

सरस्वती मेरे पास आकर दो तीन साल तक मायके नहीं गयी। तात्पर्य यह है कि मैंने उसे नहीं जाने दिया। इसका फल बहुत अच्छा हुआ। मेरी पत्नी जो अनपढ़ थी, निपट गंवार थी, उसने पढ़ना-लिखना सीख लिया। अब वह मेरे काम में मदद देने लगी। टेढ़े-मेढ़े अक्षरों में जो कुछ भी लिखना था उसकी नकल वह साफ अक्षरों में कर देती थी। समीक्षा के लिए मेरे पास जो कहानियां आती थीं उन्हें पढ़कर उनका सार बताती। इस प्रकार मैंने उसे अनेक प्रकार से शिष्ट एवं योग्य बना दिया।

परशु के विवाह के अवसर पर मेरे पास पत्र और निमंत्रण दोनों ही आये थे। पत्र में यह अनुरोध किया गया था कि हम सब ईश्वर-पूजा और सोहाग-पूजा के लिए एक दिन पहले ही वहां पहुंच जायं।

विवाह के विषय में मैंने सरस्वती से कोई बात नहीं की। मन ही मन सोचा था परशु को उसके अनुरूप एक गंवार पत्नी मिल जायगी। इसमें गर्व करने योग्य कोई बात नहीं है।

रात को बहुत देर तक मै बाहर के बरामदे मे बैठा हुआ लिखता रहा। अदर आकर लेटकर मैंने आखे मूदी थी कि मुझे लगा कि टप टप आसू गिराती हुई मरकतम मेरे माथे पर हाथ फेर रही है। मैंने पूछा "क्यो क्या बात है मरकतम ? वह मेरे हाथ को पकड कर फूट-फूट कर रो पडी।

मैंने पूछा, "क्यो रो रही हो?"

"कोई बात नही।"

"क्या कहना चाह रही हो—यही न कि भैया की शादी मे जरूर जाना है?"

उसने कोई जवाब नही दिया। वह सिसक-सिसक कर रोयी।

"चल बुद्धू कही की ! तू चली जा। बच्चो को साथ ले जा। तेरे भैया की शादी है, तू वधू की ननद है। भेट देने के लिए सौ रुपये दिये देता हू। मैं नही आ सकता। मेरे पास बहुत काम है। मुझे इस समय पत्रिका का चैत्र विशेषाक भी निकालना है। तू ठाठ से होकर आ जा।"

"तो आप नही आयेगे? यदि आप चले तो हम लडकीवालो के सामने गर्व से सिर ऊचा कर सकेगे।"

मैंने उत्तर दिया, "मैं नही आ सकता। तू चली जा।"

बेचारी मरकतम मेरे कहे अनुसार अकेली ही भैया की शादी मे जाकर लौट आयी।

मैंने पत्नी से पूछा, "शादी ठीक-ठाक हो गयी? लडकी देखने मे ठीक है?"

मरकतम ने उत्तर दिया "आप नही आये इसका मा को बहुत अफसोस है। उस लडकी के समान सुदरी मैंने आज तक नही देखी। वह मैट्रिक तक पढी है। परतु बहुत भाग्यवान है।"

"सच ? वह बहुत सुदर है ? पढी-लिखी है ?"

"अबुजम सुदर ही नही, परिवार मे मिल जुलकर काम करनेवाली लडकी है" मरकतम ने उत्तर दिया।

"तब तो वहा जाकर उसे देखना चाहिए।"

"हा चलेगे चलेगे" कहते हुए एक साल बीत गया। सहसा एक दिन मैं वहा जा पहुचा। अबुजम को देखने पर मुझे लगा कि मरकतम के कहे अनुसार वह सचमुच ही अत्यत रूपवती है। उसका सौदर्य मन को विचलित कर देने वाला था। उसका पति परतु बिलकुल उसके योग्य नही था। वह तो जैसे कूडे के ढेर पर पडी बहुमूल्य मणि थी। दो बीघे जमीन पर बोने का काम आ पडा

था, अतः परन्तु मुझसे बोला, "जीजा जी आप संकोच मत कीजिए। मुझे लौटने में देर हो जायगी अतः मेरी इंतजार मत कीजिए। आप बिना संकोच के अबुजम के साथ बातें कीजिए। उसने एक कहानी लिखी है। आज का खाना अबुजम ने ही बनाया है। खाना बहुत बढ़िया होगा, आज दावत है न ?" कहकर वह घर से बाहर चल दिया।

नहाकर मैं बैठक में झूले पर आ बैठा। कोई दस बजे होंगे। अबुजम खंभे के पास आ खड़ी हुई और "पत्तल बिछा दिया है, खाना खाने आइए," कहकर उसने मुझे उठने का संकेत किया।

कमरे की दीवार पर लटकते हुए एक कलैंडर को देखने का अभिनय करते हुए मैं बोला, "थोड़ी देर और हो जाने दो।" मुझे लगा कि अबुजम वहीं खड़ी है, अतः मैंने मुड़कर देखा। हां, वह वहीं खड़ी थी। घर में किसी तरह का शोर नहीं था। पास में किसी पेड़ पर बैठे हुए कठफोड़वे की कुक-कुक की ध्वनि निरन्तर सुनायी दे रही थी। मैंने उसकी ओर देखा। कुछ खांसकर मैं बोला, "परन्तु कह रहा था कि तू कहानी लिखती है। साहित्य में तेरी रुचि है।"

उसके मुख पर लज्जा की लाली दौड़ गयी। अपूर्व मुस्कान बिखेरती हुई मधुर स्वर में वह बोली, "हां, मैंने आपकी सभी कहानियां उपन्यास पढ़े हैं। विवाह के लिए यहां आने पर जीजी ने मुझे आपकी हाल ही में प्रकाशित पुस्तकें दी थीं। स्कूल में पुरस्कार के रूप में मुझे आप की ही पुस्तकें मिली थीं। मेरी बड़ी इच्छा है कि मैं कहानियां लिखूं। दो कहानियां लिखी हैं। न जाने कैसी होंगी। आपको दिखाते हुए लज्जा आ रही है।"

मैंने कहा, "इसमें लज्जा की क्या बात है ? उन्हें ले आओ।"

अबुजम झट अपने कमरे में गयी और कुछ ही क्षणों में कागज के एक गट्ठर सहित लौटी। उस कागज के गट्ठर को मेरे हाथों में देते हुए उसकी अंगुलियां मेरी अंगुलियों से छू गयीं। मेरे शरीर में मानो बिजली सी दौड़ गयी। बड़ी कठिनाई से मैंने अपने मन को वश में किया। मैंने सोचा कि वह कुलीन स्त्री है। मेरे साले की पत्नी है। मैंने उसकी कहानियों को पढ़ा। वे अच्छी थीं। मैंने कहा, 'शाबाश। तुम्हारी शैली बहुत सुन्दर है। मेरा विचार था कि तुमने भी आजकल के छात्रों के समान कोई प्रेम कहानी लिखी होगी। तुमने एक विशिष्ट दृष्टिकोण से एक ग्रामीण परिवार का बहुत सुंदर वर्णन किया है।'

इस अबोध बालिका ने लज्जा से आखे नीची कर ली। अगले ही क्षण सिर ऊपर करके अपने सुदर दात दिखाती, हसते हुए बोली। क्या वे कहानिया पत्रिका मे प्रकाशित होने योग्य है ?"

इतने मे ही मेरी सास वहा आ गयी। उन्होने उससे "क्यो री अबुजम भोजन के लिए देर नही हुई क्या?" कहकर उसे सचेत किया।

"सब कुछ तैयार करके रख दिया है, मा" कहकर अबुजम अदर चली गयी।

मेरी सास बोली, "आप चलकर खाना खाइये। परशु के लौटने मे अभी देर है।'

अबुजम ने ही पास खडे होकर बडी शाति के साथ मुझे खाना खिलाया पास खडी सास, "यह परोस, वह परोस," कहकर उसे आदेश देती रही।

उस दिन शाम को ही शहर लौटना पडा। यद्यपि मुझे वह गाव पसद नही था तथापि मन मे वहा दो दिन और ठहरने की इच्छा जाग उठी। भारी मन से मैं वहा से लौटा।

उस दिन के बाद आज मैं अबुजम को तीन साल बाद देख रहा हू। इस बीच कितने ही परिवर्तन हो गये है। इस बीच परशु सहसा विषम ज्वर से पीडित होकर मर गया था। मेरा अबोध, निर्दोष साला अल्पायु मे ही चल बसा था। जिस विधाता ने अबुजम को सौदर्य और ज्ञान दिया था उसने उसे जीवन मे सुख नही दिया। भाग्य ने उस पर भयकर आघात किया था।

बडे भाई की सहसा मृत्यु हो जाने से मरकतम बहुत ही दुखी हुई। मा और भाभी को सात्वना देने के लिए वह अपने गाव चल पडी। इस बार सचमुच ही किसी जरूरी काम के आ पडने से मैं न जा सका।

मरकतम के लौटने के बाद, कुछ अवकाश मिलने पर मैं गाव गया। घर के अदर कदम रखते ही मैंने जो दृश्य देखा उसने मुझे कपा दिया।

अबुजम अदर बैठकवाले कमरे मे खडी थी। उसके माथे पर कुकुम की बिंदी नही थी। उसका शरीर क्षीण हो गया था। मुझे देखते ही वह फूट-फूटकर रो पडी। मेरी भी आखें भर आयी।

मैंने कहा, "यह सरासर अन्याय है। मैंने कभी नही सोचा था कि ऐसा कुछ होगा।"

अबुजम मेरे सामने खडी न रह सकी। वह अदर चली गयी। भीतर से

उसके सिसक-सिसक कर रोने की आवाज आयी। कुछ ही देर मे मेरी सास, जो कि अपने पुत्र को खो बैठी थी, सिसकती हुई मेरे पास आयी। "बेटा, परशु ने मुझे धोका दे दिया। सोने की प्रतिमा के समान अबुजम को बेसहारा छोड कर वह चला गया। न जाने कौन सा भयकर रोग था। दो ही दिन मे उसकी हालत बहुत बिगड गयी और वह चल बसा" कहकर वह रो पडी।

मेरी समझ मे नहीं आया कि मैं उन्हे कैसे दिलासा दू। मेरे मस्तिष्क मे अबुजम का पहला रूप ही घूम रहा था।

उस दिन शाम को ४ ३० बजे की गाडी मे शहर लौटने के लिए मैं तैयार हुआ। मैं चलने को ही था कि पडोस के घर की एक छोटी-सी लडकी मेरे पास आकर बोली, "मामाजी, अबुजम मौसी आपको थोडी देर रुकने के लिए कह रही हैं।' मैंने पूछा, वह "कहा है ?"

वह लडकी बोली, "मामाजी, वह बाहरवाले कमरे मे हैं।" बडे सकोच के साथ मैंने उस कमरे मे प्रवेश किया। अबुजम किवाड के पीछे छिपी खडी थी। वह मेरी ओर देखते हुए बोली, "आप मेरी एक सहायता करेगे? घर मे पैसो की तगी है। आपसे मागते हुए लज्जा आ रही है। इस समय सौ रुपयो की आवश्यकता है। इस अगूठी को गिरवी रखकर कहीं से पैसे दिलवा दीजिये।" इतना कहते ही उसके नेत्र सजल हो उठे।

इन शब्दो को कहते हुए जब वह अपनी उगली से अगूठी उतार रही थी तो मै बोला, "अगूठी की क्या आवश्यकता है? तुमको जितने रुपये चाहिए उनमे से आधे अभी दिये देता हू बाकी रुपये कल तुम्हारे नाम मनिआर्डर कर दूगा।" यह कहकर मैंने अपने बटुए मे से पाच-पाच के दस नोट निकाल कर उसे दे दिये।

"नहीं, यह अगूठी आप ही रख लीजिए," कहकर उसने मेरे हाथ पर दबाकर रख दी। मैंने उसे अपनी जेब मे रख लिया। इसके बाद वह वहा नही रुकी। उसके लौट आने की आशा मे मेरा वहा रुका रहना व्यर्थ गया।

मेरी ४ ३० बजे की गाडी छूट गयी। अगली गाडी ६ ३० बजे जाती थी मेरी सास मेरे पास आकर बोली, "खाना खाकर कल सुबह की गाडी से चले जाना।'

मैंने उत्तर दिया, "नहीं, मुझे आज अवश्य ही जाना है।'

मेरी सास ने कहा, अबुजम ने आपको बताया होगा। आजकल हम बहुत

कष्ट मे है। गुजारा चलाना कठिन हो रहा है।"

मैंने उत्तर दिया, "आप चिंता मत कीजिये। हम लोग किस लिए है मा।"

मैं अपने शहर लौट आया। नाना विचार मेरे मन मे उमड-घुमड रहे थे मुझे नीद नही आयी। अबुजम द्वारा दी गयी अगूठी मेरी छोटी उगली मे बिल्कुल ठीक आती थी। तौल मे वह आधी गिन्नी के बराबर ही थी, परतु उसका मूल्य आकना मेरे लिए सभव नही था। उस पर खुदा हुआ वह अक्षर 'अ' जैसे मेरे हृदय मे गहरा धस गया था। अगले दिन मैंने अबुजम के नाम पचास रुपये के बदले सौ रुपये का मनिआर्डर कर दिया। सौ ही क्यो, हजार रुपये भेजने के लिए मेरा मन तडप रहा था।

एक सप्ताह के बाद मेरे पास अबुजम का पत्र आया।

"नमस्कार।

समय पर आपने हमारी सहायता की, धन्यवाद। जल्दी ही आधा एकड जमीन बेचने जा रहे है। रुपये मिलते ही आपको वापस कर दूगी।

आपकी,

अभागिन अब्रुजम।"

पत्र मे अगूठी के विषय मे कुछ भी नही कहा गया था।

उसका मैं क्या करू? अपने पास रख लू या उसी को लौटा दू? फिर जाकर उससे मिलना क्या उचित है, इसे मे अब तक नही समझ पाया हू।

वे भले जानवर नहीं

भीषण गर्मी पड़ रही थी। तार की बनी हुई वह लम्बी चौड़ी सड़क जैसे आग उगल रही थी। सड़क के किनारे इमली का एक विशाल पेड़ था। वह चुपचाप, बिना हिले-डुले खड़ा था। उसकी छाया भी गर्म लग रही थी। भयंकर गर्मी से बचने के लिए इमली के उस वृक्ष की छाया से अधिक शीतल कोई स्थान वहां न था। इसी से चरवाहे अपनी-अपनी गायों को उस वृक्ष की छाया में खड़ा करके स्वयं भी उस वृक्ष के निचले तने से चिपटे हुए-से सो रहे थे। उनके शरीर से पसीने की धारा बह रही थी। तीखे सींगोंवाला वह बैल भी वहां पर लेटा हुआ था। वृक्ष की छाया में लेटने के बाद भी उसकी आंखों से बहती हुई आंसुओं की धारा रुकी नहीं। उसके पूरे शरीर पर कोड़े की मार के चिह्न दिखायी दे रहे थे।

तीखे सींगोंवाला वह बैल काफी बूढ़ा हो चुका था। उसके दोनों सींग अन्दर तीखे थे, इसी से किसानों ने उसका नाम तीखे सींगोंवाला रख दिया था। वह जन्म से ही उस स्थान से परिचित था। इसी से सहसा उस स्थान पर पहुंचते ही वह बैल एक बार रंभाकर वहां लेट गया। उसके साथी बैल 'लबूं' ने कहीं पर खड़े हुए उसकी पुकार सुन ली। वह मेड़ पर से कूदता-फांदता हुआ उसके पास आ पहुंचा और कोड़े की मार पड़ने से सूजी हुई उसकी पीठ को धीरे-धीरे अपनी जीभ से चाटने लगा।

उनके चारों ओर लगभग बीस-तीस वृद्ध बैल और दूध न देनेवाली बूढ़ी गायें थीं। उन्हें अपना रास्ता नहीं मालूम था। गड़रियों के कोड़ों की मार के डर से वे सब उसी ओर चले जा रहे थे जिधर जाने का संकेत उन्हें दिया जा रहा था। चलते समय मार्ग में उन्हें जो कुछ मिला, उसे उन्होंने जल्दी-जल्दी निगल लिया था। अब वे वहां लेटे हुए जुगाली करने लगे। मनुष्य का पेट [illegible] है। परन्तु कहा जाता है कि गायों का पेट उनके शरीर भर में फैला हुआ है। अतः जो कुछ मिले उसे खा लेना उनके लिए आवश्यक था न!

'ए लबूं! तुम आज को याद करते हो कि हम दोनों ने मिलकर उस गा

मे काम किया था, मेरे मन मे एक मधुर हलचल उत्पन्न हो जाती है। क्या तुझे याद है कि एक बार रात के समय गन्ने के खेतो को सीचते हुए एक मजदूर नीद मे आकर तेरे ऊपर गिर पडा था और तू इस डर से कि पैर उठाने पर वह मजदूर दब जायेगा, उसके भार को सहते हुए अपार जलधारा के बीच चुपचाप खडा रहा था ?" थके-मादे होते हुए भी तीखे सीगोवाले बैल ने बडे उत्साह मे अपने साथी से यह प्रश्न पूछा।

लवू ने ऊबकर कहा, "इस समय तू उन बातो को क्यो याद कर रहा है ? इस समय तुझे फिर मे देखकर मुझे इतनी खुशी हो रही है जिसका वर्णन मैं नही कर सकता। अब हमे बेकार की बातो मे समय नही बरबाद करना चाहिए।"

"अरे हा ! तू मुझे ढूढता हुआ यहा कैसे आ गया ?"

"हमारे किसान का खेत पास ही है न ? वहा खडे हुए तेरी दीन वाणी मेरे कानो मे पडी, फिर भला यहा आये बिना मै कैसे रह सकता था ? मेड को फादकर यहा दौड आया।"

कदप्पन पुदूर नामक शहर के पास की विशाल सडक पर परस्पर एक दूसरे से बिछडकर सहसा मिले हुए यह दो बैल भावना की मूक भाषा मे बातचीत कर रहे थे। कदप्पन पुदूर नामक यह शहर ईरोड (मद्रास के पास स्थित एक नगर) से लगभग तीस मील की दूरी पर स्थित है। उस शहर के एक किसान ने एक दिन पूर्व ही, ईरोड मे प्रति बृहस्पतिवार को लगनेवाली मडी मे, तीखे सीगोवाले उस बैल को बेच दिया था। इस समय वह कसाई के शिकारके रूप मे अन्य गायो के साथ शहर के पास की विशाल सडक से होकर केरल प्रदेश की ओर जा रहा था। चरवाहे विश्राम करने के लिए अचानक ही उस इमली के पेड के नीचे ठहर गये थे।

तीखे सीगोवाले बैल ने अगडाई ली और दूसरी ओर मुह करके लेट गया। लवू के द्वारा चाटे जाने से उसे अपूर्व सुख की अनुभूति हो रही थी।

"भाई ! मुझे ये लोग न जाने कहा ले जायेगे ? मुझे न जाने कितनी दूर चलना होगा ? कोडे की यह मार बहुत दुखदायी है और मुझे सबसे अधिक मार खानी पडती है।"

"हा, तू तो लगडा है। उनकी मार से बचने के लिए भागकर आगे कैसे जा सकता है ?" इतना कहते ही लवू की आखे भर आयी।

बैलो की उस जोडी ने रात दिन की चिंता किये बिना, कई वर्षों तक किसान की सेवा की थी। तीखे सींगोवाले उस बैल के पिछलेवाले बाये पैर मे किसी तरह एक कील चुभ गयी थी। मालिक ने पहले उसकी बिल्कुल परवाह नही की। बहुत दिनो के बाद इलाज करवाने के कारण उसका पैर ठीक नही हुआ और वह लगडा हो गया। तब उस किसान ने ईरोड की मडी मे जाकर मलैयाल प्रदेश (केरल) से बैल खरीदने के लिए आये हुए कसाइयो के हाथ, अपने उस बैल को सौ रुपयो मे बेच दिया।

केरल को जानेवाली सडक कदप्पन पुदूर के पास से होकर जाती थी इसी ने बैलो की उस जोडी को फिर से मिलने का एक अवसर मिला।

नबू ने पूछा, "तुझे याद है कि पिछले साल मालिक ने चार एकड जमीन मे हल्दी की खेती की थी?" थोडी देर पहले स्वय उसने कहा था कि उन्हे इस प्रकार की बाते नही करनी चाहिए। परतु उन बैलो के पास बातचीत करने के लिए और कोई विषय कहा था?

"उस बात को इतनी जल्दी कैसे भूल सकता हूँ? कहा जाता है न कि हल्दी के लिए बहुत ज्यादा पानी की जरूरत होती है? हमने ही तो उसकी सिचाई की थी।'

'हमने खेतो मे गाडी भर-भर कर खाद लाकर डाला था जिससे हल्दी बहुत अधिक मात्रा मे उगी थी।"

'उस साल हल्दी का भाव बहुत ऊचा था अत हमारे किसान की अच्छी आमदनी हुई' तीखे सींगोवाले बैल ने अपने दुख को भूल कर कहा।

तूने खेत की सिचाई मे किसान की सहायता की थी" तीखे सीगोवाले बैल के इतना कहते ही नबू बोल पडा, "तूने भी तो मेरे साथ मिलकर काम किया था? हमारी मेहनत से किसान के बटुए मे अनायास ही कई सौ रुपये के नोट इकट्ठे हो गये।"

इसी समय पास लेटे हुए चरवाहो मे से दो चरवाहे जाग गये। दोनो ने बीडी सुलगा ली। उनकी बातचीत शुरू हुई।

कैसे देखा उस आदमी को? वह दूसरे बैल को अपने साथ बेचने को [illegible] था।

कौन — आदमी था?'

'वही जो अपनी बैलगाडी मे मडी आया था। उसकी गाडी मे एक ही

वैल जुता हुआ था। वह कह रहा था कि वह एक साल और अपने वैल से कसकर काम लेगा और फिर उसे वेच देगा।"

"इस समय उस वैल के लिए पचास रुपये काफी नही है ?"

"अरे, वह आदमी वडा चालाक है। कह रहा था कि अगले साल पच्चीस रुपये मिल जाये तो काफी है।"

"अगले साल तक वह उस वैल की सहायता से दो सौ कमा लेगा फिर भला वह उसे अव क्यो वेचने लगा।"

"वह आदमी हिसाव-किताव करने मे तेज है। वैल के थककर चूर होने तक, वेहोश होकर धरती पर गिरने तक वह उससे कसकर काम लेगा। इसके वाद उस वैल का कितना ही दाम मिले इससे क्या ? हा वह उन पैसो को भी नही छोडेगा।'

वे लोग वैलो को वूचडखाने ले जा रहे थे। उस समय भी वे निर्दयता से उन वैलो को चावुक से मारते चले जा रहे थे। उनकी वातो को जानने की इच्छा यदि तीखे सीगोवाले वैल और लवू के मन मे होती तो वे उनकी वातो को सुनकर वहुत चकित होते। ससार मे एक व्यक्ति की वात को दूसरा व्यक्ति नही समझ पाता है। यदि ऐसा न हो तो विभिन्न वातो के स्पष्टीकरण, निषेध, विस्तृत विवेचन और उन पर विवाद आदि के लिए अवकाश कहा रह जाता है ? जव मनुष्य की यह स्थिति है तो वैलो द्वारा मनुष्यो की वात को समझ लेना वहुत दूर की वात है। एक दृष्टि से देखा जाये तो यह अच्छा ही है। यात्रा के अत मे होनेवाली घटना के विषय मे पहले से न पता होना क्या अच्छा नही ?

तीखे सीगोवाले को और लवू को आगे की वातो के विषय मे कुछ भी पता नही था। वे दोनो अनजान से एक दूसरे की ओर देखते हुए खडे थे। मनुष्य ही सभी वातो को नही जान पाता है फिर वैल भला कैसे जान सकते थे ?

वीडी लगभग जलकर समाप्त हो चुकी थी। इसके वाद भी उगलियो मे दवाये रखने से हाथ जल जाता अत: उन्होने जली हुई वीडी के टुकडे को फैंक दिया और आखे मूद कर सो गये।

तीखे सीगोवाला लवू से वाते करने लगा।

तीखे सीगोवाले ने पूछा, "लकवा हो जाने पर किसान के पिता को अस्प-

ताल मे भर्ती किया गया था न ?"

"हा, उन दिनो हम सवारियो को प्रति दिन दस मील की दूरी पर स्थित अस्पताल को ले जाते और वापिस लाते रहे। यह काम हमने लगातार तीन साल तक किया। हम एक दिन भी अपना काम करने मे नही रुके।"

"सुबह खेत मे काफी काम करना पडता था और शाम को सभी को ढोकर दस मील दूर स्थित अस्पताल ले जाना पडता था। वापसी पर भी दस मील दौडना पडता था।"

"किसान ने लकवे से पीडित अपने पिता की दिल लगाकर सेवा की परतु वह फिर अच्छी तरह चल-फिर न सके। उनकी अस्थियो को कावेरी नदी मे डालने के लिए लोग हमारी गाडी मे ही तो गये थे। पिता के मरने पर बेचारा किसान फूट-फूटकर रोया था।"

जब बैल इस प्रकार बातचीत कर रहे थे उसी समय थका-हारा किसान घर आ पहुचा। उसका विचार था कि उस दिन वह लब्बू के साथ किसी अन्य बैल को अपने हल मे जोत कर खेत जोतेगा। जुताई के समय गोशाला मे वह नही मिला। हल के पास भी वह नही दीख पडा। किसान ने उसे ढूढने के लिए चारो ओर अपने आदमी भेज दिये। उसने सडक के किनारे के इमली के पेड के नीचे दो बैलो को खडा देखा। अब पान चबाते हुए वह धीरे-धीरे उस ओर गया। वहा पहुचते ही उसकी दृष्टि लब्बू पर पडी।

'अच्छा तो उस लगडे से तुझे इतना प्यार है ? मैं तुझे न जाने कहा-कहा ढूढता रहा। तेरे कारण मजदूरो का काम रुक गया है। तेरी अच्छी पिटाई होनी चाहिए।" यह कहकर किसान ने झाडी पर से एक मोटी डडी तोड ली। डडी लेकर वह शीघ्रता से इमली के पास खडे लब्बू की ओर दौडा।

वहा चुपचाप खडा हो गया। पागल कुत्ते के काटने से तीखे सीगोवाले के पैरो मे जो घाव हो गया था उसे लवू चाटने लगा। शायद वह ऐसा करके उसके घाव को ठीक करना चाहता था।

किसान अच्छी तरह समझ रहा था कि पागल कुत्ते के काटने से हुए घाव को चाटने से लवू भी पागल हो जायेगा।

अब वह बैल भी उसके काम का नही था।

पागल कुत्ते और बैल की लडाई से हुए उस शोर को सुनकर, प्राय सभी चरवाहे जाग गये।

किसान ने उनसे पूछा, "क्यो, भाइयो! तीखे सीगोवाले की जोडी तुम्हे चाहिए?"

"हमने तो कल ही तुमसे मागा था। तुम्ही ने तो मना कर दिया।"

"अब मैंने वेचने का फैसला कर लिया है। क्या दाम दोगे?"

"वही सौ रुपये देगे। जोडी एक-सी ही तो है!"

"अच्छा दीजिये," कहकर किसान ने सौ रुपये ले लिये और नोट अपनी धोती मे मोड कर रख लिये।

बैलो की वह जोडी अन्य बैलो के साथ केरल प्रदेश की ओर चल पडी। चाबुक की मार से बैलो को वहा से चल पडने की सूचना मिली।

लवू की समझ मे कुछ न आया। परतु पागल कुत्ते से अपने मालिक किसान की रक्षा करनेवाले तीखे सीगोवाले बैल के साथ चलने मे उसे अपार आनद आया। किसान उसे भी बैलो के समूह मे क्यो छोड गया है, इसे वह न जान सका। इस विषय पर सोचने के पहले ही पीठ पर कोडे की एक मार पडी। तीखे सीगोवाले को पाच-छ बार मार पडी।

"कितना दुष्ट है यह बैल! कुत्ते से लडते समय कैसे भागा था और अब लगडा रहा है। पाजी कही का," कहते हुए एक चरवाहा बैलो के पीछे-पीछे चल पडा।

बैलगाड़ी

इमली के पेड़ के नीचे पड़ी हुई वह जीर्ण-शीर्ण बैलगाड़ी रत्नस्वामी को न जाने किन-किन घटनाओं की याद दिला रही थी। वह बैलगाड़ी छोटे आकार की ही थी। 'माइनर गाड़ी' भी कहलाती थी। 'माइनर' का अर्थ छोटी उम्र-वाला नहीं। अमीर घराने के मौजी नवयुवकों को 'माइनर' कहा जाता है न? ऐसे ही एक 'माइनर' के लिए उस गाड़ी का निर्माण किया गया था। किसी समय वह 'माइनर की गाड़ी' के रूप में ही प्रसिद्ध थी।

उसे देखते ही उन्हें, कोमल अंगोंवाली उस रूपाली युवती की, उसके हँसने की, गाने की, आंखों में झलकते प्रकाश की याद आती है। उसकी याद आते ही उनका मन अपार वेदना से भर उठता है। उनके मन में वेदना के अतिरिक्त और कोई भाव नहीं रह जाता।

हाय! [illegible]

जो कुछ हमे स्पष्ट रूप से दिखायी देता है, वह मिथ्या है और जो कुछ स्पष्ट नही दिखायी देता, वह सत्य है।

उस टूटी-फूटी गाडी को देखकर रत्नस्वामी के मन मे एक ओर वेदना का भाव उभर आया और दूसरी ओर इस तरह कई प्रकार के दार्शनिक विचार उदित हुए। उस गाडी के ऊपर छाये हुए इमली के पेड पर किसी समय बहुत फल लगते थे। उनसे अनेक बोरिया भर जाया करती थी। आज वह पेड भी जैसे बूढा हो गया था। उसकी पत्तिया झड चुकी थी। अब वह पेड ईंधन का ही काम दे सकता था। यही जगत प्रपच का रहस्य है! विस्मित कर देने-वाला तत्व है! प्रतिदिन प्रात मुस्कराते हुए आकर उस इमली के पेड से झडने-वाले फलो को चुनकर ले जानेवाली उस कन्या को उसने अनेक बार देखा है। कभी-कभी स्वय उसने फलो को चुनने मे उसकी सहायता की है। उस समय वह बिल्कुल नही जानता था कि उसके ऐसा करने से भविष्य मे नाना घटनाए घटित होगी। क्या वह इस बात को जानती थी? क्या वह पहले से ही जानती थी कि वे सभी घटनाए घटित होगी? वह इन बातो को कैसे जान सकती थी? नही, वह इन घटनाओ के विषय मे कदापि नही जानती होगी। यह बात निश्चयपूर्वक कही जा सकती है। जिस प्रकार बछडा उछलता-कूदता हुआ खेत मे चरती हुई अपनी मा का पीछा करता है, उसी प्रकार उसकी नन्ही बिटिया सरसु उसकी साडी के छोर को दातो से दबाये हुए उसका पीछा किया करती थी। क्या उस दृश्य को भुलाया जा सकता है? वह लडकी सरसु आज कहा, किस प्रकार जीवन यापन कर रही है—कुछ पता नही। लोगो से पूछने पर कुछ पता न लग सका। उन दिनो आस-पडोस मे जो लोग रहते थे आज वे लोग वहा नही हैं। लगभग तीस साल बाद गाव लौटने पर उसकी यही दशा हो सकती है न? पूर्व परिचित कोई भी चेहरा वहा नही दिखायी दे रहा है! हा तो यही है ससार?

सुदर वस्तुए हमे सदा आनदित करती है क्या इसीलिए वे अविनाशी हैं? दैवी प्रतिमा के समान प्रतीत होनेवाली वह युवती क्यो मर गयी? सडको को शोभा प्रदान करनेवाली, प्रकाश रथ के समान दिखायी देनेवाली वह गाडी जीर्ण-शीर्ण अवस्था मे क्यो पडी हुई है? हरे-भरे पत्तो, फूलो और फलो से लदा खडा यह इमली का पेड आज ठूठ बनकर धराशायी होने की तैयारी क्यो कर रहा है? क्या सौंदर्य शाश्वत तत्व है? नही, ऐसा कहना झूठ है, बिल्कुल

मूक है।

इस छोटी बैलगाड़ी को नातप्पन नामक आलसी बढ़ई ने बनाया था। उस इमली के पेड़ के नीचे ही उस गाड़ी का निर्माण किया गया था। गांव के व्यवसायी आज भी अपनी पुरानी परंपराओं को अपनाये हुए हैं अथवा नहीं—रत्नस्वामी उस विषय में कुछ भी नहीं जानता। वह आज ही वहां आया था। सभी लोगों को वह अजनबी लग रहा है। पहले गांव भर के लोग उसे जानते थे। यह कहना अनुचित नहीं कि वह गांववालों का लाडला लड़का था। सभी 'रत्नु' को अपना लाडला बेटा मानते थे। अंत में 'पतन को प्राप्त हुए देवदूत के समान' वह गांव छोड़कर चला गया। शायद कहीं किसी कोने में किसी परिचित व्यक्ति का चेहरा जो कि आज बुढ़ापे के लक्षणों से युक्त होगा, दिखायी दे देगा। अब तक उसे ऐसा कोई चेहरा दिखायी नहीं दिया था। शायद आगे दिखायी दे जाय!

गांव में बढ़ई, लोहार, सुनार आदि का तथा धोबी नाई आदि व्यवसायियों का काम करने के बदले पारिश्रमिक देने की प्रथा नहीं थी। खेतों में फसल की कटाई के समय उन्हें कुछ भाग अनाज दिया जाता था। विभिन्न पर्वों, विवाह आदि त्योहारों, उत्सवों तथा अन्य विशिष्ट अवसरों पर उन लोगों को नाना लोगों से आदर की प्राप्ति होती थी। इसके बदले में किसी प्रकार का जोड़ लगाना, बैलगाड़ी के चक्र में आरा लगाना आदि साधारण काम करना बढ़ई वालों का कर्तव्य समझा जाता था। उन छोटे-मोटे कामों के बदले पूरी गाड़ी

पास अनेक वेली[1] जमीन थी। उनके पास कुल ढाई वेली जमीन थी जबकि उस गाव मे एक वेली मे अधिक जमीन रखनेवाला कोई जमीदार न था। सभी गुरुमूर्ति का आदर करते थे। इसका कारण यह नही था कि वह बहुत बडे जमीदार थे बल्कि उनका शील स्वभाव ही इसका एकमात्र कारण था। वह किसी को बुरा भला नही कहते थे। भगवान के परम भक्त थे। उन्हे एक प्रकार से दार्शनिक कहा जा सकता है। उन्होने विधिवत ऊची शिक्षा नही पायी थी। अधिक स्पष्ट शब्दो मे कहना चाहे तो यह कह सकते है कि वह दो कक्षाओ से अधिक नही पढे थे, लेकिन उनकी अलमारियो मे पुस्तके भरी रहती थी। उनकी अधिकाश पुस्तके भगवद स्तुति, धर्म, दर्शन आदि से सबधित थी। नीरस, निरर्थक कथाए उन्हे पसद न थी। विभिन्न कलाओ का गभीर अध्ययन करने पर वह उन्हे समझ तो जाते थे परतु वह कलाओ को वेकार समझते थे। इसी से उन्होने कला सबधी पुस्तके एकत्र नही की। अठारह सिद्धो[2], तायुमानवर[3], पट्टिनत्तार[4] के पद सग्रह, हनुमान पराक्रम, विनायक माहात्म्य, तिरुविलैयाडल पुराणम[5] आदि पुस्तके तथा अन्य अनेक पद्य सग्रह उनके पास थे। इन पुस्तको मे उन्हे एक तजोरस्वामी द्वारा रचित 'भगवदगीता व्याख्या' नामक पुस्तक अत्यधिक प्रिय थी। उसे वह अनेक बार पढ चुके थे। एक बार कोई व्यक्ति उनसे वह पुस्तक माग ले गया और उसे लौटाने का नाम नही लिया। उस पुस्तक के खो जाने को उन्होने अपना दुर्भाग्य माना।

शानप्पन जब-जब पैसे मागता था तब-तब गुरुमूर्ति ही, पहले मना करके बाद मे उसे कुछ पैसे दे दिया करते थे। वह उसे सदा चिढाते रहते थे।

शातप्पन ने ही उनके घर के मदिर तथा भगवान की मूर्तियो को खडा करने के लिए सुदर, कलापूर्ण आसन का निर्माण किया था। गुरुमूर्ति ने अपने परिवार के कल्याण के लिए उस आसन के नीचे नवरत्नो को दबा दिया था। इस बात को बढई शानप्पन नही जानता था किंतु रत्नस्वामी जानता था।

[1]पौने सात एकड जमीन=एक वेली।

[2]तमिल नाडु मे उत्पन्न अठारह रहस्यवादी कवि।

[3]तमिल के एक सत कवि।

[4]तमिल के शिव भक्त कवियो मे एक।

[5]तमिल मे रचित एक पुराण जिसमे शिवाजी के अलौकिक कृत्यो का वर्णन है।

शातप्पन ने किसी 'पॉलिटेक्निक' में जाकर शिक्षा ग्रहण नहीं की थी। उन दिनों इस प्रकार शिक्षा प्राप्ति की प्रथा कहां थी? जिस वस्तु को वह आंखों से एक बार देख लेता था उसे हाथों से बना डालता था। यह कहना उचित नहीं क्योंकि वह अपनी आंखों से जिन वस्तुओं को देखता था उनकी कमियों को दूर करने, अपनी कल्पना के प्रयोग से अद्भुत कलाकृतियों का निर्माण करने की क्षमता उनके हाथों में थी।

एक दिन गुरुमूर्ति बोले, "आलसी शातप्पन क्या कर सकता है? वह खड़ाऊं बना सकता है। टेढ़ी-मेढ़ी लकड़ी काटकर भी वह खड़ाऊं बना सकता है। पूछने पर वह कहेगा कि 'यह काम बहुत आसान है। इस काम को करने से आंखों को आराम मिलता है।' परन्तु क्या वह एक छोटी बैलगाड़ी बना सकता है? या एक बड़ी बैलगाड़ी बना सकता है?"

उनकी इस बात को शातप्पन ने चुनौती के रूप में स्वीकार किया और वह काम पर जुट गया।

जल्दी ही उस बैलगाडी को बना डाला था ।

सबसे पहले उसने गाडी का ऊपरी हिस्सा बनाया । उस पर तीन बार पेट किया । उसमे जगह-जगह पर लाल, पीले, नीले और बैंगनी रग के शीशे जड दिये । गाडी के ऊपरी भाग पर उसने स्वय अपने हाथो से कुछ सुदर चित्र बनाये । शातप्पन चित्रकारी करने मे भी पटु था ।

गाडी को देखकर गुरुमूर्ति बोले, "शाबाश ! तुमने बहुत सुदर बैलगाडी बनायी है । शातप्पन तू बडा चतुर कलाकार है !"

शातप्पन की मूछें नही थी, अत उसने मूछो पर ताव देने का अभिनय किया ।

जिन दिनो उस लघु बैलगाडी का निर्माण किया गया था उन दिनो सरसु छोटी बच्ची न थी । वह इतनी बडी हो चुकी थी कि उसके बाद उसकी मा आठ बच्चो को जन्म दे सकती थी । सरसु उन दिनो ग्यारह वर्ष की हो गयी थी । उसकी मा ने उसके बाद किसी बच्चे को जन्म नही दिया । हाय ! उसके एक लडका क्यो न हो गया ? विधाता निष्ठुर है । वह अधा है । उसने उसके जीवन मे इस कमी को क्यो रहने दिया ? इसी से तो इसी से तो हाय ! उन बातो की कल्पना भी नही की जा सकती है !

क्या ही अच्छा होता यदि रत्नम के पिता उस गाव के स्कूल के प्राध्यापक बन कर न आते ! कई गावो मे पाठशालाए नही है । इस गाव मे पाठशाला के न होने का किसे दुख था ? यदि यहा कोई पाठशाला न होती तो क्या ही अच्छा होता ! पिता गाव मे अध्यापक थे इसी से रत्नस्वामी को भी यहा आकर रहना पडा । इसी से उसकी गुरुमूर्ति मे मित्रता हुई और वह उनसे भाई का-सा व्यवहार करने लगा । वह दार्शनिक थे परतु रत्नस्वामी के तर्क-वितर्कों को सुनकर उनका समाधान करने मे उन्हे विशेष आनद आता था । खेल खेल मे भी गुरुमूर्ति मर्यादा का उल्लघन नही करते थे । ताश खेलते समय रत्नम की चाल-बाजियो को देखकर वह आनदित होते थे । उनका विचार था कि रत्नम बुद्धि-मान है परतु उसमे कुछ सीमा तक नीचता भी है । हर प्रकार के कठोर कार्य को करने के लिए वह रत्नम को ही बुलाया करते थे । वह ही क्यो, उनकी पत्नी शिवकामी भी प्रत्येक काम के लिए उसे ही बुलाती थी । बिना किसी की सहा-यता के कुए मे गिरे हुए लोटे को निकालना, नारियल के पेड पर चढकर नारि-यल तोडना, अडियल बैलो से जुती हुई बैलगाडी को सरलता से चलाना—रत्नम

इन सभी कामो को करने के लिए सदा तैयार रहता था। इस प्रकार गाडी चलाने के कारण ही उसकी वह दुर्दशा हुई।

गाडी बनकर तैयार हो गयी। विवाह के एक दिन पहले की शाम का समय था। शिवकामी कमर पर घडा उठाये हुए कुए पर पानी भरने जा रही थी। गाववालो की सुविधा के लिए कुए के पास हाल ही एक 'हैंडपप' लगाया गया था अत: वह जजीर लिये बिना ही कुए की ओर चल दी। वह एक हाथ से घडे को पकडे हुए थी। दूसरे हाथ मे घडे को बडी नाजुकता से सहारा दिये हुए वह धीरे-धीरे चल रही थी।

"रत्नु तूने अपनी भाभी को देखा? कमर पर घडा उठाये हुए जाती हुई शिवकामी को देखने से लगता है मानो यशोदा बालकृष्ण को कमर पर उठाये हुए जा रही है। इस यशोदा को लडके के न होने का बडा दुख है," कहकर कृष्णमूर्ति ने अपनी पत्नी को चिढाया।

पत्नी को इस प्रकार चिढाने मे उन्हे मजा आता था। वह उसके पुत्र के अभाव से उत्पन्न वेदना की गहराई को नही जान पाते। शात, शीतल, समतल भूमि पर खडा हुआ व्यक्ति ज्वालामुखी पर्वत के भीतर के ताप को कहा जान सकता है?

लडके को जान से मार डालना भी पाप नही है।" रत्नम के सामने आ जाने पर वह उसे कुछ न कहते थे। उस पर किसी तरह की निगरानी भी नही रखते थे। इस समय उसके सिर पर छोटी-से चोटी थी। किसी समय उसके सिर पर मोटी-सी चोटी थी। चोटी के बाल सिर के आगे हिस्से मे फैले हुए थे। कभी उसके सिर पर एक पतली सी चोटी थी। पुत्र की उस चोटी को देखकर पिता जल उठते थे। उसकी लबी कलम और जुल्फो को देखकर पिता आहे भरते थे। वह पतली चोटी और जुल्फो के बीच अतर नही जानते थे परतु रत्नम युवा था। उसकी आयु लगभग पच्चीस वर्ष की थी। वह सदा दिलबहार सुगधित तेल का ही प्रयोग करता था। उसके सिर पर थोडे से बाल थे। उन बालो को वह इस प्रकार लपेट कर बाध लेता था कि उसका जूडा बडा-सा दिखायी दे। वह पिन लगाकर उस जूडे को सिर पर टिका लेता था। कभी-कभी वह लडकियो की तरह जूडा बनाता था। अच्छी तरह कघी फेर लेने पर उसके बाल जमे रहते थे परतु फिर भी वह बालो मे गोल कघी लगा लेता था मानो वह अलकरण की कोई वस्तु हो। मलमल का कुर्ता, रेशमी दोशाला, कमर पर सुदर चारखाने की लुगी, माथे पर सुगधित कुकुम की बिंदी, पान की पीक से रगे हुए होठ—यही थी उसकी वेशभूषा। मुह मे तबाकु दबाये हुए जब वह लगाम पकड लेता था तो अडियल बैलो के भी मानो पख लग जाया करते थे और वे घोडो के समान तेजी से दौडने लगते थे। उस दिन रत्नस्वामी ने ही उस बैल-गाडी को चलाने का काम किया। यह सब उसी का दुष्परिणाम था।

गुरुमूर्ति ने इस लघु बैलगाडी को पहले-पहल चलाने के लिए सुदर बैलो की एक जोडी खरीदी। उन्होने अपने बैलो को घटी, पायजेब, मोतियो की माला आदि से अलकृत किया। उन बैलो को चलाने की योग्यता रत्नम मे ही थी। उसके पास अनेक प्रकार के सुदर-सुदर कोडे व चाबुक थे। कोडो मे कुछ मोतियो की माला के समान, कुछ तार के समान महीन तथा कुछ फुदनेदार थे। नाना प्रकार के इन कोडो के साथ वह एक छाता भी अपने पास रखता था। छाते को देखकर भयभीत होनेवाले बैलो को देखकर वह बहुत प्रसन्न होता था। कोडे व चाबुक की मार पडने पर भी कहना न माननेवाले बैलो को वह छाता खोल कर डराया करता था। उस समय उसे ऐसा आनद आता था मानो वह 'पैराशूट' मे उड रहा हो। उसने सोचा कि नये बैलो को वश मे करने के लिए फुदनेदार कोडे के साथ छाते का होना भी आवश्यक है। अत

वह उसे भी साथ लेकर चला।

चलने से पूर्व ही गुरुमूर्ति ने उसे चेता दिया, "ए रंगम ! तार चुभाकर बैलों के शरीर पर घाव मत कर देना। गाड़ी को जरा संभाल कर, धीरे धीरे चलाना।"

रंगम ने दृढ़ता से उत्तर दिया "आपको इस बात की चिंता करने की कोई आवश्यकता नहीं है।"

रंगम का विचार था कि तार को बैलों के शरीर पर जोर से नहीं चुभाना चाहिए। धीरे से चुभाकर, धीरे से खींच लेने पर शरीर से एक बूंद खून भी नहीं गिरेगा। यदि अपनी भूल से खून निकल आये तो गोबर लगा देने से सब कुछ ठीक हो सकता है।

रंगम गाड़ी चलाने लगा। वह एक छोटी-सी सुंदर बैलगाड़ी थी। उसपर चादर बिछी हुई थी। गुरुमूर्ति पीछे की एक गाड़ी में बैठे हुए थे। इस [illegible] बैलगाड़ी में आगे पीछे के भार को बराबर करने के लिए शिवकामी को गाड़ी के अगले भाग में रंगम के पास बैठना पड़ा। कुछ संदूकें और बिस्तरों के अतिरिक्त [illegible] भी उस गाड़ी में थी। एक [illegible] जो कि शिवकामी की पुत्री [illegible] थी, गाड़ी के बीचो-बीच बैठी हुई थी। वह [illegible] और बड़ी बातूनी थी।

वह बैल धीरे-धीरे चल रहा था। रत्नम ने दाये-बाये बाये बैलो की अदला-बदली करनी चाही परतु कुछ दूर जाने पर वे ठीक तरह से चलने लगे। नये आदमी के देखने से उनके मन मे उत्पन्न घृणा का भाव सभवत दूर हो गया था।

सभी गाडिया चल पडी। छोटी बैलगाडी सब गाडियो से आगे चल रही थी। रत्नम को बार-बार लगाम खीचकर अपनी गाडी को रोकना पडा ताकि अन्य गाडिया भी उसकी गाडी के पास पहुच सके। गाडी छोटी-सी थी और रास्ता सीलन से भरा हुआ था। बैलो को उस रास्ते पर चलते हुए बडा कष्ट हो रहा था। गाडी के डावाडोल होने मे उसमे बैठी हुई सवारियो को बडा मजा आ रहा था। उसमे बैठी हुई वे स्त्रिया बराबर बोलती चली जा रही थी। रत्नम को उनकी बाते सुनायी दे रही थी।

शिवकामी की मोटी-सी फुफेरी बहन उसे बराबर चिढाती जा रही थी। शिवकामी के एक ही लडकी थी अत वह उसे बाझ सिद्ध कर रही थी। उसका कहना था कि अकेले वृक्ष से कुज नही बन सकता। इसी तरह अकेले बच्चे की गिनती बच्चो मे नही हो सकती। कम से कम एक लडकी और एक लडके को जन्म देने पर ही किसी नारी का नारीत्व सफल हो सकता है। लडकी और लडका किस प्रकार का हो ?

"लडकी हो गुलाब के फूल-सी और लडका हो रत्नम जैसा।"

रत्नस्वामी चौंक पडा। क्या उसने जान-बूझ कर उसकी ओर सकेत किया था ? कितनी नटखट है वह !

उसी समय शिवकामी का हाथ उसके शरीर से जा लगा। अनजाने ही उसका हाथ रत्नम के शरीर से छू गया था परतु फिर भी उसका शरीर कापने लगा। अपनी पीठ पर लगे हाथो की कपन से ही उसे उस स्पर्श का अनुभव हुआ।

कुछ देर बाद उसने झटक कर अपने हाथो को हटा लिया मानो उसने आग को छू लिया हो। परतु—परतु यही से उनकी मित्रता आरभ हुई।

थोडी देर बाद उसका हाथ फिर धीरे से उसकी ओर बढा और उसका स्पर्श करके दूर हो गया। उसने अनेको बार अपनी इस चेष्टा को दोहराया। वह भावोन्मत, मदोन्मत हो उठा। ससार मे ठीक-गलत, कृतज्ञता-कृतघ्नता, अच्छाई-बुराई यह दो पक्ष है। उसमे इतनी विवेक बुद्धि नही बची थी कि वह उन

पक्षी के बीच के गगन को समझ सके। पर निकट आने पर चिड़िया जिस प्रकार स्वच्छन्द हो उड़ने लगती है उसी प्रकार उसका मन भी स्वतन्त्र रूप से विचरण करने लगा।

इसके बाद की सभी बातें उसे स्वप्नवत् लगीं। उस घटना के पश्चात् कुछ दिन बाद तक उसका व्यवहार समाज के साधारण प्राणियों के समान नहीं रहा। उसे लगा कि वह मेघों के समान आकाश में विचरण करनेवाली आत्मा है। इस स्थिति में वह अपने भिन्न-भिन्न स्वप्न को पुनः जोड़कर भी पूर्ण रूप से कैसे देख सकता?

मे पडकर अथवा चचलतावश मनुष्य न जाने क्या-क्या कर बैठता है। न्याय, धर्म, सत्य, पाप, पुण्य आदि की स्थिति केवल कहने भर के लिये है। भावना के प्रवाह मे बह जाने पर इनका कोई मूल्य नही रह जाता है।

सत्य क्या है? यही कि विवाह की हलचल मे एक घटना घटित हुई जिसने रत्नम को जीवन भर के लिये वेदना दे दी। वहा लोग उस घटना को लेकर फुसफुसा रहे थे परतु किसी की हिम्मत न हुई कि वे उसकी चर्चा गुरुमूर्ति से करे। गाव लौटते ही उन्हे किसी तरह सारी बात मालूम हो गयी। अपने द्वारा पाला-पोसा गया बैल यदि अपने पर ही झपटने लगे तो कैसा लगता है? गुरुमूर्ति उस समय जो चाहे कर सकते थे परतु उन्होने कुछ नही किया क्योकि वह स्वाभिमानी थे, दार्शनिक थे, शात स्वभाव के आदमी थे। शाति रूपी चट्टान को तोडता-फोडता हुआ बहनेवाला क्रोध का प्रवाह गगा की वेगवती धारा के समान कहा हो सकता था? उसने तेजी से बहते हुए झरने का रूप धारण कर लिया।

उस दिन से गुरुमूर्ति का रूप बिल्कुल बदल गया। विषैले सर्प के समान रत्नम मे भी किसी के सम्मुख आने की हिम्मत न रही, अत. वह छिप-छिप कर फिरने लगा।

शिवकामी इस घटना के बाद अधिक दिन जीवित न रही। परपरानुसार घटित कुछ घटनाओ तथा उडती-उडती खबरो की सहायता से रत्नम ने कल्पना कर ली कि उसके अतिम दिन किस प्रकार बीते होगे।

गुरुमूर्ति ने उससे एक शब्द भी नही कहा। उन्होने उसे अपने घर से भी नही भगाया। कमल-पत्र पर पडी जल की बूद के समान वह घर पर रहते हुए भी उसमे लीन नही हुए। वह राजर्षि के समान घर मे रहते हुए सन्यासी का-सा जीवन बिताने लगे।

शिवकामी का क्या हुआ? जैसे ही वह बात गुरुमूर्ति के कानो मे पडी, उसके प्राण मानो उसके शरीर से अलग हो गये। वह जीवित शव के समान दिखायी देने लगी। उस दिन उसे जो ज्वर हुआ वह फिर कम न हुआ। ज्वर दिन प्रतिदिन बढता गया और अत मे घातक रोग बन कर उसके प्राण ले लिये।

इसमे विस्मय की कोई बात न थी। श्मशान भूमि मे जाकर, उसे जला-कर लौटते हुए गुरुमूर्ति ने अनायास ही जो शब्द कहे थे, वे शब्द अब भी

पक्षों के बीच के अंतर को समझ सके। पिंजरे से निकल आने पर चिड़िया जिस प्रकार स्वच्छंद हो उड़ने लगती है उसी प्रकार उसका मन भी स्वतंत्र रूप से विचरण करने लगा।

उसके बाद की सभी बातें उसे स्वप्नवत् लगीं। उस घटना के पाँच-छः दिन बाद तक उसका व्यवहार समाज के साधारण प्राणियों के समान नहीं रहा। उसे लगा कि वह मेघों के समान आकाश में विचरण करनेवाली आत्मा है। उस स्थिति में वह अपने छिन्न-भिन्न स्वप्न को पुनः जोड़कर उसे पूर्ण रूप में कैसे देख सकता?

विवाह के बाद सभी घर लौट आये। रत्नम हवा के सहारे उड़ती हुई पतंग के समान अनायास ही घर आ पहुँचा।

रत्नस्वामी अपने घर में कभी नहीं सोता था। वह सदा गुरुमूर्ति के घर के बरामदे में ही सोया करता था। उसकी यह आदत सात-आठ वर्ष पुरानी हो चली थी। उसका बिस्तर उनके बरामदे के एक कोने में पड़ा रहता था। उसे न कोई टोकता था और न वहाँ से हटाता ही।

एक दिन शाम को रत्नस्वामी टहलता-टहलता वहाँ आया। दूर से ही उसे बरामदे में गुरुमूर्ति बैठे दिखायी दिये। वह हमेशा मुस्कराते हुए उसका स्वागत करते थे परन्तु उस दिन वह गुमसुम बैठे रहे। रत्नम के पास आ जाने पर उनके चेहरे पर कठोरता का भाव उभर आया। अंत में वह एक झटके के साथ उठ खड़े हुए और उन्होंने बड़े गुस्से से रत्नम के देखते-देखते बरामदे में पड़े हुए उसके बिस्तर पर एक लात मारी। वह बिस्तर वहाँ से दो गज की दूरी पर सड़क में जा गिरा।

रत्नम स्तम्भित रह गया। वह मूक होकर घर के बाहर एक पेड़ के नीचे शिलावत् खड़ा हो गया। गुरुमूर्ति कुछ देर तक वहीं खड़े-खड़े शून्य की ओर ताकते रहे और फिर वहाँ से चल दिये।

कुछ देर बाद रत्नम सचेत हुआ। 'यह आदमी जानवर है! जानवर है।' बुदबुदाते हुए वह वहाँ से चल दिया। उसने सड़क पर अस्त-व्यस्त दशा में पड़े हुए अपने बिस्तर को उठाकर, उसे ठीक किया। मन में नाना विचार उत्पन्न हुए। मनुष्य को भव-त्रास लगती है, प्रकृति द्वारा उकसाये जाने पर वह नाना काम करता है। आग, हवा, भाप, बिजली जिस प्रकार जल्दी-जल्दी अनवरत काम करते रहते हैं उसी प्रकार भावावेश में आकर, भावना के प्रवाह

मे पडकर अथवा चचलतावश मनुष्य न जाने क्या-क्या कर बैठता है। न्याय, धर्म, सत्य, पाप, पुण्य आदि की स्थिति केवल कहने भर के लिये है। भावना के प्रवाह मे वह जाने पर इनका कोई मूल्य नही रह जाता है।

सत्य क्या है? यही कि विवाह की हलचल मे एक घटना घटित हुई जिसने रत्नम को जीवन भर के लिये वेदना दे दी। वहा लोग उस घटना को लेकर फुसफुसा रहे थे परतु किसी की हिम्मत न हुई कि वे उसकी चर्चा गुरुमूर्ति से करे। गाव लौटते ही उन्हे किसी तरह सारी बात मालूम हो गयी। अपने द्वारा पाला-पोसा गया बैल यदि अपने पर ही झपटने लगे तो कैसा लगता है? गुरुमूर्ति उस समय जो चाहे कर सकते थे परतु उन्होने कुछ नही किया क्योकि वह स्वाभिमानी थे, दार्शनिक थे, शात स्वभाव के आदमी थे। शाति रूपी चट्टान को तोडता-फोडता हुआ वहनेवाला क्रोध का प्रवाह गगा की वेगवती धारा के समान कहा हो सकता था? उसने तेजी मे वहते हुए झरने का रूप धारण कर लिया।

उस दिन से गुरुमूर्ति का रूप विल्कुल वदल गया। विषैले सर्प के समान रत्नम मे भी किसी के सम्मुख आने की हिम्मत न रही, अत वह छिप-छिप कर फिरने लगा।

शिवकामी उस घटना के वाद अधिक दिन जीवित न रही। परपरानुसार घटित कुछ घटनाओ तथा उडती-उडती खबरो की सहायता से रत्नम ने कल्पना कर ली कि उसके अतिम दिन किस प्रकार वीते होगे।

गुरुमूर्ति ने उनसे एक शब्द भी नहीं कहा। उन्होने उसे अपने घर से भी नही भगाया। कमल-पत्र पर पडी जल की वूद के समान वह घर पर रहते हुए भी उसमे लीन नही हुए। वह राजर्षि के समान घर मे रहते हुए सन्यासी का-सा जीवन विताने लगे।

शिवकामी का क्या हुआ? जैसे ही वह वात गुरुमूर्ति के कानो मे पडी, उसके प्राण मानो उसके शरीर से अलग हो गये। वह जीवित शव के समान दिखायी देने लगी। उस दिन उसे जो ज्वर हुआ वह फिर कम न हुआ। ज्वर दिन प्रतिदिन वढता गया और अत मे घातक रोग वन कर उसके प्राण ले लिये।

इसमे विस्मय की कोई वात न थी। श्मशान भूमि मे जाकर, उसे जला-कर लौटते हुए गुरुमूर्ति ने अनायास ही जो शब्द कहे थे, वे शब्द अव भी

रत्नम के हृदय को शूल की तरह भेद रहे थे।

"तू अब पवित्र हो चुकी है। तू अपनी भूल का प्रायश्चित कर चुकी है। तू सौभाग्यवती के रूप में इस संसार में जा रही है—अच्छा जा। किन्तु वह वह अबोध युवक! "

इसके बाद वह कुछ न बोले। आगे वह क्या कहना चाहते थे? क्या अब कहीं उस बात को जानने का कोई उपाय है? मुनियों का-सा जीवन व्यतीत करनेवाले उस महात्मा की मृत्यु को भी आज छः महीने हो गये हैं।

अब केवल वह बैलगाड़ी ही शेष रह गयी है। उन्होंने मरते समय कहा था कि शानापन के अतिरिक्त अन्य कोई व्यक्ति इस गाड़ी को हाथ नहीं लगायेगा। वह भी कई दिनों तक भारी दिल से आकर इस गाड़ी पर बैठता रहा, रोता रहा किंतु कुछ मास हुए, वह भी मर गया है। यह सब कितने आश्चर्य की बात है!

उनके मरने के बाद रत्नम चुपचाप गाव छोड़कर भाग गया और इधर-उधर भटकने लगा। उसने बहुत-सा रुपया कमाया परंतु उसके हृदय का भार कम न हुआ। वह उस भार को ढोने में असमर्थता का अनुभव करने लगा। विवाह की इच्छा से अनेक लड़कियां उसके पास आयीं परंतु उनमें से किसी से भी विवाह करने की उसकी प्रवृत्ति नहीं हुई। बार-बार मन में कोगणशेरी गाव ही आने की इच्छा उठी परंतु एक अज्ञात भय की भावना हर बार उसे रोकती रही। अंत में वह भय छोड़ कर गाव जा पहुंचा। क्या वह इसी दृश्य को देखने के लिये यहां आया था? नहीं। उसने स्वप्न में भी इस दृश्य को देखने की कल्पना नहीं की थी।

जीवित रहते हुए उन्होंने रत्नम को क्षमा नहीं किया। उस पाप के परिहार का उपाय क्या है? उस पाप से मुक्ति का प्रायश्चित क्या है? छिद-छिद कर छलनी हुए उसके मन को अब तक शांति नहीं मिल सकती है?

उसने एक दृढ़ संकल्प किया। गुरुमूर्ति का घर अब चाहे किसी भी व्यक्ति के अधिकार में हो, उसके लिए चाहे उसे बहुत-सा रुपया देना पड़े, वह उसे अवश्य खरीद लेगा। जीवित रहने तक वह उस लघु बैलगाड़ी की देख-भाल उसी तरह करेगा जैसे गुरुमूर्ति किया करते थे। फिर? फिर? क्या घर के भीतर उन दोनों की तस्वीरें लगाकर नित्य उनसे क्षमा याचना करे? इसके बाद क्या शांति से चैन की नींद सो सकेगा? नहीं, कदापि नहीं। अब तक

उसे उसी प्रकार रहना पडेगा परतु फिर भी वह घोर तप करने के अपने सकल्प को नही छोडेगा। वह आज से ही तप करना आरभ कर देगा।

विचारो की आधी मे भटकने के बाद रत्नम इतना थक गया मानो उसने घोर परिश्रम किया हो अत॰ वह उस पुराने बरामदे मे 'धम' से जा गिरा और उसने बरामदे के खभे पर अपना सिर टिका लिया। अब वह हमेशा यही सोयेगा परतु उसे सोने के लिए कोई बिछौना नही मिलेगा, हर्गिज नही मिलेगा।

उगली

मेरे आदर और प्रेम के योग्य पात्र श्री अ० अ० अय्यर को अनेकों नमस्कार। सच्चे आदर और हार्दिक प्रेम भाव से प्रेरित होकर ही मैं आपको इस प्रकार संबोधित कर रहा हूं। आपका गोरा शरीर, विशाल आकार, गंभीर दृष्टि, विशाल चौड़ा चेहरा, लंबी तीखी नाक, चौड़ा वक्ष, पेट, बंद गले का कोट, कोट की जेब में पड़ी हुई घड़ी, उसको बटन में बांधनेवाली सोने की जंजीर, माथे पर सोने की रेखा के समान सुशोभित चंदन की तीन रेखाएं, बीच में कुंकुम की बिंदी, इन सबमें महत्वपूर्ण सिर पर बंधी हुई सफेद पगड़ी, पगड़ी को स्थिर रखने के लिए उसके बीचों-बीच लगाये गये, कभी दिखते हुए तथा कभी न दिखते हुए आलपीन का ऊपरी भाग, पैरों में लाल जूते, मुंह में इलायची, लौंग, सुगंधित तंबाकू से युक्त महकता हुआ कुंभकोणम का पान, उस सुगंध में लिपटे आपके सुंदर शब्द—यह सब किसको प्रभावित नहीं करते? सहस्र लोगों, सोलह सहस्र लोगों की भीड़ में भी लोग आपको ही देखते रहते हैं। आपकी बातें भी इसी प्रकार की हैं। आप उस जमाने के बी० ए० हैं। प्रत्येक शुक्रवार को जब आप चपरासियों और क्लर्कों को इकट्ठा कर दस मिनट बोलते हैं तब आपकी अंग्रेजी शैली को सुनते ही बर्क, मेकाले, गिब्बन आदि की याद आती है और लोग आनंद विभोर हो उठते हैं। मैं क्या जानता हूं। मैं तो मैट्रिक पास हूं। आपके विचारों को न समझते हुए भी यह जानकर कि आपके द्वारा बोली जानेवाली अंग्रेजी भाषा का रूप अब इस देश में नहीं दीख पड़ेगा, मैं अकसर व्याकुल हो जाता हूं। क्या आपको पूरी भगवद्गीता याद है? क्या संपूर्ण कुरल¹ याद है? कंबरामायणम के पदों को नीचे से ऊपर तक दुहरा सकते हैं? भागवत के इतने श्लोक आपको कैसे याद हो गए हैं? कालमेगम² इरट्टैयर³ आदि कवियों की कविताएं सुनाकर आप हमें हंसाते हैं उन्हें आपने कहां से सीखा?

---

¹तमिल का एक प्रसिद्ध नीति ग्रंथ-रचयिता तिरुवल्लुवर

²तमिल के एक भक्त कवि

³तमिल के दो कवि जो मिलकर कविता रचना करने के कारण इरट्टैयर (जुड़वे विद्वान) कहलाते हैं।

इन सबका अध्ययन करने के लिए आपको समय कैसे मिला ? व्यवस्था, हिसाब-किताब, वेतन, बाट, अवकाश के संबध मे सरकार समय-समय पर मोटी-मोटी पुस्तके प्रकाशित करती है और नियमो मे सशोधन भी करती रहती है। उन सभी नियमो और उनके सशोधित रूपो को आप कैसे याद रखते है। इसके लिए आपको कहा से समय मिल जाता है? आपके पास समय है? इस विषय मे मैं कुछ नही कह सकता हू। एक सरकारी कर्मचारी के रूप का वर्णन करने के लिए एक अलग पुस्तक लिखने की कोई आवश्यकता नही है। उसके लिए कक्षाए लगाने की आवश्यकता भी नही है। आपको महीने भर देख लेना ही पर्याप्त है।

दफ्तर मे ही नही, दफ्तर के बाहर घर और समाज मे किस तरह रहना चाहिए यह आपसे सीखा जा सकता है। आप घर जाते ही क्या करते है? तीन-दो-पाच खेलते है? ताश खेलते है? रमी खेलते है? क्लबो मे गपशप करते है? अच्छे बुरे मे भेद न जानते हुए भी सभी नाटको और सभी सिनेमाओ को देख कर ठठाकर हसते हुए अपना समय बरबाद करते है? बिल्कुल नही। घर आते ही हाथ-पैर धोकर उप्पुमा[1], वज्जी[2], मोज्जी[1], आदि खाकर, बढिया काफी पीकर अपने पुत्र को बुलाकर इसुलिन का इजेक्शन लगाने को कहते है। आप डायबिटीस हो जाने से अच्छे भोजन को त्यागनेवाले कायरो मे नही है? आप रसिको मे सर्वश्रेष्ठ गिने जाते है। इसी से मेरी दृष्टि मे आपका मूल्य और बढ गया है। उसके बाद कुछ देर तक आराम करके फिर सध्यावदन करते है और पूजा के कमरे मे बैठकर वीणा बजाते है। वहा तजौर के राम और कृष्ण की बडी-बडी तस्वीरे रखी हुई है। वीणा बजाते हुए गाते भी है। यहा आपका तबादला हुए सात साल हो गये है, आप वीणा बजाना जानते है, गाना जानते है, आपने किसी को भी नही बताया। आपके इस परिपूर्ण ज्ञान और सयम का मूल्याकन मुझ जैसा तुच्छ व्यक्ति कैसे कर सकता है!

तीसरे साल रामनवमी के दिन आपने हमे 'ए लडको यहा आओ' कहकर बुलाया। हम तो सुडल[2], शर्बत और पैसा पाने की आशा से गये थे[3]। हम कैसे

---

[1] दक्षिण भारतीय घरो मे बनाये जानेवाले विभिन्न पकवान

[2] चने मूग आदि की दाल से बना एक पकवान

[3] रामनवमी के दिन नारियल डाल कर छौंके हुए चने (सुडल) शर्बत और पैसा दान करने का रिवाज है।

जान सकते थे कि हमारे लिए 'वीणा गान' रूपी भोज आयोजित किया जा रहा है। मैं बी० ए० पास नहीं हूँ। तीन सभाओं का सदस्य हूँ, अतः अनेक संगीत-सभाओं में सम्मिलित हुआ हूँ। परंतु उस दिन आपका गाना और वीणा वादन सुनकर मेरा दिल भर-भर आया। मुझे सिसकते हुए देख पास में बैठे हुए तिरुमलै ने पूछा, "क्यों जनाब, यह क्या हो रहा है ?" मुझे लज्जा आयी। पैरों के घाव से बहते हुए खून की ओर संकेत कर मैंने स्थिति को सँभाला। आपके गाने की रीति ही विशिष्ट थी। ताल दिये बिना आपने त्यागराज, गोपाल कृष्ण, भारती आदि के कीर्तनों को बड़े सुंदर ढंग से गाया। भावना के प्रवाह में बह गये। भाव-विभोर होने पर आपका हृदय द्रवीभूत हो उठा। आपने हमें, विशेषतः मुझे द्रवित कर दिया। बाद में पूछताछ करने पर सी० ओ० ए० ने बताया कि आपका संबंध प्रसिद्ध संगीतज्ञों के एक खानदान में है। साठ वर्ष पूर्व जब आपकी दादी प्रातः उठकर कावेरी में स्नान करने के लिए जाती थीं तो 'उरगे रामैया' नामक गीत जोर-जोर से गाती थीं। उस गीत को सुनकर हवा और पेड़-पौधे भी स्तंभित रह जाया करते थे। जब लोग भाव-विभोर होकर सच्चे हृदय से गानेवाले व्यक्ति का गाना सुनना चाहते थे तो वे इनसे गाने का अनुरोध करते थे। इन सब बातों को सुनने पर मुझे लगा कि भावों के अतिरेक से मेरा हृदय टूक-टूक हो जायेगा। लेखा-जोखा रखनेवाले एक सरकारी अधिकारी के नीचे नहीं, अपितु एक महान व्यक्ति के अधीन काम कर रहा हूँ, यही भावना मेरे मन में उदित हुई। आप नौ रुपये महीना वेतन पाने और अच्छे कपड़े पहनकर इधर-उधर घूमनेवाले प्रतिनिधियों में नहीं हैं। आप एक महान सभ्यता की परंपरा के प्रतिनिधि हैं। आजकल आपको देखने से मुझे लगता है कि मैं सघन छाया और कुंजों से युक्त कावेरी नदी के किनारे खड़ा हूँ। आपकी आवाज को सुनने से लगता है मैं उस नदी के कुंजों में और उसके चारों ओर बैठी हुई कायलों और नीलों नामक चिड़ियों की आवाज सुन रहा हूँ। सिर झुका कर आपको नमस्कार करने के अतिरिक्त और क्या करूँ ?

आपके प्रति श्रद्धा भावना होने के कारण मैं निम्न पंक्तियाँ लिख रहा हूँ।

महाशय वेंकटाचल महालिंगम पिछले चार-पाँच दिनों से न जाने क्या-क्या बक रहा है। वह कहता है ए० ए० अय्यर का अर्थ है अपनी आश्चर्य ([illegible]) अक्षर। इसे सुनते ही मैं स्तंभित रह गया। 'ए महालिंगम, बड़े नाना ! विनय

मे ऐसा मत कहो । अय्यर महान आदमी है। वह साधारण सरकारी अफसर नही है। वह परमज्ञानी है, विद्वान है। उनकी बुराई करने से मुह मे कीडे पड जायेगे," मैंने उससे कहा।

"तूने उनके विषय मे जो कुछ कहा उसी कारण से मैं उनकी निदा करता हू," वह बोला। इसके बाद उसने जो कुछ कहा उसे भी सक्षेप मे कहे देता हू।

"आप हर बार कभी कोचीन, कभी कोयबतूर, कभी तिरुच्ची, कभी तिरुवनतपुरम, कभी मदुरै तो कभी मैसूर जाते है। इन नगरो का दौरा करके लौटते समय रेल का टिकट कभी नही खरीदते। गाडी के चलने का समय होते ही प्रथम श्रेणी के डिब्बे मे चढ जाते हैं। डिब्बे को झाड-पोछ कर उसमे अपना बिस्तर बिछा लेते है। किवाडो को बद कर, चिटखनी लगा लेते है। सुरक्षा के लिए कुडी भी लगा लेते है और बत्ती बुझाकर शाति पूर्वक सो जाते है।"

"हममे से कोई होता तो टिकट चैकर इस तरह जगाकर टिकट मागता मानो भिखारियो को जगा रहा हो। हम सब बेचारे थर्ड क्लास के यात्री है न? उस महानुभाव को कौन जगा सकता है? वह तो फर्स्ट क्लास के यात्री है। कभी-कभी रात को दो या तीन बजे उस महानुभाव की आखे खुल जाती है। फर्स्ट क्लास के यात्री के पास कौन फटक सकता है! वह आराम से सो जाते है। सेंट्रल स्टेशन पहुचते ही कुली से बिस्तर नीचे उतारने को कहकर, नीचे खडे हो जाते है। वी सेक्शन का क्लर्क, अय्यादुरै, उनके लिए एक प्लेटफार्म टिकट लिए हुए वहा तैयार खडा मिलता है। भीड के साथ उनका बिस्तर स्टेशन से बाहर पहुचा दिया जाता है। वह दोनो आराम से चलकर बाहर आकर एक टैक्सी मे अपने घर जा पहुचते है।"

"ए महालिगम यह तुम क्या बक रहे हो?"

"मैं बक रहा हू। मेरे पास प्रमाण है! प्रमाण! इस आदमी ने जन्म भर कभी टिकट नही खरीदा किसी दिन गलती से गेट पर टिकट पूछ लेने पर कहते, "मेरे कागज-पत्र, पर्स, टिकट वगैरह मेरे पर्सनल क्लर्क के पास है। उधर देखिये वह आ रहा है," और चुपके से खिसक जाते। वह हम तुम जैसे थोडे ही है? हमारे चेहरे पर लिखा हुआ है कि हम क्लर्क है। उन्हे देखने पर वह किसी प्रात के दीवान लगते है न? क्या डील-डौल है! उनकी दृष्टी रोबिली है। ऐसा व्यक्ति यदि पीछे की ओर सकेत कर दे तो फिर कोई मुह खोलकर कुछ कह सकता है?"

"ए मैं इस पर विश्वास नहीं करता।"

"तेरे विश्वास करने से मेरा क्या आना-जाना है? मैंने प्रमाण इकट्ठे कर रखे हैं। उन सबको एक कागज पर लिखकर उसे उनके पास और उनके अफसर के पास भेज दूंगा।"

"प्रमाण? तुम्हारे पास प्रमाण कहाँ से आये?"

"सितंबर मास की बीस तारीख को अ० अ० अय्यर कोचीन से फर्स्ट क्लास के डिब्बे में चढ़े थे? नहीं? पन्द्रह टिकट रिजर्व किये गये हैं। उसमें इनका नाम नहीं है। इसके अतिरिक्त और कोई टिकट नहीं बिका। परन्तु वह इसी गाड़ी में उतरे थे, यह कैसे हुआ? पिछले साल मई महीने की छः तारीख को ये जिस गाड़ी से आये थे, उसके लिए कडलूर स्टेशन से फर्स्ट क्लास का कोई टिकट नहीं बिका, फिर वह वहाँ से कैसे आये? उन्होंने लिखकर दिया कि वह उसी गाड़ी से आये हैं और पैसे वसूल कर लिये। ऐसा काम कौन करता है? परमज्ञानी? या प्रपंची (धोखेबाज)? इन्हें यहाँ से हटाकर ही मैं दूसरा काम करूँगा। मैंने विभिन्न स्टेशन मास्टरों से मांगी बातें तारीख के हिसाब से लिखवा रख ली हैं जनाब! यह मत सोचो कि मैं टीन के खाली डिब्बे की तरह बिना बात के शोर कर रहा हूँ।"

"जोर से चिल्लाइये—मैं आपको मना नहीं करता। परन्तु प्रश्न का उत्तर जरूर चिल्लाइये।"

"तू क्या पूछेगा?"

"मान लिया हमारे साहब ने वह सब किया है जो कुछ तुम कह रहे हो।"

"मान लो! उन्होंने ऐसा किया है, मेरे पास प्रमाण है।"

"अच्छा उन्होंने यह सब कुछ किया, परन्तु इससे तुम्हें क्या?"

"क्या कहा, इससे मुझे क्या? बड़े न्याय की बात कही! यह पैसा किसका है? सरकार का है अर्थात् मेरा है जो कि मैं टैक्स के रूप में देता हूँ। एक पैसा भी खर्च किये बिना यात्रा-भत्ते के रूप में हर बार सौ, दो सौ रुपये यह ले लेता है। क्या यह उतना कमाता है? वहाँ उस बेचारे को पाँच-दस नहीं दे सकता जो हर बार प्लेटफार्म टिकट लेकर इस बड़ी-बड़ी विपत्तियों से बचाता है? वह तो बेचारा नादान है। यह धोखेबाज ही नहीं, किये हुए उपकार को न माननेवाला नमकहराम है। यह जितना ही [illegible], [illegible] ... रहे हैं तुमने कहा।"

"आप लगोटी बाध कर लडने पर क्यो तुल पडे है ? क्या उन्होने आपको कोई दुख दिया है?"

"यह सब काफी नही? मुझे अलग मे दुख देने की आवश्यकता है? पिछले साल तुम्हारे इस परमज्ञानी ने लिख कर दिया था कि उन्होने बीस दिन के लिए मेलमावरम जाकर दफ्तर के लेखे-जोखे की जाच की और इस प्रकार बीस दिन का भत्ता ले लिया परतु वह वहा दो ही दिन ठहरे थे। बीस दिन तक तो इनका क्लर्क ही ठहरा था। इसी तरह कही चार दिन ठहरे तो सोलह दिन के पैसे वसूल कर लेते है, तीन दिन ठहरे तो दस दिन के।"

"तुम्हे उन पर इतना गुस्सा क्यो है ?"

"वह चुप रहते तो मुझे गुस्सा नही आता। वह हर शुक्रवार को हम सबको बुला कर एक धार्मिक सभा का आयोजन क्यो करते है ? उपदेश क्यो देते है ? यह पढे-लिखे है तो अपने ज्ञान का प्रदर्शन अपने अफसर के सामने करे। अच्छी तरह भाषण देना जानते है तो नौकरी छोडकर चुनाव लडें। हम सबको बुला कर उपदेश देना, उस दिन न आनेवालो का नाम लिखकर रख लेना, अगले दिन उन्हे बुलाकर, "आप बहुत महान है क्या? आप मेरी कही बाते नही सुनेगे!" कहकर ताने मारना और "आप तो राजनीतिज्ञो और महर्षियो की ही बाते सुनेगे" कहकर हसना, खराब रिपोर्ट लिखकर देना, यह सब मुझे पसद नही। उन्हे यहा से हटाये बिना मैं चैन नही लूगा। इन्ही प्रमाणो को लेकर उनके विरुद्ध एक शिकायत लिखुगा। अगले महीने ही इन्हे डिसमिस करवा कर जेल न भिजवा दिया तो तुम देखना।"

मेरे और महालिगम के बीच इतनी ही बात हुई थी। मैने उसकी शिकायत को और प्रमाणो को भी देखा। वह लडका झूठ नही बोल रहा था। उसने वास्तव मे ही अपने पक्ष को मजबूत बनाने के लिए काफी प्रमाण एकत्र कर लिये है। वह दुष्ट उसी मे ही सतुष्ट नही हुआ। उसने उनके विषय मे यह कहानी भी सुनायी कि उन्होने लडाई के दिनो मे अपने अधिकारो का लाभ उठाते हुए छः दुकानो से खाने-पीने की वस्तुए, मिट्टी का तेल आदि खरीद कर, शाति के दिनो मे जैसे जीवन बिताया जाता है, उससे कही अधिक सुखी जीवन बिताया। ऐसा करते हुए आप पकडे गये और देवदास नामक एक क्लर्क ने आपको बचाया। उसकी सहायता के बदले मे आपने तीन साल के लिए देवदास का इन्क्रीमेट रुकवा दिया। मै सच कहता हू, मैं इन बातो पर विश्वास नही कर पाता हू।

उसकी बाते समर्थ प्रमाणो से पुष्ट है, अन्यथा मैं उन पर विश्वास न करता। उस दुष्ट के प्रमाणो ने मुझे उसकी बातो को मान लेने के लिए विवश कर दिया है। इसके लिए मुझे माफ कर दीजिये।

मैं यही कह सकता हू कि इन विभिन्न बातो को सुनकर तथा स्वय अपनी आखो से देखने के बाद मेरी नीद हराम हो गयी है। आपकी उगलिया ही मेरे नेत्रो के सामने है। आपके बाये हाथ की उगली वीणा के तारो पर इस प्रकार फिसल जाती है मानो आप 'दाशरथे' कहते हुए स्वय भगवान राम पर हाथ फेर रहे हो। 'सभापतिक्कु वेरु' इस गीत को गाते हुए आपकी उगलिया इस प्रकार चलती है मानो तिल्लै स्थित शिवजी का स्पर्श कर पुलकित हो रहे हो। अपने उस परम आनन्द को हम तक पहुचाने के लिए आपके बायें हाथ की उगलिया तारो को छेड कर मधुर ध्वनि उत्पन्न कर रही है। मैंने उस परमानन्द का अनुभव किया है, इसी से मेरे मन मे एक सदेह है कि यही उगलिया झूठे हिसाब-किताब पर हस्ताक्षर कर देती है? दो दिन जाच-पडताल मे लगा कर उसे बीस दिन कैसे लिख देती है? टिकट लेने के लिए या पैसे निकालने के लिए जो उगलिया हिलती भी नही, वे झूठ-मूठ यह लिखकर कि उनने पैसे खर्च किये है, पैसे कैसे ले लेती है? वीणा पर चलती हुई वे उगलिया इस नीच कर्म को करने के लिए कैसे तैयार हो जाती है? वीणा के तारो पर बाये हाथ की उगलियो का फेरा जाता है—परतु उन्हे सीधे हाथ की उगलिया ही छेडती है न? इन हाथो को दो कार्यों मे लगाने का कार्य क्या एक ही मस्तिष्क नही करता? क्या एक ही मन नही करता? यह कैसे सभव है? यही प्रश्न मुझे चकरा रहा है। इसने मेरी नीद खराब कर दी है। मेरी यही इच्छा है कि आप अपनी इन्ही उगलियो से इस प्रश्न का उत्तर लिखकर इस तुच्छ व्यक्ति की आकुलता का दूर कर दे। अगूठीवाली उन सुदर पवित्र उगलियो को ही मै स्वप्न मे भी देखता हू।

मुझे जो तर्क सूझे उनकी सहायता से फिलहाल मैंने महालिंगम को शात कर दिया है। उसका परिवार बहुत बडा है। मैंने उसे यह कहकर समझाया कि वह अपने सात बेटे-बेटियो के अलावा दो विधवा बहनो का भी भरण पोषण करते आ रहे है और साथ ही 'इस नीच! ऐसा नीच काम मत कर' कहकर उसे शात कर दिया है। मेरी आपसे यही प्रार्थना है कि आप यहा आकर उसे अकेले मे बुलाकर सब कुछ समझा दीजिये और इस धर्म-सकट से मुक्त हो

जाइये । 'मेरे सीधे हाथ की उगलिया चाहे कोई अपराध करे, परतु दिव्य ध्वनि को उत्पन्न कर साक्षात ईश्वर को भी मोहित कर देनेवाली मेरे बाये हाथ की उगलिया उसका परिहास कर देगी । उन उगलियो के साथ मिलकर तारो को छेड़नेवाली सीधे हाथ की उगलिया भी समय-समय पर प्रायश्चित कर लेती है । इससे मुझ पर कोई बुराई नही आयेगी । मुझे लगता है कि मैं आपको ऐसा कहते हुए सुन रहा हू । आपको अनेक प्रणाम—आपका प्रिय—क ख ग

नोट —मैंने अपना नाम क्यो नही लिखा इसका कारण बताने की आवश्यकता है ?

अ० अ० अय्यर ने दो-तीन बार उस पत्र को पढा । उनकी गाडी अधेरे को चीरती हुई आगे बढती जा रही थी । फर्स्ट क्लास के उस डिब्बे मे दो ही सीटे थी, सामने की सीट पर एक सरदार जी अपनी पगडी को उतारे, बराबर खुर्राटे मारते हुए सो रहे थे ।

इस पत्र को किसने लिखा होगा ? शायद उस महालिगम ने लिखा होगा शैतान कही का, इस पत्र का मेरे पास पहुचना एक रहस्यमय बात है । एक चपरासी ने बिस्तर लाकर डिब्बे मे रखा । रेल चलने को ही थी कि उसने "अरे, मैं भूल ही गया । घर मे चलते समय एक सज्जन ने मुझे यह लिफाफा दिया और कहा कि इसे साहब को दे देना । अभी उन्हे तग करने की जरूरत नहीं है, जल्दी का कोई काम नही है रात को जब वह यात्रा के लिए चले तब उन्हे देना । शाम का समय था और आप पूजा कर रहे थे । मैने सोचा कि आपको लिफाफा फिर दे दूगा परतु भूल ही गया" कहकर अपनी कमीज की जेब से एक लिफाफा निकाल कर मुझे दिया । गाडी चलने लगी । मैने सरदार जी से एक प्रश्न किया । उत्तर मे उन्होने 'मद्रास जाता' कहकर अपना बिस्तर बिछाया और लेट गये । फिर सरदार जी ने बत्ती बुझाई और सो गये । अ० अ० अय्यर ने अपने सिरहाने की बत्ती जलाकर लिफाफा खोला और पत्र पढने लगे ।

उन्होने पत्र को तीन बार पढा । जब उन्होने उसे चौथी बार पढा तब उनकी भोली मुस्कान लुप्त हो गयी । वह उसमे निहित गूढ अर्थ को समझने लगे । इस धोखे मे अनेक व्यक्तियो का हाथ है । ऐसे व्यक्ति अपने से ईर्ष्या करनेवाले व्यक्तियो का ही बुरा नही करते बल्कि औरो का सुखी रहना ।

उनको फूटी आँख नहीं सुहाता। परन्तु उस व्यक्ति ने यह प्रमाण कैसे इकट्ठे कर लिये? यह काम आसान नहीं है, इसके लिए काफी मेहनत की होगी।

उनका सिर चकराने लगा। 'इतने स्पष्ट रूप में सबके सामने मेरा अपमान।' यह शब्द उनके मस्तिष्क में घूमने लगे। उससे उनका मन अशांत हो गया। मन चाह रहा था कि महालिंगम से इसी क्षण मिल ले परन्तु रेल के पर नहीं थे। वह सवेरे ही मद्रास पहुंचनेवाली थी।

सिरहाने जलती हुई बत्ती के प्रकाश में उन्हें अपने हाथ की उंगलियां दिखायी दीं। अंगूठीवाली उंगली पर निजाव नामक पवित्र अंगूठी चमक रही थी। उंगलियों को देखते समय उन्हें लगा मानो आगें जल रही है। उन्होंने अपनी आँखें फेर लीं। आँखें बंद कर लीं। पैरों को चादर से ढक लिया, मुंह को भी ढक लिया, परन्तु मन में जो भय था वह निरन्तर बढ़ता हुआ, विशाल आकार धारण करता जा रहा था। जैसे कीड़ा बढ़ते-बढ़ते लम्बे-चौड़े साँप के आकार का हो जाय, इसी प्रकार भय भी बढ़ता जा रहा था। उन्होंने कील पर लटके हुए कोट की जेब से घड़ी निकाली। पन्द्रह मिनट में अगला स्टेशन आ जायेगा, यह सोच उन्होंने चैन की साँस ली। वह एक-एक क्षण गिन रहे थे। युगों बाद जैसे स्टेशन आया और गाड़ी रुक गयी।

हाय मा !"

बाथरूम से बाहर निकलकर सरदार ने बाहर के इस दरवाजे को जोर से बद कर दिया । किनारे खडे हुए अय्यर साहब को उन्होने नही देखा । उनका हाथ दरवाजे मे आ गया । उनकी चीत्कार सुनकर सरदार जी ने झट से दरवाजा खोला ।

अय्यर साहब वही प्लेटफार्म पर बैठ गये फिर मूर्छित होकर गिर पडे ।

आखे खोलने पर उन्हे अपने चारो ओर भीड दिखायी दी । कोई आदमी हाथ से बहते हुए खून को पोछ रहा था । बाये हाथ की उगलिया पिचक गयी थी । उगलियो की हड्डिया भी टूक-टूक हो गयी थी । गाडी को वहा से चलने मे आधा घटा देर हो गयी ।

वह रात भर दर्द के मारे कराहते रहे । सरदार जी ने दो बार "माफ कीजिए" कहा और सो गये । सुबह हुई । गाडी मद्रास पहुची ।

उनकी एक उगली पूरी तरह कट गयी थी । टी० टी० उनसे टिकट कैसे मागता ? टी० टी० ने उन्हे लिवा ले जाने के लिए स्टेशन आये हुए अय्यादुरै के साथ मिलकर उन्हे टैक्सी मे बैठाया । अय्यादुरै पूरे रास्ते उनके साथ रहा ।

अ० अ० अय्यर को तीन महीने की छुट्टी लेनी पडी । दफ्तर का प्रत्येक कर्मचारी, अफसर से लेकर चपरासी तक, उन्हे देखने गया ।

एक दिन महालिगम भी गया । वह बहुत देर उनके पास रहा । एकात मे बोलने का अवसर मिलने पर "मैं आपको किसी तरह हानि नही पहुचाऊगा । मैंने सब कुछ फाडकर फेंक दिया है," कहकर उनकी चिपकी हुई, टूटी हुई उगलियो को देख-देख कर रो पडा ।

उसके चले जाने के बाद अ० अ० अय्यर अपनी उगलियो पर बधी हुई पट्टी को देखने लगे । डाक्टर की बातें सुनकर उन्होने समझ लिया कि अब वह वीणा नही बजा पायेगे । अब उन्हे उगलिया उगलियो के रूप मे नही दिखायी दी । वे सूखी ग्वार की फलियो के समान दिखायी दी । उन्हे सब कुछ स्वप्नवत लगा । पत्र, उसमे उगलियो का उल्लेख, फिर दरवाजे का बद होना, उगलियो का भिच जाना । इन बायें हाथ की उगलियो ने क्या पाप किया ? मेरे राम ने दायें हाथ की उगलियो के स्थान पर बायें हाथ की उगलियो को कुचल दिया । उसकी लीला ही विचित्र है ।

"अरे ! आखिर तुम निर्दोष सीता को जगल मे भेजने वाले निर्मम ही तो थे।" कहते हुए अ० अ० अय्यर ने तकिये पर सिर टेक लिया।

'पिताजी न आये'

तीनो लडकिया देखने मे एक-सी ही थी। वे एक ही साचे मे ढली हुई स्वर्ण-प्रतिमाओ के समान दीख पडती थी। परस्पर उनके बीच डेढ या दो वर्ष का अंतर ही था। वे क्रमशः सत्रह, उन्नीस और इक्कीस वर्ष की थी। तीनो का रग भी एक-सा था। लबाई मे अतर नही के बराबर था। वे एक ही डाल पर खिली तीन कलिया थी।

तीनो अविवाहित थी। विवाह सबधी कोई भी विचार उनके मस्तिष्क मे नही था। जहा दिन किसी तरह कठिनाई से व्यतीत हो रहे हो, वहा ब्याह-शादी की बात कैसे चल सकती है ?

इससे क्या ? शहर मे तो अनेक विवाह हो ही रहे है। जगह-जगह कदली-स्तभ लगे हुए है, वाद्यो की ध्वनि सुनायी दे रही है। कटोरे की-सी शक्ल-वाली लडकी के भी भाग्य जाग गये है। चूहे की पूछ के समान चोटीवाली और लगडानेवाली के लिए भी विवाह का शुभ दिन आ गया। अकाउटेट जनरल के दफ्तर मे काम करनेवाली कुरूप मगलम और रग मे कोयल को भी मात कर देनेवाली कोमलम के भी भाग्य जाग गये। यह तीन लडकिया प्रतिदिन उसी मार्ग से जाती है, उसी से लौटती है। विवाह के लिए आये हुए व्यक्तियो की मोटरो और स्कूटरो को भी देखती है। जरीदार पल्लो और टेरी-लीन की पैंटो की सरसराहट भी उन्हे सुन पडती है। वे जल्दी-जल्दी बस के लिए चल पडती है। उनके पास रुकने का अवकाश कहा ? रुककर देखने का विचार उनमे कहा था ?

सबसे बडी लडकी वेदवल्ली को प्रतिदिन प्रातः दस बजे तक टेलीफोन के सामने बैठ जाना पडता था। दूसरी लडकी कनकवल्ली को दस बजे तक कालेज पहुचना पडता था। तीसरी लडकी चपकवल्ली को दस बजे तक पहु-चने पर ही बिना प्रतीक्षा किये टाइपराइटर मिल पाता था। वह न काम पर गयी और न कालेज ही गयी। मैट्रिक पास कर उसने टाईपिग इस्टीट्यूट मे दाखिला ले लिया। देर से जाने पर उसे मशीन के खाली होने तक धैर्य से खडे रहना पडता था।

वेदा के वेतन पर ही इस समय घर चल रहा है। उस वेतन से भरपेट

भोजन मिल जाता है। रसम[1] और भात—आखिर वह भी तो भोजन ही कहलाता है। वेतन मिलने पर महीने के प्रथम सप्ताह में दो दिन उन्हें हरी सब्जियां भी देखने को मिलती थी। हर दिन इस प्रकार धूमधाम से खर्च करने पर कनका कालेज कैसे जाती और चपा इन्स्टीट्यूट कैसे जाती? किसी तरह कष्ट उठाकर वह दस महीने इन्स्टीट्यूट चली जाये तो फिर उसे वहा न जाना पड़ेगा। फिर कहीं भी काम मिल जायेगा। वेदा के दफ्तर में ही उसे नौकरी दिलायी जा सकती है। उसके लिए बड़े लोगों से सिफारिश कर दी है। तब तक वह अठारह साल की हो जायेगी और उसे 'डिप्लोमा' भी मिल जायेगा। तब तक यही दशा रहेगी—अन्यथा अच्छा खाये तो कपड़ों की कमी, और अच्छा पहने तो भोजन के लाले पड़ले। इस समय क्या किया जा सकता है?

ऐसा कोई कष्ट है जिसका अनुभव उन्होंने न किया हो? यह कष्ट उन सभी कष्टों से अधिक नहीं था जो वे झेल चुकी थी? चपा नौकरी करने लगे तो वे और भी आराम से रह सकती हैं। कनका को अभी दो वर्ष और पढ़ाई करनी है। इसके बाद वह जो भी ट्रेनिंग लेगी उसमें एक वर्ष और लग जायेगा। इस प्रकार तीन वर्ष बीत जाये तो फिर कोई कष्ट नहीं रहेगा। तब वे जो चाहे खरीद सकेंगी, खा सकेंगी। तब वह आराम से रह सकेंगी। तब तक और किसी विषय पर सोचने का अवकाश उनके पास नहीं है। देश में, संसार में कई बातें होती है, होने दो। उनके विषय में इन्हें भला चिंता क्यों होने लगी?

वे तीनों लड़कियां जानती थी कि उनकी माता सौंदरम ने अपने ऊपर पड़े सभी कष्टों को अत्यन्त धैर्यपूर्ण सहन किया था। जब उन पर एक के बाद एक विपत्तियों का पहाड़ टूटा और बारी-बारी से दुख आये तो यह तीनों लड़कियां अत्यन्त भयभीत होकर मा के पीछे जा छिपी थी।

सौंदरम (वृक्ष की तरह) उन सभी दुखों को पी गयी और शान्त बनी रही। वह इस प्रकार बातों में लग गयी मानो कुछ भी न हुआ हो। मन की यह अपूर्व दृढ़ता और अडिग धैर्य उसे कहा से मिला? उस समय से लड़कियों को आश्चर्य की अपेक्षा गर्व अधिक था।

सौंदरम को इक्कीस वर्ष की अवस्था तक बाह्य संसार का कोई ज्ञान नहीं था।

---

[1] इमली, मिर्च आदि से बना एक पेय पदार्थ जो प्रायः भात के साथ खाया जाता है। (बहुत ही सामान्य भोजन है)

अब वह प्रौढावस्था को पहुच चुकी थी और पारिवारिक सुखो का अनुभव शातिपूर्वक, सोच-समझकर, अकेले ही कर रही थी। वह भी जलती दीपशिखा के समान सुदर थी। सिंदूर और फूलो से वह अपनी ही नही अपने आगन की भी शोभा वढा रही थी। उसके हाथ लगने पर भोजन मे नया स्वाद और सौरभ आ मिलते थे। कुछ पता नही कि वह कैसे होता था ?

न जाने कौन-कौन आकर उसके हाथ का वना भोजन खाकर उसकी रसोई की प्रशसा कर चुके थे। परतु जिसकी प्रशसा की आवश्यकता थी, जिसकी प्रशसा से उसका हृदय वास्तव मे ही आनदित होता, उस व्यक्ति ने मुह खोल-कर कभी प्रशसा का कोई शब्द कहा हो—ऐसा कभी नही हुआ है। कहते है कि मुह से आशीश न दे तो भी भरा पेट एहसान मानेगा। वह प्रशसा न करे तो कोई वात नही परतु टीका-टिप्पणी किये विना तो रह सकता था ? लेकिन वह विना नुक्ता-चीनी किये नही रह पाता था। वह एक विचित्र जीव था जो कि उसके महत्व को नही जानता था। उसमे इतना गर्व था, अहकार था कि उसे अवोध कहकर नही टाला जा सकता था।

जिन दिनो गाव में जमीन-जायदाद, घर-वार था, लोगो पर अधिकार जमाकर, मौज उडाकर, वैठे-वैठे खा-पीकर, सारी सपत्ति उडा दी। वची-खुची सपत्ति ताश और जुए मे नष्ट कर दी। पास के गाव मे एक घर और थोडी-सी जमीन थी। उसे अजाकुडि की कण्णम्मा नामक स्त्री ने लिखा-पढी करके ले लिया। उसके एक लडकी थी जो वेदा से साल भर वडी थी। उस लडकी को गाना क्या, नाच क्या, सभी कुछ सिखाने के लिए इस व्यक्ति ने भरसक प्रयत्न किया। वृक्ष एक घर के आगन मे लगा हुआ था, फूल दूसरे घर के आगन मे गिरते थे। वह खाना यहा खाती थी और सोती थी अजाकुडि मे। उसकी सुविधा के अनुसार यहा से एक गाडी साढे नौ वजे चलती थी। उस गाडी मे जाने पर वह दस, सवा दस तक घर पहुच जाती थी।

कहा जाता है कि वह आदमी उसके घर अनेको वार गया है। जो लोग उस गाव को गये थे। उन्होने स्वय अपनी आखो से देखकर ऐसा कहा था।

कुछ ने सौदरम से सहानुभूति प्रकट करते हुए कहा, "क्यो री सौदरम, तेरे तीन लडकिया है। उस मूर्ख को मनमाने रास्ते पर क्यो चलने देती है ?"

"मैं क्या करू ? अजाकुडि कहती हू तो मुझे मारने दौडते है। पूछने पर उत्तर देते है ऐसी कुछ वात नही है।"

"तुम कुछ कहो भी। तुमसे पूछती हूँ क्या करूँ। इस विषय में क्या करना चाहिए। यह बताने की आवश्यकता है?"

उसे जो-जो उपाय सूझे उसने उन सबका प्रयोग किया। परिणाम केवल यही हुआ कि उसके आभूषण जाने अनजाने घर से गायब होने लगे। उस व्यक्ति के मन को बदला नहीं जा सका। वह पहले तो पाँच चार दिन में एक बार घर आ जाता था परन्तु अब उसने घर आना बिल्कुल छोड़ दिया।

लोगों ने बताया कि वह कुछ दिन प्रजाकुडि में दिखायी दिया था। इसके बाद न जाने उसने स्वयं वहाँ जाना बंद कर दिया अथवा उसने वहाँ आने से रोक दिया—वह वहाँ भी नहीं दिखायी दिया।

सौंदरम ने उसकी बहुत प्रतीक्षा की। घर ऋण में पूर्णतः डूब गया था। घर के बचे-खुचे आभूषण भी धीरे-धीरे महाजन के घर पहुँच गये। इसके कुछ दिन बाद शहर में रहनेवाले उसके बड़े भाई ने उसे वहाँ आने के लिए पत्र लिखा। वह अपने बच्चों को लेकर उसके पास पहुँची। भाई ने समय-समय पर धनादि देकर उसकी सहायता की। उन दिनों वेदा की वार्षिक परीक्षा थी। सहसा सौंदरम के बड़े भाई ने आँखें मूँद लीं। परिवार को गहरा धक्का लगा। न जाने सौंदरम ने उस धक्के को कैसे सहा। उसी के साथ एक छोटा धक्का और लगा—वेदा परीक्षा में फेल हो गयी। बेच कर खाने के लिए पास में कोई भी चीज नहीं थी। घर में केवल एक कूँडी, कलसा, पतीली और एक खिलौना था। ऐसी कठिन परिस्थिति में वेदा ने दुबारा परीक्षा दी और पास हो गई। किसी ने उस पर दया कर उसे टेलीफोन आपरेटर का काम भी दे दिया। उस वेतन से उसने किस तरह घर चलाया और रमेश को पढ़ने भेजा, इसकी आप कल्पना भी नहीं की जा सकती है। कितनी ही बार भूखा रहना पड़ा था नाना प्रकार के भय का सामना करना पड़ा था, पर बदलने पर दे।

[illegible] जवान हो चुकी थी। अपने सौंदर्य से हठात् सभी को आकृष्ट कर लेती थी। अवस्था ही ऐसी थी कि उसके मन में औरों के समान बनठन कर रहने की इच्छा उत्पन्न हो सकती थी, परन्तु घर में भय-[illegible] था। वे लोग किसी परिवार के साथ मिलकर रह रहे थे। बाहर [illegible] में [illegible] की कोई चीज नहीं थी। उस परिवार को [illegible] नहीं था। सौंदरम अत्यन्त [illegible] के साथ, बड़ी कठिनाई से एक-एक दिन

काट रही थी। इस बीच चपा वडी कठिनाई से ग्यारहवी कक्षा मे पहुच गयी। एक दो साल उसको सहारा देने पर वह भी काम पर जाने योग्य हो जायेगी। कनका अच्छी तरह पढ ले तो वाद मे वह सवकी देख-भाल कर सकती है। सौदरम ने वडे धैर्य के साथ कष्टो मे भी हिम्मत हारे विना, भूखे रहकर या आधे पेट खाकर, वेदा के अल्प वेतन पर जिस रूप मे गृहस्थी चलायी, वह आश्चर्यजनक था।

एक दिन कनका को कालेज से लौटने मे देर हो गयी। तव तक वेदा भी घर आ चुकी थी। जव कालेज मे कोई विशेष कार्यक्रम होता था तो कनका प्रात काल ही वता देती थी। आज वह ऐसा कुछ कह कर नही गयी थी। अतः सभी चिंतित हो उठे। वहुत देर के वाद वह घर लौटी।

"वेटी तुझे इतनी देर कैसे हो गयी ?"

"मा, मैंने रास्ते मे पिताजी को देखा !"

सौदरम चुप हो गयी।

"पिताजी को ? कहा ?" वाकी दोनो लडकियो ने पूछा।

सौंदरम न तो उन्हे देख रही थी, न उसका ध्यान ही वहा पर था।

"कालेज से लौटते हुए रास्ते मे देखा।"

"इसी से तुझे लौटने मे देर हो गयी ?"

"हा। किसी सगीत मडली के नायक के समान ढीला कुर्त्ता और जरीदार धोती, अगवस्त्रम (दुपट्टा) आदि पहने हुए वस स्टैंड पर खडे थे। पहले तो मैंने उन्हे नही देखा। जव उन्होने मेरा नाम लेकर पुकारा तो मैंने मुडकर देखा। मुडते ही देखा कि पिताजी है। शरीर से चदन और इत्र की सुगध आ रही थी, मुह से पान की खुशबू !"

"हा तो फिर ?"

"फिर उन्होने हम सवके वारे मे पूछा। हमारा पता पूछा। मैंने सब कुछ वता दिया। इतने मे वस आ गयी और वह फिर मिलने के लिए कहकर उस पर चढ गये।"

"इसमे तुझे इतनी देर हो गयी ?"

"हम होटल गये थे, इसी से देर हो गयी। मैंने वहुत मना किया परतु उन्होने नही माना। मैं वार-वार उन्हे कैसे मना करती ?"

"उन्होने और कुछ नही पूछा ?"

"बस इतना ही पूछा था कि वेदा का वेतन कितना है और चंपा क्या कर रही है।"

वेदा ने पूछा, "वह आजकल रहते कहाँ हैं?"

"नहीं मालूम।"

"क्या करते हैं?"

"मैंने नहीं पूछा।"

"क्यों नहीं पूछा?"

"मैंने एक बार पूछा, इतने में ही हम किसी और विषय पर बातचीत करने लग गये।"

सौंदरम के धैर्य का बाँध टूट चुका था। वह बोली, "अच्छा! अच्छा! अब उठकर अपना-अपना काम करो।"

कुछ दिनों के बाद उन्हें पिताजी से मिलना, उनसे बातचीत करना—सभी कुछ भूल गया। चंपा का परीक्षा-फल समाचार पत्र में आ गया था। वह हनुमान जी के मंदिर में जाकर एक नारियल तोड़कर घर लौटी।

"नारियल तोड़ दिया?" पूछती हुई सौंदरम वहाँ आयी। बरामदे में दरवाजे के पास एक आकृति को देखकर वह पत्थर की तरह खड़ी रह गयी। चंपा ने भी बाद में मुड़कर देखा कि उसके पीछे कौन खड़ा है। उसके पिता थे! वह पिता, जिन्हें उसने सात-आठ साल की आयु में देखा था। कनका के वर्णन से उसने पिता के जिस रूप की कल्पना की थी उनका रूप बहुत कुछ वैसा ही था।

सौंदरम आश्चर्यचकित होकर, दौड़कर अंदर दरवाजे के पीछे अंधेरे में छिपकर खड़ी हो गयी। हृदय जोर-जोर से धड़क रहा था। लड़कियों ने दौड़कर गयीं और उनका स्वागत किया। उनके अंदर आने से पूर्व ही शरीर पर [illegible] घर के अंदर आ गयी। वह संगीत-सम्राट के समान घर के अंदर आ बैठे। लग रहा था कि वह स्थान उनके लिए उचित नहीं है। लड़कियों में एक विचित्र आवेश था।

"पिताजी आखिर यह घर कैसे मिल गया? मैंने तो आपको उस घर का पता दिया था जहाँ हम पहले रहते थे।" कनका ने कहा। "मैं वहाँ जाकर पूछा। उस मकानवाले ने कहा कि हम उन्हें नहीं जानते। अब क्या करूँ—यों भटकता हुआ हनुमान मंदिर के पास से निकल रहा था। वहाँ मैंने चंपा को

देखा । पहले तो मैंने समझा कि वह तू ही है । चपा अव इतनी वडी हो गयी है ! फिर सदेह हुआ कि वह चपा है या नही । इसलिए उसे मैंने नही वुलाया । किसी तरह मैंने घर ढूढ लिया । यह लो इसे अदर ले जाकर रख दो ।" कहते हुए उन्होने दो तीन केलो को थैले मे से निकालकर रख दिया ।

उन्होने सौंदरम से वात नही की । इतने साल के वाद लौटे हुए पति से वह भी एक शब्द तक नही वोली । परतु उसने अदर से सेव काट कर भेजे, चाय भेजी । इसके वाद जोर-शोर की दावत हुई । पिताजी के लौटने के वहाने उन लोगो ने होश सभालने के वाद आज पहली वार अच्छा खाना खाया था । उनमे कितनी भी वुराइया क्यो न हो, उनके कारण उन्हे कितने ही कष्ट क्यो न सहने पडे हो आखिर थे तो उनके पिता ही । उनके कारण उन्हे जितना अपमान सहना पडा था, उसका कोई हिसाव-किताव नही, जितना दुख सहना पडा था, उसकी कोई सीमा ही न थी । फिर भी वे उन सवको भूल गये । कम से कम अव तो वह उन्हे देखने आये है—यही सोच-सोचकर वे अत्यत प्रसन्न हुए ।

सभी अत्यत प्रसन्न हुए । ऐसा लगा कि घर मे एक नया परिवर्तन हो गया है । हाथ का पखा झलते हुए वह नौ वजे के लगभग सोने चले गये । वहुत देर तक पखे के हिलने की आवाज आती रही। इसके वाद उन्होने कव पखा झलना रोक दिया और कव वह सो गये इसका पता उन लडकियो को न लगा । उनकी मा ने प्रात उठकर स्नान कर, माथे पर वडी-सी विंदी लगा ली थी । पिताजी तव भी सो ही रहे थे—यही उन्हे मालूम था ।

"पिताजी शायद रात को अच्छी तरह नही सो सके । वह वहुत देर तक पखा झलते रहे थे न ?" चपा ने पूछा ।

सौंदरम ने कोई उत्तर नही दिया । चपा ने उसका उत्तर पाने की इच्छा से यह प्रश्न नही पूछा था ।

वेदा दफ्तर मे वैठे-वैठे जव पिताजी के लौट आने की वात सोचती थी तो वह इतनी प्रसन्न हो जाती थी मानो उसे कोई खजाना मिल गया हो । उसे इतना आनद होता था जिसका वर्णन नही किया जा सकता ।

"मा ! तुम वडी खराव हो, मा । पिताजी इतने दिनो वाद लौटे हैं । उनसे क्यो नही वोलती हो ?" चपा ने पूछा ।

"चल हट, जाकर अपना काम कर ।"

"हा, वे आपस मे वाते करेंगे । जव हम लोग नही होगे तव वातें करेंगे

और जब हम लोग होगे तब बाते नही करेगे ।" वेदा बोली ।

उनकी इच्छा तो यही थी ऐसा कुछ हो। यद्यपि माता जी और पिताजी एक दूसरे से नही बोलते थे तथापि उनके मन मे एक क्षीण आशा थी कि उनके ऐसा कहने के बाद वे अवश्य एक दूसरे से बातचीत करेगे।

"बोलने मे क्या रखा है ? क्या बोलना ही सब कुछ है ?"

सबसे पहले ज्यादा दूध डालकर बनायी गयी काफी उनके लिए लायी जाती थी। गर्म काफी मे से भाप उठती थी। कधे पर डाले हुए दुपट्टे के छोर से गिलास को पकडकर, घूट-घूट करके बडे स्वाद से, मौन रहनेवाले वह व्यक्ति उस काफी को पीते थे। खाना खाते समय रसम को अजलि मे भर-भर कर पीते थे। नौ बजे के लगभग हाथ मे पखा लिए हुए सोने चले जाते। बस, साढे दस बजे के बाद जब उन्हे पता लग जाता था कि लडकिया सो गयी है, तो [illegible] दमे से आवाज कर धीरे से खासते थे। अधेरे की ओर मुह कर पानी मागता। न जाने उन्हे किसकी प्यास थी ?

प्रारम्भ मे अगर वे बाते न करे तो क्या ? वे बाते कर नही पाते थे और बोलने की आवश्यकता भी नही थी। चौथे दिन सुबह वह अपने बिस्तर पर नही दिखायी पडे।

चार-पाच दिन तक उन्हे इस बात का दुख रहा कि वह आकर लौट गये। बहुत दिनो तक उनका सहसा आ जाना, साथ रहना आदि बाते उन्हे अधूरे स्वप्न के समान लगी।

चपा की दृष्टि उन्हे वहा खोजती थी जहा वह पखा झलते बैठे रहते थे। कुछ देर तक वह भ्रम मे पडी रहती। इतने मे ही कनका आ जाती थी, वेदा भी आ जाती थी। बातचीत का रुख बदल जाया करता था। वह किसी से कितना ही बोले, उसके मन मे मा के प्रति एक शिकायत थी। न जाने सौदरम उसे जानती थी या नही। अब वह चपा से ही नही बाकी लोगो से भी ठीक तरह से, पहले की तरह मन खोलकर बाते नही करती थी।

तीनो लडकिया मा मे आये इस परिवर्तन को अच्छी तरह समझ रही थी। परतु उन्होने इस विषय मे कोई चर्चा नही की। केवल चपा के मन मे तीव्र इच्छा थी कि वह मा से प्रेमपूर्वक बाते कर, उन्हे पहले जैसे हसने और बोलने योग्य बना दे।

"क्यो मा तुम उदास क्यो हो?"

"उदास कहा हू?"

"तुम बदल गयी हो। क्या कोई तकलीफ है? तुम्हे कोई दुख है या क्रोध है?" एक दिन चपा ने एकात मे पूछा।

"मुझे कोई दुख भी नही है, गुस्सा भी नही है," एक ही वाक्य मे उत्तर देकर सौदरम ने चपा को टाल दिया और वहा से चली गयी।

"नही, तुम्हारे मन मे कुछ बात है। सच बता दो मन मे क्या है," पूछती हुई चपा मा के पीछे-पीछे गयी।

सौदरम कुछ मुस्कराती हुई बोली, "चल हट मेरे मन मे कुछ भी नही है। मैंने तो तभी उन बातो को भुला दिया।"

"फिर तुममे यह परिवर्तन क्यो आ गया है? तुम डरी-डरी-सी क्यो दिखायी देती हो?"

"मैं क्या करू कुछ समझ मे नही आता। तबीयत बिल्कुल ठीक नही है।"

"वेदा के दफ्तर मे एक लेडी डाक्टर आती है, उसके पास क्यो न चले?"

"हा चलेंगे, परतु मेरे पास समय नही है।"

और जब हम लोग होंगे तब बातें नही करेंगे ।" वेदा बोली ।

उनकी इच्छा तो यही थी ऐसा कुछ हो । यद्यपि माता जी और पिताजी एक दूसरे से नही बोलते थे तथापि उनके मन में एक क्षीण आशा थी कि उनके ऐसा कहने के बाद वे अवश्य एक दूसरे से बातचीत करेंगे ।

"बोलने में क्या रखा है ? क्या बोलना ही सब कुछ है ?"

सबसे पहले ज्यादा दूध डालकर बनायी गयी काफी उनके लिए लायी जाती थी । गर्म काफी में से भाप उठती थी । कंधे पर डाले हुए दुपट्टे के छोर से गिलास को पकडकर, घूंट-घूंट करके बडे स्वाद से, मौन रहनेवाले वह व्यक्ति उस काफी को पीते थे । खाना खाते समय रसम को अंजलि में भर-भर कर पीते थे । नौ बजे के लगभग हाथ में पंखा लिए हुए सोने चले जाते । दस, साढे दस बजे के बाद जब उन्हें पता लग जाता था कि लडकियां सो गयी हैं, तो वह पंखे से आवाज कर धीरे से खांसते थे । अंधेरे की ओर मुंह कर पानी मांगते । न जाने उन्हें किसकी प्यास थी ?

आपस में अगर वे बातें न करें तो क्या ? वे बातें कर नहीं पाते थे उन्हें बोलने की आवश्यकता भी नहीं थी । चौथे दिन सुबह वह अपने बिस्तर पर नहीं दिखायी पडे ।

सुबह उठते ही अंदर आकर चंपा ने पूछा, "मां, पिताजी कहां है ?" उसके प्रश्न से ऐसा लगा मानो उसकी कोई ऐसी चीज खो गयी है जिसके रहने पर, उसको देखकर ही वह तृप्त होती थी ।

"मुझसे आकर पूछती हो । जैसे मैंने उन्हें अपने पल्ले में छिपाकर रख लिया है । वहीं तो सात बजे तक सोते रहते हैं ।"

"वहां नहीं हैं न !"

"शायद जल्दी ही उठ गये हो ?"

"बाथरूम के पास भी नही है न । घर आये हुए व्यक्ति का तुमने आदर नहीं किया । उनसे एक शब्द भी नहीं बोलीं । इसी से उन्हें यहां रहना अच्छा नही लगा । गलती तुम्हारी ही है । मैं तो यही कहूंगी !"

"हां री हां, सारी गलती मेरी ही है ।" सौंदरम बोली । "उन्होंने हमारे प्रति जो अन्याय किया उसे सहते हुए, हमें वह बेसहारा, बेघरबार छोड गये इसे भूलकर, मैंने उन्हें घर आया मेहमान समझ कर उनसे बातें नहीं की—यह मेरी गलती है ।" अज्ञात दिशा में आंखें गडाये हुए सौंदरम बोली ।

चार-पाच दिन तक उन्हे इस बात का दुख रहा कि वह आकर लौट गये। बहुत दिनो तक उनका सहसा आ जाना, साथ रहना आदि बातें उन्हे अधूरे स्वप्न के समान लगी।

चपा की दृष्टि उन्हे वहा खोजती थी जहा वह पखा झलते बैठे रहते थे। कुछ देर तक वह भ्रम मे पडी रहती। इतने मे ही कनका आ जाती थी, वेदा भी आ जाती थी। बातचीत का रुख बदल जाया करता था। वह किसी से कितना ही बोले, उसके मन मे मा के प्रति एक शिकायत थी। न जाने सौंदरम उसे जानती थी या नही। अब वह चपा से ही नही बाकी लोगो से भी ठीक तरह से, पहले की तरह मन खोलकर बाते नही करती थी।

तीनो लडकिया मा मे आये इस परिवर्तन को अच्छी तरह समझ रही थी। परतु उन्होने इस विषय मे कोई चर्चा नही की। केवल चपा के मन मे तीव्र इच्छा थी कि वह मा से प्रेमपूर्वक बाते कर, उन्हे पहले जैसे हसने और बोलने योग्य बना दे।

"क्यो मा तुम उदास क्यो हो?"

"उदास कहा हू?"

"तुम बदल गयी हो। क्या कोई तकलीफ है? तुम्हे कोई दुख है या क्रोध है?" एक दिन चपा ने एकात मे पूछा।

"मुझे कोई दुख भी नही है, गुस्सा भी नही है," एक ही वाक्य मे उत्तर देकर सौंदरम ने चपा को टाल दिया और वहा से चली गयी।

"नही, तुम्हारे मन मे कुछ बात है। सच बता दो मन मे क्या है," पूछती हुई चपा मा के पीछे-पीछे गयी।

सौंदरम कुछ मुस्कराती हुई बोली, "चल हट मेरे मन मे कुछ भी नही है। मैंने तो तभी उन बातो को भुला दिया।"

"फिर तुममे यह परिवर्तन क्यो आ गया है? तुम डरी-डरी-सी क्यो दिखायी देती हो?"

"मैं क्या करू कुछ समझ मे नही आता। तबीयत बिल्कुल ठीक नही है।"

"वेदा के दफ्तर मे एक लेडी डाक्टर आती है, उसके पास क्यो न चले?"

"हा चलेंगे, परतु मेरे पास समय नही है।"

"आज ही चली जाओ। चाहो तो मैं भी साथ चलती हू। इस्टीट्यूट से लौटते ही चलेंगे।"

"हा चलेंगे। तुम भी चलना, यही ठीक रहेगा।"

इस्टीट्यूट मे सभी लोग एक विवाह मे जाने की तैयारी कर रहे थे। उनके साथ पढनेवाली एक लडकी की वडी वहन की शादी थी। शादी वडे जोर-शोर से होने जा रही थी। चपा अगर शादी पर चली जाती तो मा के साथ डाक्टर के घर नही जा सकती थी अत वह सीधे ही घर लौट आयी। घर के दरवाजे पर ताला लगा हुआ था।

पडौस के मकान मे रहनेवाली एक औरत ने उसे घर की चावी लाकर दी और कहा, "मा की तवीयत ठीक नही थी, इसलिए वह जल्दी ही डाक्टर के पास चली गयी हैं। उन्होने तुमको वहा वुलाया है।"

चपा उस डाक्टर का घर जानती थी। उसने चावी उस औरत को लौटा दी और सीधे ही डाक्टर के घर की ओर चल पडी। चलते समय उसका मन कुछ अस्थिर-सा था। वह घवरा रही थी कि न जाने क्या हुआ जो मा उसके आने के पहले ही चली गयी। इतने पर भी वह वडे धैर्य के साथ डाक्टर के घर गयी।

वहा पहुचने पर उसने देखा कि वेदा उससे भी पहले पहुच गयी है। वह चकित हुई।

"तू कव आयी ? मा के साथ आयी थी ?"

"नही, मा के यहा पहुचते ही डाक्टर ने मुझे फोन किया था।"

"मा की हालत अव कैसी है ?"

"डाक्टर के वाहर आने पर ही सव कुछ पता लगेगा। डाक्टर को नही पता कि मैं यहा हू। मुझे आये काफी देर हो गयी है। मा अदर ही हैं।"

दोनो की समझ मे न आया कि क्या करें। लगभग पद्रह मिनट तक वहीं वैठी रहीं। इसके वाद डाक्टर वाहर आया।

"तुम लोगो को आये क्या वहुत देर हो गयी ?"

"नहीं, ऐसी कोई वात नही। मा की तवीयत कैसी है ?"

"मैंने सुई लगायी है। वह सो रही है।"

"सहसा उन्हे क्या हो गया ?"

"उन्हें कोई 'शाक' लगा है, उन्हे किसी वात की चिंता है। इसी से उनको

तवीयत खराव हो गयी है।"

"वह वेहोश हो गयी है ? उन्हे दिल का दौरा पडा है ?"

"अरे, यह तुम क्या पूछ रही हो ? तुम नही जानती ? उन्हे पाच महीने का.. "

"हाय रे !" लडकिया चीख पडी। उन्हे गहरा आघात लगा।

"वह ठीक समय पर यहा आ गयी इसलिए वच गयी। तुम लोगो के लौटने तक रुकी रहती तो केस विगड जाता।"

"अब आपने क्या किया ?"

"उनके यहा आते ही मैंने उन्हे वेहोश करके जो कुछ करना था कर दिया। अव प्राणो का खतरा नही है। मैं कह रहा था न कि गहरे आघात के कारण या वेदना के कारण उनका गर्भ नही रह सका। आयु भी हो चली है न !"

"हा हा ! वह इकतालीस वर्ष की है।"

"फिर क्या ! इस आयु मे आघात कहा सह सकती हैं, और वह भी इतने वर्षो के वाद ? ठहरो मैं दवाई लिख कर दिये देता हू। दो दिन मे उनकी छुट्टी कर दूगा। इसके वाद दो सप्ताह तक उन्हे आराम करना होगा।"

डाक्टर के अदर चले जाने के वाद वेदा और चपा को एक दूसरे को देखते हुए लज्जा आयी। क्या वोले यही सोचकर वह सकुचित-सी वहा खडी रही।

सहसा चपा को कोई वात याद आ गयी।

"वेदा तू नही समझ रही है ?"

"नही।"

"तू ने पाच महीने पहले कहा था, तुझे वह वात याद नही है ? अरी वे आपस मे वोलेगे, जव हम नही होगे तव वोलेगे, ऐसा तूने कहा था न ?"

"हा, तो क्या यह उसी का फल है ?"

"और नही तो क्या ? उसी कारण यह सव हुआ है।"

वे दवाई का पर्चा लेकर वाहर आ रही थी कि कनका दौडती हुई वहा आ पहुची।

"मा की तवीयत कैसी है ?"

"अब ठीक है। वह सो रही है।"

"घबराने की कोई बात तो नही है ?"

"नही, अब घबराने की जरूरत नही।"

"मैं थोडी देर पहले आ जाती, किंतु रास्ते मे पिताजी मिल गये इसी मे देर हो गयी।"

"तूने उन्हे कहा देखा ?"

"कालेज से आते रास्ते मे एक शादी हो रही थी। उसी शादी के लिए उन्होने ही नाच-गाने आदि का प्रबध किया था। कह रहे थे वहा मे लौटने पर घर आयेंगे।

"किसलिए ? तू दवाई लेने के लिए जाते समय उनसे कह देना कि मा अस्पताल मे हैं। इसलिए वह यहा न आयें और उन नाच करनेवालो के साथ ही चले जायें।" वेदा बोली।

"वह अभी न आये, या कभी न आयें ?" कनका ने पूछा। "कभी न आयें, कभी न आयें," चपा ने दृढता से कहा।

दिवा स्वप्न

मुझमे वह वाक्चातुरी नही है जो कुछ लोगो मे पायी जाती है। जरा-सी बात को ही कुछ लोग नमक-मिर्च लगाकर, अत्यत सरस बनाकर, विस्तार से कह डालते है। वे घटना का वर्णन इस तरह से करते है मानो वह उनके सामने घटित हो रही हो। उनके वर्णन को सुनकर सुननेवाले रोमाचकारी हो उठते है।

मुझ मे यह चातुरी बिल्कुल भी नही है। मस्तिष्क एव मन मे जिस तेजी मे विचार एव भाव उठते थे उनका एक चौथाई भी शब्दो द्वारा नही कह पाता था। परतु मुझे जिन अनुभवो की प्राप्ति हुई थी क्या वे तुच्छ थे, महत्वहीन थे। मुझे ऐसा नही लगता। मेरी मनोवेदना अब भी शात नही हुई थी।

बात कुछ नही है। मैं बस मे जा रहा था।

दफ्तर जा रहा था।

चाहे मै कही जाऊ, कही से लौटू इसमे कोई विशेषता है क्या ?

मैं एक साधारण व्यक्ति हू। प्रात उठते ही काफी पीना फिर बाजार जाना, राशन की दुकान से चावल खरीदना, इसके बाद जल्दी-जल्दी दफ्तर चले जाना, वहा से लौट कर समुद्रतट पर जाकर हवा खाना, वहा से लौटने पर देर से घर पहुंचने के कारण पत्नी की डाट-फटकार सुनना, खाना खाना और सो जाना—यही मेरी दिनचर्या थी। इस दिनचर्या मे किसी भी प्रकार का परिवर्तन मेरे लिए प्रसन्नता की बात होती। परतु इसमे परिवर्तन कैसे हो सकता था ? एक बच्चा अभी पत्नी की गोद से उतरा था। वह घर से बाहर जाकर मिट्टी खाते हुए वही खेलता रहता था। गोद का बच्चा रात को रो-रोकर नींद खराब करता था। कही मेरे मन की चिंता समाप्त न हो जाये, इसीलिए मानो पिछले तीन महीने से पेट मे भी एक बच्चा पल रहा था। गले में इतने भार को लटकाकर यदि कोई पख लगाकर ऊपर भी उड़ना चाहे तो वह कैसे उड़ सकता है ?

इसलिए हा तो मैं क्या कह रहा था ? यही कि मैं बस मे जा रहा था।

आजकल बसो मे जाना कितना कठिन है इसे तो आप लोग जानते ही है। प्रत्येक बस किसी महान उत्सव की अर्थात—सिनेमाघर की नयी फिल्म के पहले

गो की भीड से भरी दीख पडती है। बस मे चढना ही कठिन है, अदर जाकर खडा होना तो जैसे असभव ही है। यदि बैठने की जगह मिल जाये तो बडी बात है।

मैं बैठा हुआ था।

"घडक-घडक-घडक-घडक"

बस एक जगह जाकर रुक गयी। धूप मे खडी भीड का प्रवाह बस की ओर बढ गया। मेरे पास एक लडकी आकर बैठी—मुझसे सट गयी—बिल्कुल सट गयी।

रग उसका काला ही कहा जा सकता था। वह छोटी-सी लडकी थी। आयु अठारह, बीस के लगभग होगी। कान मे चमकते हुए सफेद मणि-जडित झुमके लटक रहे थे और गले मे एक पतली-सी सोने की चेन थी। मोटी नीली साडी पर लाल रग का बार्डर था। उसके मुख पर एक अपूर्व शोभा थी।

घूरने की इच्छा से किसी व्यक्ति को जरा गौर मे देखने की आवश्यकता मुझे नही प्रतीत हुई। गधा भी तो मदिर की दीवारो को घूरता हुआ खडा रहता है। इसका मतलब यह तो नही कि वह उसकी कला के विषय मे सोचता है। मन मे नाना कुविचार उत्पन्न होते है, कल्पना के किले बनते है, हवाई महल बनते हैं। वह कौन है इससे मुझे क्या ? वह वैश्य कुल की हो, चाहे ईसाई हो, चाहे ब्राह्मणी।

परतु हा, वह मेरी गोद मे गिर कर मर गयी थी।

मैं घबरा रहा था। सहसा उसका चेहरा सफेद हो गया। वह नेत्र फाड-फाड कर देख रही थी, उसकी पुतलिया घूम रही थी। उसका सिर हिल रहा था। वह बेहोश होकर मेरी गोद मे गिर पडी।

मैं जोर से चीख पडा। मैंने उसे गोद से उठाकर सीधा बैठाने की चेष्टा की। हाथ की नाडी पकडकर देखा।

'ऊ हू', वह बिल्कुल नही बोली, उसके नेत्र अदर को धस गये, हृदय की धडकन सहसा बद हो गयी। उसके लिए कोई समय, कोई कारण कहा होता है ? बस मे जो हलचल मच गयी उसका तो कहना ही क्या ! बस रुक गयी।

बस के किसी कोने मे बैठा हुआ उसका पति भीड को धकेलता हुआ शीघ्र ही वहा आ गया बस मे अपार भीड थी। जिसे जहा जगह मिली वह वही बैठ गया, खडा हो गया अथवा डडे को पकडकर लटक गया।

वह भी छोटी आयु का ही था। कोई पच्चीस साल का होगा। वह गोरा था, उसकी नाक नुकीली थी और मुख पर छोटी-छोटी मूछे भी थी। उनकी जोडी अच्छी थी।

उसने छाती पर हाथ रख कर देखा।

इससे क्या लाभ ? प्राण पखेरू तो कभी के उड चुके थे। मेरी गोद मे उसका शव पडा हुआ था।

"ए झटका[1] वाले, झटका वाले!"

"ए टैक्सी—टैक्सी!"

जल्दी मे उन्हे रिक्शा ही मिला। दफ्तर आधा घटे लेट पहुचा और मालिक कुछ नाराज हो गये।

काम करते-करते कमर टूट गयी। काम मे मन नही लगा, मन सर्वथा अशात था। मैंने अपने सभी कामो को वद कर दिया और कोई वहाना वनाकर तीन वजे दफ्तर से चल पडा।

कमीज की जेवो मे हाथ डाले हुए मैं समुद्रतट की ओर चल पडा।

रेत और नीला समुद्र, दोनो ही तप रहे थे। धूप पीठ को जला रही थी।

उसका युवा स्वस्थ शरीर अभी पारिवारिक कष्टो मे नही झुलसा था। नयी गृहस्थी वसा लेने के वाद मधुर वेदना मे खोयी हुई वह युवती मेरी गोद मे गिरकर मर गयी।

अपने मन की हालत का वर्णन मैं कैसे करू ?

अकारण ही मैं दुखी था। उस दुख मे आनद भी था और विचित्र मधुरता भी। मैं समुद्र के किनारे-किनारे चलता जा रहा था। समुद्र की लहरें आकर मेरे पैरो को पखारने लगी।

इसी तरह क्या वे मेरे मन के दुख को धो देगी ? समुद्र के किनारे चलते हुए मैंने मन ही मन पुन उस घटना का साक्षात्कार किया।

मैंने उसकी गालो का स्पर्श किया था ? हा, किया था। उसमे चेतना है या नही—यह देखने के लिए। दिल की धडकन वद होने से वह मरी थी। इतनी जल्दी शरीर की गर्मी कैसे दूर हो जाती ? उसके स्निग्ध कपोलो का रूप रग भी अभी नही वदला था। आगे के वाल, उसमे भी दो लटें विखरी हुई थी। सिर पर टेढी माग थी या सीधी ? ठीक याद नही, परतु ..परतु! परतु

[1]एक प्रकार का रिक्शा।

क्या ? यह जानना मेरे लिए आवश्यक है ? वह कोई भी हो इसमे क्या ? न जाने वह कहा मे आ पहुची। समय आने पर मेरे पास आकर मरने के लिए उस बस मे चढी, सीधे आकर मेरी गोद मे गिरकर मर गयी। सभवत हमारा पूर्व जन्म का कोई सबध रहा होगा। वह अपने स्वामी की गोद मे क्यो नही मरी .?

भाग्य ! हा, यही तो भाग्य है !

बात बस इतनी ही है ! उसको और अपने को जोड कर मैंने मन ही मन जो कहानी गढी उसे मैं कह नही सकता। लिख भी नही सकता। वह एक अनलिखा काव्य बनी रहेगी। शकुतला-दुष्यत, नल-दमयती, सावित्री-सत्यवान, पृथ्वीराज-सयोगिना आदि की कोटि मे हम दोनो भी पहुच गये थे।

इस काव्य मे, मेरी गृहस्थी को सभालनेवाली, मेरी विवाहिता पत्नी का कोई स्थान नही था। घर के आगन से उतर कर, बाहर जाकर मिट्टी खाकर पेट की बीमारी को बढानेवाले शिशु का भी कोई स्थान नही था।

हमेशा मा की गोद मे पडे रहनेवाले तथा रात दिन रोने-सिसकते रहनेवाले बच्चे का भी कोई स्थान नही था। पेट के भीतर रहकर दवाई, जादू-टोना पीडा, रोग कहकर व्यक्ति के खर्च और चिता को बढानेवाले, कभी-कभी उसके प्राणो को ही पी जानेवाले बीज रूप शिशु का भी कोई स्थान नही था। उसमे हम दोनो ही थे। मैं और वह नवयुवती जो मेरी गोद मे गिर कर मर गयी थी। हम दोनो के उस काल्पनिक जीवन मे सर्वत्र हरियाली थी। स्थान-स्थान पर झरने का प्रवाह था। मन मे अपूर्व शाति विराजमान थी। जीवन पूर्ण रूप मे सुखमय था। हम दोनो जैसे गधर्व बनकर आकाश मे विचरण कर रहे थे। परतु, परतु यह मौत मेरा शरीर कापने लगा। यह कैसा स्वप्न था। कैसी वेदना थी। कैसी वेदना। मेरे मन की दशा विष मे ढके हुए अमृत के घडे के समान थी।

काफी देर हो गयी थी।

मैं घर लौटा।

मेरी पत्नी मिट्टी खानेवाले बच्चे का मुह साफ कर रही थी।

मुझे देखते ही, गोद के बच्चे को मुझे पकडाकर उसने मेरे भोजन के लिए पत्तल बिछाया। थकावट के कारण वह हू-ह कर रही थी।

मैं दो कौर खाकर उठ गया ।

"क्यो तबीयत ठीक नही है ? आपने खाना नही खाया ?"

"हा, आज एक युवती मेरी गोद मे गिरकर मर गयी ।"

एकदम मैंने जवाब दिया और हाथ धोकर छत पर पडी हुई आराम कुर्सी पर जा बैठा ।

सडक पर ट्राम गाडिया टन-टन घटी बजाती हुई चल रही थी । उनके पहिये पटरी पर 'सर्रर-सर्रर' घिसते हुए कानो को छेद रहे थे । बसे और मोटरे 'पो-पो' करती हुई दौडी-दौडी चली जा रही थी । नीचे लोगो का शोर भी निरतर सुनायी दे रहा था । मेरी पत्नी गोद के बच्चे को पालने मे लिटा कर सुला रही थी । बीच-बीच मे सिसकती हुई नाक साफ कर रही थी । वह बहुत भोली थी ! परतु फिर भी किसी अन्य युवती का मेरी गोद मे मर जाना उसे सहन नही हुआ ।

"कौन मेरी गोदी का लाल यह ! कौन है री कौन" पत्नी लोरी गा रही थी ।

हा, न जाने वह कौन थी और मैं कौन हू ? परतु यह . यह कौन है ?

इस गृहस्थी के चक्कर मे पडकर मैं उसे भूल जाऊगा । इनमे से कौन-सी वस्तु टिकी रहेगी ? बडे से बडे व्यक्ति को भी अत मे मिट्टी मे ही मिल जाना पडता है । इस समय वह मेरे हृदय को उसी प्रकार भेद रही थी जिस प्रकार कुल्हाडी हरे-भरे वृक्ष को । परतु समय के बीतने के साथ-साथ यह वेदना भी शात हो जायेगी ।

वेदना का रूप यही तो है ?

सहसा वह दृश्य मेरी आखो के सामने घूम गया जबकि मैंने उसे आखिरी बार देखा था । उसका पति उसके शव को रिक्शे मे ले जा रहा था । शरीर में प्राण न होने के कारण शिथिल हाथ और सिर नीचे लटके हुए थे ।

केशो मे सुगधित पुष्पो का एक गुच्छा था

मैं घबरा उठा ! "हाय री विडबना !"

"क्या हुआ ! क्या हुआ !" चीखती हुई मेरी पत्नी मेरे पास आयी ।

"हम क्या करेंगे ! कितने दिन तक ऐसा होगा ।" मैं बडबडाया ।

उसने मेरे माथे पर हाथ रखा ।

"हाय ! शरीर तवे की तरह जल रहा है । जोर का बुखार है । आपने

बताया नही । अब तो बहुत देर हो गयी है । घर मे भी कोई नही है । आप सो जाइए । सुबह डाक्टर को बुला लेगे । आप लेट जाइए, मैं अभी आती हूं ।"

उसने मुझे लिटा दिया और हाथ मे एक छोटी-सी कटोरी और एक कपडे का टुकडा लिए हुए वह अंधकार की ओर बढ गयी ।

कीचड मे खिला कमल

रविवार का दिन था। मिनर्वा टाकीज मे मेटनी शो देखने के लिए हमेशा की तरह वहुत से लोग 'क्यू' मे खडे हुए थे। उस दिन एक अग्रेजी फिल्म दिखायी जा रही थी जिसमे सिनेमा प्रेमियो के प्रिय अभिनेतागण अभिनय कर रहे थे। ग्रियर गारसन और वाल्टर पिजन द्वारा अभिनीत वह रगीन फिल्म थी—धूल के फूल। (ब्लासम्स इन द डस्ट)

सिनेमा हाल के वाहर खडी लोगो की कतारे जैसे मद्रास शहर की जनसख्या और वहा के लोगो की रसिकता दर्शा रही थी। विद्यार्थी, क्लर्क, एजेट, उपाधि प्राप्त वेकार नवयुवक, सिनेमा के पीछे पागल लोग, समाचार पत्रो के सपादक आदि मध्यवर्ग के वहुत से लोग साढे नौ आने की क्यू मे खडे हुए थे। लोगो की वह क्यू मालगाडी के समान विना हिले-डुले खडी थी।

मैं रिक्शे से उतरा। रिक्शेवाले को किराया देने के लिए मैंने साढे तीन आने उसकी ओर वढाये।

वह चिल्लाया, "जनाब! जो पैसे ठहराये थे वह तो दीजिये जनाव!"

मैं चकित रह गया। मण्णाडि से डेविडसन रोड तक का किराया साढे तीन आने ही था। वह मुझसे चार आने माग रहा था। मैंने कहा, "मैं तुम्हे साढे तीन आने ही दूगा।"

चलते समय उसने मुझसे कहा था, "जो ठीक समझो वह दे देना साहव। आइए चढ जाइए," और अब यहा आकर झगड रहा था।

"मैंने तीन आने ही तो ठहराए थे?"

वह बोला, "अरे साहव, चार आने दे दो वरना अपने पैसे अपने पास ही रख लो।"

"जितना किराया ठहराया था उससे अधिक एक पैसा भी नही दूगा।"

"नही देते तो जाओ," कहकर उसने पैसे लेने से इकार कर दिया और रिक्शे के डडो को उठा लिया।

मैंने कहा, "अरे क्यो झगड रहा है? मण्णाडि से यहा तक आने के लिए तुम्हे तीन आने से अधिक कौन दे देगा?"

वह गुस्से से वोला, "आपको क्या पता? इस घोर दुपहरी मे रिक्शा

खीचना पड़े तो पता लगे ! जनाब मेरा पेट काटने से आपको क्या मिल जायेगा ?"

एक आना और दे देने मे मेरा कुछ नही बिगडता, वह तो दो बिल्स सिगरेट का खर्च भर था, परतु मेरी झूठी शान ने उस व्यक्ति की नीचता के सम्मुख झुकने मे इकार कर दिया। क्यू मे खडे अनेक परिचित, अपरिचित चेहरे मेरी ओर मुड गये। उन सबके सामने उससे बहस करना मुझे अपने मध्यवर्गीय गौरव के अनुरूप नही लगा, अत मैंने उससे अधिक बहस न करके, पैसे निकाल कर उसकी ओर फेंक दिये।

"बडा बेशर्म आदमी था ! छोटे आदमियो की अक्ल भी छोटी होती है," बुडबुडाता हुआ मैं क्यू मे जा खडा हुआ।

अभी बुकिंग आफिस नही खुला था। लोग छाह मे लाइन बनाकर खडे थे। लाइन मे खडे हुए व्यक्तियो मे कुछ समाचार पत्र पढ रहे थे, कुछ गाने की किताब पढ रहे थे, कुछ गप्पे मार रहे थे, कुछ सिगरेट पी रहे थे और कुछ बेचैन खडे थे।

मैं भी वही खडा हो गया।

मिनर्वा टाकीज के सामनेवाली लाइन मे एक रिक्शेवाले का परिवार रहता था। एक गोदाम के बाहर के बरामदे मे ही वह गरीब परिवार रह रहा था। उखडी हुई दीवारें धुए और धूल मे काली हो गयी थी। एक कोने मे दो काली हडिया, इनामल रहित तामचीनी की थालिया, एक टीन का डिब्बा, बास की फटी चटाई आदि वस्तुए पडी थी। बरामदे के एक कोने मे टाट का एक फटा हुआ पर्दा टगा हुआ था। टाट के परदे के छेद से चीथडे पर पडे हुए काली मोम मे बने उस खिलौने को—उस नवजात शिशु को—हाथ पैर मारते हुए देखा जा सकता था। उसके गले मे पडी हुई शख के समान श्वेत मोतियो की माला उसके शरीर के कालेपन को व्यक्त कर रही थी।

बरामदे के नीचे दक्षिण की ओर बास की बनी चटाई पर दो आकृतिया बैठी हुई थीं। एक वृद्धा थी जिसकी आखो मे कीचड भरा हुआ था, जिसके बाल धूल मे भरे हुए थे और जो सूखे हुए जायफल के समान दिखायी दे रही थी। दूसरी नवयुवती थी जो कि उपजाऊ भूमि मे उत्पन्न केले के समान अत्यत सुदर और सुडौल थी। उस युवती का रग काला था। फिर भी वह सुदर थी। उसके हाथो मे हरे काच की चूडिया थीं, माथे पर कुकुम और गले मे चमकता

हुआ पीले रग का धागा। अरे वह तो नवविवाहिता है! . वह बुढिया उसके बाल आदि बनाकर उनका शृ गार कर रही थी।

मैंने क्यू पर दृष्टि दौडायी। बुकिंग आफिस खुल चुका था। मैं सबसे पीछे नही खडा था। मेरे पीछे भी लोगो की एक लबी लाइन थी। कानखजूरे की चाल से वह लाइन आगे बढी। मैं भी एक कदम आगे बढ गया।

मैं सोचने लगा 'मुझे कब टिकट मिलेगा?' वह फिल्म तो पहले भी दिखायी जा चुकी थी। वह बहुत अच्छी फिल्म थी। मैं उसे एक बार देख चुका था।

फिल्म का नाम ही कविता की पक्ति के समान था धूल के फूल.. एक परिवार था, गारसन और पिजन का। उनके एक लडका था—बडा लाडला। दोनो उस पर जान देते थे। यह लडका मर गया।

"ए शबम! कहा घूम रहा है? खाने के लिए यहा आ धमकता है! कुछ लाने पर ही तो खा सकेगा," एक स्त्री का तीखा कठोर स्वर सुनायी दिया।

मैंने मुडकर बरामदे की ओर देखा कालिख लगी हुई तीन ईंटो को जोड कर बनाये गये चूल्हे पर रखे बर्तन मे चावल डालकर वह स्त्री फिर चीखी। मा की आवाज सुनकर 'शबम' दौडा-दौडा वहा आया।

"जा, आग जलाने के लिए कुछ लकडिया बटोर ला," यह आदेश देकर वह धुआ देते हुए चूल्हे को धौंकने लगी। धुआ बढता जा रहा था। वह अपनी आखे मलती हुई चूल्हे को धौंकने लगी। इस बीच बरामदे मे पडे हुए बच्चे पर टाट के परदे ने आती सूर्य की तीखी किरणे पडने लगी और वह जोर-जोर से रोने लगा। उस स्त्री ने तुरत बच्चे को गोद मे उठा लिया और उसे दूध पिलाने लगी।

मेरी आखे 'शबम' को ढूढ रही थी। वह नगे शरीर घूमनेवाला एक छोटा-सा लडका था। उसने करधनी के स्थान पर एक काला धागा भी नही बाधा हुआ था। उसका शरीर एकदम काला था। 'लिवरक्योर' नामक दवाई के विज्ञापन मे दीख पडनेवाले बच्चे के समान उसका पेट फूला हुआ था। उसके सिर के बाल चीकट हो रहे थे। नाक की छेद ने कीचड बार-बार झाकने लगता था जैसे मछली बार-बार जल से बाहर झाकती है। लडके ने जीभ निकाल कर नाक साफ कर ली। उसने आग जलाने के लिए वहा पडे

हुए सिनेमा के विज्ञापन सबधी कागज, टिकटे, भूसा, सूखे पत्ते आदि वस्तुए एकत्र की और चूल्हे के पास जा पहुचा।

तब तक युवती केशों को सवार चुकी थी। वह बोली, "ए बुढिया घडे मे पानी भर ला।" धुआ दूर होने पर चूल्हा अच्छी तरह जलने लगा। सडक के किनारे बरामदे मे मा बच्चे को सुला रही थी। बास की चटाई पर लेटी हुई बुढिया ने मुह के छोर से बहती हुई तबाकू मिश्रित पान की पीक को हाथ के पिछले भाग से साफ किया और घडा लेकर पानी भरने चल पडी। 'शवम' अब भी कागज इकट्ठे कर रहा था।

"आगे बढिये श्रीमन !" यह शब्द सुनकर मैं सचेत हुआ और आगे बढा। अब भी क्यू छोटी नही हुई थी। चीटी की कतार के समान क्यू मे लोग खडे थे। साठ लोगो के बाद ही मेरी टिकट लेने की बारी थी। मैंने मुह फेरकर दीवार पर लगे हुए विज्ञापन पर दृष्टि फेरी

दीवार पर गारसन और पीजन के चित्र लगे हुए थे। गारसन के चेहरे पर शाति, एक प्रकार की दृढता थी। उसी के पास पीजन का एक चित्र था। 'माइड पोज' मे। उस चित्र को देखनेवालो का हृदय रो उठता। पुत्र को खो देने के बाद उन्होने कैसा अभिनय किया ! अति कारुणिक परिस्थितियो मे ग्रियर गारसन कमाल अभिनय करती थी। मैंडम क्यूरी नामक फिल्म मे पति की मृत्यु का समाचार सुनकर वह एक शब्द भी नही बोली। बिना किसी चेष्टा के, बिना रोये उसने अपनी व्यथा को व्यक्त कर दिया। इस चित्र मे भी लडके की मृत्यु के बाद उसका अभिनय बहुत सुदर है। अपने प्रिय शिशु की मृत्यु के बाद वह पगली-सी दिखायी देती है। हर बच्चे को देखकर वह प्रसन्न होती है—दुखी होती है। अत मे वह निश्चय कर लेती है कि वह जीवन भर बच्चो के बीच ही रहेगी, वह बच्चो के लिए ही जीवित रहेगी। वह अनाथ शिशुओ और अपने मा बाप को न जाननेवाले अवैध शिशुओ का पालन-पोषण करने का निश्चय करती है। उन सबका पालन-पोषण करने के लिए, उन्हे पाल-पोस कर बडा करने के लिए धन कहा से आयेगा ? यह समस्या उसके सामने आती है।

"श्रीमन ! एक पैसा दे दीजिए श्रीमन !"

भिखारी के इन शब्दो को सुनकर मैंने उसकी ओर दृष्टि फेरी । 'शवम' क्यू मे खडे हुए व्यक्तियो से भीख माग रहा था। बीच-बीच मे वह अपने नाक

से वहती हुई कीचड को चाटता जाता था।

सामने से "अरे मच्चावी आ गया" यह शब्द सुनायी दिये और मेरी दृष्टि उस ओर वढ गयी। चूल्हे पर से भात को उतारकर युवती ने सिर घुमाकर देखा। रिक्शे को एक किनारे खडा करके 'मच्चावी' अपनी पत्नी के पास आया। पत्नी के सामने बैठने हुए उसने पूछा, "भैया अभी नही आया ?" थोडी देर वाद वह फिर बोला, "अच्छा तो खाना दे दे, मुझे जल्दी जाना है।"

युवती धीरे से वोली, "अभी तो आया है, फिर जाने को कह रहा है।"

तव तक वरामदे मे बैठी हुई स्त्री वच्चे को छाह मे लिटा कर नीचे उतर आयी थी।

युवती ने पूछा, "क्यो जीजी, इसे खाना दे दू ? यह जा रहा है।"

घुघराले वालोवाली उसकी जीजी वोली, "हा, दे दे। उसे जाने दे। जाकर चार पैसे कमा लेगा।"

नवदपत्ति वरामदे मे जा बैठे। वह टाट के परदे के पीछे जा बैठा। पत्नी ने तामचीनी की थाली मे भात परोसा। उसने अपनी गोद मे पडी हुई मरू[1] और सामदी[2] से वनी वेणी को चुपके से उसके वालो मे लगा दिया।

युवती ने सिर पर हाथ फेरते हुए कहा, "मजाक मत करो, जीजी देख लेगी।"

"अरी मेरी प्यारी चिडिया। तू तो मेरे लिए चिंतामणि के समान है।"

"अच्छा तो तू मुझे वेश्या समझता है ?"

दोनो न जाने क्यो हस पडे। उन्होने अपने 'हनीमून' के अवसर पर हिम्मत कर के कोई फिल्म देखी थी क्या ?

"क्यो आज भी वही खिचडी वनायी है ?" पूछते हुए उसने उसके गाल पर एक चुटकी काटी।

इसके वाद मैंने प्रेमियो के उस नाटक को नही देखा। परिस्थिति ने फिर मुझे झकझोरा और मैं अपनी क्यू मे कुछ आगे वढा। भरपेट भोजन खाकर धीरे-धीरे चलते हुए साप की गति से, क्यू आगे वढ रही थी।

एक आदमी ने पूछा, "कितनी देर और लगेगी ?" दूसरा वोला, "यह फिल्म तो पहले भी आ चुकी है। क्या इसकी इतनी माग है ?"

---

[1]एक प्रकार की सुगधित पत्तिया जिन्हे वेणी मे गूथा जाता है।

[2]गेदे की तरह का एक फूल।

यह फिल्म पहले लग चुकी है फिर यहा इतनी भीड क्यो है ? इसलिए कि यह फिल्म अच्छी है। यह हमारी भावनाओं को छू लेनेवाली है गारमन अनाथालय के लिए धन इकट्ठा करती है। वह बडे-बडे लोगो के पास जाती है। अमीर लडके और लडकिया रहस्यात्मक ढग से प्रेम-क्रीडाओ मे अपना समय नष्ट कर देते हैं। इससे अनेक दुर्घटनाए होती है। उन व्यक्तियो का मन भी नही पसीजता। वह बुढिया ! अस्सी साल की होने पर भी अपने धैर्य को, पाउडर और आडबर को न छोडनेवाली वह लोभी बुढिया पूछती है, "पाप की उपज इन बच्चो को आश्रय कौन देगा ?" नायिका उत्तर देती है, "पापी कौन है ? काम-वासना के परिणाम को न जानते हुए गर्भिणी हो जाने पर, अपने कुवारेपन के नष्ट हो जाने पर अपने गर्भ मे उत्पन्न शिशु को फेंक कर, अपने धन या अधिकार के बल से अपने पाप कर्म को छिपा लेनेवाले लोग अथवा ये बेचारे अबोध बच्चे ? पापी कौन है ! यह बच्चे अवैध नही हैं उन्हे लोगो ने चोरी-छिपे जन्म दिया है ! पाप कर्म से उत्पन्न शिशु क्या पापी कहा जायेगा ? नही, पाप कर्म से उत्पन्न शिशु भी देवता बन सकता है।"

मेरा मन इन विचारो मे खोया हुआ था। सहसा 'शवम' ने "श्रीमन एक पैसा !" कहकर मेरा चिंतन भग कर दिया। मैंने बिना कुछ कहे उसे एक पैसा दे दिया।

'चित्र का शीर्षक बिलकुल ठीक है आज ससार भर मे प्रसिद्ध स्टालिन एक मोची का लडका था कथाकार गोर्की पहले बोझ ढोया करते थे। रोटी बनाने के तदूरो मे पडे रहते थे। कीचड मे कमल गुदडी मे लाल

सामनेवाले बरामदे मे एक और रिक्शा आ खडा हुआ। रिक्शे के डडे को नीचे रखकर, शरीर पर तेल की तरह बहते हुए पसीने को पोछ कर रिक्शे-वाला बरामदे की ओर बढा।

खीझ भरे स्वर मे उसने पूछा, "क्यो खाना बन गया ?" और बरामदे की दीवार से सटकर बैठ गया।

उसकी पत्नी ने पूछा, "सच्चावी खाना खाकर चला गया है। तू खाना खायेगा ?"

"हा खाऊगा ! छोटू कहा है ?"

"शवम यही तो खडा था !"

पिता की आखे लाइन मे खडे व्यक्तियो से "श्रीमन एक पैसा" कहकर हाथ फैलाकर भीख मागते हुए अपने पुत्र पर पडी। वह एक ही छलाग मे क्यू के पास पहुच गया। उसने 'शवम' के फैलाए हुए हाथ पर दृष्टि फेरी। उस पर चार पैसे पडे हुए थे।

पिता का चेहरा क्रोध से लाल हो गया।

"ए मुर्दे के बच्चे! कुत्ते कही के! मेरे सामने तू लोगो से भीख मागता है? तेरे पैरो को कौनसी बीमारी लग गयी है?" चीखते हुए उसने उसके हाथ से पैसे छीनकर दूर फेक दिये और उसे जोर-जोर से पीटने लगा।

लडका जोर-जोर से रोने लगा।

मा ने उपेक्षा मे पूछा, "उसे क्यो पीट रहा है?"

वह चिल्ला उठा, "क्यो पीट रहा हू? मेरा कमाया पूरा नही पडता इसलिए तेरा बेटा भीख मागता है? अपनी इज्जत का कोई ध्यान नहीं।"

क्यू आगे बढती रही और मैं भी आगे बढता गया। ब्राडवे मे 'कडा' नामक एक ट्राम चलती है। वह क्यू वण्णारप्पेट्टै की ट्राम गाडी के समान एक कदम आगे बढती थी और फिर रुक जाती थी। मैं बेचैन खडा था। मैंने जेब से टिकट के पैसे निकाले। तीन लोगो के बाद मुझे भी टिकट मिलनेवाला था •

मैंने बरामदे की ओर देखा। पत्नी द्वारा परोसे गये भोजन को पति एक-एक ग्रास कर निगलता जा रहा था। 'शवम' कोने मे बैठा सिसक रहा था। रिक्शेवाला गुस्से मे भर कर अपनी पत्नी से बोला, "इस लडके को एक दाना भी न देना—कुत्ता मार खाकर ही मानेगा।" खाते समय वह बीच-बीच मे बुडबुडा उठता था, "तू भीख मागता है!"

क्यू आगे बढी

"पिच्चे" थककर चूर हो जाने तक पैसा कमाता था। अपने कमाये उन पैसो को शराबवाले को और महाजन को देकर जीनेवाला यह रिक्शेवाला क्या धर्म को नही अपनायेगा? 'धर्म'—क्या यह शब्द एक सुदर शब्द मात्र है? कुछ समय पहले मैं जिसके रिक्शे मे बैठकर आया था उस रिक्शेवाले ने पैसे के लिए मुझसे झगडा किया और इस रिक्शेवाले ने पैसो को दूर फेंक दिया! क्यो? क्योकि यह भीख मे मिले पैसे है—झूठे पैसे है! अपने परिश्रम के अनुरूप पैसो को झगड कर पा लेना भी पाप नही है परतु बिना परि-

श्रम किये, भीख मागकर पैसे पा लेना पाप है! परतु शिक्षित, उपाधिया प्राप्त अधिकारी वर्ग घूस लेता है। परिश्रम करनेवालो मे धन छीन कर उनके सहारे जीवन बिताता है। क्या यह रिक्शेवाला उन सबसे बढकर नही है ।

क्यू आगे बढी। अब मैं मनुष्यो मे बनी उस रेल का इजन बन गया था। मेरे आगे खडे सभी व्यक्ति टिकट ले चुके थे। मैंने पैसो को बुकिंग आफिस के क्लर्क की ओर बढाया परतु बुकिंग आफिस बद हो चुका था।

मैंने कहा, "महाशय, एक टिकट!"

बुकिंग आफिस की खिडकी के पीछे से आवाज आयी, "एक्सक्यूज मी।" पैसो को बटुवे मे डालकर मैं बाहर आ गया।

क्यू बिखर चुकी थी। तृप्त मन से मैं कह उठा, "कीचड मे खिले कमल को क्या मिनर्वा टाकीज के अदर ही देखा जा सकता है? क्या बाहर नही देखा जा सकता?"

मौन—एक भाषा है

अच्छा हुआ, वह अकेला ही आया है।

पाच वर्ष पूर्व शिगारम पिल्लै ने रवि को इस प्रकार का एक पत्र लिखा—मैंने सोच लिया है कि मेरे सात पुत्र हे और तुझे पूर्ण रूप से भुला दिया है। यदि तू लौटकर यहा न आया तो यही तेरा अपने परिवार तथा अपने को जन्म देनेवाली मा के प्रति किया गया प्रत्युपकार होगा। रवि भी लौट कर नही आया, मानो उसने अपने पिता की बात को मान लिया था। रवि की माता के उस घोर कृत्य को देख कर शिगारम ने उसे पत्र लिखा कि वह शीघ्र लौट आये। कल से वह यही सोचकर चिंतित हो रहे थे कि वह अकेला ही आयेगा अथवा उस विदेशी महिला को यहा लाकर हमारा अपमान करेगा। गाडी से रवि को अकेला उतरते देख उन्होने चैन की सास ली।

साधारण सफेद धोती और कुर्ता पहने हुए रवि पहले जैसा ही लग रहा है। इन पाच वर्षों मे, अट्ठाइस वर्ष की छोटी आयु मे ही यह कितना बडा हो गया है। सिर का अगला भाग गजा हो गया है यह अपने बडे भाई सुदरम से भी बडा लग रहा है परतु रवि की सुदरता कम नही हुई है। रग और सफेद हो गया है। इसका स्वास्थ्य भी पहले से अच्छा हो गया है। सौदर्य की या बुद्धि की इसमे क्या कमी है? अल्पायु मे ही इस बात का पता लग गया था कि सुदरम वनो और खेतो मे घूमने का काम ही कर सकता है। इसकी कुशाग्रता पर विश्वास होने के कारण ही मैने इसे विदेश भेजा था। यह लडका पढने गया था। यह उस विदेशी महिला पर कैसे रीझ गया? आदि बातें वह सोच रहे थे।

"पिताजी!"

हाथ मे सूटकेस लिए हुए रवि ने उसे देखकर मुह फेरनेवाले पिता के पीछे खडे होकर उन्हे पुकारा। उन्होने मुडकर नही देखा। उनकी आखे सजल हो उठी थी—रवि इस बात को नही जान पाया। वह उनके पीछे खडा होकर चुपचाप हस रहा था। कुछ देर बाद उसने चिंतित स्वर मे पूछा, "मा की हालत कैसी है? उन्होने ऐसा काम क्यो किया? इस आयु मे वह आत्महत्या करने के लिए क्यो तैयार हो गयी?" पिता ने उसकी ओर देखे बिना ही,

क्रम मे पूछे गये उसके तीनो प्रश्नो का उत्तर इस प्रकार दिया, "वह अदर लेटी हुई है। स्वय जाकर उससे यह सभी बाते पूछ ले। इस घर के लोगो का दिमाग न जाने कैसे-कैसे काम करता है हाय रे दुर्भाग्य!" खीझ भरे स्वर मे इन शब्दो को कहकर शिगारम तौलिये को आगन मे बिछाकर बैठ गये और अदर की ओर कदम बढाते हुए अपने पुत्र की ओर देखने लगे।

'मेरा पुत्र-प्रेम समाप्त हो चुका है। नही यह मेरी कल्पना मात्र है। पुत्र को जन्म देनेवाली मा कभी ऐसा सोच सकती है? चाहे कुछ भी हो उसके लिए ऐसा एक नीच कर्म करना कहा तक उचित है?' शिगारम अपनी पत्नी के विषय मे सोच रहे थे। दो दिन पूर्व उसने कनेर की जड को पीस कर, उसे खाकर आत्महत्या करने का प्रयत्न किया था। उसके आत्महत्या करने के लिए तैयार हो जाने के कारणो पर वह न जाने कितनी बार सोच-विचार कर चुके थे। इस समय वह उन कारणो पर पुन सोच-विचार करने लगे।

शिगारम की पत्नी अलमु आच्चि के जीवन मे कई अभाव थे सबसे बडे लडके सुदरम का विवाह हुए दस वर्ष बीत चुके थे परन्तु उसके कोई सतान नही थी। वह सोचती थी कि उसका दूसरा लडका उसकी इच्छा के अनुसार शहर मे रहकर अपनी शिक्षा समाप्त करके, विवाह करवाकर शान से घर मे रहेगा परन्तु उसकी वह इच्छा भी पूरी नही हुई। रवि एक योरुपीय महिला डाक्टर के प्रेम मे पड गया जो कि उसके साथ किन्तु उसके सीनियर के रूप मे काम कर रही थी। जब उसने घर आकर यह कहा कि वह उस विदेशी महिला से ही विवाह करेगा तो उसके और उसके पिता शिगारम पिल्लै के बीच घोर वाद-विवाद हुआ। उस समय अलमु आच्चि मौन साधे रही।

उसके मौन को दोनो ने अपने-अपने मत के समर्थन का सूचक माना और वे अपनी-अपनी बातो पर अडे रहे। अत मे उन्होने परस्पर एक दूसरे से नाता तोड लिया। इस समय रवि उस विदेशी महिला के साथ मिलकर, मद्रास मे एक 'नर्सिंग होम' चला रहा था।

रवि ने मद्रास जाकर जब उस विदेशी महिला से अपने विवाह की सूचना अपने घरवालो को दी तब अलमु आच्चि प्रसन्न हुई अथवा नही इसे कोई नही जानता। शिगारम पिल्लै के यह कहने पर "मैने उसे भुला दिया है, तू भी उसे भूल जा"—वह दुखी हुई अथवा नही इसे भी कोई नही जानता। अलमु

आच्चि को मौन नामक यह भाषा ही अच्छी तरह आती थी।

इन पाच वर्षो मे कई महत्वपूर्ण घटनाए घटी जिनके विषय मे रवि को तनिक भी ज्ञान न था। दो वर्ष पूर्व मुत्तु और मोमु नामक उसके छोटे भाइयो का विवाह हुआ। उसकी बडी बहन कामाक्षी जो कि पति के मर जाने के बाद भी सास के पास ही रहती थी, अब पति के धन का बटवारा करवाकर अपने छोटे बच्चे सहित मा के पास आ गयी थी। पास के शहर मे विवाहित उसकी छोटी बहिने पकजम और इदिरा दो साल मे एक बार मा के पास आकर दो-दो शिशुओ को जन्म दे चुकी थी। रवि की सबसे छोटी और सबसे लाडली बहिन सुशीला, जिसे वह सदा पीठ पर उठाये फिरता था, अब चुनरी ओढने लगी थी। वह अब विवाह योग्य हो चुकी थी

दो महीने पहिले शिगारम की साठवी वर्षगाठ मनायी गयी। उस समय जैसे उसका मौन भग हो गया। निमत्रण पत्रो पर पता लिखते हुए अपने पति के पास आकर वह बोली, "उसको रवि को पत्र लिख दिया ?"

शिगारम ने उसे घूरकर देखा। वह जान गयी कि उनके घूरने का अर्थ है 'नही'। अपनी तीखी दृष्टि से भयभीत होकर उसके चुप हो जाने पर वह जान गये कि वह रवि का पक्ष ले रही है। उन्होने बहुत पहले ही रवि के विषय मे एक निर्णय ले लिया था अत वह अपने इस निश्चय पर दृढ रहे कि वह उसे कदापि नही बुलायेगे। साठवी वर्षगाठ का उत्सव हुए दो महीने बीत चले थे। उन दिनो वह काफी प्रसन्न थी। रवि के चले जाने के बाद, उसकी याद आ जाने पर कभी कोई उसकी चर्चा कर लेता था अन्यथा किसी को भी उसका अभाव नही खटकता। अलमु आच्चि को भी उसका अभाव नही खटकता उसके मौन को देखकर शिगारम पिल्लै ने यही अनुमान लगाया था।

ऐसी दशा मे दो दिन पूर्व अलमु आच्चि जिनकी आयु पचास वर्ष से कम थी, कनेर की जड को पीसकर खाकर अपने प्राणो का अत करने का साहस कैसे कर सकी ? इसका कारण रवि का वियोग दुख था अथवा कामाक्षी के अल्पायु मे ही विधवा होकर घर लौट आने का ? सबसे बडे पुत्र की सतानहीनता का दुख इसका कारण था अथवा इन सभी कारणो से उसके मन मे उत्पन्न एक विरक्ति की भावना ?

कारण चाहे कुछ भी हो। उन्होने सहसा यह काम क्यो किया ?

शिगारम पिल्लै और घर के अन्य लोगो की समझ मे कुछ न आया।

उन्होंने अलमु की विभिन्न चेष्टाओं को देखकर भगवान का नाम लेकर एक वैद्य जी को बुलाया। उन्होंने कनेर के असर को दूर करने की औषधि दी।

वैद्य जी ने बड़े रहस्यात्मक ढग मे पूछा, "कही सास-बहू मे झगडा तो नही हुआ ?"

शिगारम पिल्लै बोले, "वह मुह खोले तभी तो लडाई-झगडा हो सकता है ? जनाब हमारे परिवार मे ऐसी बाते नही होती .."

"तब इस बीमारी का कारण और कुछ नही, आपके दूसरे लडके के चले जाने का दुख ही है। इस समय अच्छा यही है कि आप अपने सभी बच्चो को पत्र डाल दे। उनके आजाने से मा जी का मन शात हो जायेगा," यह कहकर गाव के वह वैद्य जी वहा से चले गये।

शिगारम पिल्लै को इस बात का बहुत दुख था कि उन्होंने अपनी पत्नी के मौन का मनमाना अर्थ कर लिया और वह उसके मन की बातो को ठीक तरह से नही जान पाये। उन्हे लगा कि उसके आत्महत्या करने के लिए तैयार होने का एकमात्र कारण यही है कि उन्होंने रवि को उससे अलग कर दिया था। उन्होंने अपनी 'पत्नी की खातिर' रवि को एक पत्र लिखा और पास के शहर मे रहनेवाली अपनी कन्याओ को स्वय बुला लाये। इस समय घर बेटियो, दामादो और नाती-नातिनो से भरा हुआ था।

बेहोश पडी हुई अलमु आखिर सचेत होते ही सिर पीट कर रोने लगी। "यह सब क्या है ? सबको यहा बुलाकर मेरा अपमान क्यो किया जा रहा है ? हाय रे दुर्भाग्य !" वह मन ही मन बुडबुडाने लगी। शिगारम पिल्लै ने उसे शात करने का प्रयत्न किया। वह उन्हे गाली देने के स्थान पर स्वय को कोसने लगी।

उस समय रवि भी वहा आया हुआ था। वह नही जानता था कि उसके पिता ने उसे पत्र लिखकर क्यो बुलाया है। रवि को देखकर शिगारम पिल्लै निश्चिन्त हो गये क्योकि उनका विश्वास था कि उसे देखने पर अलमु का दुख दूर हो जायेगा।

जब रवि ने घर मे प्रवेश किया उस समय घर के आगन मे बच्चे खेल रहे थे। बच्चो मे कुछ को रवि जानता था परन्तु उनके बडे हो जाने के कारण इस समय रवि उन्हे नही पहचान पा रहा था। कुछ बच्चे जिन्हे रवि ने पहले नही देखा था, उसे देखकर चकित एव भयभीत होकर, "मा कोई आया है,"

कहते हुए कमरे की ओर दौड पडे ।

रवि वही खडे-खडे मुस्कराते हुए कमरे की ओर दौडते हुए उन बच्चो की ओर देखने लगा । उस समय उसकी मा अदर के कमरे मे सो रही थी । बच्चो के शोर को सुनकर सुशीला जो कि दो दिन से मा के पैताने बैठी हुई थी, धीरे से चलकर दरवाजे के पास आयी । उसने बाहर की ओर झाक कर देखा । होठो ही होठो मे उसने कहा, "रवि भैया !" और दौडकर कमरे मे बाहर आ गयी । उसने उसके हाथ से सूटकेस लेकर, "आओ भैया," कहकर उसका स्वागत किया । उस समय उसके होठ कापने लगे और आखे सजल हो उठी । इसका एकमात्र कारण क्या उनका परस्पर विछोह था ?

"अरी सुशी ! तू तो पहचान मे ही नही आ रही ! हा । मा की तबियत कैसी है ?" पूछते हुए उसने कमरे की ओर कदम बढाये । उत्तर मे सुशीला बोली, "भैया वह अभी-अभी सोयी है उन्हे मत जगाना जागने पर वह बकने और रोने लगेगी अदर आइए । खेत के पास पप लगवाया है -आकर देखिए न, उसमे कितनी तेजी से पानी आता है । पप के पानी मे नहाने से आपकी रेलयात्रा की सारी थकान रफूचक्कर हो जायेगी न," यह कहती हुई सुशीला एक हाथ मे रवि का सूटकेस पकडे हुए और दूसरे हाथ से रवि को पकड कर खीचती हुई, उसके आगे-आगे चलने लगी । उसके साथ घर के पिछवाडे जाने से पहले रवि ने कमरे के दरवाजे पर खडे होकर वहा सोती हुई अपनी मा पर एक दृष्टि डाली ।

पिछवाडे की ओर जाते हुए रवि को देखकर उसके बडे भाई सुदरम की पत्नी राजम ने मुस्कराते हुए, "आइए, भाई साहब ! आज कैसे रास्ता भूल आये ?" कहकर उसका स्वागत किया । उसके भारी-भरकम शरीर को देखकर रवि सोचने लगा कि वह बच्चे न होने के कारण मोटी हो गयी है अथवा किसी बीमारी के कारण ? उसने हसते हुए, मजाक के तौर पर पूछा, "क्यो भाभी स्वस्थ है ?" भाभी ने मुस्कराते हुए उत्तर दिया, "स्वास्थ्य की क्या कमी है ?"

"मै डाक्टर के रूप मे आपसे यह सवाल पूछ रहा हू । क्या आपका यह उत्तर ठीक है ?"

"एक दिन तुम्हारे भाई साहब भी कह रहे थे कि मुझे मद्रास शहर जाकर तुम्हारे 'नर्सिंग होम' मे अपनी जाच करवा लेनी चाहिए ।

"हा, यह बात ठीक है । जब मै मद्रास लौटू तो आप भी मेरे साथ चलिए "

रवि यह कह ही रहा था कि सेन मे लौटती हुई इदिरा और पकजम ने बच्चो सहित वहा प्रवेश किया। "अरे रवि भैया आप? बच्चे चिल्ला रहे थे कि कोई आया है," कहकर पकजम ने अपने बडे लडके को खीचकर रवि के पास खडा किया और उससे बोली, "यह तेरे मामा है।" वह भय और लज्जा के कारण मा के पीछे छिपकर खडा हो गया।

इदिरा ने मजाक मे रवि से पूछा, "क्यो भैया, भाभी को नही लाये? इदिरा के इस प्रश्न को सुनकर सुशीला दग रह गयी।"

अपनी दाढी पर हाथ फेरते हुए रवि बोला, "उसे लेकर आ सकता था किंतु यदि पिताजी उसे भगा देते तो ?" और हसने लगा।

भाभी आवेश मे आकर बोली, "भगा देते तो क्या हम चुप बैठे रहते? हम उनसे पूछते कि क्या वह आपकी बहू नही है?"

"मुझे भगाने पर आप कुछ नही बोली, उसके लिए जरूर लडेगी," कहकर रवि ने भाभी का मुह बद कर दिया।

उसी समय रसोईघर के द्वार पर एक अपरिचित चेहरा दीख पडा। उसे देख रवि बोला, "जो बहू घर नही आयी है उसकी बात रहने दो जो नयी आयी है उसे तो दिखा दो।" रवि के इतना कहते ही मुत्तु की पत्नी काफी लेकर वहा आयी।

पकजम ने उसका परिचय कराते हुए कहा, "यह मुत्तु की पत्नी मीना है।" रसोईघर की खिडकी के पास से उसके द्वार तक आकर खडी हुई एक युवती की ओर सकेत करती हुई वह बोली, "वह सोमु की पत्नी नलिनी है।" रवि को भी घर के सदस्यो का परिचय देना पड रहा है, सभवत: यह सोच कर ही उसने हसी थाम ली।

मीना के हाथ से काफी का गिलास लेते समय रवि ने उसे देखा। उसे गर्भिणी जानकर उसने पूछा "सीमन्तोन्नयन सस्कार कब होगा?" रवि की उस बात को सुनते ही वह मुह पर हाथ रखकर हसती हुई लौट गयी।

'क्या अपने लोग प्रत्येक बच्चे के जन्म से पहले सीमन्तोन्नयन सस्कार करते है? यह तो उसका दूसरा बच्चा है [illegible] रहा है?" कहकर पकजम ने हसकर पीठ ठोकी। थोडी देर बाद मीना अपने [illegible] के बच्चो [illegible] चावल, दाल आदि का स्वाद चखके, उसे वहा ले आयी।

नाश्ते के बाद रवि ने अपनी कमीज उतार कर खूटे पर टाग दी और

आगन मे एक मूढे पर बैठ गया। बाकी लोग उसे घेर कर बैठ गये।

"दीदी, मुत्तु और सोमु कहा है ? दामाद लोग कहा है ?" रवि यह पूछ ही रहा था कि इतने मे उसकी विधवा बहिन कामाक्षी खेत से घर लौट आयी।

"अरे रवि ! आ भाई क्या तू हम लोगो को भूल गया था ?" कहती हुई वह रवि के पास आकर बैठ गयी। उसने बडे प्रेम से रवि से कुशल-क्षेम आदि पूछा। बहिन को उस रूप मे देखकर रवि मन ही मन अत्यत दुखी हुआ परतु उसने अपनी भावना को व्यक्त नही होने दिया और मुस्कराते हुए उसकी बातो का उत्तर दिया।

एक घटे तक वे सभी अपने कष्टो और दुखो की चर्चा करते रहे। रवि ने अलग-अलग ढग से सभी के प्रश्नो का समाधान किया। अधिक पढा-लिखा होने के कारण घर के सभी लोग उसके प्रति प्रेम और सम्मान की भावना रखते थे, यहा तक कि उसके बडे भाई और पिताजी भी उसकी बातो को महत्व देते थे, इस प्रकार सब के द्वारा सम्मानित रवि ने अपने माता-पिता की इच्छा के विरुद्ध घर से निकल कर चुपचाप एक अग्रेज महिला से विवाह कर लिया था। सभी को इस बात का बहुत दुख था। घर की स्त्रियो की दृष्टि मे रवि ने अपनी इच्छानुसार किसी युवती से विवाह करके कोई बडा अपराध नही किया था। भगवान जिसकी जिससे जोडी मिलाता है वही उसको मिलता है—इस साधारण से विश्वास ने ही मानो उनको तसल्ली दे दी थी।

कामाक्षी ने रवि से कहा, "मुझे विदेशियो के बारे मे कुछ भी नही पता है। मैं तुमसे एक बात पूछती हू देखो बुरा मत मानना तुम्हारी पत्नी, वह विदेशी महिला क्या हमारे देश की नारियो के समान सयम से रहती है ? क्या वह तुम्हारी इच्छानुसार आचरण करती है ?" वहा बैठे हुए सभी लोगो के मन मे रवि की पत्नी के विषय मे यह सदेह था परतु कामाक्षी की बात सुनकर वे सब हस पडे मानो उसने कोई मूर्खताभरा प्रश्न किया हो।

"आप लोग क्यो हस रहे है ? दीदी ने कोई गलत बात तो नही पूछी। जहा तक मेरी पत्नी का प्रश्न है मैं तो यही कहूगा कि उसका रग और उसकी भाषा भले ही हमारे देश की नारियो से भिन्न है, परन्तु गुणो की दृष्टि से वह साक्षात भारतीय नारी है। अधिक क्या कहू, उसमे भारतीय नारियो के समान बात-बात पर रूठने, रोने और दोष निकालने का अवगुण बिलकुल नही है। दीदी तुम मेरे साथ चलकर उसे देख लो न..." रवि ने बिना किसी सकोच

के अपनी पत्नी की प्रशंसा की। उसकी बातें सुनकर वे ग्रामीण बालाएं अत्यंत चकित हुईं।

"कोई बच्चा-बच्चा " कामाक्षी अपने प्रश्न को पूरा भी न कर पायी थी कि रवि ने उत्तर दिया, "नहीं है।"

"कारण पूछे जाने पर वह बोला, "अभी बच्चे की क्या जल्दी है ?" इतना सुनते ही सभी मन ही मन मुस्करा उठे।

उसे देखकर प्रसन्न होती हुई कामाक्षी बोली, "मा ने कनेर की जड़ को पीसकर पी लिया उसी से हमें तुझसे मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ अन्यथा पिताजी तुझे घर आने के लिए पत्र कहां लिखते और तू हमसे मिलने के लिए यहां कब आता ?"

"ऐसी बात क्या है ? मा को किस बात का दुख है ? उन्होंने ऐसा क्यों किया ?" रवि ने प्रश्न किया।

"उन्हें दुख की कमी कहां है तेरे चले जाने का दुख और मेरा दुख क्या उनके लिए काफी नहीं ? तू मा का स्वभाव अच्छी तरह से जानता है। वह गूंगे की तरह सभी बातों को मन में समाये रखती है और अंदर ही अंदर घुटती रहती है। वह सोचती थी कि पांच वर्ष बाद, पिता की साठवीं वर्षगांठ पर वह तुझसे मिल सकेगी और तब तक पिता का क्रोध भी शांत हो जायेगा परन्तु ऐसा नहीं हुआ। किसी प्रकार का भयंकर काम करने से पिता का स्वभाव बदल जायेगा यह सोचकर ही उन्होंने यह काम किया होगा पिता की ओर से मा का मन उचट गया है अब भी उन्हें देखते ही मा अधिक बकबक करने और रोने लगती है। बेचारे पिताजी ! वह पहले व्यर्थ का विवाद अवश्य करते थे परन्तु जब से उन्हें पता लगा है कि मा के प्राणों का खतरा है तब से वह सदा दालान में ही बैठे रहते हैं, कमरे के भीतर नहीं जाते। मा के कमरे में जाते हुए वह घबराते हैं। चाहे कुछ भी हो, मा को ऐसा भयंकर काम नहीं करना चाहिए था। तुम्हें मालूम है कि लोग क्या कहते हैं ? वे कहते हैं कि यह सब बहुओं की भर्त्सना का फल है। बेचारी हमारी बहुएं। वे बाहर के लोगों से भले ही सख्ती का व्यवहार करें किन्तु सास-ससुर से बड़ा अच्छा व्यवहार करती हैं, इसे लोग कहां जानते हैं ? सचमुच यह भगवान की कृपा है कि मा ठीक हो गयी और हम सब कलंकित होने से बच गए।" कामाक्षी की इन बातों को सुनकर रवि मन ही मन यह सोचकर विस्मित हुआ, "क्या इन सबका कारण

मे ही हू ?"

"अच्छा तो आप दोपहर होने से पहले नहा कर आ जाइए," कहकर भाभी ने उसे वहा से उठा दिया। सुशीला ने उसके नहाने के लिए साबुन और तौलिया तैयार रखा था। उन्हे लेकर रवि घर के पिछवाडे की ओर चला। पिछले पाच वर्षों मे वहा कई परिवर्तन हो चुके थे। उन्हे देखकर रवि चकित हुआ। पिछवाडे लगे हुए कटहल के पेड ने उसे सबसे अधिक आकर्षित किया।

पाच साल पहले वह वृक्ष बहुत छोटा-सा था। अब उसके निचले भाग मे बहुत से कटहल लगे हुए थे। नाना शाखाओ मे फैलकर वह एक विशाल वृक्ष का रूप धारण कर चुका था। शाखाओ की अपेक्षा उसके तने के निचले भाग मे अधिक कटहल लगे हुए थे। उन पर हाथ फेरने से रवि को पता लग गया कि वे अच्छी तरह पक चुके है, अत. वह कटहल के कोयो की मधुरता की कल्पना करने लगा।

'जाते हुए एक कटहल ले जाऊगा। उसे पका हुआ कटहल बहुत पसद है ' यह सोचकर रवि ने अपनी पत्नी को याद किया।

सबके साथ बैठकर खाना खाते समय रवि जान गया कि उसके भाई और बहनोई लोग उससे नाराज नही है। पिता ने उससे बातचीत करने तथा उसके साथ बैठकर खाना खाने से इकार कर दिया था जिससे रवि जान गया कि पिता का क्रोध अब भी शात नही हुआ है।

दोपहर के भोजन के बाद सभी अदर के आगन मे जा बैठे। उस समय शिगारम पिल्लै अपने दो दामादो के साथ बरामदे मे बैठे हुए थे।

"उस नीच ने तुझे भी यहा बुलाया है ? हे ईश्वर ! तुम सब लोग मिलकर मुझे क्यो छेद-छेद कर मार रहे हो ?" अलमु ने रोते-रोते कहा। उसका रोना सुनकर शिगारम पिल्लै और उनके दमाद चौक कर उठ खडे हुए। शिगारम पिल्लै अदर की ओर दौडे।

सबका विचार था कि रवि को फिर से अपने घर के सदस्य के रूप मे देखकर अलमु आच्चि की मनोदशा मे परिवर्तन होगा किंतु उनकी इस प्रतिक्रिया को देखकर चकित एव भयभीत हुए। रवि को देख कर अलमु आच्चि सिर पीट-पीट कर रोने लगी और बेचैन होकर बिस्तर मे लोटने लगी। बाहर से दौडकर आये हुए शिगारम पिल्लै उनकी इस हरकत को देखकर बहुत चिंतित हुए।

उनकी समझ मे न आया कि वह क्या करे ।

"मा मैं सोचता था कि मै चाहे कही रहू, मुझे सदा तुम्हारा प्यार मिलता रहेगा । अपने इसी विश्वास के बल पर मैं तुमसे अलग होकर रहने लगा उस समय तुम मौन रही और अब तुम आत्महत्या करने पर क्यो तुल गयी हो ? मा, क्या तुम्हे मेरा यहा आना अच्छा नही लगा ? क्या तुम मुझे नही देखना चाहती हो ?" अलमु के बिस्तर पर बैठकर, उसके हाथो को पकडे हुए, रवि ने दीन वाणी मे पूछा ।

उसके इन शब्दो को सुनकर अलमु का प्रलाप और रोना दोनो कुछ कम हुए । वह बच्चो की तरह सिसकने लगी उसकी आखे रह-रह कर भर आती थी वह रवि को देख कर चुपचाप मद स्वर मे रोने लगी, "बेटा मैं न तो तुम लोगो से दुखी हू और न मेरे मन मे तुम लोगो के प्रति क्रोध है । मैं स्वय पापी हू " अलमु आखिर उसके हाथो को पकडे हुए इस तरह प्रलाप करने लगी ।

उसके प्रलाप और रुदन के बद होने तक रवि उसके पास चुपचाप बैठा रहा । शिवारम पिल्लै और अन्य लोग इसी विश्वास से वहा खडे हुए थे कि रवि अलमु के मन को बदल देगा और साथ ही पिछले कुछ दिनो से परिवार मे आये हुए उस तनाव को कुछ कम कर देगा ।

"मा, तुम भूल जाओ कि मैं तुम्हारा पुत्र हू । इस समय मैं एक डाक्टर की हैसियत से तुमसे बातचीत कर रहा हू अपना हाथ दो," कहकर रवि उसकी नाडी की परीक्षा करने का यत्न करने लगा । इस पर अलमु, "रहने दे रवि," कहकर रो पडी । रवि ने कठोर शब्दो मे कहा, "यह बकबक बद करो" और गभीर होकर उसकी नाडी देखने लगा । उसके बाद उसने पलके ऊपर करके आखो की परीक्षा की । कमरे के दरवाजे को तनिक बद करके उसने मा से कान मे कुछ पूछा ।

कमरे के भीतर से क्रोधपूर्ण गर्जन और प्रलाप तथा रवि के शात वचन सुनायी दिये ।

'रवि ! मेरे मान की रक्षा कर इस समय भगवान ने ही तुझे यहा भेजा है ।'

'मा, चुप रहो ! व्यर्थ बकबक न करो इस समय अपमान होने की कोई बात नही हुई है तुम इतनी-सी बात के लिए पागलो की तरह आत्महत्या

करने के लिये तैयार हो गयी। क्या तुम जानती हो कि विदेशो मे इसे अत्यत महत्वपूर्ण और गौरव का विषय समझा जाता है ? तुमने बहुत पुण्य किये हे ईर्ष्या के कारण कोई तुम्हारा उपहास करे तो करने दो . . मा मातृत्व की महिमा अपार है ! हाय मा ! इतनी-सी बात के लिए तुमने ऐसा भयकर कदम उठाया ? मा . मा," कहकर हसते हुए, रवि के बाहर आने से पहले ही आगन मे अन्य लोगो के साथ खडे हुए शिगारम घर के पीछे के खेतो मे चले गये थे।

रवि को इस बात का सदेह था कि मा के विषय मे सब लोग जानते है या नही इसलिए वह अपने हाथो को परस्पर भीचते हुए बोला, "एक शुभ सदेश सुनो हमारे भाई या बहिन होनेवाली है ." रवि के ऐसा कहते ही वहा भयकर निस्तब्धता छा गयी। आगन मे बैठे हुए दोनो दामाद जोर से हस पडे। उनकी हसी अलमु के शरीर मे सुई के समान चुभ गयी। एक दामाद बोला, "ठीक है अभी शादी को दो महीने ही तो हुए है ! कुछ दिनो मे 'वलैकाप्पू'[1] सस्कार भी होगा "

"इसमे मजाक की या हसने की कोई बात नही है कई परिवारो मे मा-बेटी एक साथ बच्चो को जन्म देती है न ? सुशीला के जन्म के बाद, इन सोलह वर्षो मे मा ने किसी बच्चे को जन्म नही दिया इसी से तुम लोगो को यह बात आश्चर्यजनक तथा अपमानजनक लग रही है। मा ने और तुम लोगो ने यह सोच लिया था कि अब उनके कोई बच्चा नही होगा। इसी से तुम लोगो को यह बात बडी विचित्र लग रही है। हमारी क्या हस्ती कि हम होना को अस्वीकार कर दे। यदि हमारा निष्कर्ष गलत हो तो हमे अवश्य ही लज्जित होना चाहिए। .मेरी मा इस आयु मे भी अपने नारीत्व को सार्थक सिद्ध कर रही है, वह मातृत्व की स्थिति मे पहुच चुकी है यह सोचकर मुझे गर्व का अनुभव हो रहा है " रवि आनद के आवेग मे बोलता जा रहा था। सहसा उसने भाभी को मुह बिचकाकर अदर जाते देखा।

"उसे अपनी चिता है "

"मैने कह दिया न कि मुझसे मजाक करोगे तो यह डडा टूट जायेगा," कहकर पिताजी खेत मे खडे हुए सोमु और अपने पोते-पोतियो को हाथ की

[1] विवाहोपरात प्रथम बार गर्भधारण करने के पाच महीने बाद किया जानेवाला एक सस्कार, जब गर्भिणी नारी को चूडिया पहनायी जाती है।

छडी दिखाकर धमका रहे थे।

"सोमु पिताजी से बहुत खुला हुआ है वह उनसे मजाक भी कर लेता है। आखिर इसकी एक "

"अरे सोमु वहा पिताजी के पास खडा क्या कर रहा है?" रवि चिल्लाया।
"कुछ नहीं," कहते हुए सोमु पिता के पास से कुछ हटकर खडा हो गया।

इस प्रकार दो दिन बीत गये

घर मे सहसा भयकर खामोशी छा गयी थी। कोई किसी से नही बोलता था। उस खामोशी मे, घर के प्रत्येक प्राणी की दृष्टि मे सहस्रो व्यग्य और तर्क प्रतिफलित हुए। रवि ने मझली बहनो को मन ही मन हसते देखा। कामाक्षी और सुशीला अरामु आच्चि से भी अधिक लज्जा का अनुभव कर रही थी। मानो उनका उस घटना मे सबसे अधिक सबध हो।

'मौन मौन मौन हाय! क्या मौन इतनी भयकर भाषा है?'

'नातेदारों और स्वजन परिजनो की कहा तक कहे? यहा तो स्वय अपने बच्चे ही छि! नीचता की कोई सीमा नही। मा को लेकर कोई मजाक कर सकता है?' आदि बाते सोचकर रवि मन ही मन उबल रहा था।

इन्ही बातो से डरकर मा ने आत्महत्या करने का प्रयत्न किया होगा। यह सोचते ही रवि की आखे सजल हो उठी। घर के सभी लोग मौन रहकर उसे सह रहे थे। रवि से यह सब सहन न हुआ। वह अपने पिता के पास पहुचा।

"पिताजी मुझे माफ कर दीजिए मा की व्यथा को मैं समझ रहा हू हमारा देश पिछडा हुआ है यहा के लोग अज्ञान मे है, वे मातृत्व के महत्व को नही जानते मा का यहा रहना बहुत कठिन है। उन्हे मेरे साथ भेज दीजिए। जिस पुत्र को उन्होने घर से निकाल दिया था उसके पास आकर इन बातो को कहते ही उनका हृदय प्रेम से द्रवीभूत हो उठा परन्तु वह दूसरी ओर मुह कर आवेशपूर्ण वाणी मे बोले, "वह तेरी ही तो मा है उसे ले जाने के लिए मेरी आज्ञा की आवश्यकता क्या है? यदि वह चलने को तैयार हो तो तू उसे ले जा।

रवि [illegible] मा के पास बैठकर उसे समझाता रहा, "मा, यह यहा [illegible] [illegible] रहना चाहती [illegible] सकती है [illegible] [illegible] जाता है [illegible] उस गांव की बात समझा है

तू यदि एक बार उसके साथ रह लेगी तो तुझे उससे अलग रहना अच्छा नही लगेगा . ।"

"अरे, वह तो हमारी भाषा भी नही जानती । तू मुझे उसके सामने अपमानित करना चाह रहा है ?" कहकर अलमु आच्चि रो पडी ।

"क्यो मा, यहा तेरा अपमान करनेवाले लोग कौनसी भाषा मे बाते करते है ? सभी मौन हैं परन्तु काम भी हो रहा है । मौन रहकर क्या प्रेम और सम्मान के भाव को व्यक्त नही किया जा सकता ? किसी की निंदा करने के लिए तथा किसी के प्रति अपने प्रेम को व्यक्त करने के लिए क्या भाषा का होना आवश्यक है ?" मा रवि की बातो को समझ गयी । उसने रवि की ओर देखा और उसका हाथ पकडकर रोने लगी ।

गली मे गाडी खडी हुई थी ।

घर मे सबसे विदा लेने और घरवालो के गली मे आ जाने के बाद अलमु आच्चि घर से बाहर निकली और गाडी मे बैठ गयी । उसके पीछे-पीछे आते हुए रवि ने सूटकेस को गाडी मे रखा और स्वय राजम भाभी के पास आ खडा हुआ ।

उसी समय ताजे कटे हुए दो कटहलो को उठाये हुए सोमु दौडा-दौडा वहा आया और बोला, "क्यो भैया आप कटहल ले जाना चाहते थे न ? अब उसे लिये बिना कैसे जा रहे है ?" सहसा रवि की कल्पना की आखो के सामने कटहल का वह वृक्ष साकार हो उठा जिसके तने के निचले भाग मे अनेक कटहल लगे हुए थे और जो नाना शाखाओ मे फैलकर विशाल वृक्ष का रूप धारण किये हुए था ।

"भाभी तुमने घर के पिछवाडे लगे हुए कटहल के वृक्ष को देखा है न ? फल उसकी शाखाओ मे न लगकर उसके तने मे लगे हुए है ? इस कारण क्या तने का और डालियो का एक दूसरे से विरोध है ? नही । तने मे फलो को लगा देखकर भी कोई इस बात को इकार नही कर सकता कि शाखाओ का आधार, वृक्ष का तना ही है ।" वह आगे कुछ कहना चाहता था परन्तु चुप हो गया । कुछ देर तक वह खडा-खडा अपना माथा खुजलाता रहा फिर बोला, "अच्छा तो तुम शीघ्र ही भैया के साथ मद्रास आ जाना । अगले साल मे स्वय आकर तुम्हे ले जाऊगा । हा, तो भाभी जैसा तुम सोचती हो और जैसा मा ने सोचा था—मातृत्व को प्राप्त होना पाप नही है," कहकर रवि हस पडा ।

उस समय शिगारम पिल्लै की समझ मे नही आया कि वह गाडी मे बैठी अलमु आच्चि को क्या कहकर विदा करे । वह चुपचाप वहा खडे रहे । अलमु और शिगारम पिल्लै मौन भाव से एक दूसरे की ओर देखते रहे ।

"पिताजी मैं चलू ? मा के विषय मे आप चिता मत कीजिए, मैं उनकी देखभाल कर लूगा । अच्छा तो चलू ?" कहकर हाथ जोडकर प्रणाम करके रवि गाडी मे बैठ गया ।

शिगारम पिल्लै तब भी उससे कुछ न बोले । बोलने के लिए न उनके पास मुह था और न शब्द । हृदय का दुख नेत्रो मे झलक रहा था । सडक के अत मे गाडी के मुड जाने तक शिगारम पिल्लै रवि और अलमु आच्चि को देखते हुए गली मे खडे रहे ।

आवाजे! आवाजे! आवाजे!

चारो ओर से पर्वत श्रेणियो से घिरी उस घाटी मे जब अधकार छा रहा था, उसी समय 'नीरवता' भी अपना राज्य फैला रही थी। उदक की बस जिस पर 'पावर हाउस' का बोर्ड लगा रहता था और जो कभी एक वार उस ओर आ जाती थी, सभवत जा चुकी थी। जलाशय के उत्तर की ओर स्थित एकाकी दुकान पर लोगो की भीड नही थी।

सपत को अपने घर से ही, बहुत दूर की घुमावदार पहाडी की ढलान के दूसरी ओर से बहकर आती हुई लघु सरिता और उसके सामने किनारे पर स्थित दीपक के समान प्रकाश विकीर्ण करनेवाला 'पावर हाउस' दिखायी देते थे। प्रतिदिन उन्हे देखने की अभ्यस्त उसकी आखो को घूम-घूमकर 'टेयलरेस' मे आकर गिरनेवाला झरना भी दिखायी दे जाता था।

वे दृश्य इस समय पास-पास आते जा रहे थे। गर्म कोट की जेब मे हाथ डाले हुए, पास के 'पावर हाउस' के सामने स्थित जलाशय के किनारे चलते हुए सपत के गालो पर अपने ठडे हाथो को रखकर सर्दी मानो उसके साथ खेल रही थी। वह स्थान छ हजार फुट से कुछ ऊचा था। वहा झरनो, जलाशयो तथा मनुष्यो की गध से प्राय शून्य वनप्रातो से होकर आती हुई पवन चल रही थी। वर्षा ऋतु के वाद, शरत ऋतु के आरभ के दिन और कैसे होते? भयकर सर्दी पडने के कारण शरीर निश्चल हो रहा था। स्लूज गेटो के पहरेदारो के कार्यालय के सामने से निकलने पर कुछ परिचित ध्वनिया सुन पडती है। हरी-भरी घास से युक्त उस सूने मार्ग से होकर वह 'पावर हाउस' पहुच जाता है। जगल के कोने मे स्थित उस बिजलीघर मे हजारो किलोवाट शक्तिवाली बिजली की लहरो को वह रूप दिया जा रहा था जो खतरे से शून्य हो और लोगो के प्रतिदिन के जीवन मे काम आ सके। यत्रो के चलने से उत्पन्न री म .री म की ध्वनि को सुनकर ऐसा लगता है मानो सैकडो भवरे एक साथ गुजार कर रहे है।

लगता है कि अलक्जेडर और श्रवणन रात की ड्यूटी करने आ चुके है। अरुणाचलम दरवाजे पर दृष्टि गडाये हुए खडे हैं।

"क्यो भई! बस चली गयी?'

"क्यों आपको नहीं मालूम ? लगता है कि बस चली गयी है क्योंकि दुकान पर हलचल नहीं है।"

अंदर कदम रखने से पहले ही ध्वनियां सुनायी देने लगती हैं और उनकी शक्ति भी स्पष्ट रूप से ज्ञात हो जाती है।

उस विशाल और चमकदार भवन को देखकर सपत सोचता है कि वह भवन एक ऐसा पावन मंदिर है जहां प्रकृति देवी अत्यंत प्रसन्न होकर मानव शिशुओं को करुणा नामक गुण प्रदान करती है। मन में उस विचार के उठते ही उसका शरीर रोमांचित हो उठता है। पास में से चार पनचक्कियां चल रही थीं। उनके चलने से उत्पन्न भयंकर शोर कानों को सुन्न कर रहा था।

यदि सुबह की ड्यूटी होती तो सुबह की हलचल में कई तरह की ध्वनियां सुनायी देतीं और बिजली घर के भीतर की ध्वनियों को भली प्रकार से सुनने का अवकाश नहीं मिलता। पास के स्कूल से हथौड़े पीटने की आवाज और लोगों का शोर भी सुनायी देता था। उस समय उन विभिन्न ध्वनियों को भली प्रकार सुनकर, उन्हें विभिन्न वर्गों में बांटकर रस लेने की इच्छा न होती थी।

समय-समय पर यंत्रों की स्थिति बताने के लिए स्थान-स्थान पर [illegible] लगायी गयी थीं। वे जलकर खतरे की सूचना नहीं दे रही थीं। सब कुछ ठीक था। बिल्कुल 'ओ के'।

[illegible] मशीन [illegible] की कुप्पी और रुई लेकर जा रहा था। सपत [illegible] को उस दिन की ड्यूटी से मुक्त करता है और उन्हें विदा करने के लिए द्वार तक जाता है।

"क्यों भाई ठंड लग रही है न ? लगता है ओस पड़ रही है।"

"हां। क्या इससे अधिक ठंड पड़ेगी ?"

"हां, [illegible] भी सर्दी पड़ेगी। क्यों भाई ! आज बस नहीं आयी ? मैं [illegible] बजे से इंतजार कर रहा हूं।"

"[illegible] नहीं।"

[illegible] सिनेमा के पीछे पागल थे। [illegible] बस से उतरकर [illegible] देखकर कुछ [illegible]—उनके दिन बहलाव [illegible] फिर [illegible] नहीं था। वह विधुर थे। उनकी पत्नी गुजर गयी हुई थी। सहसा एक नारी की [illegible] बिजली घर के सामने से जाती हुई दीख पड़ती है। वह कौन है ?

वह खाकी रंग के वस्त्र और एन सी सी कैडेट के समान बिना फुदने की एक टोपी पहने हुआ था। वह वृद्धावस्था को पहुच चुका था। उसकी पलके और गाल लटक गये थे।

उसने मोटी आवाज मे कहा, "गुडीवनिंग सर "

"क्यो नायुडु यहा कैसे आये ?"

"ऐसे ही चला आया सर ! वह साहब यहा नये आये है ?"

"नये कहा ? उन्हे आये हुए लगभग एक महीना हो चला है। तू कहा गायब हो गया था ?"

"बीमार था सर। कल ही बिस्तर से उठा हू। मैं भला ड्यूटी छोड कर कही जा सकता हू ?"

"ठीक है, ठीक है। क्यो भई बस आकर जा चुकी है ?"

"बस 'गौंडर शोला' के पास पहुचने पर खराब हो गयी। इसीलिए तो रामैयन लारी मे आया है।"

"चल बे गधे कही के !" कहकर अरुणाचलम ने अपनी चिढ व्यक्त की।

नायुडु सपत को देखकर पूछता है, "हुजूर का "

"नही, नही वह अकेले है। नये आये है इनकी देखभाल करना " कहकर अरुणाचलम सपत की गाल पर धीरे से चपत लगाते है।

"यह क्या कर रहे है, सर ! इस भयकर सर्दी मे, इस जगल मे आप लोग ही तो हमारे रिश्तेदार है। सर, आप मद्रास के है ?"

सपत सिर हिला देता है और कहता है, "मुझे यह नही पता कि यह कौन है ?"

"नायुडु अपना पता बता दो न। अच्छा तो मैं चलता हू। लगता है कि बस आ रही है। " 'ओ के', 'बाई', 'गुड नाइट' " कहकर उनसे विदा लेकर ऊनी कोट को अच्छी तरह से कसकर, अरुणाचलम जल्दी-जल्दी वहा से चल पडते है।

"साहब हफ्ते मे तीन सिनेमा देखते है " कहकर नायुडु हस पडता है। "सर, आप चार साल पहले यहा आते ! उस समय यहा बडी हलचल थी। पैसा पानी की तरह बहाया जा रहा था। यहा बाध बनाया गया, 'पावर हाउस' भी बनाया गया। हम सबने चैन की सास ली। सर, इससे पहले आप "

"पिछली मई को ही मेरी पढ़ाई पूरी हुई। मैं पहले-पहल यहीं . "

"अच्छा। हां तो शहर के कोलाहल भरे वातावरण में रहकर यहां समय काटना आपको कठिन लगता होगा? मैं यहां तीस साल से रहता हूं। 'फारेस्ट सर्विस' से 'पेंशन' लेता हूं। वह देखिए बांध के ऊपर, लताओं के झुरमुट में मेरा घर दिखाई दे रहा है। सभी लोग मुझे नायुडु के नाम से जानते हैं। मेरी लड़की यहीं के एक अस्पताल में नौकरी करती है। सर, आप मेरे घर आइए। आप जैसे मित्र मुझे प्राणों के समान प्रिय लगते हैं। लोग मेरे यहां ताश खेलने आते हैं।'

"अच्छा

"अरे हां, एक बात और मेरी लड़की के पास बहुत सारी किताबें हैं। वह उनके पीछे पागल है। सर आप खाना ?"

"मैं शाकाहारी हूं। एक समय 'मेस' में खाता हूं और दूसरे समय स्वयं बना लेता हूं।

'आप एक नौकर रख सकते हैं। यहां काम करें, घर जाकर खाना बनाना कठिन है न? अच्छा सर! मैं जाता हूं। फिर मिलेंगे। 'गुड नाइट'

थी। विवाह योग्य दो लड़कियां थी। लोग कहते थे कि उनके दो लडके गाव मे पढ रहे हे।

"लगता है 'वाम' आकर चले गये !" धीरे से यह कहते हुए शर्मा अदर आते है।

उन्हे बातें बनाना अच्छा नही लगता था। सिगरेट पीनेवाले जवानो, बूढो, अफसरो, सभी से उन्हे घृणा थी। अरुणाचलम को देखकर भी वह मुह विच-काया करते थे। 'विट्टो' से भी वह दूर भागते थे। उनके मन मे सपत के प्रति विशेष अनुराग था।

"क्यो भई, सब कुछ 'ओ के' है ? लगता है कही 'लोड' ज्यादा हो गया है।"

वह व्यक्ति पिछले अठारह सालो से उन ध्वनियो मे डूबा हुआ था। वास्तव मे ही मशीनो की गर्जन अधिक तीव्र हो गयी थी।

तुरत वह रिसीवर उठाकर नबर घुमाते है और फोन पर नब्बे मील दूर एक औद्योगिक नगर की सीमा पर स्थित, उस नगर को बिजली 'सप्लाई' करनेवाले बिजलीघरवालो से बात करते है।

"हलो हलो पावर हाउस वन कालिग शिगम-पट्टी सब स्टेशन ?" उनकी उस गभीर आवाज मे वहा सुनायी पडनेवाली सभी ध्वनिया जैसे दब-सी जाती है।

किसी स्थान पर बिजली का 'लोड' अधिक हो गया था इसी से वहा भयकर शोर सुनायी दे रहा था।

बीस ही दिनो मे इन ध्वनियो की तीव्रता, कपन और तीखी गर्जना से बिजली के उन यन्त्रो मे होनेवाले सूक्ष्म परिवर्तनो को जान लेना कितना आनद-दायक है ? इसमे वही आनद है जो एक नये गीत को सीख लेने मे है। किसी नये सीखे हुए गीत को गाने से चित्त मे जैसी मधुर हलचल उत्पन्न होती है वैसी ही मधुर हलचल को उत्पन्न करने की शक्ति इस ज्ञान मे भी है।

निरतर घूमती हुई पनचक्कियो के विभिन्न अगो की देख-रेख शर्मा जी उसी तरह कर रहे थे जिस तरह मा अपने बढते हुए शिशु की देख-रेख करती है। बीच बीच मे, कुछ समय मिलने पर, वह कागज पर, 'श्रीराम जयम' लिखने लगते थे। अलेक्जेंडर, रामन कुट्टी और श्रवरन दाहर खडे हुए सिगरेट पी रहे थे।

सपन वहा की ध्वनियो मे पूर्ण रूप से डूबा हुआ था। वहा यत्रो की भयकर गर्जना के साथ-साथ कीलो द्वारा परस्पर जुडे हुए नुकीले चक्रो के बीच मे जल के प्रवाहित होने से उत्पन्न मद ध्वनि भी सुनायी देती थी। यहा जल के अपार प्रवाह के स्थान पर ध्वनि का प्रवाह था। इस ध्वनि की पृष्ठ भूमि मे 'कचग-कचग' की ध्वनि उत्पन्न करती हुई पवनचक्किया चल रही थी। इन ध्वनियो मे एक यदि मूल स्वर थी तो दूसरी उसमे उत्पन्न नाद थी। एक यदि सघन जल-प्रवाह थी तो दूसरी उसमे नर्तन करती हुई हसतरगी थी। एक यदि विशाल वन थी तो दूसरी हवा मे झूमता हुआ फूलो का गुच्छा। उसके जीवन के आधार रूप उस सगीत आकृति के झूमते हुए पास आते ही उसके जीवन मे रग-बिरगे फूल खिल उठते है।

"अरे! यह कौन है?"

नौकरी न मिलने के कारण वह पद्रह दिन तक घर मे पडा रहा। उन दिनो शाम के चार बजे पडोस मे स्थित सगीत विद्यालय मे बैठी हुई एक युवती का चेहरा दिखायी देता था। वह ध्यान से देखता है कि यह वही युवती तो नही है? नही, यह वह युवती नही है। उसमे जीवन नही है।

कही यह उस व्यक्ति का अपने मन को समझाने का ढग तो नही है जिसने स्वय के लिए यह कठोर नियम बना लिया है कि युवावस्था मे किसी सुदरी का दर्शन [illegible] विचलित नही होना चाहिए और न ही उसे उत्कठापूर्वक देखना चाहिए। उसे ऐसा लगता है कि विद्युत लता ही साकार रूप धारण करके आ गयी है।

'तू कौन है? पडोस के घर की खिडकी के पास दिखायी देनेवाली [illegible] खिले हुए [illegible] कन्या है? तू [illegible] की [illegible] है? [illegible] आकाश से फैली चादनी से उतर कर आयी है? क्या तू विद्युत लता है?'

वह लम्बी भुजाओ का परस्पर आलिगन [illegible] के समान [illegible] है। वह स्वय विकार हो उठता है। वह चुपके-चुपके उस [illegible] उठता है परन्तु उसका कोई मतलब नही।

[illegible] सकुचित होते हुए वह उसकी भुजाओ का [illegible] है।

मुझसे [illegible]। तू [illegible]!'

[illegible] हो रहा है! मेरा [illegible] नही हूँ?"

"यह मै कैसे कह दू ? परतु मैं तुम्हे यहा आने की अनुमति नही दे सकता हू।"

"नीला सुबह साढे आठ बजे तैयार होकर 'लाइट हाउस' के परे स्थित अपने कार्यालय को चली जाती है और शाम को थककर चूर होकर लौटती है। कमला भी अपनी बडी बहन के पद चिह्नो पर चलने के लिए तैयार बैठी है। राजू को तीन साल और कालेज मे पढना है। मा के गले के सभी आभूषण जिनका तौल तीस सावरिन था, बैंक मे पडे हुए है। पिताजी के 'पेंशन' के ७८ रुपये माला के विवाह मे लिये गये कर्ज को चुकाने मे ही लग जाते हैं। समझी मेरी बात ? पद्रह महीने तक नौकरी न मिलने के कारण 'बेकार इजीनियर' कहलाने पर लज्जा का अनुभव करने तथा हतोत्साहित होने के बाद, नारकीय वेदना का अनुभव करने के उपरात मे इस एकात, शीतल स्थान पर आ पहुचा हू।"

वह अपने सुदर मुख को अपने कमलवत हाथो से ढके हुई थी परतु फिर भी उसकी आखे उसे देख रही थी।

"ऐसी बात है तो मैं चलती हू।"

वह उसके कानो के पास अपना मुह ले जाकर कहता है, "नही, मत जाओ। क्या तुम नाराज हो गयी ? हा तुमने यह तो बताया नही कि तुम कौन हो ?"

"मैं मैं सदा आपके साथ रहूगी ।"

वह उसके बाहुपाश से मुक्त हो जाती है। वह सदा उसके साथ रहेगी। इसका मतलब

"चाय श्रीमन चाय ।"

रामन कुट्टी चाय लेकर आया था।

स्नेहक तेल की चिकनाहट, गर्म कपडो की गरमाई और चाय की गरमाई और स्वाद सभी कुछ सुखद लग रहे थे। तेजी से बहता हुआ जल 'सोय, सोय, सोय' की ध्वनि उत्पन्न कर रहा था। वहा सुन पडनेवाली विभिन्न ध्वनियो की गूज हसतरी पर बैठी हुई युवती से सबधित मधुर स्वप्नो का विकास कर रही थी। वे ध्वनिया मानो उसके जीवन के एकाकीपन को, थकान को मिटा रही थी।

चलते समय मा ने मुह से कुछ नही कहा परतु, 'अपने जीवन के इन तेइस सालो मे वह किसी के घर चार दिन के लिए भी नही ठहरा है वहा न जाने

सघन वन की ध्वनियों में पूर्ण रूप से डूबा हुआ था। वहां यत्रों की भयंकर गर्जना के साथ-साथ कीलों द्वारा परस्पर जुड़े हुए नुकीले चक्रों के बीच से जल के प्रवाहित होने से उत्पन्न मद ध्वनि भी सुनायी देती थी। यहां जल के अपार प्रवाह के स्थान पर ध्वनि का प्रवाह था। इस ध्वनि की पृष्ठ भूमि में 'कयग-कयग' की ध्वनि उत्पन्न करती हुई पतवक्रियां चल रही थीं। इन ध्वनियों में एक यदि मूल स्वर थी तो दूसरी उससे उत्पन्न नाद थी। एक यदि सघन जल-प्रवाह थी तो दूसरी उसमें नर्तन करती हुई हमसरी थी। एक यदि विशाल वन थी तो दूसरी हवा में झूमता हुआ फूलों का गुच्छा। उसके जीवन के आधार रूप उस सजीव आकृति के झूमते हुए पास आते ही उसके जीवन में रंग-बिरंगे पुष्प खिल उठते हैं।

"अरे! यह कौन है?"

नौकरी न मिलने के कारण वह पन्द्रह दिन तक घर में पड़ा रहा। उन दिनों शाम के चार बजे पड़ोस में स्थित संगीत विद्यालय में बैठी हुई एक युवती का चेहरा दिखायी देता था। वह ध्यान से देखता है कि यह वही युवती तो नहीं है नहीं यह वह युवती नहीं है। इसमें जीवन नहीं है।

कहीं यह उस व्यक्ति का अपने मन को समझाने का ढंग तो नहीं है जिसने अपने लिए यह कठोर नियम बना लिया है कि युवावस्था में किसी सुंदरी को देखकर विचलित नहीं होना चाहिए और न ही उसे उत्कंठापूर्वक देखना चाहिए। उसे देखकर लगता है कि विद्युत लता ही साकार रूप धारण करके आ गयी है।

"तू कौन है? पड़ोस के घर की खिड़की के पास दिखायी देनेवाली फूल के समान खिले हुए चेहरेवाली कन्या है? तू नीला की अनेकानेक सहेलियों में एक है? तू आकाश में फैली चांदनी में से उतर कर आयी है? क्या तू विद्युत लता है?'

वह अपनी भुजाओं को परस्पर जोड़कर हार के समान उसके गले में डाल देती है। वह भाव विभोर हो उठता है। वह चुपके-चुपके उस सुखद स्थिति का आनंद उठाता है परन्तु इसका कोई महत्व नहीं।

लज्जावश संकुचित होते हुए वह उसकी भुजाओं को अपने से अलग करता है।

"मुझसे खिलवाड़ मत कर। तू दूर चली जा!"

"अच्छा आप तो नाराज हो रहे हैं! मेरे आने से आपको खुशी नहीं हुई?"

"यह मै कैसे कह दू ? परन्तु मैं तुम्हे यहा आने की अनुमति नही दे सकता हू।"

"नीला सुबह साढे आठ बजे तैयार होकर 'लाइट हाउस' के परे स्थित अपने कार्यालय को चली जाती है और शाम को थककर चूर होकर लौटती है। कमला भी अपनी बडी बहन के पद चिह्नो पर चलने के लिए तैयार बैठी है। राजू को तीन साल और कालेज मे पढना है। मा के गले के सभी आभूषण जिनका तौल तीस सावरिन था, बैंक मे पडे हुए है। पिताजी के 'पेंशन' के ७८ रुपये माला के विवाह मे लिये गये कर्ज को चुकाने मे ही लग जाते हैं। समझी मेरी बात ? पद्रह महीने तक नौकरी न मिलने के कारण 'बेकार इजीनियर' कहलाने पर लज्जा का अनुभव करने तथा हतोत्साहित होने के बाद, नारकीय वेदना का अनुभव करने के उपरात मे इस एकात, शीतल स्थान पर आ पहुचा हू।"

वह अपने सुदर मुख को अपने कमलवत हाथो से ढके हुई थी परतु फिर भी उसकी आखे उसे देख रही थी।

"ऐसी बात है तो मैं चलती हू।"

वह उसके कानो के पास अपना मुह ले जाकर कहता है, "नही, मत जाओ। क्या तुम नाराज हो गयी ? हा तुमने यह तो बताया नही कि तुम कौन हो ?"

"मैं मैं सदा आपके साथ रहूगी ।"

वह उसके बाहुपाश से मुक्त हो जाती है। वह सदा उसके साथ रहेगी। इसका मतलब

"चाय श्रीमन चाय ।"

रामन कुट्टी चाय लेकर आया था।

स्नेहक तेल की चिकनाहट, गर्म कपडो की गरमाई और चाय की गरमाई और स्वाद सभी कुछ सुखद लग रहे थे। तेजी से बहता हुआ जल 'सोय, सोय, सोय' की ध्वनि उत्पन्न कर रहा था। वहा सुन पडनेवाली विभिन्न ध्वनियो की गूज हसतरी पर बैठी हुई युवती से सबधित मधुर स्वप्नो का विनाश कर रही थी। वे ध्वनिया मानो उसके जीवन के एकाकीपन को, थकान को मिटा रही थी।

चलते समय मा ने मुह से कुछ नही कहा परन्तु, 'अपने जीवन के इन तेइस सालो मे वह किसी के घर चार दिन के लिए भी नही ठहरा है वहा न जाने

कैसे रहेगा ? हा वतो ठड भी है .' आदि बातें सोच कर वह रो पडी थी। नीला बच्चो की तरह फूट-फूट कर रोयी थी। उसकी नाक और आखे लाल हो गयी थी। कमला भी सिसक-सिसक कर रोयी थी।

उसके गाडी पर चढ जाने के बाद पिता ने, "सपन तुम जा रहे हो ? सावधान होकर रहना.. पत्र अवश्य डालना," कहकर अपनी आखें पोछ ली थी। लगता था कि वह अभी रो पडेंगे।

'पद्रह महीने तक वह बेकार रहा, घर मे बैठा रहा तो हमे उसका बेकार बैठे रहना अखरने लगा। अब .' यह सोच मा का गला भर आया। नील-गिरि एक्सप्रेस चल पडी। सभी लोगो को मानो एकाएक कोई भूली हुई बात याद आ गयी और उन्होने रोते हुए हाथ हिलाकर उसे विदा दी।

"यहा सौ रुपये से अधिक खर्च नही होगा। मैंने अपना काम सीख लिया है और वह मुझे अच्छा लगता है। दिन का खाना 'मेस' मे खाता हू और रात का खाना स्वय बना लेता हू। यहा सब तरह से सुभीता है। नीला के लिए वर की खोज कीजिए ... ." आदि बातें उसने पत्र मे लिखी थी। 'चार महीने मे वह स्वय हजार रुपये जमा कर लेगा। इस वर्ष यदि नीला का विवाह हो जाये तो अगले साल कमला के लिए वर ढूढा जा सकता है। तीन साल बाद राजा की पढाई भी समाप्त हो जायेगी। फिर ..फिर...'

"टर्र...टर्र टर्र" घटी के लगातार बजने से उसे साफ पता लग गया कि कोई नया आदमी उसे खोजता हुआ वहा आया है और 'कालिंग बैल' बजा रहा है। बाहर, लटकते हुए गालो और धसी हुई आखोवाला नायुडु हाथ जोडे खडा था।

"अरे आप ! .. आइए, आइए !"

वह बरामदे पर चढकर खडे हो जाते है। "आज जनाब की छुट्टी बता रहे थे। मैंने सोचा अच्छी धूप होने के कारण आप ऊटी चले गये होगे।"

"मैं नही गया।"

"तब तो यह अच्छा हुआ कि मै आ गया। आइए सर ! हमारे घर चलिए। अच्छी धूप है। हमारे बगीचे मे बैठकर ताश खेलने के लिए मित्र लोग आये है "

"मैं ताश नही खेलता। आपके पास किताबे हो तो पढ लूगा।"

"किताबें ! बहुत सारी हैं, मगर "

वह लबी बाहो का स्वेटर पहनकर, दरवाजे पर ताला लगाकर चल पडता है। 'यदि वह जुआ खेलने के लिए बुलाये तो ? कोई बहाना बनाकर छि छिः वह अब भी मा की निगरानी मे रहनेवाले बच्चे के समान क्यो डर रहा है ? वह एक समझदार व्यक्ति है। वह नौकरी करता है। अब वह बडा हो गया है। उसने कमाकर अपने परिवार का भरण-पोषण करने का भार सभाल लिया है। वह इन छोटी-छोटी बातो से क्यो डर रहा है ? क्यो घबरा रहा है ?'

जलाशय को पार करके, चाय के बाग के बीच से होकर वे ढलान पर चढ गये। कुछ दूरी पर 'सिल्वर ओक' के वृक्षो की झुरमुट मे एक छोटा-सा घर दिखायी दिया। घर के अगले भाग मे फूलो से रहित बडे-बडे पत्तोवाला एक पौधा खडा था। नायुडु ने बताया कि वह वसत ऋतु मे ही फलता-फूलता है। घर के बगीचे मे फूलोवाले पौधे नही दिखायी दिये। घास पर सिगरेट के खाली डिब्बो और सिगरेट के टुकडो का ढेर दिखायी दिया। शीशे की खिडकियोवाले, पाच फुट लबे एक बद बरामदे मे बैठी हुई मित्र-मडली ताश खेल रही थी। काले रग की 'टाइट' पैट और ऊनी स्वेटर पहने हुए उन जवानो ने 'ग्लैड टु मीट यू' कहकर पारपरिक ढग से हाथ मिलाया और ताश खेलने मे जुट गये।

'ग्लैड टु मीट यू' की तीखी आवाज के बीच एक कोमल स्वर भी सुनायी दिया जिसने उसे मुडकर देखने के लिए बाध्य किया।

"सर, वह मेरी लडकी है। मैंने इसका नाम सरस्वती रखा है परतु यहा सभी लोग उसे रोजी के नाम से ही जानते है," कहकर नायुडु हस पडा। उसकी मिची हुई आखो मे भी एक प्रकार की चमक आ गयी।

'रोजी' का गठा हुआ शरीर, गेहुआ रग, गोल चेहरा और उभरे हुए गाल सभी कुछ आकर्षक लग रहे थे। उसके उभरे हुए गाल उस पर्वतीय प्रदेश मे प्राप्त एक प्रकार के अजीर के फल के समान लाल थे। वह अनुमान नही लगा पाया कि उसके कपोलो की लालिमा पर्वतीय प्रदेशो की कन्याओ के कपोलो पर दिखायी देनेवाली स्वाभाविक लालिमा है अथवा 'रूज' आदि लगाने का परिणाम है। उसके घुघराले बाल कधो पर लहरा रहे थे। उसने अपने कानो के पास गाढे लाल रग के मखमली गुलाब के फूल को पत्ती समेत तोडकर लगा रखा था। उसने बिना बाहो का 'ब्लाउज' पहन रखा था। उसकी चिकनी सुडौल बाहे देखनेवाले के मन को विचलित कर देती थी। उसने प्लास्टिक की जरीवाली गुलाबी रग की नायलान की साडी पहनी हुई थी जो कि बार-बार

उडकर लोगो को उसकी ओर आकृष्ट कर रही थी। बरामदे मे एक छोटी-सी मेज के ऊपर 'रिकार्ड-प्लेयर' और कुछ टेप' पडे हुए थे। उन टेपो पर कुछ गाने रिकार्ड किये जा चुके थे।

नायुडु ने जोर से कहा, "रोजी इन्हे किताबे ही पसद है। ये ताश नही खेलेगे।"

"अच्छा तो आपको. मेरी तरह—। श्रीमन, आप बैठिए। आपको बीटल्स का म्यूजिक पसद है...?"

बोलते समय उसके रगे हुए होठ आवश्यकता से अधिक मुड जाते थे और अत्यत आकर्षक प्रतीत होते थे।

वहा कुछ कुर्सिया पडी हुई थी। उन पर पडे हुए 'कुशन कवर' पर 'बी हैप्पी' शब्द कढे हुए थे।

"बैठिए श्रीमन ।"

"चूइग गम' को देखने से लगता है कि वह मीठा होगा परतु मुह मे डालने के कुछ समय के बाद ही वह रबड के समान हो जाता है। फिर भी हम उसे थूकने के लिए कहा तैयार होते है ?

सपत बैठ जाता है। ". ओ के देन एजाय युवरसेल्व्स," कहकर नायुडु वहा से चला जाता है।

रोजी एक टेप को 'रिकार्ड-प्लेयर' पर लगाकर उसे चलाती है। एक दूसरे से सर्वथा असबद्ध दो-तीन ध्वनिया सुनायी देती है। उन ध्वनियो की पृष्ठभूमि मे कुछ विचित्र ध्वनिया भी सुनायी देती है। ऐसा लगता है कि कोई भी व्यक्ति उन ध्वनियो को सुनते समय अपने हाथ-पैर तथा शरीर को हिलाये बिना नही रह सकता है।

"यह गाना मुझे प्राणो के समान प्यारा है," कहकर रोजी बैठ जाती है और झूमती हुई, गाने के साथ ताल देने लगती है।

उन कर्कश ध्वनियो के बीच सपत को अपने पिता की आवाज सुनायी देती है "सपत ध्यान से रहना बेटा।"

कुछ महीने पहले ही उसके ताऊ जी का लडका रगमणि अमरीका से 'टेप-रिकार्डर' आदि चीजें लेकर लौटा था। वह उसके घर ठहरा था। उस समय घर मे बहुत से लोग आये हुए थे। बुआ की लडकी शकुतला के चार बच्चे, पतली तीखी आवाज मे चीख-चीख कर सबसे लडनेवाली और सबकी निंदा

करनेवाली उसकी बहन भानु, खुर्राटे भरने मे प्रसिद्ध उनके ताऊ जी, सभी आये हुए थे। वे गर्मी की छुट्टियो के दिन थे। रगमणि दिन भर 'पाप म्यूजिक' के नाम पर 'या या, चा चा, का का' करता रहता था और तरह-तरह की विचित्र ध्वनिया उत्पन्न करके प्रसन्न होता था। लोग उनके उस सगीत को नही समझ पाते थे। अपने उस 'पाप म्यूजिक' से लोगो को प्रभावित करने के बाद ही वह दूसरा कार्य आरभ करता था। अपने सगीत आदि के द्वारा उसने लोगो की नाक मे दम कर रखा था। एक दिन रगमणि अपने किसी काम से बाहर गया हुआ था तब सपत ने एक चाल चली।

उसके लौटने पर सपत बोला, "रगमणि, मै यह टेप अपने एक दोस्त से लेकर आया हू। 'पाप म्यूजिक' का यह नवीनतम रूप है," कहकर उसने एक टेप को 'रिकार्ड प्लेयर' पर लगाया। कुछ देर बाद वह बोला, "सगीत को सुन कर बताना कि तुम्हे किन किन वाद्यो की और किन-किन व्यक्तियो की आवाजे सुनायी दे रही है।"

रगमणि ने विभिन्न ध्वनियो को बडे ध्यान से सुना। "ड्रम गिटार अरे सितार भी है," कहकर वह उछल पडा। ऐसे अनेक वाद्यो के नाम गिनाकर जिनके विषय मे सपत कुछ नही जानता था और जिनके नामो का उच्चारण वह नही कर सकता था, रगमणि अपनी सूची को लबा करता जा रहा था। वह बोला, "यह सगीत बहुत बढिया है। इस टेप को मै अपने सग्रह मे मिला लेना चाहता हू।"

"हा हा, जरूर मिला लेना परतु इस टेप के लिए तुम्हे दस डालर देने पडेगे। इसमे दोपहर के समय हमारे घर मे सुनायी देनेवाली आवाजे रिकार्डेड है," कहकर सपत खिलखिलाकर हस पडा।

"अरे तेरे पास सगीत का अपार ज्ञान है। तू अपने सगीत ज्ञान का उपयोग न करके व्यर्थ की पढाई करने मे लगा हुआ है, यह सोचकर मुझे दुख हो रहा है," कहकर रगमणि ने सहानुभूति व्यक्त की।

यहा बैठे हुए सहसा सपत को वे आवाजे याद आती है।

रोजी को जान लेना चाहिए था कि उसका सगीत मे कोई स्थान नही है।

"आप अदर चलकर, 'टुबा' देखेगे ? मैने बहुत-सी किताबे इकट्ठी कर रखी है। यह मेरी 'हाबी' है ।"

उसे लगता है कि ताश खेलना इससे कही अच्छा होगा। वह कमरे से

अदर गया। कमरा काफी गर्म था। वहा एक चौडा सोफा, एक छोटी-सी गोल मेज और किताबो से भरी हुई शीशे की एक अलमारी पडी हुई थी। किताबे उस अलमारी मे रखी जाने योग्य न थी। अधिकाश किताबे पुरानी हो गयी थी। वे 'पाकेट बुक सीरीज' की सस्ती किताबें थी। उसे यह समझने देर न लगी कि वे किताबें 'सेक्स'.. 'क्राइम' आदि से सबधित है।

"श्रीमन बैठ जाइए" कहकर रोजी उसे वहा पडे हुए सोफे पर बैठा देती है। वह अपनी गुलाबी रग की उगलियो के सहारे अलमारी मे से सात-आठ किताबें निकालकर उसके सामने रख देती है।

सपत एक ओर राह भूले बच्चे के समान भयभीत होता है दूसरी ओर उस स्थिति का विरोध करना चाहता है। वह पुस्तको को उलट-पलट कर देखता है। सभी.. सभी

उन पुस्तको मे छपे हुए शब्द उसकी समझ मे नही आते है।

"क्यो श्रीमन, किताबे कैसी है? ये किताबें बडी मनोरजक हैं" कहती हुई वह एक-एक कर किताबो को पलटने लगती है।

वह कभी भी उपन्यास पढने के लिए तैयार नही हुआ था। दैनिक समाचार पत्रो मे मोटे-मोटे अक्षरो मे छपे हुए समाचारो को और खेलकूद सबधी विवरणो को ही वह पढा करता था।

रोजी ने 'रिकार्ड-प्लेयर' को बद नही किया था। परस्पर असबद्ध वे ध्वनिया ही बारबार सुनायी दे रही थी। वे ध्वनिया उसके मस्तिष्क के किसी कोने मे सुप्तावस्था मे पडे हुए भावो को झकझोर कर जगा रही थी।

"सपत ध्यान से रहना" पिताजी ने ऐसा क्यो कहा? वह झटपट किताबो को दूर करके खडा हो जाता है।

"क्यो श्रीमन, बाग की ओर चलें?" कहती हुई वह भी उसके साथ बाहर आ जाती है।

"नायुडु कहा है?"

"हा—हा—हा," वह खिलखिलाकर हस पडती है। "पिताजी प्राय इसी तरह कही घूमने चले जाया करते हैं। हम दोनो कहा चले?"

"कही नही.. मुझे आज की डाक से एक चिट्ठी भेजनी है। मैं. जाता हू" कहते-कहते सपत सहसा चुप हो जाता है।

"आप यह क्या कह रहे हैं? मैंने तो सोचा था कि मेरा समय मजे से कट

जायेगा...क्यो श्रीमन आपको यहा रहना अच्छा नही लगा ?"

"नही, ऐसी कोई बात नही है डाक के निकल जाने के बाद मे चिट्ठी नही भेज सकूगा न. ?"

"मुझे इस बात का बहुत दुख है। खैर. .आप कल यहा आयेगे ?"

"कल ?"

"हा, कल। कल पिताजी अपने दोस्तो के साथ शिकार खेलने चले जायेगे। आप न आये तो मैं 'बोर' हो जाऊगी। आप कल जरूर आइयेगा।"

"ऊ हू कल नही कल मुझे कुछ काम है अच्छा तो मैं चलता हू।"

उसे लगा कि उसने एक कोमल फूल को सुई से छेद दिया है। अत वह मन ही मन बहुत लज्जित हुआ और शीघ्र ही वहा से चल पडा।

"क्यो रे तू भी पुरुष है ?"

रोजी अब भी टीले के ऊपर खडी हुई उसे देख रही थी और हस रही थी। पर्वत शिखर भी जैसे उसके साथ मिलकर हस रहे थे। सामने से सपत के 'थान' की गाडी आ रही थी। गाडीवाले द्वारा सावधान किये जाने के बाद ही वह चेतता है और झटपट किनारे हो जाता है। उसे लगता है कि 'थान' उसे बडे ध्यान से देख रहे है।

"उन्होने मुझसे पूछा था कि नायुडु से मित्रता हो गयी ? अब मुझे इस स्थान पर खडे देख उन्होने मेरे विषय मे क्या सोचा होगा ?"

उस दिन वह दिन भर घर ही पडा रहा। रह-रहकर रोजी की हसी की गूज उसके अकेलेपन को मिटा रही थी। वह हसी मानो कबल के भीतर भी शीत-लता फैलाकर उसे झकझोर देती थी और उससे पूछती थी, "क्यो अकेलेपन का अनुभव हो रहा है ?" हसते समय रोजी के लिपस्टिक लगे हुए होठ मुडते, फैलते एव सिकुड जाते थे। उन होठो ने जैसे उसकी नीद हर ली थी।

सुबह होने पर ही उसे नीद आती है।

आख खुलने पर दरवाजे पर लगी हुई घटी के 'टर्र र र' बजने की आवाज सुनायी देती है।

भय की उस घडी मे उसे नायुडु की ही याद आती है। 'वह सुबह-सुबह उसका पीछा करने आ गया है ?'

सपत चुपचाप पडा रहा। घटी के बजने के साथ-साथ शीशे के किवाड भी बज उठते है। वह उठकर हाथ पर हाथ रखे हुए धीरे-धीरे चलता हुआ किवाड के

पास पहुच जाता है और शीशे मे से बाहर झाकता है। बाहर अरुणाचलम खडे थे।

"क्यो भई, तबियत ठीक नही है क्या ? बार-बार टेलीफोन करने पर भी कोई जवाब नही मिला तो मैंने सोचा कि मै स्वय जाकर तुम से मिल लू। यहा घटी बजाते हुए दस मिनट हो गये और तुम नही आये। क्यो ! भई बात क्या है ?"

"नही . कोई बात नही है भाई। आप अदर आइए। मैं अनजाने ही गहरी नीद सो गया था।

"तुम अच्छी नीद सोये ! इस समय क्या बजा है कुछ मालूम है ? साढे दस बज रहे हैं। क्यो भई इतनी देर तक सोने की क्या वजह है ?"

"कोई खास वजह नही. मैंने सोचा शाम की ड्यूटी ही तो है "

"सपत मेरी कुछ सहायता करोगे ?"

"हा, कहिए भाई साहब।"

"आज घर से कुछ लोग आ रहे है। मैं उनसे मिलने 'ऊटी' जा रहा हू। चार बजे तक 'ब्रिट्टो' रहेगा। आगे तुम जरा सभाल लोगे ?"

"हा अवश्य, अवश्य।"

अरुणाचलम शीघ्र ही वहा से चले जाते है।

'पावर हाउस' का वह विशाल भवन उसे अपने शरणस्थल के रूप मे दिखायी देता है। वह सोचता है कि वहा की आवाजो मे वह सभी बातो को भुला सकता है। ऐसा सोचने पर उसके मन को शाति मिलती है।

जलाशय के किनारे-किनारे चलते समय अनजाने ही वह चाय के बाग के दूसरी ओर दिखायी देनेवाले उस घर की ओर देखता है। उस समय उसे बिजलीघर मे सदा सुनायी देनेवाली आवाज के स्थान पर उसकी हसी सुनायी देती है। अपने दातो तले एक उगुली को दबाये खडी रोजी की, उसके लाल वर्ण के खुले हुए होठो की याद आ जाती है

उसे गहरा आघात लगता है। वह बडी तेजी से चलकर बिजलीघर पहुच जाता है।

लुब्रिकेंट तेल ..रुई लाओ ..आवाजें

वह यत्र के अगले भाग मे लगे हुए पुर्जो को देखता है। लाल बत्ती जल कर यह सूचित कर रही थी कि यत्र अधिक गर्म हो जाने के कारण भीतर ही

भीतर दहक रहा है, पिघल रहा है। वह जान गया कि सब कुछ 'ओ के' नही है। उन भीषण ध्वनियो के शात हो जाने के उपरात वह 'क्यग-क्यग' की आवाज करती हुई, घूमती पनचक्कियो के पास जाकर उन्हे ध्यान से देखता है।

उसकी सहायता के लिए तेल की कुप्पी सहित खडा हुआ श्रवणन यत्र के उन भागो मे तेल डालता है जो कि बहुत गर्म हो गये थे। अफसर आकर चले जाते है। हमेशा की तरह शर्मा जी 'लेट' आते है। सपत रामन कुट्टी को भेजकर 'मेस' से 'दोशा' मगवा लेता है और रात के खाने का काम निपटा लेता है।

शर्मा, 'श्रीराम जयम' लिखने बैठ जाते है। सपत की कल्पना दूर-दूर दौडने लगती है। वह उन ध्वनियो की लय मे 'उसे' देखने की चेष्टा करता है।

जब वह मेज पर सिर टेक कर आखे मूद लेता है तो क्या उसे उसका रूप दिखायी देता है ?

उसकी हसी, लालहोठ, सुडौल बाहे इन सबकी उसे बार-बार याद आती है।

वह उठकर जोर से अपना सिर हिलाता है, परतु उसकी व्यग्यपूर्ण हसी निरतर सुनायी देती रहती है।

हाय यह हसी

वह अपने कानो को कसकर बद कर लेता है।

'धड धड' करती हुई एक्सप्रेस गाडी के निकल जाने से पटरी जैसे जोर से हिल उठती है उसी प्रकार उसे लगता है कि उसे भी किसी ने पकड कर जोर से हिला दिया है।

रामन कुट्टी कहता है, "श्रीमन चाय क्यो श्रीमन सिर मे दर्द है ?"

सपत कोई उत्तर नही देता है। वह अगडाई लेकर उबासिया लेने लगता है।

शर्मा, 'श्रीराम जयम' लिखना छोडकर उससे पूछते है, 'क्यो भई, दाखिन मे भीग गये क्या ? तुम यहा नये आये हो। तुम्हे जरा ध्यान से रहना चाहिए।"

"नही श्रीमन "

"नही क्या ? तुम्हारा चेहरा बता रहा है। तुम जाकर आराम करो। मेरा भी काम मै कर लूगा। जरूरत हुई तो तुम्हे बुला लूगा। तुम चले जाओ "

"नही श्रीमन, ऐसी कोई बात नही है "

"लगता है कि तुम आज तीन बजे ही ड्यूटी पर आ गये थे। आजकल तुम मे इतनी शक्ति कहा है?" कहकर शर्मा ने उसे लोहे की सीढी पर चढ कर ऊपर के आराम करनेवाले कमरे मे पहुचा दिया और अपने काम पर लग गये।

वहा एक 'स्क्रीन', दो बेंच, एक तकिया और एक कबल पडे हुए थे। 'हीटर' लगा होने के कारण कमरा गर्म था।

उस एकात वातावरण मे लेट जाने के बाद भी वह उन आवाजो को कहा भुला पाता था ? ध्वनियो के कपन मे वह यह रोजी का.. उसके अजीर के समान लाल गालो का काम है न ?

"चल दुष्टा कही की। दूर हट जा," कहकर वह कबल हटाकर झटपट उठकर बैठ जाता है। कोने मे पडा एक अखबार का टुकडा और उसमे मोटे-मोटे अक्षरो मे छपा एक समाचार उसे दिखायी देता है। अपनी विचारधारा को दूसरी दिशा मे मोडने के लिए वह उस अखबार के टुकडे को उठाकर समाचार पढने लगता है।

समाचार का शीर्षक था 'बिजलीघर के गहरे कुड मे गिरा बेचारा हाथी'। यह घटना कभी किसी बिजलीघर के पास घटित हुई थी। हाथी गहरे कुड मे गिर गया था। उसे निकालने के लिए लोहे की रस्सिया लटकाई गयी और क्रेनो का प्रयोग किया गया। मन ही मन इस घटना की कल्पना करता हुआ वह आखे मूद लेता है।

ऊचे-ऊचे 'बीम' वाले दो क्रेन। उनके चलने की और हाथी के चिल्लाने की आवाज धीरे-धीरे सुनायी देती है। थोडी-सी भूल हो गयी। यह भयकर आवाज करता हुआ धडाम से गिर पडा। 'कोई है ? अरे वहा कोई है ? वहा क्या हुआ ? क्या हाथी को कुड से निकाला जा सकता है ?' वह कुड के भीतर झाक कर देखता है। उसे लगता है कि उसके पैरो तले की भूमि तेजी से घूम रही है। 'अरे यह तो वही वही है न ? जो विद्युतलता के रूप मे हसतरि पर बैठकर आयी थी। उसे इस कीचड मे किसने धकेल दिया ?'

वह इस प्रकार सोच ही रहा था कि उसे किसी के हसने की आवाज सुनायी देती है। क्या रोजी हस रही है ? सहसा शरीर की नस-नस को कपा देनेवाली भयकर आवाज सुनायी देती हे। उस समय वहा पडे हुए बेंच भी हिलने लगते है। उसके कुड मे गिरने की याद आते ही उसकी कर्त्तव्य भावना जाग उठती है।

"बटन बद कर दो ! बद कर दो बद कर दो न !" कहते हुए झटपट उठकर वह लुढकता हुआ-सा सीढियो से उतर जाता है।

"क्यो भई नपत इस तरह क्यो घबरा रहे हो ?"

"श्रीमन आवाजे "

"सब कुछ ठीक है, भाई, तुम स्वय देख लो सब कुछ ठीक है।

लाल बत्ती नही जल रही थी। पानी के गिरने की, पनचक्कियो के घूमने और साथ ही किसी के हसने की आवाज सुनायी देती है

"कितने बजे है सर ?"

"दो बजे है। तुम पद्रह मिनट पहले ही सोने गये थे "

"श्रीमन इस शोर मे मै कैसे सो सकता हू ? मेरे सिर मे दर्द हो रहा है. ."

"यहा सबसे बडी कठिनाई तो यही है। जब तक उन आवाजो की आदत नही हो जाती तब तक वे अजीब लगती है। कानो मे थोडी-सी रुई लगाकर सोने की कोशिश करो। सब कुछ ठीक हो जायेगा। अच्छा जाओ तुमने कोई सपना तो नही देखा ?"

वह क्या उत्तर देता ?

"उन दिनो जबकि मै पहली बार बिजलीघर मे काम करने आया था तो मुझे भी ऐसा ही लगता था। उन दिनो 'आटोमेटिक' मशीने कहा थी ? बडा कष्ट उठाना पडता था। घर जाने पर भी वही आवाजे सुनायी देती थी। भ्रम होता था कि वे ही आवाजें वातावरण मे गूज रही है। मै अगले महीने ही गाव जाकर विवाह करवाकर लौट आया, तब कुछ चैन पडा "

शर्मा के मुख पर सहसा विजय की मुस्कान बिजली की तरह प्रकट होकर विलीन हो जाती है। नपत पुन सोने के लिए नही जाता। वह आखे मूद कर सोचने लगता है कि वह घरवालो को क्या लिखे।

"यहा 'मेस' मे अच्छा खाना नही मिलता। मेरे पेट मे हमेशा दर्द रहता है। यहा अच्छे होटल नही है। यहा के सभी लोग मुझसे विवाह करवा लेने के लिए कह रहे है। यदि अच्छी लडकी मिल जाये तो मुझे भी "

कुमारपुरम स्टेशन

कुमारपुरम निर्जन स्थान पर स्थित एक स्टेशन है। उसके चारो ओर आठ मील की दूरी तक कोई गाव नही है। स्टेशन बनाने के बाद उसका कोई न कोई नाम अवश्य दिया जाना चाहिए न ? इसी दृष्टि से उस स्टेशन का नाम कुमारपुरम रख दिया गया था अन्यथा पूर्व की ओर एक मील की दूरी पर स्थित कुमारपुरम गाव ने पिछले पचहत्तर वर्षो से उस स्टेशन का जैसे बहिष्कार कर रखा है। कहा जाता है कि दादु वर्ष[1] मे अकाल के समय जनता की भलाई के लिए तिरुच्चि से तिरुनेलवेली तक रेलवे लाईन बिछाई गयी थी। यह स्टेशन उसी मार्ग पर कोविलपट्टी नामक स्थान के दक्षिण मे सात मील की दूरी पर है। आस-पास गावो मे रहनेवाले लोग अपने जीवन काल मे एक बार या दो बार ही मदिर, तीर्थस्थान आदि की यात्रा पर निकलते थे। वहा से दस मील की दूरी पर चडिका देवी का एक मदिर था। वहा जाकर खीर चढाने की एक परपरा थी। इस क्षेत्राटन के लिए न रेल की आवश्यकता थी और न ही मोटर की। प्राय. लोगो को जहा जाना होता था वे स्थान स्टेशन से कम दूरी पर स्थित थे। ऐसी स्थिति मे उन गावोवालो का सीधे ही पैदल न जाकर स्टेशन आकर रेल पकडना कौन-सी बुद्धिमानी थी !

इस स्टेशन के इतिहास के अनुसार सुब्बराम अय्यर इस स्टेशन पर आनेवाले प्रमुख व्यक्तियो मे प्रथम कहे जा सकते है। वह कोविलपट्टी से तीन दिन पहले ही आये थे। वह नये स्टेशन मास्टर के बाल सखा थे। कुछ समय तक वह स्कूल मे भी साथ-साथ पढे थे। उनमे कुछ दूर का रिश्ता भी था। स्टेशन मास्टर को सहसा उस निर्जन स्टेशन मे अपने मित्र का स्वागत करने और दावत वगैरह देने का एक अवसर मिला। उनके पुत्र की छठी वर्षगाठ थी। इसी बहाने उन्होने अपने मित्र को निमत्रित किया। सुब्बराम अय्यर उस शात वातावरण मे अपने मित्र के साथ चैन से समय बिताने के विचार से उनके पास जा पहुचे।

सुब्बराम अय्यर वर्षगाठ के उत्सव पर आये हुए एकमात्र अतिथि थे। बचपन के वे दोनो मित्र रात भर अपने जीवन के विषय मे, एक देश छोडकर

[1] तमिल वर्षो मे एक

दूसरे देश जाने पर हुई घटनाओ और अपने परिवार के विषय मे विस्तार से चर्चा करते रहे । स्टेशन मास्टर ने पूछा कि कोविलपट्टी मे क्या-क्या सुविधाए प्राप्त है ? सुब्बराम अय्यर ने पूछा कि कुमारपुरम स्टेशन मे वह कैसे समय बिता पाते है ? इस प्रकार की बातो मे एक दिन बीत गया ।

अगले दिन स्टेशन मास्टर प्रतिपल उनसे अपने काम पर जाने की अनुमति माग कर, जाते रहे । दिन के समय जब स्टेशन मास्टर घर पर नही थे, सुब्बराम अय्यर उनके पुत्र के साथ बैठकर मजाक करते रहे । उन्हे लडको के साथ खेलने या उनके साथ रहकर मनोविनोद करने की आदत न थी । इसका कारण सभवत उनका व्यवसाय था । लेकिन इस समय बाते करने के लिए वहा वह छोटा-सा लडका ही तो था ! उसके साथ उन्होने किसी तरह दोपहर तक का समय बिताया । खाना खाकर वह दो घटे के लिए सो गये । तीन, साढे तीन बजे के लगभग उठ गये और एक पुस्तक लेकर स्टेशन पहुच गये ।

प्लेटफार्म पर पाच छ नीम के पेड थे । गर्मी का मौसम होने के कारण पुष्पो से लदे खडे उस वृक्ष से ढेर सारे फूल जमीन पर बिखर गये थे । स्टेशन मे नयी-नयी पत्तियो से युक्त उन सघन वृक्षो पर से होकर आती हुई शीतल सुगधित पवन चल रही थी । वह स्टेशन के उस किनारे पर पडे एक बैच पर जाकर बैठ गये जहा अच्छी हवा आती थी और पुस्तक खोलकर पढने लगे । कुछ देर बाद दक्षिण की ओर से एक एक्सप्रेस गडी आयी । हमेशा की तरह वह उस स्टेशन पर रुके बिना आगे बढ गयी । अब शाम के छ बजे के बाद ही वहा अन्य गाडिया आनेवाली थी । अत स्टेशन मास्टर अपने मित्र के पास आ बैठे । सुब्बराम अय्यर ने किताब बद करके नीचे रख दी और हसते हुए पूछा, "इस स्टेशन पर भी यात्री लोग आते है ?"

स्टेशन मास्टर ने उत्तर दिया, "हा क्यो नही आते ? कल भी तो यहा एक यात्री आया था ?"

सुब्बराम अय्यर जोर से हस पडे । 'पहले दिन आया हुआ यात्री' वह स्वय ही थे ।

उन्होने जोर-जोर से हसते हुए कहा, "इस तरह के दस स्टेशन और हो तो बस रेलवे के बजट मे हर वर्ष घाटा ही दिखायी पडेगा । इसके बाद सुब्बराम अय्यर ने हसना और बोलना बद कर दिया ।

"नही ऐसा नही कहा जा सकता । कल सोमवार है । कोविलपट्टी मे सडी

लगेगी। दस एक लोग टिकट लेने के लिए पहुच जायेंगे।"

"तो यो कहिए कि कल स्टेशनवालो को दो रुपये की ग्रामदनी होगी।"

दोनो हस पडे। उस समय करुप्पैया नामक एक कुली एक कोने मे खडा हुग्रा उनकी बातो का ग्रानद ले रहा था।

"यह स्टेशन क्यो बनवाया गया ? इसके न होने से किसी का क्या बिगडता ?"

"चारो ग्रोर रहनेवाले ग्रामवासी एक ग्रौर प्रकार से इस स्टेशन का उपयोग करते है। स्टेशन से इस प्रकार का एक लाभ भी हो सकता है, यह बात मुझे यहा ग्राने के बाद ही मालूम हुई।"

सुब्बराम ग्रय्यर चुपचाप उनकी बाते सुन रहे थे। स्टेशन मास्टर ग्रागे बोले, "ग्राजकल गर्मी का मौसम है ग्रत चारो ग्रोर का मैदान सूखा पडा है, कही कोई हरियाली नही दिखायी पडती। ग्रन्य मौसमो मे ऐसा नही होता। यहा की भूमि बहुत उपजाऊ है। सभी प्रकार का ग्रनाज उगता है। खेतो मे काम करनेवाले लोग पीने का पानी भरने के लिए मिट्टी के घडे लेकर यहा ग्राते हैं। उन्हे कम से कम २० घडे पानी की जरूरत पडती है। इस दृष्टि से यह स्टेशन उनके लिए बडे काम का है।"

"तो ग्राप यू कहिए कि प्याऊ लगवाने के स्थान पर स्टेशन बनवा दिया गया है।"

स्टेशन मास्टर ग्रब गभीर हो गये। वह बोले, "जहा एक वस्तु की ग्रावश्यकता होती है वहा मनुष्य दूसरी वस्तु का निर्माण कर देता है। किसी काम के लिए जिस वस्तु का निर्माण किया जाता है उसका उपयोग दूसरे काम के लिए हो जाता है। व्यक्ति ठीक इरादे से पैसा खर्च करता है परतु ग्रत मे उसे पता चलता है कि उसने व्यर्थ ही पैसा खर्च कर दिया। जब ससार मे ही यह दोष पाया जाता है तो कुमारपुरम स्टेशन की निंदा क्यो की जाये ?"

सुब्बराम ग्रय्यर व्यग्यभरी हसी हसते हुए बोले, "ग्राप ग्रपने स्टेशन रूपी खिडकी से सारे ससार को देख रहे है। यह बडे ग्राश्चर्य की बात है कि इन छ: महीनो मे ही ग्रापके मन मे पत्थर के बने इस भवन के प्रति इतना मोह उत्पन्न हो गया है।"

स्टेशन मास्टर तनिक ग्रावेश मे ग्राकर बोले, "जरा यह तो बताइए कि कोविलपट्टी मे जो स्कूल है, वह क्यो बनाया गया है ?"

"स्कूल किस लिए बनाते है ? बच्चो के पढने के लिए ही स्कूल बनाये जाते है।"

स्टेशन मास्टर बोले, "मै आपकी इस बात से सहमत हू, परन्तु यह बताइये कि सैकडो बच्चे क्यो पढते है ?"

"आप इस तरह का सवाल क्यो कर रहे है ?"

"जान बूझकर मै आपसे यह प्रश्न कर रहा हू। आप उत्तर दीजिए।"

" .. . . . "

"आप यही तो कहेगे कि बच्चे अपने ज्ञान की वृद्धि के लिए पढते है।"

"क्यो, आप इसके लिए और कौन-सा कारण बताने जा रहे है ?"

"ऐसा कोई मूर्ख नही है जो ज्ञान वृद्धि के लिए बच्चो को स्कूल भेजे। हम दोनो ने क्या अपना ज्ञान बढाने के लिए स्कूल मे पढा था। यदि ऐसा कोई विधान बन जाये कि अनपढो को भी नौकरी मिलेगी तो फिर मै कहूगा कि कोई वर्षा से बचने के लिए भी स्कूल के भवन मे आकर रुकेगा नही।" स्टेशन मास्टर ने उन्हे चुनौती दी।

सुब्बराम अय्यर के हसने पर उनके पास खडा वह कुली भी हस पडा। उसके रहते हुए मजाक करना उचित नही है सभवत यही सोचकर सुब्बराम अय्यर चुप हो गये और उन्होने अपनी किताब उठा ली।

"क्यो आप चुप क्यो हो गये ?" कहते हुए स्टेशन मास्टर ने उन्हे उत्तर देने के लिए उकसाया।

'बातो मे आपसे कौन जीत सकता है ? जब तक चाद और सूरज है तब तक यह कुमारपुरम स्टेशन भी रहे इसमे मुझे कोई हानि नही है," कहकर सुब्बराम अय्यर पुस्तक को इस प्रकार पलटने लगे मानो कोई विशेष प्रसग खोज रहे हो।

स्टेशन मास्टर ने कुली को बुलाकर, "दरप्पैया घर जाकर काफी बनाने के लिए कह दे," कहकर उसे वहा से भेज दिया।

सुब्बराम अय्यर बोले, "हम भी चलते है।'

थोडी देर के बाद दोनो स्टेशन के पास स्थित घर की ओर चल पडे।

तीसरे दिन सुबह आठ बजे के लगभग एक पैसेजर गाडी उत्तर की ओर जानेवाली थी। उस दिन सोमवार था। कोविलपट्टी मे लगनेवाली मडी को जानेवाले चार पाच यात्री सात बजे से पहले ही अपनी टोकरियो सहित स्टेशन

पर आ बैठे थे। वे पान खाते हुए आपस मे बातचीत कर रहे थे। सवा सात बजे के लगभग सुब्बराम अय्यर भी नाश्ता करके प्लेटफार्म पर खडे नीम के वृक्ष के नीचे पडे हुए एक बेंच पर आकर बैठ गये और पहले दिन जिस किताब को हाथ मे लिए हुए थे, उसे निकाल कर पढने लगे। गाववाले अपने स्वभाव के अनुसार जोर-जोर से बोल रहे थे, अत वह शातिपूर्वक किताब न पढ सके। नीम के वृक्षो से होकर आती हुई सुगधित पवन भी उनका ध्यान आकृष्ट कर रही थी।

"इस मरुस्थल मे भी इस तरह की सुगध है। इस तरह मद-मद चलने-वाली पवन है। देखने पर चारो ओर काली मिट्टी ही मिट्टी दिखायी पडती है। इस भूमि मे भी कुछ वृक्ष उग कर पवन मे इस तरह की अनुपम सुगध भर रहे है। यह सुगध भी इसी मिट्टी से उत्पन्न हुई है।"

वह दूर दिखायी पडनेवाले गावो की ओर देखने लगे।

"इन गावो मे रहनेवाले सैकडो पुरुष और स्त्रिया इस भूमि को आधार मानकर ही जीते हैं। यह काली मिट्टी उन्हे सुगध देती है, जीवन भी देती है"

वह जिस पुस्तक को पढ रहे थे उसकी शब्दावली के अनुरूप उनकी विचार-धारा भी प्रवाहित हो रही थी। उनकी चितनधारा अज्ञात दिशा की ओर बढ गयी मानो वह उसी किताब को आगे पढ रहे हो। सहसा उन्होने देखा कि पश्चिम की ओर लगभग आधे मील की दूरी मे चार-पाच व्यक्ति जल्दी-जल्दी स्टेशन की ओर दौडे चले आ रहे है।

सुब्बराम अय्यर ने मन मे सोचा 'अभी गाडी छूटने मे देर है।' ये लोग इस तरह पसीने मे तर होकर क्यो भागे चले आ रहे है ? इससे अधिक दया उन्हे उन लोगो पर आयी जो घटे भर पहले ही स्टेशन आकर गाडी की प्रतीक्षा कर रहे थे।

वह मन ही मन कह उठे 'बेचारे नादान लोग हैं।'

नीम के वृक्षो से होकर रह-रह कर आती हुई हवा सुख दे रही थी। उन्हे लगा कि उस हवा का सेवन करने के लिए गर्मी का मौसम वहा बिताया जा सकता है। ऐसी मन स्थिति मे चारो ओर फैली हुई मिट्टी, घास, घास के बीच मे खिले जगली फूलो और मटमैले रग के जगली पौधो के प्रति उनके मन मे मोह जागा। कुछ ही देर मे गाडी मे चढकर यहा से चला जाऊगा—इस

विचार के मन मे उठते ही मोह कुछ और 'प्रवल' हो उठा।

'मनुष्य कहा-कहा रहते है! वे मनुष्य के रूप मे भी रहते हैं!' कुछ देर वाद दो तीन व्यक्ति प्लेटफार्म पर पहुचे। उन्होने सिर उठाकर सिगनल की ओर देखा और वही एक किनारे पर खडे हो गये। एक आदमी ने कभी गाय खरीदी थी। उस घटना का वर्णन वह कहानी के रूप मे कर रहा था और बाकी लोग 'हू हू' करते हुए उसे सुन रहे थे।

सुब्बराम अय्यर ने उनकी बातो को ध्यान से सुना। उन्हे लगा कि उन लोगो की बातो मे केवल सत्य ही नही, गभीरता और सरलता भी है। उनके मन मे यह इच्छा जाग्रत हुई कि उन्हे बुलाकर आदि से अत तक उनके जीवन की कहानी सुने।

आधे मील की दूरी पर सफेद धोती पहने हुए जो व्यक्ति भागकर आते दिखायी पडे थे उनमे चार लडके थे और एक वृद्ध। वे खास कर अपने आने की सूचना देते हुए से, स्टेशन आ पहुचे। आते ही भागकर आये हुए वृद्ध ने पूछा, "क्या टिकट वट गये?"

वहा खडे हुए वाते करनेवालो मे एक वोला, "नही, नही।"

सभी ने चैन की सास ली। उन चारो वालको की दृष्टि एक साथ ही नीम के पेड के नीचे वेंच पर वैठे हुए सुब्बराम अय्यर पर पडी। उन्हे देखते ही उन लोगो के मन मे उनके प्रति आदर का भाव जाग्रत हुआ और वे जैसे सास भी धीरे-धीरे लेने लगे। इस प्रकार के एक व्यक्ति को साल मे एक वार देखना भी उनके लिए दुर्लभ था। उनके स्कूल मे कभी-कभी आनेवाले वडे इन्सपेक्टर साहव के समान अय्यर वावू भी पैरो मे वूट पहने हुए और वद गले का कोट तथा जरीदार अगवस्त्र धारण किये हुए थे। सिर का गजापन भी उनकी गरिमा को वढा रहा था। पलक झपके विना अपनी ओर देखते हुए उन वालको को अय्यर वावू ने भी देखा। वे चारो लडके लगभग समान आयु के थे। उनकी आयु १२ वर्ष से १५ वर्ष तक के वीच की रही होगी। हरेक लडके के हाथ मे एक दो किताबे और कुछ सफेद कागज थे। उनकी कमीज की जेव मे पडी हुई पेन्सिलो को देखकर स्पष्ट था कि वे स्कूल के विद्यार्थी है। यद्यपि वे वालक और अय्यर वावू परस्पर एक दूसरे को देख रहे थे परतु उन लोगो ने आपस मे वार्तालाप करने की चेष्टा नही की। उस समय सिगनल डाउन हो गया। स्टेशन मास्टर टिकट लिए हुए सुब्बराम अय्यर के पास आ गये।

"लगता है आपको यह जगह बहुत पसद है। आप यहीं बैठे रहते है।"

सुब्बराम अय्यर बोले, "यहा अच्छी हवा है।" इसके बाद उन्होने अपना टिकट ले लिया।

"ऐसी बात है तो अगली छुट्टियो मे यहा आ जाइए। उस तरह तीन दिन मे वापिस न लौटकर कम से कम दस दिन तक लगातार रहकर जाइए.."

"हा, ऐसा ही करूगा। दस ही दिन न? राम चौदह वर्ष के लिए वन गये थे, तो क्या मैं दस दिन के लिए भी यहा नही रह सकता?"

स्टेशन मास्टर बोले, "उस वनवास मे ही राम को अपने प्राण सखा मिले थे। वनवास के कारण ही वह रामत्व को प्राप्त हुए थे।"

सुब्बराम अय्यर ने मजाक मे कहा, "लगता है कि आपने स्कूल छोडने के बाद पुराणो का अध्ययन गहराई से किया है।" परन्तु उन्हे लगा कि मित्र की बातो मे एक सुख है, एक सत्य है।

अधिक देर तक इस प्रकार आराम से बाते करने का अवकाश उनके पास नही था। गाडी के आने का समय पास आता जा रहा था। स्टेशन मास्टर अपने किसी काम से स्टेशन के भीतर गये। लडको को वही खडा करके वृद्ध जाकर टिकट खरीद ले आया। सभी यात्री टिकट सहित प्लेटफार्म पर पहुचे और गाडी पर चढने को तैयार हो गये।

ठीक समय गाडी आ पहुची। जिस गाडी मे अय्यर बाबू चढे थे उसी मे वे ग्रामीण वृद्ध और उनके पीछे एक-एक करके सभी लडके चढ गये। गाडी मे काफी जगह थी। अय्यर बाबू एक खिडकी के पास जा बैठे। उनके सामनेवाली सीट पर काफी जगह थी। लडके भी उसी पर बैठ गये। वृद्ध सुब्बराम अय्यर के पास जा बैठे। सुब्बराम अय्यर की बाईं ओर एक विशालकाय व्यक्ति काफी सारे सामान सहित बैठे थे। उनके सामने खिडकी के पास एक स्त्री बैठी थीं जिसका वजन उस व्यक्ति के वजन का पौन भाग अवश्य रहा होगा। उस स्त्री के पास कुछ गठरिया, बर्तन-भाडे आदि थे

गाडी कुमारपुरम स्टेशन को छोडकर चल दी।

लडके दोनो ओर की खिडकियो मे विपरीत दिशा की ओर दौडते हुए पेड-पौधो को आनदमग्न हो देखने लगे। उन लडको के मुख पर दिखायी पडनेवाले आश्चर्य और आनद के भाव को देख कर सुब्बराम अय्यर को यही लगा कि वे सभवत: पहली बार रेल यात्रा कर रहे हैं। वह उनसे बाते करना चाहते थे।

उन जैसे व्यक्ति किसी से कहा बोल सकते थे ? उन्हे यह काम कुछ कठिन लगा ।

कुछ क्षण बीत जाने के बाद पश्चिम की खिडकी के पास बैठे हुए उस विशालकाय पुरुष ने उन लडको से बातचीत करना आरभ किया । उन्होने बडे शास्त्रीय ढग से बातचीत शुरू की ।

उन्होने पूछा, "क्यो भई, कहा जा रहे हो ? उनकी आवाज उनके शरीर की अपेक्षा अधिक भारी थी ।

इसका उत्तर देने की इच्छा उन लडको को नही हुई ।

उनके बदले वृद्ध महोदय बोले, "ये लोग कोविलपट्टी के बडे स्कूल मे दाखला लेने जा रहे हैं ।"

लडको ने उस आदमी को सिर से पैर तक देखा । उनके हीरे के नौग, हीरे की अगूठी, सोने के बटन, बडी-सी 'रिस्टवाच' यह सभी बारी-बारी से उनके ध्यान को आकृष्ट कर रहे थे ।

"कौनसी क्लास मे दाखिल होने जा रहे है ?"

"यहा गाव मे छठी जमात पास कर ली है । वहा सातवी जमात मे दाखिल कराना है ।"

"यह लडके किस गाव के है ?"

"इडैशेवल के ।"

"इडैशेवल ? वहा सातवी जमात नही है ?"

"नही ! सरकार के पास आवेदन पत्र भेजा है ।"

"क्लास पास करने का सार्टीफिकेट है ?"

"हा ! है ।"

"फिर भी परीक्षा लेकर ही दाखिल करेगे ।"

वृद्ध बोले, "इसीलिए बडे मास्टर साहब ने महीने भर तक घर पर रखकर इन्हे पढाया था ।'

विशालकाय व्यक्ति एक लडके की ओर देखते हुए बोले, "देख मै तुमसे तीन सवाल करता हू । यदि तू इनका जवाब दे देगा तो तुझे सातवी जमात मे दाखिल करा देगे । इसके बाद उन्होने पूछा, 'व्हाट इज योर नेम ?'

एक लडका बोला, 'माइ नेम इज श्रीनिवासन ।

उनका अगला प्रश्न था, व्हाट इज योर फादर्स नेम ?

"माई फादर्स नेम इज रामस्वामी नायुडु ।"

उन्होने तीसरा प्रश्न पूछा, "व्हाट क्लास यू पास ?"

उनकी गलत-सलत अंग्रेजी सुन कर सुब्बराम अय्यर मन ही मन हसे ।

श्रीनिवासन का सयत उत्तर था, "सिक्स्थ क्लास ।"

"बस काफी है । तू तो चतुर लडका है । इसी तरह 'पट, पट' जवाब दे देना । तुझे सातवी कक्षा मे अवश्य ले लेगे ।"

लडका खुशी से फूला न समाया ।

वृद्ध ने उस व्यक्ति से कहा, "आप उन लडको से भी कुछ पूछिए ।"

"मुझे इतनी ही अंग्रेजी आती है । इसके आगे मेरे मास्टर जी ने कुछ नही पढाया," कहकर वह जोर से हस पडे । हसते समय उनकी तोद भी हिलने लगी ।

सामने बैठी हुई उनकी पत्नी और सुब्बराम अय्यर धीरे से हसे ।

ग्रामीण वृद्ध ने उनसे पूछा, "आपका गाव कौनसा है ?"

"तिरुनेलवेली जक्शन मे जो पकज विलास 'काफी क्लब' है वह हमारा ही है । आपने देखा है न ?"

"तिरुनेलवेली ! बस एक बार छुटपन मे गया हू "

"वह होटल हमारा ही है । इन लडको की तरह हजारो बच्चे हमारे होटल मे भोजन करते हुए पढे है । मैं भी पच्चीस साल से देखता आ रहा हू कि कालेज के लडके जक्शनवाले हमारे होटल को छोडकर और कही नही जाते ।"

"अच्छे होटल को छोडकर कौन जाता है ?"

उन्होने मुड कर लडको की ओर देखते हुए कहा, "देखो जब तुम लोग कालेज पढने जाओगे तो हमारे होटल पर ही खाना खाने आना. "

लडको की प्रसन्नता की कोई सीमा न रही । एक नगरवासी को अपने से इस प्रकार प्रेम से बोलता देख उन्हे ऐसा लगा मानो उनका राजोचित स्वागत हो रहा हो ।

"श्रीमन के कितने लडके है ?" वृद्ध ने ग्रामीण रीति से पूछा ।

उन्होने उत्तर दिया, "हमारी दुकान मे जिन्होने भोजन किया और जो भोजन करेंगे वे सभी हमारे लडके है ।"

वृद्ध उनकी बातो को नही समझ सके । होटलवाले सज्जन ने इसे भाप लिया । फिर भी उन्होने उनके विस्मय को दूर करने की कोशिश नही की । वह

बोले, "आप यह सोच सकते हैं कि हम अपने सगे लडको से पैसे लेकर उन्हें भोजन खिलाते हैं। परतु क्या किया जाये ! होटलवाला इतना दान नही कर सकता। फिर भी मैं अपनी शक्ति के अनुसार दान दिये बिना नही रहता। मैंने कितने ही लडको को स्कूल की फीस जमा करने के लिए पैसे दिये हैं। कुछ पैसे वापिस लिए हैं और कुछ वापिस नही भी लिये।" शात मन से यह सब कुछ कह चुकने के बाद अगले ही क्षण उन्होने अपनी पत्नी से पकवान निकाल कर देने के लिए कहा। हा, उन्होने स्वय अपने लिये ही पकवान मागे थे।

ग्रामीण वृद्ध ने पूछा, "आपको बहुत दूर तक जाना है ?"

"हम मदुरै जा रहे हैं। वहा एक शादी है।"

वृद्ध ने पुन अपना पहला प्रश्न दुहराया, "श्रीमन के कितने बच्चे हैं ?"

"मैं कह चुका न कि सभी बच्चे हमारे अपने बच्चे हैं। हमारे यहा पैदा होनेवाले ही क्या हमारे बच्चे है ? यह चारो लडके भी मेरे बच्चे हैं। अब कहिए क्या कहते है ?"

वृद्ध महोदय उनकी बात समझ गये। यही बताने के लिए बोले, "लगता है आपके कोई बच्चा नही है। खैर कोई बात नही। जैसा कि आपने कहा ससार के सभी बच्चे हमारे बच्चे ही हैं। मेरी ही बात लीजिए, इनमे से एक मेरा पोता है, बाकी तीनो लडके उसके साथ पढते हैं। सभी को अपने सगे लडको की तरह अपने साथ कोविलपट्टी ले जा रहा हू। वह लडका जो खिडकी मे बैठा हुआ है वह गरीब परिवार का लडका है। उसका पिता इसी फिक्र मे पडा हुआ था कि वह उसे कैसे पढायेगा। अन्य लडको के साथ यह भी पढ लेगा, इस समय जो खर्च होगा वह मै दे दूगा बाद मे देखी जायेगी, यह कह कर उन्हे दिलासा देकर मै इसे अपने साथ ले आया हू। इसकी पढने मे बहुत रुचि है। बिना खाये-पिये रोते हुए तीन दिन तक जिद करता रहा कि मैं आगे पढूगा' यह बोलते जा रहे थे।

होटल मालिक की पत्नी ने पकवानो का डिब्बा खोला। उसमे तरह-तरह की मिठाइया थी जो कि सभवत एक विवाह के लिए पर्याप्त थी। उनके न कहने पर भी उस स्त्री ने एक बडे से केले के पत्ते मे पाच छ टुकडे किये और उन पर कुछ मिठाइया रखकर उन वृद्ध व्यक्ति को और उन लडको को दी। लडके उसे लेने मे सकोच करने लगे।

होटल मालिक बोले, "ए लडको, पट को धोखा न दो। लेकर खा लो।"

वृद्ध बोले, "हा ले लो।"

लडको ने हाथ फैला कर मिठाइया ले ली।

होटल मालिक ने एक पत्तल सुब्रराम अय्यर की ओर बढाया। उन्होने शिष्टता पूर्वक उत्तर दिया, "मैने अभी-अभी काफी पी है। मुझे नही चाहिए, आप खा लीजिए।" इसके बाद उन्होने अपने कोट की जेब से पुस्तक बाहर निकाल ली।

होटल मालिक ने उन्हे नही छोडा। उन्हे जबरदस्ती एक गिलास काफी पिला दी।

सभी बैठे पकवान खा रहे थे। इस बीच गाडी नालाट्टिनपुत्तूर स्टेशन पर रुककर आगे चल पडी थी।

सुब्रराम अय्यर अपनी पुस्तक खोलकर पढ रहे थे। लडको ने जाकर हाथ धोये और लौटकर अपनी जगह पर बैठ गये। सुब्रराम अय्यर जिस पुस्तक को हाथ मे लिये हुए थे उसके नाम को एक लडके ने धीमे स्वर मे अक्षर मिलाकर पढा, "अन्ना करेनिना, लियो टोलसटोय।" सुब्रराम अय्यर ने इसे सुन लिया।

"टोलसटोय! हा ठीक ही तो है। जब तक बताया न जाये तब तक कोई टोलसटोय न पढकर टालसटाय कैसे पढ लेगा?" उन्होने मन ही मन सोचा।

कुछ देर बाद लडके हाथ मे लिये हुए कागज खोल कर पढने लगे।

होटल मालिक ने पूछा, "वह क्या है रे?"

"हमारे हेडमास्टर ने लिख कर दिया है।"

"क्या लिखा है?"

एक लडका बोला "गाय के बारे मे अग्रेजी मे एक निबध, लोमडी और अगूर की कहानी, कुत्ते और बकरी की कहानी और मित्र के नाम एक पत्र।"

वृद्ध बोले, "सब कुछ अग्रेजी मे लिखा है। बडे मास्टर साहब बहुत पढे-लिखे है। बडे अच्छे आदमी है। पिता की तरह इन्हे पढाया है और इन्हे यह सब कुछ लिख कर दिया है।"

होटल मालिक बोले, "अच्छी तरह पढ लो। ऐसा ही कुछ लिखवाकर तुम्हारी परीक्षा लेंगे।"

सुब्रराम अय्यर किताब पढने का बहाना करते हुए उनकी बातो को ध्यान से सुन रहे थे।

होटल मालिक ने काफी पीकर वृद्ध से कहा, "मुझे लगता है कि लडके पढने मे तेज है।"

वृद्ध सज्जन बोले, "यह लडके गाव के है। परतु इन्होने अच्छी पढाई की है, क्योकि इनके मास्टर बहुत अच्छे थे। मैंने आपसे कहा था न कि एक पिता भी अपने लडको से इतना प्रेम नही करता।"

होटल मालिक बोले, "सो तो ठीक है। गुरु भी तो एक तरह का पिता ही होता है।"

इन शब्दो को सुनते ही सुन्दरराम अय्यर का शरीर रोमाचित हो उठा। वृद्ध बोले, "इसमे क्या सदेह ? यह लडके पढाई मे ही नही और कामो मे भी तेज है।

"काम ?"

"हा, काम किये बिना कैसे रह सकते है। स्कूल जाने से पहले गायो को चराने के लिए ले जाना, बिनौला पीसना, आदि घर के कामो को करके ही स्कूल जाते थे"

"शाबाश ! ऐसा ही करना चाहिए। अपने पर निर्भर रह कर जीवन बितानेवालो के लक्षण यही है। बिना परिश्रम के जिस शिक्षा को पाया जाये वह शिक्षा कहा है ? ऐसे व्यक्ति से देश का कोई लाभ हो सकता है ? वह शिक्षा उसके किसी काम आ सकती है ? मेरी ही बात लीजिए मैं दो जमाते ही पढा हू। बी० ए०, एम० ए०, पढ लेता तो नौकरी करता। यदि मैं नौकरी करता तो इतने सालो से स्कूल के लडको की जो सहायता करता आ रहा हू वह मैं कर पाता ? शिक्षा वही है जो दो-चार लोगो के काम आवे। हमे ऐसी शिक्षा नही चाहिए जो अपने ही गाव के व्यक्ति को नीचा बनावे। क्यो मेरी बात ठीक है न ?"

वृद्ध बोले, "इसमे सदेह की क्या बात है ?" वे इसी तरह बाते करते रहे। गाडी कोविलपट्टी आकर रुक गयी। सुन्दरराम अय्यर जिस पुस्तक को पढने का बहाना कर रहे थे, उन्होने उसे बद करके अपने कोट की जेब मे रख लिया। सभी उतरने की तैयारी करने लगे।

"निडर होकर परीक्षा दे देना। मैं कहता हू, तुम लोगो को आशीर्वाद देता हू तुम सब पास हो जाओगे। अच्छा जाओ। जब तिरुनेलवेली मे पढने जाओगे तो 'पकज विलास' को न भूल जाना, समझे ?" कहकर होटल

मालिक ने उन्हे विदा दी ।

सुब्बराम अय्यर, वे लडके और वृद्ध गाडी से उतरे । चलते समय अय्यर बाबू ने होटल मालिक की ओर देखा और मुस्कराते हुए 'नमस्ते' कहकर विदा ली । लडके उनके पीछे-पीछे चलने लगे । उनके आगे चलने मे उन्हे सकोच हो रहा था उन लडको के मन मे उनके प्रति इतना आदर बन चुका था ।

स्टेशन से बाहर आते ही सुब्बराम अय्यर तागे की इतजार मे खडे हो गये । कोविलपट्टी स्टेशन मे कुली का काम करनेवाला एक आदमी किनारे पर खडा था, क्योकि उस दिन उसकी रात की ड्यूटी थी । वृद्ध और लडको को देखते ही "आइए ! आइए !" कहता हुआ आगे बढा । उसने उनके आने का कारण पताकर लिया । उसकी बातो से सुब्बराम अय्यर ने यह अनुमान लगा लिया कि वह भी इडैशेवल गाव का रहनेवाला है ।

उस कुली ने उस वृद्ध को और लडको को अपने घर पर नाश्ते के लिए बुलाने के साथ-साथ उस रात अपने घर ठहर कर गाव लौटने के लिए कहा ।

सुब्बराम अय्यर को तागा मिल गया । वह तागे पर बैठ गये और उसके मोड पर मुडने तक लडको को देखते रहे । कुमारपुरम स्टेशन, स्टेशन मास्टर के तर्क, नीम के फूलो की सुगध युक्त हवा, काली मिट्टी द्वारा सुगध और जीवन का दान, होटल मालिक की उदारता, स्टेशन मास्टर द्वारा दी गयी शिक्षा की व्याख्या, गाव के हेडमास्टर का लडको के प्रति पितावत आचरण, लडको का ज्ञान जिसके बल पर उन्होने टाल्सटाय को टोलसटोय पढा, गरीब कुली का जोर-शोर से दिया गया निमत्रण-आदि बाते उन्हे स्मरण हो आयी । वह आनद-विभोर हो उठे । उन्हे लगा कि उन्होने बीस मिनट की रेल यात्रा मे ऐसे दुर्लभ ज्ञान को पा लिया है, जिसे वह बीस वर्ष के अध्ययन के बाद भी नही पा सकते थे । क्षण भर के लिए उन्होने सोचा कि गाव के हेडमास्टर, होटल मालिक और कुली के समान महान अध्यापक क्या इस लोक मे हो सकते हैं ? वह स्वय कह उठे उन लोगो से जो कुछ नही सीख सके उसे ये लडके अब सीखने जा रहे है । कुमारपुरम स्टेशन पर यात्रियो के न आने से बढकर विनोद की बात है इन लडको का आगे पढने के लिए यहा के स्कूल आना । उस स्टेशन का उपयोग तो फिर भी प्याऊ के रूप मे होता है, परतु "

सुब्बराम अय्यर तागे मे अपने घर जा पहुचे।

कुली वृद्ध को और लडको को अपने घर ले गया। सुवह का भोजन खाकर गाव से चले थे अत उन लोगो ने वहा कुछ नहीं खाया। कुली के बहुत कहने पर उन लोगो ने काफी पी ली और दोपहर का भोजन करने के लिए राजी हो गये। स्कूल के बरामदे मे उन्हे खडा करके कुली अकेला मुख्य अध्यापक का कमरा पूछता हुआ वहा जा पहुचा। उसने उन्हे बताया कि इडैशेवल गाव के चार लडके छटी जमात पास करके सातवी जमात मे दाखला लेने के लिए आये है, उन्होने तुरत एक अध्यापक को बुलाकर उन्हे दो-तीन प्रश्न-पत्र दिये और गाव के वे लडके सातवी क्लास के योग्य है या नही, इसकी परीक्षा करने को कहकर उन्हे भेज दिया।

उन चारो लडको को एक कमरे मे अलग-अलग बैठाया गया। सहायक अध्यापक ने प्रश्न-पत्र के प्रश्नो को लिख लेने के लिए कहा और वह प्रश्नो को पढने लगे। सभी प्रश्न अग्रेजी मे थे लडको ने उन्हे लिख लिया। सहायक अध्यापक ने कहा कि उन्हे एक घटे के अदर सभी प्रश्नो के उत्तर लिखने है। लडको ने लिखना शुरू किया।

कुली और वृद्ध स्कूल से बाहर आकर एक इमली के पेड की छाया मे बैठ गये और गाव के विषय मे चर्चा करने लगे।

साढे दस बजे के लगभग अग्रेजी की परीक्षा समाप्त हो गयी। इसके बाद गणित, तमिल और सामान्य ज्ञान की परीक्षाए हुई। बारह बजे तक सभी परीक्षाए समाप्त हो गयी। स्कूल के सभी लडके मध्याह्न भोजन के लिए स्कूल से घर की ओर चल पडे। चारो लडके भयभीत दृष्टि से उन्हे देखने लगे। अध्यापक ने उन्हे उसी कमरे मे बैठे रहने का आदेश दिया और जल्दी-जल्दी उनके उत्तर-पत्रो को जाच कर नबर लगा दिये। इसके बाद वह मुख्य अध्यापक के पास गये। उस समय वृद्ध और कुली लडको के पास पहुच गये।

कुली ने पूछा, "परीक्षा-पत्र ठीक हो गया ?"

"गणित के प्रश्न कठिन थे।"

"इगलिश का प्रश्न पत्र कैसा था ?"

"बहुत आसान था।"

एक लडका बोला, "गाव के हेडमास्टर जी ने जो प्रश्न लिख कर दिये

थे वही पूछे गये थे। मैंने एक मिनट मे उत्तर लिख दिया।" बाकी लडको ने भी यही कहा।

"अग्रेजी का पर्चा अच्छा किया है तो पास हो जाओगे," कुली यह कह ही रहा था कि वृद्ध "गाव के अध्यापक ही सच्चे अध्यापक हैं। कैसे अद्भुत आदमी है। यहा क्या पूछा जायेगा, इसे उन्होने जैसे पहले ही जान लिया और इन्हे बता दिया। इसे ही तो कहते हैं बुद्धि।" कहकर इडैगेवल गाव के हेडमास्टर की बडी जोर-शोर से प्रशसा करने लगे।

"मास्टर शायद बडे होशियार है।"

"मामूली होशियार थोडे ही है। मैं तो यही कहूगा कि जैसा गुण है वैसा ही स्वभाव भी पाया है। इस तरह का मास्टर हमारे गाव मे कभी नही आया। यह समझो कि कोई पिता भी अपने लडको से इतना प्रेम नहीं करता होगा," वृद्ध ने आनदित होकर कहा।

सभी सफलता की आशा करते हुए जोर-शोर से बाते कर रहे थे।

कुछ देर बाद सहायक अध्यापक, जिन्होंने लडको की परीक्षा ली थी, लडको को, वृद्ध को और कुली को मुख्य अध्यापक के कमरे मे ले गये। उस समय उनकी प्रसन्नता लुप्त हो गयी और दिल जोर-जोर से धडकने लगे।

"इधर आइए," कहकर सहायक अध्यापक उन्हे एक कमरे मे ले गये। सभी अदर चले गये। मुख्य अध्यापक को देखते ही कुली ने उन्हे नमस्ते की। वृद्ध ने नमस्ते करनें के लिए हाथ उठाये, परतु उनके हाथ कापने लगे। लडको ने कुछ नहीं किया, चुपचाप खडे रहे। आश्चर्य के कारण उनकी आखे खुली की खुली रह गयी। उनके मुख सहसा खुल गये। वह अपने हाथ की उगलिया मरोडने लगे।

कुमारपुरम स्टेशन टालसटाय की पुस्तक लिए हुए जिन सज्जन ने उनके साथ यात्रा की थी, वही मुख्य अध्यापक के रूप मे वहा बैठे हुए थे। लडको ने इसकी आशा कहा की होगी?

"आइए" कहकर हसते हुए उन्होने उन लोगो का स्वागत किया।

कुली के यह कहने पर, "मुख्य अध्यापक को नमस्ते कीजिए," लडको ने और वृद्ध सज्जन ने उन्हे नमस्ते की।

"क्यो प्रश्न बहुत कठिन थे?" कहकर सुब्बराम अय्यर फिर हस पडे। उनकी उस हसी मे जो शोभा, जो आकर्षण शक्ति और जो प्रेम था उसे देख-

कर एक लडके की आखो मे आसू आ गये।

किसी ने उनके प्रश्न का उत्तर न दिया। सभी चकित होकर मौन खडे थे।

आगे उन्होने कहा, "अपने-अपने नाम बताइए।"

"नारायण स्वामी," "श्रीनिवासन," "सुब्बैया," "तिरुप्पदि"।

सुब्बराम अय्यर बोले, "तुम सब पास हो।" लडको की आखो मे प्रसन्नता के आसू छलक आये।

"सभी को सातवी क्लास मे दाखिल करता हू। अच्छी तरह पढना है, समझे ? हर परीक्षा मे अच्छे नबर लेना। तुम्हारे गाव के अध्यापक ही नही, इस गाव के अध्यापक भी तुम्हारे पिता के ही जैसे है। वृद्ध महोदय ! मेरा कहना ठीक है न ?" मुख्य अध्यापक ने भावविभोर होकर मुस्कराते हुए पूछा।

वृद्ध ने गाववालो की तरह जोर से कहा, "इसमे क्या सदेह ?" और उन्हे फिर नमस्ते की।

सुब्बराम अय्यर फिर एक बार मधुर ढग से मुस्काये।

"अच्छा तो आप चलिए," कहकर उन्हे विदा करने के बाद उन्हे अपने मानस-चक्षुओ के सामने कुमारपुरम स्टेशन की झाकी दिखायी दी।

सुब्बराम अय्यर मन ही मन कह उठे, "वह बहुत बडी पाठशाला है।"

आराधना

मेरे मित्र ने कहा, "उस सज्जन को जरा गौर से देख ।"

"उनको देखने से मुझे क्या लाभ ?"

"अरे देख तो ले, फिर बताऊगा ।"

हम इस तरह बातचीत कर ही रहे थे कि वह सज्जन हमारे सामने से निकल गये । मै केवल उनकी पीठ को ही देख सका । लकडी के समान सूखा हुआ उनका शरीर, कमर पर बधी दो गज की धोती और कधे पर एक तौलिया, यही सब मैंने देखा ।

मैं बोला, "मैंने उन्हे देख लिया है ।"

"तुमने उनका चेहरा तो देखा नही ।"

"चलकर उन्हे देखने को कह रहा है क्या ?"

"कुछ लाल या हरा दिखायी देता तो बिना कहे-सुने उठकर चला जाता," मित्र ने व्यग्य किया ।

"अब कौनसी दुनिया पलट गयी है ?"

"वह एक विचित्र मनुष्य है ।"

"इसका तात्पर्य ?"

"और लोगो की तरह वह भी काम करते है परतु उनमे एक खास बात है । वह क्या है इसे मैं नही समझ पाया हू ।"

"वह काम क्या करते है ?"

"बढई का काम ।"

"अच्छा !"

"बढई का काम करते है, परतु बोलते नही है ।"

"क्यो, गूगे है क्या ?"

"नही, मौन रहते हैं ।"

गूगे नही है किंतु मौन रहते है यह सुनकर मैं चकित रह गया । बोलने की इच्छा से जब गूगे लोग ही नाना प्रकार की ध्वनिया उत्पन्न करते है, हाथ की उगलियो के सहारे बातचीत करते है तब बोल सकनेवाले एक व्यक्ति का चुप रहना क्या आश्चर्यजनक नही है । ऐसे काम मे लगे हुए एक व्यक्ति के मौन

रहने की बात पर कहा विश्वास किया जा सकता है जो कि बोलकर ही अपनी जीविका कमा सकता है ?

"यह ठीक है कि वह बोलते नही है, परतु क्या वह मजदूरी लेते है अथवा वह भी नही लेते ?"

"मजदूरी ले लेते है।"

"तुम उनको जानते हो ?"

"मैने उन्हे कई बार देखा है। उनसे थोडा परिचय भी है।"

"वह तो बोलते ही नही है ?"

"हा बोलते नही परतु इशारे से बहुत-सी बाते करते है। सकेत से न बता सकने पर लिखकर बताते है। वह पहले किसी रईस के घर मे ६० रुपये महीने पर मोटर ड्राइवर थे। मोटर मे खाली बैठे हुए ये पट्टिनत्तार,[1] तायुमानवर[2] और अठारह सिद्धो[3] की रचनाए पढते रहते थे। एक दिन ये अपने मालिक के साथ मोटर मे जा रहे थे। सहसा सामने की गली मे से आती हुई एक मोटर इनकी मोटर से जोर से टकरा गयी। इससे मालिक को बडी भयकर चोट लगी। ये स्वय बेहोश हो गाडी से बाहर आ गिरे। इन्हे भी अस्पताल ले जाया गया। अस्पताल मे मालिक की मृत्यु हो गयी। जब डाक्टरो ने इनकी परीक्षा की उस समय इनके शरीर के अदर या बाहर कोई घाव या किसी और प्रकार की चोट नही दिखायी दी परतु इनकी आखे बद थी। दस दिन तक ये अस्पताल मे बेहोश पडे रहे। ग्यारहवे दिन सुबह जब डाक्टर प्रतिदिन की तरह और रोगियो के पास से होते हुए इनके पास आये तो इनकी मूर्च्छा दूर हो गयी और ये उठ बैठे। डाक्टर ने जब इनसे हालत पूछी तो यह बोले, 'अमृत का कलश भर चुका है।" डाक्टर इनकी बात बिलकुल भी नही समझ पाये। उन्होने और कई बाते पूछी। "इतने दिन यमराज से लड रहा था। वह लडाई आज ही समाप्त हुई है। छ अगुल की दूरी से आनेवाली सास दायी नाक के द्वार से आ रही है।' यह कहकर इन्होने डाक्टर से पूछा, "क्या एक ही समय मे नाक के दोनो छेदो से सास आ सकती है ?' डाक्टर ने कोई उत्तर नही

[1] तमिल के एक शिवभक्त कवि।

[2] तमिल के सत कवि।

[3] तमिल प्रात मे उत्पन्न अठारह सिद्ध कवि जिन्होने रहस्यवादी रचनाए की थी।

आराधना

मेरे मित्र ने कहा, "उस सज्जन को जरा गौर से देख ।"

"उनको देखने से मुझे क्या लाभ ?"

"अरे देख तो ले, फिर बताऊगा ।"

हम इस तरह बातचीत कर ही रहे थे कि वह सज्जन हमारे सामने से निकल गये । मैं केवल उनकी पीठ को ही देख सका । लकडी के समान सूखा हुआ उनका शरीर, कमर पर बधी दो गज की धोती और कधे पर एक तौलिया, यही सब मैंने देखा ।

मैं बोला, "मैंने उन्हे देख लिया है ।"

"तुमने उनका चेहरा तो देखा नही ।"

"चलकर उन्हे देखने को कह रहा है क्या ?"

"कुछ लाल या हरा दिखायी देता तो बिना कहे-सुने उठकर चला जाता," मित्र ने व्यग्य किया ।

"अब कौनसी दुनिया पलट गयी है ?"

"वह एक विचित्र मनुष्य है ।"

"इसका तात्पर्य ?"

"और लोगो की तरह वह भी काम करते है परतु उनमे एक खास बात है । वह क्या है इसे मैं नही समझ पाया हू ।"

"वह काम क्या करते है ?"

"बढई का काम ।"

"अच्छा ।"

"बढई का काम करते है, परतु बोलते नही है ।"

"क्यो, गूगे है क्या ?"

"नही, मौन रहते हैं ।"

गूगे नही है किंतु मौन रहते है यह सुनकर मैं चकित रह गया । बोलने की इच्छा से जब गूगे लोग ही नाना प्रकार की ध्वनिया उत्पन्न करते है, हाथ की उगलियो के सहारे बातचीत करते हैं तब बोल सकनेवाले एक व्यक्ति का चुप रहना क्या आश्चर्यजनक नही है । ऐसे काम मे लगे हुए एक व्यक्ति के मौन

रहने की बात पर कहा विश्वास किया जा सकता है जो कि बोलकर ही अपनी जीविका कमा सकता है ?

"यह ठीक है कि वह बोलते नही है, परतु क्या वह मजदूरी लेते है अथवा वह भी नही लेते ?"

"मजदूरी ले लेते है।"

"तुम उनको जानते हो ?"

"मैने उन्हे कई बार देखा है। उनमे थोडा परिचय भी है।"

"वह तो बोलते ही नही है ?"

"हा बोलते नही परतु इशारे से बहुत-सी बाते करते हैं। सकेत से न बता सकने पर लिखकर बताते है। वह पहले किसी रईस के घर मे ६० रुपये महीने पर मोटर ड्राइवर थे। मोटर मे खाली बैठे हुए ये पट्टिनत्तार,[1] तायुमानवर[2] और अठारह सिद्धो[3] की रचनाए पढते रहते थे। एक दिन ये अपने मालिक के साथ मोटर मे जा रहे थे। सहसा सामने की गली मे से आती हुई एक मोटर इनकी मोटर मे जोर से टकरा गयी। इससे मालिक को बडी भयकर चोट लगी। ये स्वय बेहोश हो गाडी से बाहर आ गिरे। इन्हे भी अस्पताल ले जाया गया। अस्पताल मे मालिक की मृत्यु हो गयी। जब डाक्टरो ने इनकी परीक्षा की उस समय इनके शरीर के अदर या बाहर कोई घाव या किसी और प्रकार की चोट नही दिखायी दी परतु इनकी आखें बद थी। दस दिन तक ये अस्पताल मे बेहोश पडे रहे। ग्यारहवें दिन सुबह जब डाक्टर प्रतिदिन की तरह और रोगियो के पास से होते हुए इनके पास आये तो इनकी मूर्च्छा दूर हो गयी और ये उठ बैठे। डाक्टर ने जब इनसे हालत पूछी तो यह बोले, "अमृत का कलश भर चुका है।" डाक्टर इनकी बात बिल्कुल भी नही समझ पाये। उन्होने और कई बातें पूछी। "इतने दिन यमराज से लड रहा था। वह लडाई आज ही समाप्त हुई है। छ अगुल की दूरी से आनेवाली सास दायी नाक के द्वार से आ रही है।" यह कहकर इन्होने डाक्टर से पूछा, "क्या एक ही समय मे नाक के दोनो छेदो से सास आ सकती है ?" डाक्टर ने कोई उत्तर नही

[1] तमिल के एक शिवभक्त कवि।

[2] तमिल के सत कवि।

[3] तमिल प्रात मे उत्पन्न अठारह सिद्ध कवि जिन्होने रहस्यवादी रचनाए की थी।

दिया। डाक्टर ने इन्हे इनके घर भेज दिया।"

"घर आकर इनकी दशा पहले के समान नही रही। पत्नी और दो लडको के होते हुए भी ये किसी से कुछ भी नही बोलते थे। हर काम के लिए इशारा करने लगे। एक बार इनकी पत्नी ने समझा कि ये पागल हो गये हैं। यद्यपि ये बोलते नही है और इनका ध्यान सदा किसी मे लगा रहता है, परतु ये पागलो की-सी हरकते नही करते। ठीक तरह खाना खाते है, बच्चो के साथ खेलते है, पत्नी को देखकर हसते भी है। उनकी हसी पहले जैसी नही है परतु वह पागलो की हसी जैसी भी नही है। एक सप्ताह तक घर मे चुपचाप रहने के बाद आठवें या नवें दिन बडे बाजार जाकर बढई के सभी औजार खरीद लाये। ग्यारहवे दिन से ये बढई का काम करने लगे। ग्यारहवे दिन काम पर जाकर तीन रुपये कमाकर लौटे।" यह कहकर मेरे मित्र ने बात समाप्त की। मेरे मन मे यह बात आयी कि मुझे चलकर उन्हे देख लेना चाहिए था।

"किसी और दिन उन्हे ध्यान से देख लेना," कहकर मेरा मित्र अपने किसी काम से चल दिया।

तभी से मेरे मन मे यह इच्छा जागी कि उन्हे अच्छी तरह से देख लेना चाहिए।

कुछ दिनो के बाद एक दिन वह बढई के सभी औजार लिए हुए सडक से होकर निकल रहे थे। उस समय मैंने उन्हे गौर से देखा। उन्होने कानो मे एक अगरबत्ती खोस रखी थी। छाती पर चदन का लेप था। और दिनो की तरह कमर पर दो गज की धोती थी। कधे पर एक तौलिया था। मैंने उनके चेहरे को ध्यान से देखा। उसमे मुझे आतरिक तन्मयता के अतिरिक्त और कोई विशेष बात नही दिखायी दी। जब उन्होने अपनी आखें ऊपर की तो उन्होने मुझे देखा और मैंने भी उन्हे देखा।

इसके बाद मैंने उन्हे गली मे अनेको बार देखा। धीरे-धीरे हमारा यह मौखिक परिचय बढा। वह अब मुझे देखकर बिना मुस्कराये आगे नही बढते थे।

एक दिन वह मेरे घर के पास के एक घर मे काम करने के लिए आये। उस घर के मालिक ने मेरे पास आकर इनकी बहुत प्रशसा की।

उन्होने कहा, "ये बडे विचित्र आदमी है। बडे न्यायपूर्वक इन्होने मजदूरी ठहरा ली। लकडी की पेटी इतनी सुदर बनायी है कि उसमे कोई कमी नही

वतायी जा सकती । इनका मौन रहना ही इनकी एक विचित्रता नही है । काम आरभ करने से पहले ये कान मे खोसी हुई अगरवत्ती को जला लेते हे । थोडी-थोडी देर वाद लवी-लवी सास लेते ह । मन लगाकर काम करते हे । दोपहर को भोजन के समय आधा सेर मिर्च लेकर खाते है कभी-कभी इशारे से गर्म पानी माग कर पीते है । सदा पूर्णरूप से अपने मे ही लीन रहते है । इसी से यह काम करते समय उन वृक्ष के समान दीख पडते है, जिसकी टहनिया तो आधी मे हिलती है परन्तु जिसका तना निश्चल खडा रहता हे । यह वडे विचित्र मनुष्य है !" उन के विषय मे मेरा आश्चर्य वढा । उनसे सवधित विचार अधिक स्पष्ट हुए । मेरी समझ मे न आया कि वह वढई है या ज्ञानी ? अथवा दोनो ही है ।

एक दिन मैंने उन्हे बुलाकर वताया कि घर मे लकडी का कुछ काम है । मेरे मन मे सदेह था कि वह कम मजदूरी मागेगे । मैंने मन ही मन जितनी मजदूरी देने का निश्चय किया था उतनी ही मजदूरी उन्होने मागी । यह देख मैं दग रह गया । उन्होने उचित मजदूरी मागी थी । उनका ज्ञान ऐसा था कि उन्होने मेरे मन की वात को भी जान लिया था ।

दो दिन उन्होने मेरे घर पर काम किया । मेरे मित्र ने जो कुछ कहा था उसका एक शब्द भी गलत नही था । दूसरे दिन काम समाप्त कर लेने पर मैंने उन्हे मजदूरी के साथ दो रुपये और दिये ।

उन्होने रुपयो को हाथ मे लेकर गिना । ठहरायी हुई मजदूरी के अतिरिक्त जो रुपये थे उन्हे मेरे हाथ पर रख दिया । इसके वाद इशारे से कागज और पेसिल मागी । कागज पेसिल देने पर उन्होने उस पर लिखा, "यह व्यक्ति इनाम लेनेवालो मे नही है ।" इससे मेरे मन मे उनके प्रति एक प्रकार की भक्ति भावना उत्पन्न हो गयी । यह धन के लिए काम करते है, परतु धन लेने से इकार कर देते हैं । उनके सयम ने मुझे चकित कर दिया । सहसा मेरे मन मे उनके घर जाकर उनसे मिलने की तीव्र इच्छा जाग्रत हुई । जव मैंने उनसे कहा, "मैं आपके साथ घर चलता हू" तो उन्होने हसते हुए उत्तर दिया, "अच्छा ।"

मैं उनके साथ ही चल दिया । रास्ते मे उन्होने किसी से भी वातचीत नही की । वह सीधे ही एक छोटे से वाजार की एक फूलो की दुकान के सामने जा खडे हुए । दुकानदार ने उन्हे दो आने के फूल वाधकर दे दिये । मैंने जो पैसे दिये थे उन्ही मे से फूलो के लिए पैसे देकर वह वहा से चल पडे और चदन की

दुकान पर जाकर खडे हो गये। आठ आने का सुगंधित चदन और एक पैकट अगरबत्ती लेकर वह वहा से चल पडे। फूलवाले और चदन बेचनेवाले के व्यवहार को देख मैं जान गया कि यह सब उनकी प्रतिदिन की आदत थी।

वहा से हम सीधे उनके घर गये। उनका छोटा-सा घर साज-सज्जा से रहित एक तोते के पिंजडे के समान था। घर पहुचते ही उन्होंने फूलो को अपनी पत्नी के हाथ पर रख दिया। इसके बदले में उनकी पत्नी ने उन्हे एक चमेली का फूल दिया। इसे देख मैं द्रवीभूत हो उठा। मुझे लगा कि मैं अपनी बुद्धि की पहुच से परे एक लोक मे पहुच गया हू। आराधना का तात्पर्य

इसके बाद उन्होंने आगन मे जाकर हाथ-पैर धोये और अगरबत्ती, चदन, बाकी बचे हुए पैसे सभी कुछ पत्नी को दे दिये। उन वस्तुओ को लेते समय मैंने उनकी पत्नी के मुख को देखा। उनके चेहरे पर नर-नारी के सबध से भिन्न, मित्रता की भावना दिखायी दी।

इसके बाद वह बरामदे मे आ गये। मेरे लिए एक आसन बिछाकर वह स्वय भी एक आसन बिछाकर बैठ गये। उनकी पत्नी हम दोनो के लिए गिलासो मे लस्सी ले आयी।

"आपके कितने बच्चे है ?" मैंने पूछा। उन्होंने दो उगलिया दिखायी। "वे दिखायी नहीं दे रहे।" मेरे इतना कहते ही जुडवा जैसे दो लडके घर के भीतर आये। उन्होंने कानो मे कोई जगली फूल खोस रखे थे। मुझसे पूर्व परिचय न होने पर भी वे लडके मुझे नमस्ते करके चले गये। इसे देख मैं आश्चर्यचकित रह गया।

इसके बाद हम इशारो से और स्लेट और खडिया की सहायता से अनेक विषयो पर चर्चा करते रहे। मैं नही कह सकता कि मैंने उनकी सभी बातो को समझ लिया था या नहीं परन्तु मुझे उनका लोक एक 'नया लोक' लगा। उन्होंने लिखकर मुझे बताया, "इसमे कुछ भी नया नही है, फूल नये है, वृक्ष पुराना ही है।"

मैं उनकी बातो को ठीक तरह से नही समझ पाया था लेकिन न जाने क्यो मेरा मन तृप्त हो गया।

घर लौटने से पहले मैंने उनसे एक बात कही। उनके उत्तर ने मुझे चकित कर दिया।

"कल मेरे एक मित्र के घर मे कुछ काम है। आप आयेंगे ?" मैंने पूछा।

उन्होने लिखकर बताया, "यह आदमी तीन दिन तक कही नही जायेगा।"

"क्यो ?" मैंने पूछा।

लिखकर बताया, "तीन पहर के लिए आवश्यक सोना हाथ मे है।" इसके बाद मैं कुछ न बोल सका। "नमस्ते" कहकर मैंने उनसे विदा ली।

वर्षा से बचते बचते

मद्रास प्रात की जन्म पत्री मे विज्ञापन का योग सभवत: सबसे अधिक था। उसे जरा सिर दर्द, बुखार या जुकाम हो जाये तो यह समाचार तुरत ही उडकर सभी के पास पहुच जाता है। परतु यह सत्य है कि गलियो को, झोपडियो को, सडको को इतना अधिक महत्व नही मिला है। कभी-कभी उन्हे भी विज्ञापन प्राप्ति का योग प्राप्त हो जाता है। यदि झोपडिया धू-धू करके जल उठे अथवा झोपडियो मे रहनेवाले चोरी-चोरी वार्निश पीकर बेहोश हो जायें, तो समाचारपत्रवाले उसके प्रचार के लिए अनेक पक्तिया लिख डालते है।

वर्षा न होने के कारण वहा पानी की तगी है। इसे देश भर के लोग जानते है। नलो मे पानी सूख गया है। दूधवाले दूध में मिलाने के लिए पानी न मिलने के कारण बहुत कष्ट मे है, आदि समाचारो के द्वारा समाचार-पत्रो ने अपनी सवेदना प्रकट की। नगर के नेतागण जिन्हे पानी की तगी से होनेवाले कष्टो का तनिक भी अनुभव नही था, समाचारपत्रो के माध्यम से ही नगर मे पानी की तगी के विषय मे जान सके।

कब तक इस तगी का राग अलापा जा सकता था? सहसा समाचार-पत्रो को नवीन समाचार देने के लिए ही मानो मद्रास मे जोर की वर्षा होने लगी।

सभवतः आकाश लज्जा का अनुभव कर रहा था—हवा, वर्षा, बादलो की गर्जन और बिजली सभी को एक साथ देख पत्रकारो की प्रसन्नता की कोई सीमा न रही। शाम के समाचारपत्रो और अगले दिन के समाचार-पत्रो के पृष्ठ के पृष्ठ वर्षा सबधी समाचारो से भीगे हुए दीख पड़े।

वर्षा सबधी इस आनददायक समाचार के सूखने से पहले ही नगर के नेतागणो के जोरदार पत्र समाचारपत्रो के कार्यालयो मे पहुच गये। कुछ ने लिखा कि उनके घर मे बिजली चली गयी है, कुछ ने लिखा कि उनके घर का टेलीफोन खराब हो गया तथा कुछ ने बडे गुस्से से यह लिखा कि सडके इतनी खराब हो गयी है कि उन पर उनकी कारें तेजी से नही दौड पाती है। वह भाग्यशाली लोग है। उनके शरीर पर तो वर्षा की एक बूद भी नही

पडती ।

दूसरे दिन रात को आकाश शात था परतु तीसरे दिन दोपहर के वाद फिर वादल घिर आये । निरतर वरसता हुआ आकाश ओंधी रखी हुई विशालाकार कडाही के रूप मे दिखायी दे रहा था । उसे आग मे फेककर तोडने के लिये ही मानो विजलिया आकुल थी । आकाश मे निरतर नगाडे वजने की-सी ध्वनि आ रही थी ।

रात के आठ वज चुके थे । उन कुछएक सडको को छोडकर जहा विजली खराव हो गयी थी, वाकी स्थानो पर वर्षा के जल के साथ प्रकाश का प्रवाह भी दिखायी दे रहा था । वर्षा का जल जहा वह सकता था वहा वह गया । जहा नही वह सकता था वहा विना वुलाये आये हुए अतिथि के समान घरो मे घुसने की चेष्टा करने लगा ।

विना वुलाये आये हुए और कई अतिथि वर्षा से वचने के लिये सडको मे इधर-उधर घूम रहे थे । वे खुले आकाश के नीचे निवास करनेवाले लोग थे । वे सडको के किनारे मदिर मे जाकर भगवान से प्रार्थना करके लौटे थे कि वर्षा कभी भी न हो । सडक के किनारे खडे पेडो के नीचे, वद दुकानो के आगे, छायादार वस अड्डो पर, वागो के सीमेट के वने हुए वेचो पर, निर्जन फुटपाथो पर, दीवारो पर से उतरे हुए चलचित्रो के विज्ञापन सवधी पोस्टरो को विछा कर सोने की आदत इन नर-नारायणो को है ।

केवल पुराने विचारोवाले लोग ही अपने घरो के अगले भाग में वरामदे वनवाया करते थे । नागरिक सभ्यता का तात्पर्य है कि वहा प्रत्येक घर के चारो ओर ऐसी ऊची दीवार हो जैसी दुर्ग के चारो ओर खडी की जाती थी । कहा जाता है कि इस प्रकार ऊची दीवार युक्त दुर्ग वनाना गृह निर्माण सवधी नियमो के अतर्गत आता था । चाहे वर्षा हो, चाहे वादल गरजे, कोई भी पडोस के घर की छाया मे आधे क्षण के लिए भी नही ठहर सकता था । जहा वडे-वडे कपाउड थे वहा वडे-वडे कुत्ते थे अथवा गुरखा लाग खडे रहते थे ।

मयिलापुर की ओर आनेवाले उन पाच छः व्यक्तियो मे एक था वैल्लैस्वामी । जगह-जगह ठहर कर उसने दिन विता दिया था । प्रतिदिन वह पेड के नीचे वने हुए जिस चवूतरे पर सोता था वह वर्षा के जल मे डूवा हुआ था । रात को सोने के लिए चाहे जगह न मिले परतु वैठने के लिए कोई कोना तो अवश्य चाहिए ।

वेल्लैस्वामी की आयु लगभग पच्चीस वर्ष की थी। वह दो महीने पूर्व रामनाथपुरम जिले से जीविका की तलाश मे शहर आया था। अपने शरीर से कर सकनेवाले प्रत्येक कार्य को वह बिना आलस के करता था। वह समयानुसार कभी मडी जाकर पेडो की छाल आदि ढोता था, कभी ठेलेवाले की सहायता करता था, लकडी काटता था तो कभी यात्रियों का सामान ढोता था।

मण्णाडि से उसके मयिलापुर आने का एक कारण था। रिक्शा खीच कर मजदूरी पानेवाला करुप्पन वही कूवम नदी के किनारे स्थित झोपडियो मे से एक मे रह रहा था। एक दिन वेल्लैस्वामी करुप्पन के साथ उसकी झोपडी को गया था। वहा एक बार खाना भी खाया था। अच्छी मित्रता न होने पर भी उसके पास जाने पर वह मना नही करेगा! वेल्लैस्वामी के लिए परदे से ढका हुआ बरामदा पर्याप्त था।

नगर की बस मे आने के लिए तीस पैसे खर्च करने पडते। जेब मे कुल पिचानवे पैसे थे। बाकी दिनो मे बहुत परिश्रम से काम करने के बाद कुछ ही पैसे मिल पाते थे। अब वर्षा के कारण पिछले दो तीन दिनों से कुछ भी नही मिल पाया था परतु पेट दिन मे तीन बार नही, पाच छ बार भोजन मागता था। दिन मे कम से कम एक बार उसकी खोज खबर लेने पर ही तो वह अगली बार तक चुपचाप पडा रहता?

रायपेट्टा सडक से होकर वह मयिलापुर के पास पहुचा। स्थान पूछता हुआ वह पूर्व की ओर मुड गया। वह भीषण वर्षा मे चार मील से अधिक चल चुका था, अत मार्ग मे चाय की दुकान को देखते ही उसकी भूख बढ गयी। दुकान बहुत छोटी थी। वहा बैठकर चाय नही पी जा सकती थी। उसने नायर के पास जाकर दस-दस पैसेवाले तीन 'बन' खरीदे। वही खडे-खडे उन्हे खाकर उसने दो केले भी लेकर खाये। कुल मिला कर चालीस पैसे बने। उसका शरीर सर्दी से अकडा हुआ था, काप रहा था। उसको चाय पीने की इच्छा हुई। उसने दस पैसे और देकर चाय ले ली। गर्म-गर्म चाय को धीरे-धीरे घूट-घूट करके पी लिया। उसकी गर्मी का शरीर के अदर फैल जाना उसे बडा अच्छा लगा।

झोपडी की ओर जानेवाले मोड पर पहुचते ही उसका हृदय धक-सा रह गया। वहा झोपडिया अपने पूर्व रूप मे नहीं थी। लोग भी नही दिखायी

दिये। एडी के ऊपर तक खडे हुए जल और कीचडसे सने हुए रास्ते से होकर वह चल रहा था। दो तीन झोपडिया टूट-फूट कर जमीन पर पडी हुई थी। 'मैं इतनी दूर क्यो आया,' यह प्रश्न उसके दिमाग मे आया।

सडक के पकाश मे उसने करुप्पन की झोपडी को किसी तरह ढूढ लिया। वरामदे मे टगा हुआ परदा नीचे गिर पडा था। दरवाजे के छेद से कमरे मे जलती हुई लैप की वत्ती कापती हुयी दिखायी दी। कभी-कभी वह जोर से जल उठती थी और उसके प्रकाश मे झोपडी का भीतरी भाग दिखायी दे जाता था।

उसने बाहर खडे-खडे सभी वस्तुओ को ध्यान से देखा। छज्जे पर से टपकते हुए जल को नीचे जमीन पर गिरने मे वचाने के लिए जगह-जगह मिट्टी की मटकिया रखी हुई थी। वे मटकिया शायद जल के लिये काफी नही थी क्योकि घर बाढ मे पूरी तरह डूवा हुआ दिखायी दिया। उस घर के एक कोने मे दो आकृतिया एक दूसरे से चिपकी हुई बैठी थी। दोनो स्त्रिया थी एक करुप्पन की मा थी और दूसरी उसकी लडकी। वह जानता था कि करुप्पन की पत्नी मर चुकी है।

वह बाहर खडा-खडा कुछ सोचने लगा। दस पद्रह दिन पहले वह दिन के समय वहा आया था। तभी उससे वहा नही रहा गया। भैस और सुअर झोपडी के पिछली ओर वहते हुए कूवम नामक गदे नाले मे उतर कर जल मे लोट रहे थे। दुर्गंध से सास लेना मुश्किल हो रहा था। दिन के समय भी झोपडी के अदर मच्छर उड रहे थे। यह सव जानते हुए भी वर्षा से बचने के लिए और कोई अच्छी जगह न मिलने के कारण वैल्लैस्वामी वहा आया था।

उस समय करुप्पन घर मे नही था घर मे घर के आदमियो के लिये ही काफी जगह नहीं थी। नौ जगह से चूती हुइ छतवाली उस झोपडी मे रहने से तो बाहर खुले मे रहना उसे ठीक लगा। वैल्लैस्वामी ने अपने आप से पूछा, 'मैंने इस जगह पहुचने के लिए अपने पैर क्यो दुखाये और चार मील वर्षा मे चल कर आया?' उसका मन उदास हो गया और उसने वहा से लौटने की सोची।

तभी एक अपूर्व घटना घटित हुई। "दादी! दादी! वापू आया है!" कहती हुई एक लडकी ने दौड कर किवाड खोला। दरवाजे पर खडे हुए आदमी के चेहरे को अच्छी तरह देखे विना ही "आ गया? तुझे रास्ता मिल

गया ?" कहते हुए कुछ आवेश और क्रोध से उसने उसका स्वागत किया।

वैल्लैस्वामी घबरा उठा, "मैं मैं !"

लडकी शण्वकम भी उसे देखकर घबरा उठी। आये हुए व्यक्ति को पहचानने के बाद उसका विस्मय कुछ कम हो गया, परतु उसके चेहरे मे झलकती हुई निराशा की भावना दूर नही हुई। उसने कहा, "मैं उन्ही को ढूढते हुए यहा आया था," और उसने पूछा, "क्यो वह अब तक घर नही लौटे।"

उसने कठोर शब्दो मे उत्तर दिया, "उसे घर की आवश्यकता कहा है ? दो दिन से उसने यहा झाक कर भी नही देखा। वह जानता है कि दादी मा बीमार है। वह चोरी-चोरी शराब पी कर कही लुढक रहा होगा।"

वैल्लैस्वामी को इन बातो पर विश्वास करना कठिन लगा। वह अब तक 'शराब का आदी' नगरवासी नही बना था। 'इस भयकर वर्षा मे कोई व्यक्ति अपनी मा और अपनी बेटी को भूल सकता है ? छि वह मनुष्य है क्या ?'

उसने तुरत लौटने की सोची थी पर नही लौटा, ठिठक कर वही खडा रहा। उस दशा मे उन्हे तडपता हुआ छोड कर स्वय अपनी रक्षा के लिए कही भाग जाना उसे अच्छा नही लगा। अब वह क्या करे ? यह भी उसकी समझ मे नही आया। वह स्वय बचने के लिए एक छायादार जगह ढूढता हुआ वहा आया था।

शण्वकम ने उसे अदर बुलाया। वह अदर गया। जहा-जहा पाव पड़े सभी जगह जल ही जल दिखायी पडा। उसने बुढिया के पास पडे हुए लकडी के पटरे पर, जिस पर पहले वह स्वय बैठी हुई थी, उसे बैठने को कहा। वह नहीं बैठा। टपकती हुई छत से पानी उसके सिर पर गिर रहा था। इस बीच लडकी ने अपनी दादी को यह बताने की कोशिश की कि वह व्यक्ति कौन है। गरीबी के साथ आयु और बीमारी के मिल जाने के कारण उस बुढिया की आखें और कान काम नहीं कर पाते थे। उसके बैठने और देखने के ढग को देख उसे बीमार मुर्गी का ध्यान हो आया।

वैल्लैस्वामी बोला, "झोपडियो मे रहनेवाले और लोगो की तरह आप लोग भी कहीं और क्यो नहीं चले जाते ?"

"दादी मा चल नहीं सकती। इन्हे अकेले छोड कर कहीं जाने का मन नहीं करता।"

"इस तरह अदर बैठे-बैठे बारिश मे भीगने से दोनो ठिठुर-ठिठुर कर मर जाओगी।"

"और कहा जाये ?" शण्वकम ने पूछा।

"और कहा जाये ?" उसके इस प्रश्न ने चाबुक की मार के समान उसे झकझोर दिया। तमिलनाडु की राजधानी मे रहते हुए, जहा सहस्त्रो मकान, ऊची-ऊची अट्टालिकाए और भवन गर्व से सिर ऊचा किये हुए खडे है, उसने यह प्रश्न पूछा था।

उसने पूछा, "कुछ खाया-पिया कि नही ?" उसने उत्तर दिया, "हा, खा लिया।"

कमरे मे बना हुआ चूल्हा बता रहा था कि वह झूठ बोल रही है। वह भी पानी से तर था। दियासलाई की तीलिया भी पानी मे भीगी हुई थी। मटकियो को छत मे टपकते हुए जल को रोकने के लिए जगह-जगह रखा गया था।

कुछ देर सोच-विचार करने के बाद वह बोला, "आप लोग मेरे साथ चलिये। हम बारिश से बचने के लिए कही जाकर ठहर जायेगे।"

शण्वकम सोच मे पड गयी। वह तुरत वहा से चल देना चाहती थी, साथ ही उसके बुलावे को ठुकराना भी चाहती थी। दादी की हालत देखते हुए वह रात को अकेले उसके साथ रहते हुए डर रही थी और उस नवयुवक के साथ रात को बाहर जाते हुए भी डर रही थी, जिससे वह अच्छी तरह परिचित नही थी।

"क्या सोच रही है ? यहा रहने पर तुम दोनो ठिठुर कर मर जाओगी।"

वह धीरे से बोली, "दादी चल नही सकती है ..।"

"उसे मैं सभाल लूगा।"

उसने धीरे से बुढिया को उठाया। बुढिया की देह जल रही थी। यद्यपि शण्वकम उसके साथ बाहर जाते हुए डर रही थी तथापि उस समय अचानक ही उसके आ जाने से उसे विश्वास करना पडा कि स्वय भगवान ने उसे उनके पास भेजा है। उसके प्रेम और उसकी दृढता को देख उसका भय दूर होने लगा। झोपडी मे ले चलने योग्य या ताले मे बद करने योग्य कोई चीज नही थी। उसने लैंप को फूक मार कर बुझा दिया और उसे आले मे रख और

दरवाजे बद कर वह बाहर आयी।

बुढिया को अपने हाथ का सहारा देकर धीरे-धीरे चलाता हुआ वैल्लैस्वामी आगे बढा। जो पूरी तरह भीग गये थे, पूरे समय भीगते रहे थे उनका वारिश क्या विगाड सकती थी ?

चाय की दुकानवाला नायर अपनी दुकान को बद कर रहा था। उसे आवाज देकर उसने चार 'बन रोटी' बाध कर देने को कहा। उस पोटली को उसने कमर मे बधी धोती मे लपेट लिया। उसे जोश दिलाने के लिए कमीज की जेब मे पाच पैसे और पडे थे। नायर की दुकान के अदर की जगह उसके और उसके नौकर के लिए भी पर्याप्त न थी। उसने उससे पूछा कि ठहरने के लिए जगह कहा मिल सकती है ?

नायर बोला, "सायोम समुद्रीतट के एक छोर पर एक सरकारी स्कूल है। आप वहा चले जाइए। लोगो के लिए उस स्कूल को खुला रखा गया है।"

वेल्लैस्वामी वहा नया-नया आया था। उसने पूछा, "वह कहा है ?"

शण्वकम बोली, "मैं जानती हूं वह स्कूल कहा है, आइए।"

आधे मील से अधिक दूरी तय करने के बाद उन्हे पता लगा कि वहा भी जगह नही है। वहा जाकर निराश होकर लौटे हुए व्यक्तियो ने उसे बताया कि वहा जगह पाने के लिए लोगो मे हाथापाई हो रही है। इतना सुनते ही वैल्लैस्वामी को एक ओर रोना आया और दूसरी ओर गुस्सा। बुढिया चल न सकने के कारण कराहने लगी। सडक पर लगी हुई बत्तियो के प्रकाश मे उसने शण्वकम की आखो से आसू बहते देखे। आगे क्या करें यह न समझ पाने के कारण वे सडक के किनारे कुछ देर तक खडे रहे।

उस समय दस बज चुके थे। उस समय भी अनेक मोटर-गाडिया उस मार्ग से जा रही थी। कार नामक प्राणहीन यत्र के लिए भी 'शेड' नामक एक घर था जो वर्षा और धूप से उसको बचाता था। मनुष्य कही जाये, इससे क्या ?

वे उसी मार्ग से लौट चले जिधर से होकर वे आये थे। बायी ओर पटरी से लगी हुई एक लबी दीवार दीख पडी। उस दीवार के पीछे मकान नही दिखायी दिये। वैल्लैस्वामी ने झाककर देखा। उसे एक स्थान पर दीवार के भीतरी भाग मे सटे, टीन के बने दो तीन सायबान दिखायी दिये। बाकी सारी जगह वीरान पड़ी थी। उन सायबानो को देखते ही वैल्लैस्वामी को जोश आ गया। उसने फिर झाक कर देखा। एक सायबान मे कुछ लोग सो रहे थे।

दूसरे मे गाय और बकरिया खडी थी। तीसरे मे केवल एक गधा खडा था।

भगवान ने उन पर कृपा की है यह सोचकर वह प्रसन्न हुआ। उस खुले मैदान के चारो ओर खडी की गयी दीवार मे कोई दरवाजा तो अवश्य होगा। वह न जाने खुला होगा या बद। दीवार फादना ही अच्छा रहेगा। यदि कोई पहरेदार हुआ भी तो वह इस वर्षा मे, इस रात मे कहा जागता होगा। अगर वह पकड ले तो उसके पैर पडकर विनती करनी पडेगी।

उसके विचार को समझते ही शण्बकम काप उठी। तुरत उसका मुह पीला पड गया। उसने बलपूर्वक उसे रोका।

"हम नही जायेगे। मेरी बात सुनो, हम उसके अदर नही जायेगे।"

"क्यो नही जायेगे ?" वैल्लैस्वामी क्रोध से चीख पडा।

"मेरी बात मानो, हम नही जायेंगे।"

"इस समय तेरी दादी के प्राण निकल रहे हैं। अब मै भी यह सब नही सह सकता। अगर यहा नही जाना तो मुझे समुद्र का मार्ग दिखा दे। हम सब जाकर उसमे डूब जायेंगे।

शण्बकम ने उससे कुछ कहना चाहा। वह बाहर से आया था। यहा की बातें वह नही जानता। वह उसे कुछ कहकर अदर जाने से रोकने के लिए तडप रही थी परतु उसका गुस्सा देख वह घबरा गयी। वह और कुछ कहती तो वह सभवत उन्हे वही छोडकर भाग जाता। उस समय शण्बकम मे इतना धीरज नही था कि वह उसका साथ छोडने को तैयार हो जाती।

उसने बुढिया को जमीन पर लिटा कर शण्बकम को उठाकर दीवार पर बैठा दिया। उसके हाथ जैसे लोहे के बने हुए थे, उसकी पकड मे अपार शक्ति थी अत शण्बकम का भय कुछ कम हुआ। इसके बाद उसने बुढिया को दीवार पर बैठाकर उससे पकडने को कहा। अत मे वह दीवार पर चढकर दूसरी ओर कूद पडा और उसने उन दोनो को भी नीचे उतारा।

उस गधेवाले सायवान के पास पहुचते ही गधा बाहर निकल आया और अपनी जाति के और लोगो से मिलने के लिए दूसरे सायबान की ओर चल पडा। वैल्लैस्वामी ने बुढिया को नीचे जमीन पर लिटा दिया। वहा जगह-जगह राख के ढेर दिखायी दिये। उसने झुककर चबूतरे पर पडे राख के ढेर को हटाया। इस बीच शण्बकम ने एक कोने मे जाकर अपनी फटी हुई धोती को निचोड कर उससे बालो को सुखाया। उसने अपनी दादी के बालो को

सुखाकर उसकी फटी धोती को भी जगह-जगह से निचोडा। वैल्लैस्वामी ने भी अपनी कमीज उतारकर उसी से बालो को सुखाया।

वह सायबान उस लबे-चौडे मैदान के कोने मे स्थित था। उसमे बने सीमेंट के चबूतरे का एक भाग वर्षा मे भीगा हुआ था परतु दूसरा भाग भीगने से बच गया था। वह जगह उन तीनो के लिए काफी नही थी परतु उस समय उसे वह जगह स्वर्गवत प्रतीत हुई।

वैल्लैस्वामी ने कमर मे बधी हुई सीलन युक्त 'बन रोटी' को शण्बकम की ओर बढाया। उसने बुढिया को भी एक 'बन रोटी' देकर खाने के लिये कहा। बुढिया मूर्छित-सी हो रही थी तथापि शण्बकम द्वारा रोटी का टुकडा मुह मे डाले जाने पर वह मुह चलाने लगी। बुढिया ने एक 'बन रोटी' और आधी 'बन रोटी' खायी। इससे अधिक वह न खा सकी।

"क्यो तुमने नही खाया," कहते हुए शण्बकम ने एक 'बन रोटी' वैल्लैस्वामी को दी।

"मैंने भरपेट खा लिया है। मैं और नही खा सकता हू। अनायास उसके मुख से यह बात निकली जो आधी सच थी आधी झूठ। उस समय चार क्या छ 'बन रोटिया' भी उसके पेट मे समा सकती थी।

शण्बकम को खाते देख वैल्लैस्वामी की सभी चिंताए दूर हो गयी। वह स्वय खाने तथा अपने आत्मीयो को खाते देख जो आनन्द मिलता है उसकी अनुभूति पूर्ण रूप से कर रहा था। वैल्लैस्वामी ने चकित होकर दूर खडे बिजली के लैंपो से जगमगाते नगर के विशाल भवनों को देखा और बहुत प्रसन्न हुआ।

"तुम्हे मालूम है मैंने शहर आते ही क्या सोचा ?" उसने कहा।

"क्या सोचा ?'

"मैंने यही सोचा था कि इस कुबेर नगरी मे, जहा कि मकानो की मजिलें दिन पर दिन बढती जा रही है, जहा की सडको पर कारो की कतारो की कतारें रेंगती हुई दिखायी देती हैं, जिसके बाजारो मे ऐसे सामान का ढेर लगा हुआ है जो कि सहसा हमे अपनी ओर खींचता है, क्या मुझे भरपेट भोजन और रहने के लिए एक छतदार स्थान नही मिलेगा ?"

"तुम्हे यह कुबेर नगरी दिखायी दी ! यहा आदमी एक पहर के खाने के लिए पद्रह रुपये खर्च कर देते हैं। स्त्रिया ब्लाउज के लिए पचास रुपये गज

का कपडा खरीदती है। तूने उसी कुबेर नगरी को देखा है ”

वैल्लैस्वामी बोला, “मैने पाप की नगरी को भी देख लिया है।

“तूने उसे अच्छी तरह नही देखा होगा। यदि तू हमारी झोपडियो की नगरी को देखना चाहता है तो कूवम नामक नाले के किनारे-किनारे चलता जा। वहा रोज-रोज बननेवाली नयी-नयी झोपडियो मे भी झाक कर देख।”

“मै तो ऊब गया हू। यहा आते ही मुझे इतना कष्ट सहना पडा जितना किसी कुत्ते ने भी न सहा होगा,” यह कहते-कहते उसका गला भर आया।

“अमीरो के लिए यह स्वर्ग है। हमारे-तुम्हारे जैसे लोगो के लिए यह· यह · यह यह ।”

शण्वकम ने अपनी बात को बीच मे ही रोक लिया। जो शब्द उसकी जुबान तक आ गया था उसे वह न जाने क्यो, स्पष्ट रूप से न कह सकी। उसकी इन चेष्टाओ ने वैल्लैस्वामी की जिज्ञासा को तीव्र कर दिया।

“कह दे! क्यो छिपाती है?”

“कहने लायक नही है ”

“कह दे वरना मै तुझे नही छोडूगा। मुझे गुस्सा आ जायेगा, अभी आ जायेगा, कह दे!”

जब उसे लगा कि बिना कहे वह नही मानेगा तब उसने डरते हुए कहा, “हम इस समय जहा बैठे है वह जगह·· कौनसी जगह है यही बताना चाहती हू?”

“क्यो हम किस स्थान पर बैठे है?”

दुख के अतिरेक के कारण वह उत्तर न दे सकी। परतु उसने बार-बार अपना प्रश्न दुहराया।

“अब भी समझ मे नही आया?”

“समझ मे आता तो क्यो पूछता?”

“हम श्मशान मे बैठे है ”

“क्या?”

“जहा मुर्दो को जलाया जाता है। हम उसी स्थान पर बैठे हुए है। तूने जिस राख की ढेरी को हटाया था वह चिता की राख थी।”

वैल्लैस्वामी काप उठा। अब वह समझ गया कि उसने उसे यहा आने से क्यो रोका था। परतु उसने अपने मन के भय या घबराहट को व्यक्त नही करना

चाहा । धैर्यशाली व्यक्ति के समान वह जोर से हसा और बोला, "कुबेर नगरी के लोग अत मे जहा जाकर रहते है वही हम भी आ गये है !"

उसने पूछा, "तुझे डर नही लगता ?"

"पास धन का भार हो तो राह चलते डर लगता है। मेरा यहा कौन है ? डरने के लिए मेरे पास कुछ नही है ।"

"देश मे कोई होगा .."

"पिताजी-माताजी, घर-द्वार, धन-दौलत कुछ नही है। मै अपने गाव से भाग आया हू ।"

"किसलिए भाग आये ?"

"वर्षा पर निर्भर रहने के कारण खेत मे कुछ नही उपजा, करने के लिए और कोई काम भी नही था । लोगो को धोखा देकर जीना मुझे नही आता । शहर के सुखो की कल्पना कर किसी तरह यहा आ गया, परतु यहा भी मैं जी न सका ।"

वैल्लैस्वामी का स्वर उसके स्वर से भी अधिक दीन हो गया। एक क्षण पूर्व उसने कहा था कि उसे किसी का भी डर नही है परतु इस समय अपने जीवन को देखकर ही वह भयभीत होकर काप रहा था । वह अपने आसुओ को न रोक सका। उसने पूछा, "अब कौनसा मुह लेकर मैं अपने गाव जाऊ ? वहा जाकर मैं क्या करूगा ?"

"घबरा मत ! तुझ जैसे नवयुवक को ऐसे नही घबराना चाहिए । मन को चचल मत होने दे," कहकर उसको ढाढस बधाती हुई शण्मुकम उसके बहुत निकट आ गयी । आकाश मे चमकती हुई बिजली के प्रकाश मे वैल्लैस्वामी ने उसके गोल चेहरे को और एकटक अपनी ओर देखनेवाली उसकी आखो को देखा । उसका रग काला था परतु चेहरा आकर्षक था ।

एक युवती कन्या का सहज ढग से उससे बातचीत करना—यह अनुभव उसके लिए नया था । गाव की लडकियो ने दूर खडे होकर इशारो से बाते करके उस पर विपत्ति ढा दी थी । किसी ने न तो मन खोलकर उससे बाते की थी और न ही उसकी बातें सुनी थी ।

शण्मुकम बोली, "हम भी तो इस शहर मे जी रहे है ? तुझे भी जीविका चलाने के लिए कोई न कोई काम मिल जायेगा ।"

वैल्लैस्वामी तनिक गुस्से मे बोला, "इस प्रकार जीना भी कोई जीना है ?

जिस पिता ने मुझे जन्म दिया है और जिस पिता ने तुझे जन्म दिया उनको गला घोटकर मार देना चाहिए। जिनके पास रुपये पैसे नहीं हैं ऐसे गरीब लोगों को चाहिए कि वह सतान को जन्म न दें। बच्चों का भरण-पोषण न कर सकने पर उन्हें जन्म देना कहा तक उचित है। अब कहा गया तेरा पिता ?"

उसके द्वारा अपने पिता की निंदा किया जाना उसे अच्छा नही लगा परतु साथ ही उसने यह भी सोचा कि उसे निंदा करने का अधिकार है। उसके हृदय मे अपने पिता के प्रति जो क्रोध था उसी को उसने अपने शब्दो के द्वारा व्यक्त कर दिया था।

शण्मकम बोली, "अच्छा अब देर हो गयी है, तुझे नीद आ रही हो तो सो जा। आधी रात के समय इस जगह बैठे हुए यदि तू इस प्रकार निराश होकर कुछ कहेगा तो मुझे रोना आ जायेगा।"

वैल्लैस्वामी बोला, "तू सो जा। बिना किसी डर के सो जा।" बुढिया उनके बीच लकडी के टुकडे के समान निश्चेष्ट हो पडी थी। उसे लगा कि उस दिन वह शातिपूर्वक नही सो सकेगा। उसका शरीर थककर चकनाचूर हो रहा था परतु हृदय मे एक मधुर मोहक भाव की हलचल विद्यमान थी। एक अनजान लडकी उसके लिए रोयेगी यह सोचकर वह मन ही मन हसा।

शण्मकम के लेट जाने के कुछ देर बाद कुछ हटकर वैल्लैस्वामी ने भी अपने पैर फैला लिये। वहा अधिक हटकर लेटने के लिए जगह काफी न थी। वह एक मनुष्य को लिटाकर जलाने योग्य छोटा-सा सायबान था। वर्षा की बूदे भी उसे अधिक हटकर नही लेटने देती थी।

दादी को कसकर पकडे हुए शण्मकम को सोते देखकर उसने अपनी आखें मूद ली।

वर्षा थोडी देर के लिए रुक जाती थी और फिर जोर से होने लगती थी। सायबान की छत टीन की थी। अत उस पर गिरती हुई वर्षा की बूदे भयकर शोर कर रही थी। सायोम समुद्रीतट भी पास ही था। बादलो की गर्जन के साथ स्वर मिलाता हुआ समुद्र भी गरज रहा था। उस स्थान मे चलती हुई सीलनयुक्त पवन मे अब मृत व्यक्ति के शरीर की गध भी मिल गयी थी।

वैल्लैस्वामी को नीद नही आयी। उसके मन मे रह-रहकर यह विचार उठ रहा था कि वह सहसा इस विचित्र ससार के एक विचित्र भवर मे फस गया

है। उसके संरक्षण मे दो स्त्रिया बिना भय के सो रही है, यह देख उसका पौरुष जाग उठा। उस समय उसने अपने आपको अत्यत दरिद्र, जीविकाहीन कुली या नीच नही, बल्कि एक जवान पुरुष सिंह समझा। वह अपने शरीर से परिश्रम कर अपनी और अपनी शरण मे आये हुए व्यक्तियो की रक्षा कर सकता है।

अपने मे आत्मविश्वास की भावना को जगानेवाली शण्मुकम को उसने कुछ देर तक ध्यान से देखा। उसे स्वस्थ शरीर, आकर्षक चेहरे और प्रेम भरे हृदय से युक्त वह कन्या लकडी के ढेरो से बनी चिता पर नही अपितु रेशमी गद्दे पर सोती हुई-सी दिखायी दी। उसके मुख पर मुस्कान की रेखा दौड गयी। धीरे-धीरे वह निद्रा देवी की शरण मे जाकर अपने आपको भूल गया।

रात का तीसरा या चौथा पहर था।

सहसा जोर की आवाज हुई। ऐसा लगा कि उस टीन की छत पर पत्थरो की वर्षा हो रही है। 'क्या ओले पड रहे है?' आखो को चुधियानेवाला तीखा प्रकाश दीख पडा। ऐसा लगा कि वह वीरान स्थान ही जल उठा है। उसके साथ ही चराचर जगत को कपानेवाली भयकर गर्जना सुनायी दी। शण्मुकम ने झट से उठकर अपनी दादी को झकझोरा। दादी का शरीर ठडा होकर काठ के समान हो गया। वह जोर से चीखती हुई वैल्लैस्वामी के पास आयी और उसने उसके हाथ को कसकर पकड लिया। उसकी पकड बहुत मजबूत थी। उसका शरीर भय के कारण काप रहा था वैल्लैस्वामी भी जाग गया।

उसने उसके मुख को ध्यान से देखा। ससार का भय एकत्र होकर उसकी आखो मे समा गया था।

"डर लग रहा है। मुझे डर लग रहा है।" कहकर वह सिसकने लगी। हम यहा से चले जाते है यहा नही रहेगे, नही रहेगे।" वह गिडगिडायी।

वैल्लैस्वामी ने उसे धीरे से पकड कर अपनी गोद मे लिटा लिया। उसने उसे ऐसा करने से नही रोका। ठड और भय से उसे बचाने के लिए उसने उसे अपनी चौडी छाती से चिपटा लिया।

"मत डर! मैं तेरे पास हू, मत डर!" उसने बडे प्रेम से उसके कान मे बारबार यह शब्द कहे। उसका भय धीरे-धीरे कम होने लगा। इस प्रकार वह श्मशान भूमि मे, मृत्यु देवता की लीला भूमि मे, शव के जल जाने के बाद बची राख की ढेरी पर आलिंगनबद्ध होकर तथा आत्म सज्ञाहीन होकर कुछ देर

तक पड़े रहे ।

वर्षा हो रही थी बादल गरज रहे थे, बिजली चमक रही थी, हवा चल रही थी, समुद्र गरज रहा था परन्तु शण्वकम का भय जैसे रूई के समान उड़ गया ।

उसने मुह फेर कर उसे देखा और हस पड़ी । उस घने अंधकार मे भी उन चार आखो को नवीन प्रकाश मिल गया । शण्वकम ने धीरे से उसके गले पर अपनी बाहो को डाल दिया । उसके हाथो की गरमाई से उसकी ठड भी दूर भाग गयी ।

"इस स्थान पर इसी तरह हम दोनो मिलकर मर जाये तो कितना अच्छा हो ?" तुतलाते हुए उसने कहा ।

उसने अपने अधरो से उसके कोमल अधरो को ढक कर उसे आगे नही बोलने दिया । इसके बाद वे इस लोक मे नही रहे। वे अपने आपको भूल कर बिजली, गर्जन, वर्षा, ठडी हवा, शमशान, मृत्यु, भूख, निर्दयता, लोभ, नीचता आदि से रहित एक अद्भुत लोक मे सचरण करने लगे । प्रेम भरे उस आनदलोक मे एक प्राणी दूसरे प्राणी के लिए प्राण देने मे भी नही झिझकता था ।

कुबेरपतियो और करोडपतियो को क्षण भर मे राख की ढेरी बनाकर उडानेवाले, ताडव नर्तन करनेवाले शिव ने अपने विनाश कार्य के विरुद्ध विद्रोह करने मे तन्मयता से लगे हुए इन दो अनाथो को अवश्य देखा होगा । किसी समय कामदही कहे जानेवाले शिव को आज वहा कामदेव को पुनर्जीवन देने का काम करना पडा ।

विनाश के उस गर्भगृह मे, विनाश को दूर करनेवाले प्राणी समूह की प्राणशक्ति की एक बूद सीपी मे गिरकर मोती बन गयी थी । इस समय इसे न वह जानती थी और न वह जानता था । उन्होने अपने को जन्म देनेवाले माता-पिता की निंदा की थी परतु उस प्रभातवेला मे स्वय वे भी माता-पिता बन गये है इस विचित्र बात को वे नही जान पाये ।

वर्षा होती रही, बिजली चमकती रही, बादल गरजते रहे, समुद्र की लहरे पैदा होकर, आगे बढकर, तट से टकराकर मिटती रही । वे बार-बार पैदा होकर, आगे बढकर मिटती रही । दादी वहा मिटी हुई लहर के समान पड़ी थी । उसकी पोती नयी लहरो को ढो रही थी। बिजली के उस प्रकाश मे टीन का बना वह सायबान साक्षी बना खडा था ।

है। उसके सरक्षण मे दो स्त्रिया बिना भय के सो रही है, यह देख उसका पौरुष जाग उठा। उस समय उसने अपने आपको अत्यंत दरिद्र, जीविकाहीन कुली या नीच नही, बल्कि एक जवान पुरुष सिंह समझा। वह अपने शरीर मे परिश्रम कर अपनी और अपनी शरण मे आये हुए व्यक्तियो की रक्षा कर सकता है।

अपने मे आत्मविश्वास की भावना को जगानेवाली शण्बकम को उसने कुछ देर तक ध्यान से देखा। उसे स्वस्थ शरीर, आकर्षक चेहरे और प्रेम भरे हृदय से युक्त वह कन्या लकडी के ढेरो से बनी चिता पर नही अपितु रेशमी गद्दे पर सोती हुई-सी दिखायी दी। उसके मुख पर मुस्कान की रेखा दौड गयी। धीरे-धीरे वह निद्रा देवी की शरण मे जाकर अपने आपको भूल गया।

रात का तीसरा या चौथा पहर था।

सहसा जोर की आवाज हुई। ऐसा लगा कि उस टीन की छत पर पत्थरो की वर्षा हो रही है। 'क्या ओले पड रहे है?' आखो को चुधियानेवाला तीखा प्रकाश दीख पडा। ऐसा लगा कि वह वीरान स्थान ही जल उठा है। उसके साथ ही चराचर जगत को कपानेवाली भयकर गर्जना सुनायी दी। शण्बकम ने झट से उठकर अपनी दादी को झकझोरा। दादी का शरीर ठडा होकर काठ के समान हो गया। वह जोर से चीखती हुई वेल्लैस्वामी के पास आयी और उसने उसके हाथ को कसकर पकड लिया। उसकी पकड बहुत मजबूत थी। उसका शरीर भय के कारण काप रहा था वेल्लैस्वामी भी जाग गया।

उसने उसके मुख को ध्यान से देखा। ससार का भय एकत्र होकर उसकी आखो मे समा गया था।

"डर लग रहा है। मुझे डर लग रहा है!" कहकर वह सिसकने लगी। हम यहा से चले जाते है यहा नही रहेगे, नही रहेगे!" वह गिडगिडायी।

वेल्लैस्वामी ने उसे धीरे से पकड कर अपनी गोद मे लिटा लिया। उसने उसे ऐसा करने से नही रोका। ठठ और भय से उसे बचाने से लिए उसने उसे अपनी चौडी छाती से चिपटा लिया।

"मत डर! मै तेरे पास हू, मत डर!" उसने बडे प्रेम से उसके कान मे बारबार यह शब्द कहे। उसका भय धीरे-धीरे कम होने लगा। इस प्रकार वह शमशान भूमि मे, मृत्यु देवता की लीला भूमि मे, शव के जल जाने के बाद बची राख की ढेरी पर आलिगनबद्ध होकर तथा आत्म सज्ञाहीन होकर कुछ देर

तक पडे रहे ।

वर्षा हो रही थी, बादल गरज रहे थे, बिजली चमक रही थी, हवा चल रही थी, समुद्र गरज रहा था परतु शण्बकम का भय जैसे रूई के समान उड गया ।

उसने मुह फेर कर उसे देखा और हस पडी । उस घने अधकार मे भी उन चार आखो को नवीन प्रकाश मिल गया । शण्बकम ने धीरे से उसके गले पर अपनी बाहो को डाल दिया । उसके हाथो की गरमाई से उसकी ठड भी दूर भाग गयी ।

"इस स्थान पर इसी तरह हम दोनो मिलकर मर जाये तो कितना अच्छा हो ?" तुतलाते हुए उसने कहा ।

उसने अपने अधरो से उसके कोमल अधरो को ढक कर उसे आगे नही बोलने दिया । इसके बाद वे इस लोक मे नही रहे । वे अपने आपको भूल कर बिजली, गर्जन, वर्षा, ठडी हवा, शमशान, मृत्यु, भूख, निर्दयता, लोभ, नीचता आदि से रहित एक अद्भुत लोक मे सचरण करने लगे । प्रेम भरे उस आनदलोक मे एक प्राणी दूसरे प्राणी के लिए प्राण देने मे भी नही झिझकता था ।

कुबेरपतियो और करोडपतियो को क्षण भर मे राख की ढेरी बनाकर उडानेवाले, ताडव नर्तन करनेवाले शिव ने अपने विनाश कार्य के विरुद्ध विद्रोह करने मे तन्मयता से लगे हुए इन दो अनाथो को अवश्य देखा होगा । किसी समय कामदही कहे जानेवाले शिव को आज वहा कामदेव को पुनर्जीवन देने का काम करना पडा ।

विनाश के उस गर्भगृह मे, विनाश को दूर करनेवाले प्राणी समूह की प्राणशक्ति की एक बूद सीपी मे गिरकर मोती बन गयी थी । इस समय इसे न वह जानती थी और न वह जानता था । उन्होने अपने को जन्म देनेवाले माता-पिता की निंदा की थी परतु उस प्रभातवेला मे स्वय वे भी माता-पिता बन गये है इस विचित्र बात को वे नही जान पाये ।

वर्षा होती रही, बिजली चमकती रही, बादल गरजते रहे, समुद्र की लहरे पैदा होकर, आगे बढकर, तट से टकराकर मिटती रही । वे बार-बार पैदा होकर, आगे बढकर मिटती रही । दादी वहा मिटी हुई लहर के समान पड़ी थी । उसकी पोती नयी लहरो को ढो रही थी । बिजली के उस प्रकाश मे टीन का बना वह सायबान साक्षी बना खडा था ।

धनकोटि की इच्छा

"निकल गया ! हे ईश्वर केस हाथ से निकल गया !"

ये शब्द शिवशकरन पिल्लै के कानो मे शूल की तरह आकर चुभे। हाय रे ! क्या यही अतिम निर्णय है !

उस समय शिवशकरन पिल्लै हाईकोर्ट मे अपने पुराने वकील विनायक शास्त्री के कमरे मे बैठे हुए थे। वह उनके 'अपील-केस' के निर्णय का दिन था। कोर्ट मे जाकर अपने केस सबधी निर्णय को स्वय सुनने की हिम्मत उनमे न थी। अत॰ वह वकील के कमरे मे ही बैठे रहे। उन्होने वकील के क्लर्क किट्टू अय्यर से प्रार्थना की थी कि वह केस समाप्त होते ही उन्हे सूचित कर दे। दोपहर के साढे तीन बजे किट्टू अय्यर ने एक केस सबधी कागज के पुलिदे को वहा लाकर रखा और दूसरे केस सबधी कागज के पुलिदे को लेकर भाग गये। उस एक ही क्षण मे वह उक्त मागलिक शब्दो को कहकर चले गये थे।

इन शब्दो के कानो मे पडते ही शिवशकरन पिल्लै को लगा कि वह कमरा, वहा पर पडी हुई कुर्सिया, मेज तथा हाईकोर्ट का वह भवन सभी कुछ बडी तेजी से घूम रहे है। उन्होने अपने दोनो हाथो से माथे को कसकर पकड लिया। उन्हे लगा कि कोई गर्म लाल सलाखो से उनके माथे पर, "निकल गया ! हे ईश्वर ! केस हाथ से निकल गया !" इन शब्दो को लिख रहा है।

शिवशकरन पिल्लै लडखडाते हुए उठ खडे हुए। उसी तरह लडखडाते हुए चलकर वह हाईकोर्ट की सीढियो से नीचे उतर गये। फिर वह समुद्रतट की ओर चल पडे। समुद्र के किनारे वह उस रेल के टीले के पास जाकर बैठ गये जहा वह प्राय. जाकर बैठा करते थे।

अब क्या किया जाये ? उन्होने कमर मे बधे हुए पैसो को हाथ मे लेकर देखा। सुबह जेब मे चार आने थे। मयिलापूर से हाईकोर्ट तक का बस का किराया और सुघनी की पुडिया के पैसे देने के बाद अब कुल डेढ आने बाकी थे। लौटकर गाव जाने के लिए उनके पास रेल के किराये के पैसे नही थे। उनका कुछ सामान होटल मे पडा था। उसे लेने के लिए यदि वह होटल जाते तो होटल के मालिक को दो दिन के खाने के पैसे देने पडते।

हा ! यदि वह केस जीत जाते तो क्या ही अच्छा होता। कौन जानता था कि जो विजयश्री उनके निकट तक आ गयी थी वह उनके हाथ न लग सकेगी ! छि ! यह कैसी सरकार है, किस तरह का कोर्ट है। यहा कैसा न्याय होता है।

दो साल पहले शिवशकरन पिल्लै इस प्रकार के निर्णय को सुनने के लिए तैयार थे उन्होने अपनी चालीस वेली' जमीन के नाम पर लगभग एक लाख रुपया कर्ज लिया था। लगभग तीस वेली जमीन को कर्जदारो के नाम लिखकर उन्होने अपने कर्ज का बहुत बडा भाग चुका दिया। अब उनके पास कुल मिला कर दस वेली जमीन शेष थी जिस पर उन्होने अट्ठावन हजार रुपया कर्ज लिया हुआ था। ऋणदाता ने बार-बार उनसे कहा, "मैं दो वेली जमीन छोड दूगा, बाकी जमीन मेरे नाम लिख दीजिये।" शिवशकरन पिल्लै भी इसके लिए प्राय तैयार हो गये थे। उसी समय जनता द्वारा व्यवसायियो को कर्ज से मुक्त करने का एक प्रस्ताव पेश किया गया। 'शुक्र भगवान का कि मै बच गया' यह सोच-सोच कर वह खुश हुए। इस प्रस्ताव के अनुसार उन्हे ऋणदाता को केवल १६०० रुपये ही देने पडते। शिवशकरन पिल्लै ने अनेक वर्ष पूर्व दस हजार रुपये कर्ज लिए थे। जिस पर वह अब तक १८,४०० रुपये ब्याज के रूप मे दे चुके थे।

ऋण-मुक्ति सबधी वह प्रस्ताव पास हो गया और वह एक नियम बन गया। पिल्लै १६०० रुपयो मे १६०० रुपया और मिलाकर ३२०० रुपये देने के लिए तैयार थे। परतु कर्ज देनेवाले व्यक्ति ने उनकी बात नही मानी। उसने कोर्ट मे केस चला दिया। उसको कोर्ट मे केस चलाते देख लोगो ने उसे पागल समझा और उसकी हसी उडायी। जब जिलाधीश ने निर्णय दिया तो लोग जान गये कि उन्होने उस व्यक्ति की हसी उडाकर भारी मूर्खता की थी।

आई० सी० एस० की परीक्षा पास करनेवाले लोगो मे जो कुछ मूर्ख दिखाई देते है उन्हे न्याय विभाग का कार्य सौंप देने की एक परपरा है न ? उस समय इसी प्रकार एक आई० सी० एस० पास व्यक्ति जिलाधीश के पद पर नियुक्त थे सामान्य जनता जो कुछ कहती थी उसका विरोध करना ही उन्हे प्रिय था। अत उन्होने यह निर्णय दिया कि व्यवसायियो की ऋण-मुक्ति का यह नियम लागू नही किया जा सकता। मद्रास का न्यायालय या भारत का सर्वोच्च

'जमीन का एक नाप (पौने सात एकड)

न्यायालय भी इस प्रकार का नियम बनाने की योग्यता नहीं रखते। इस मामले मे गवर्नर या वाइसराय के हस्ताक्षर का भी कोई मूल्य नही। स्वय महाराजा यदि इस नियम को स्वीकार कर हस्ताक्षर कर दे तभी इस नियम को लागू किया जा सकता है। अत प्रतिवादी को चाहिए कि वह वादी को पूरी धनराशि अर्थात १८००० रुपये और कोर्ट खर्च के रुपये दे दे। शिवशकरन पिल्लै पर मानो बिजली गिर पडी। लोगो ने उनसे कहा कि यह निर्णय जिला न्यायाधीश द्वारा मूर्खतावश दिया गया है। इस निर्णय के विरुद्ध हाईकोर्ट मे अपील करने पर उनके न्यायपूर्ण पक्ष की अवश्य विजय होगी। लोगो की बातो को सुनकर शिवशकरन पिल्लै ने अपने बच्चो के गले आदि के आभूषणो को बेच कर कुछ रुपये एकत्र किये और जिला न्यायाधीश के निर्णय के विरुद्ध हाईकोर्ट मे अपील की। कौन जानता था कि हाईकोर्ट का निर्णय भी इनके लिए घातक सिद्ध होगा ?

७

समुद्रतट के पास मे होकर जाती हुई सडक पर बत्तियो के जलने तक शिवशकरन पिल्लै समुद्रतट पर ही बैठे रहे। रह-रह कर उनके मन मे यही विचार पैदा हो रहा था कि वह समुद्र मे गिरकर अपने प्राण त्याग दे। उन्होने बचपन मे पढा था कि 'बे-समय' मर जानेवाले व्यक्तियो की आत्मा ससार मे ही घूमती रहती है। उसे कभी शाति नही मिलती। इसी समय वही बात उन्हे स्मरण हो आयी। 'हे ईश्वर! मेरी मौत क्यो नही आ जाती। ससार मे कितने ही छोटी-छोटी आयुवाले लडके मर जाते है। मैं पचपन साल का हो चुका हू। मौत मेरे पास क्यो नही आ जाती!'

अतिम बार शिवशकरन पिल्लै ने अपने मन को दृढ किया। उन्होने सोच लिया कि अब इस ससार मे जीना बिल्कुल व्यर्थ है। कभी न कभी तो मरना ही है। यह सोचकर वह समुद्र की ओर चल पडे। वह पुकार उठे, "हे समुद्र-राज! इस ससार मे दीन-दुखियो का आश्रयदाता तू ही है।"

सहसा शिवशकरन पिल्लै को अपने बच्चो की याद हो आयी। वह सोचने लगे, 'क्या मैं अतिम बार उनसे बिना मिले प्राण त्याग दू? अरे कल रात को दीपावली है। बच्चे मेरी प्रतीक्षा कर रहे होगे कि पिताजी नयी धोती, लहगा,

पटाखे आदि लेकर आयेंगे। दीपावली के दिन मेरे स्थान पर मेरी मृत्यु का समाचार उनके पास पहुचे तो ? हाय ! बच्चे कैसे तडप उठेंगे ? यह ठीक है कि इस समय मेरे हाथ मे फूटी कौडी भी नही, परतु फिर भी मुझे दीपावली से पहले, चाहे खाली हाथ ही क्यो न लौट जाना पडे, गाव लौट जाना चाहिए। बच्चो से एक बार मिलने के बाद ही इस ससार मे प्राण त्यागने के अनेक उपाय है न ?'

शिवशकरन पिल्लै एलुबूर स्टेशन की ओर चल पडे। स्टेशन पहुचते ही उन्होने धोती मे बधे डेढ आने मे से एक आना निकाल कर प्लेटफार्म टिकट खरीदा। जिस समय वह स्टेशन के भीतर गये उस समय वहा एक रेलगाडी चलने के लिए तैयार खडी थी। वह उस पर चढ गये। रेल चल पडी। 'छुक-छुक' करती हुई गाडी चल रही थी। उस समय वह बार-बार उस गीत की कडी को गुनगुना रहे थे जिसे उन्होने बचपन मे कभी पढा था। 'ऊबड-खाबड मार्ग के समान पैसा बढता घटता है।' वह सोचने लगे कि मेरी पहले की स्थिति और अब की स्थिति मे कितना अतर है ! किसी समय चालीस वेली जमीन पर मेरा एकाधिकार था और आज होटल मे खाना खाकर पैसे न दे सकने के कारण मैं भाग आया हू। किसी समय मैं मजे से दूसरी श्रेणी के डिब्बे मे बैठकर सफर किया करता था और इस समय बिना टिकट के तीसरी श्रेणी के डिब्बे मे बैठा हुआ हू। इस डर से कि कही टिकट चैकर न आ जाये, मेरा हृदय प्रतिपल जोर-जोर से धडक रहा है।

वह एक्सप्रेस गाडी थी अत. छोटे स्टेशनो पर रुके बिना आगे बढती जा रही थी। यात्रियो मे कुछ सो रहे थे और कुछ बैठे हुए झूम रहे थे परंतु शिवशकरन पिल्लै को नीद नही आयी। वह आखे फाडे बैठे हुए थे।

रात के लगभग दो बजे थे। पासके डिब्बे मे बैठा हुआ एक टिकट चैकर उस डिब्बे से कूदकर इस डिब्बे मे चढ आया। उसने सोते हुए व्यक्तियो को बारी-बारी से जगाकर उनके टिकटो की जाच की इसके बाद वह शिवशकरन पिल्लै के पास पहुचा। क्षण भर के लिए वह चुप रहे इसके बाद रोते-गिडगिडाते हुए बोले, "मेरे पैसे और टिकट पेटी मे बद थे। जब मैं सो रहा था तो कोई आदमी मेरी पेटी लेकर भाग गया।"

टिकट चैकर ने दो तीन बार उन्हे सिर से पाव तक देखा। वह अनुमान न लगा सका कि उनकी बात सच है या झूठ। गाडी के स्टेशन पर पहुचते ही उसने

उन्हे गाडी मे उतर जाने को कहा । इसके बाद वह उन्हे स्टेशन मास्टर के पास ले गया और उनसे बोला, "इनके पास टिकट नही है । टिकट मागने पर इन्होने कोई कहानी गढ ली । अब आप ही इनकी जाच पडताल कीजिये ।" और फिर वहा से चला गया । स्टेशन मास्टर अच्छी नीद मे थे । वह बोले, "यहा से भाग जाइये, यहा खडे होकर मेरी जान न खाइये ।" शिवशकरन पिल्लै स्टेशन से बाहर आ गये । उन्होने मुडकर यह भी न देखा कि वह कौन सा स्टेशन है और सीधे ही पास के गाव की ओर चल पडे । सहसा उन्हे याद आया कि उन्होने उस गाव को कभी देखा है । परतु उन्हे उस गाव का नाम याद नही आया ।

उन्होने पहले दिन सुबह दस बजे खाना खाया था । इस समय भूख और निद्रा के अभाव के कारण उनका शरीर शिथिल हो रहा था । चलते समय उनके पैर लडखडाने लगे । इस समय वह एक सडक पर से होकर जा रहे थे उस सडक पर लोगो की हलचल नही थी । एकाएक उनका सिर चकराने लगा, आखो के आगे अधेरा छा गया । वह जान गये कि वह किसी अनजान गाव की सडक के बीचोबीच बेहोश होकर गिर जायेंगे । झटपट उन्होने दो-चार कदम बढाये और किनारे के एक मकान के द्वार पर जा बैठे । अगले ही क्षण वह चेतना शून्य हो गये ।

३

जब शिवशकरन पिल्लै ने आखें खोली उस समय उन्हे ऐसा विचित्र दृश्य दिखायी दिया जिसे देख वह फिर से बेहोश हो जाते । उन्होने मोतिया के फूलो की और अगरबत्ती की सुगध का अनुभव किया । उन्होने चारो ओर दृष्टि दौडायी वह एक छोटा-सा कमरा था । उसमे एक सुदर पलग पडा हुआ था । पलग पर नरम गद्दा बिछा हुआ था जिस पर वह लेटे हुए थे । दीवार पर एक आला दिखायी दिया जिस पर मोतिया के पुष्पो की माला से अलकृत एक छोटी-सी तस्वीर थी । उसके सामने एक बडा-सा दीप जल रहा था । दीपक के प्रकाश मे उन्होने उस तस्वीर को देखा । एकाएक वह घबरा गये और पलग पर उठ बैठे । उन्होने उस तस्वीर को पुन देखा । इसमे तनिक भी सदेह नही, वह उन्ही की तस्वीर थी । वह तस्वीर पैंतीस साल पहले ली गयी थी अत. कुछ धुधली हो गयी थी । उन्हे उस तस्वीर मे अपना रूप बडा विचित्र लगा ।

कानो पर लटकती जुल्फे, चोटी, उस पर टोपी, कानो मे हीरे की लौग, माथे पर विभूति का टीका और उस पर एक काली बिंदी। कमीज, कोट आदि पहने हुए उनके उस युवा रूप मे और इस समय के वृद्धावस्था के रूप मे कितना अतर था। इस समय वह इस बात पर विश्वास नही कर पाये कि किसी समय उनका रूप उस प्रकार का था।

शिवशकरन पिल्लै को एक-एक करके पिछली घटनाए याद हो आयी। उन्होने मानस चक्षुओ से उन घटनाओ का साक्षात्कार किया। उन्हे लगा कि वह सभी घटनाए हाल ही मे घटित हुई है।

उन दिनो शिवशकरन तिरुच्चिनाप्पल्ली के 'सेंट जोसफ कालेज' मे पढता था। उस साल उसे एम० ए० की परीक्षा देनी थी। उसने पढने के लिए एक कमरा ले रखा था। नौकर खाना बनाकर खिला जाया करता था। वह एक अमीर जमीदार का पुत्र था। उसे खर्च की चिंता कहा थी।

उस साल श्रावण के महीने मे उसका विवाह तय किया गया। वधू भी बडे घर की बेटी थी। शिवशकरन के पिता ने बडी धूमधाम से विवाह की तैयारिया की। उन्होने शिवशकरन को पत्र लिखा कि वह विवाह के एक सप्ताह पूर्व ही गाव आ जाये। उनके कहे अनुसार शिवशकरन विवाह के काफी दिन पहले ही गाव चला गया।

उसका गाव रेलवे स्टेशन से छ मील की दूरी पर था। मार्ग मे चौथे मील पर एक छोटी-सी नदी को पार करना पडता था। उन दिनो नदी पर कोई पुल नही था। बाढ के दिनो मे नाव की सहायता से नदी पार करनी पडती थी। शिवशकरन गाडी पर चढकर स्टेशन से नदी किनारे आ पहुचा। नदी मे ऊची-ऊची लहरे उठ रही थी। दूसरे किनारे पर उसे घर ले जाने के लिए उसकी अपनी गाडी तैयार खडी थी। उस समय नाव विपरीत दिशा मे आधी दूर जा चुकी थी। उसके लौट कर आने मे पद्रह मिनट अवश्य लगते, अतः शिवशकरन नदी किनारे के पीपल के पेड के नीचे बैठ गया।

किसी के खिलखिलाकर हसने की मधुर ध्वनि सुनकर उसने मुडकर देखा। पीपल के पेड के दूसरी ओर एक लडकी और उसकी मा बैठी हुई भात खा रही थी। वह लडकी खाना खाते हुए बीच-बीच मे नदी किनारे बैठे हुए कौवो को भी भात खिला रही थी। वह भात के गोले ऊपर आकाश मे उछालती थी और पाच छ कौवे उन्हे पकडने के लिए उडने लगते। अत मे वह कौर किसी

एक कौवे के मुह लग जाता था। तब वह लडकी खिलखिलाकर हस पडती। कभी-कभी दो कौवे मिलकर भात के गोले को पकड लिया करते थे। उस वक्त दोनो चोचो का आपस मे टकराना उसे अत्यत आनद देता था।

शिवशकरन इन सभी बातो को ध्यान मे देख रहा था। बीच-बीच मे वह हस भी पडता था। एक बार उस लडकी ने उसे हसते हुए देख लिया। उसके बाद हर बार भात के गोले को उछालते समय चोरी-चोरी उसकी ओर ताकती। शिवशकरन उसकी तरह-तरह की चेष्टाओ को मग्न हो देखने लगा।

नदी किनारे के कौवो मे अधिक हिम्मत होती है। अब उनकी वह हिम्मत बढती जा रही थी। अत मे एक कौवे ने आकर लडकी के हाथ से कौर छीन लिया। "हाय रे !" लडकी चीख पडी। वह खेल-खेल मे चीखी थी अथवा वास्तव मे पीडा के कारण, कुछ पता नही, परतु शिवशकरन दौड कर उन कौवो के पास जा पहुचा और उसने उन्हे भगा दिया।

लडकी की मा से कहा, "इस व्यक्ति ने काकासुर से मेरी रक्षा की है।"

लडकी के उन शब्दो को सुनकर शिवशकरन को अपार आश्चर्य और आनद हुआ। 'काकासुर ? वह कौन है ? लगता है कि यह लडकी बहुत पढी-लिखी है। न जाने क्या वह उससे बातचीत न कर सका।' इतने मे नाव लौट आयी। शिवशकरन को मिलाकर तीन यात्री थे। तीनो नाव पर बैठ गये।

नाव नदी की धारा को चीरती हुई आगे बढ रही थी। लडकी बडे कौतूहल के साथ उसे देख रही थी। जूडे मे गुथे फूलो को वह एक-एक करके नाव के आगे फेंकती जा रही थी। जल मे बहते हुए उस फूल को देखने के लिए वह नाव के दूसरी ओर दौड पडती थी। एक बार दौडते समय उसका पैर फिसल गया, बडे कौतूहल के साथ उसकी क्रियाओ को देखते हुए, शिवशकरन ने उसे पकड कर गिरने से बचा लिया। उसकी मा बोली, "अरी धनकोटि ! शैतानी क्यो कर रही है ? अभी तू नदी मे गिर जाती न ?"

धनकोटि खिलखिलाकर हस पडी। उसने शिवशकरन से पूछा, "आपको तैरना आता है ?" उसके 'हा' कहते ही वह बोली, "तो आपने मुझे क्यो पकड लिया ? नदी मे गिरने के बाद मुझे क्यो नही बचाया" और फिर हस पडी।

शिवशकरन का सिर चकराने लगा। अपनी जिंदगी मे इस प्रकार का अनुभव उसे कभी न हुआ था।

नाव दूसरे किनारे जा लगी। शिवशकरन पहले से ही तैयार खडी अपनी

गाड़ी मे जा बैठा। नदी के इस पार लडकी के तीन-चार रिश्तेदार खडे थे। उन लोगो ने वहा से जल्दी चल पडने की कोशिश नही की। शिवशकरन की गाडी तेजी से चलने लगी। उसे भ्रम हुआ कि धनकोटि उसकी गाडी पर दृष्टि गडाए हुए खडी है।

'वह कौन है ? वह कहा से आ रही है ? कहा जा रही है ? क्या मैं उससे फिर मिल सकूगा ? आहा ! वह कितनी सुदर है !' आदि विचार उसके मन मे उठे। आगे वह सोचने लगा 'उसके मुख पर कितनी शोभा थी, कितनी चचलता थी ? उसकी आखे कितनी लुभावनी थी। जब-जब वह तिरछी नजरो से मुझे देखती थी तब •हाय ! इससे थोडे दिन पहले मिल लेता तो फिर यह विवाह छि छि मेरे मन मे इस तरह के गदे विचार क्यो उठ रहे है ?' इस प्रकार सोचते हुए शिवशकरन ने गहरी सास ली।

उसका विवाह धूमधाम से हुआ। विवाह की हलचल मे शिवशकरन नदी तट की उस घटना को भूल गया। वह अपनी वधू को देखकर प्रसन्न हुआ। अगले दिन एक नृत्य का आयोजन किया गया था। शिवशकरन को नृत्य से बहुत चिढ थी। नृत्य की बात सुन वह जलभुन गया और बोला, "यह कौनसी पुरानी रीति है ? सब लोगो के द्वारा समझाये-बुझाये जाने पर वह नृत्य देखने सभा मे जा बैठा। लोगो के सम्मुख निस्सकोच नृत्य करनेवाली उस कन्या को देखने के लिए उसने आखे ऊपर की तो हैरान होकर उसे एकटक देखता ही रह गया। वह तो वही लडकी थी जिससे वह नदीतट पर मिला था।

शिवशकरन थोडी देर के बाद सचेत हुआ। उसने सोचा, 'यदि मैं उस लडकी को इस प्रकार एकटक देखता रहूगा तो लोग क्या समझेंगे ?' और उसने अपना मुह दूसरी ओर फेर लिया। उसने पास मे बैठे अपने मित्र से पूछा, "यह नृत्य करनेवाली कौन से गाव की है ?" इस पर मित्र बोला, "तुम यह भी नही जानते ? तुम तो इतने दिनो से तिरुच्चिनाप्पल्ली मे रह रहे हो। यह मलैक्कोटै की प्रसिद्ध नर्तकी धनकोटि है।"

धनकोटि ने पहले कुछ देर तक नृत्य किया, फिर कुछ पदो को गाते हुए अभिनय करने लगी। उसके अभिनय मे शिवशकरन का मन न लगा। उसका मन न जाने कहा-कहा भटक रहा था। बीच-बीच मे वह क्षण भर के लिए धनकोटि को देख लेता और फिर मुह फेर लेता था। अत मे वह एक सस्कृत श्लोक गाते हुए अभिनय करने लगी। शिवशकरन तन्मय होकर उसके अभिनय

को देखने लगा। वह श्लोक रामायण का था जिसमे कागासुर की कथा कही गयी थी। राम सीताजी की गोद मे सिर रखकर लेटे हुए थे। उसी समय कागासुर सीताजी को तग करने लगा। बार-बार भगाये जाने पर भी वह वहा से नही हिला। जागने पर राम ने उस पर कुश का अस्त्र बनाकर फेंका। कुशास्त्र ने असुर का पीछा करना शुरू किया। कागासुर तीनो लोक घूमकर अत मे राम की शरण मे आया। घनकोटि ने इस श्लोक को गाकर उस पर अभिनय किया। उसने अपनी उगलियो को मोडकर कौवे के आकार को स्पष्ट किया। जब उसने कौवे की तरह अपनी आखो को घुमाया तो सभा मे बैठे हुए लोग हस पडे। सभा मे बैठा हुआ एक काना उठ कर चला गया। इसके बाद नर्तकी ने सीता का कौवे को भगाना, उसका बार-बार सीता को तग करना, अत मे उसका राम की शरण मे जाना, राम का उसको क्षमा कर देना आदि प्रसगो का अभिनय करके शिवशकरन की ओर देखा। उसके देखने का ढग अति विचित्र था। इतने वर्षो बाद भी वह उसे नही भुला पाया था।

४

विवाह के बाद शिवशकरन पढने के लिए पुन तिरुच्चिनाप्पल्ली गया। जब पढने मे उसका मन न लगा। वह हमेशा घनकोटि की याद मे खोया रहने लगा। तिरुच्चिनाप्पल्ली मे जहा कही भी उसका नृत्य होता था शिवशकरन वहा अवश्य ही पहुच जाया करता था। एक दिन नृत्य देखकर घर लौटते समय वह घनकोटि की मा से मिला। उसने हिम्मत करके पूछा, "आपका घर कहा है ?" उसने अपने घर की गली का नाम बताकर कहा, "आप एक दिन हमारे घर आइये।"

इसके बाद शिवशकरन ने घनकोटि के घर जाना शुरू कर दिया। उसके घर जाना आरभ करने के बाद उसके मन मे एक चिता सवार हो गयी। वह नही जान सका कि घनकोटि को उसका अपने घर आना पसद है या नहीं। नदी किनारे बैठे हुए उसने घनकोटि मे जो चचलता देखी थी वह अब उसे नहीं दीख पडी। उसके मुख पर प्रसन्नता के स्थान पर दुख की छाया ही दीखती। घनकोटि आखो ही आखो मे उसके प्रति अपने अपार प्रेम को व्यक्त करती थी, परतु वह उससे दो शब्द से अधिक नही बोलती थी। उसमे आये हुए इन विचित्र

परिवर्तनो के विषय मे सोच-सोचकर वह अत्यत दुखी होता था ।

एक दिन धनकोटि ने शिवशकरन से पूछा, "आपने कभी फोटो खिचवायी है ?"

शिवशकरन ने झूठ-मूठ कह दिया, "हा खिचवायी है ।" तव वह बोली, "ऐसी बात है तो मुझे एक फोटो दे दीजिए, जल्दी दे दीजिए ।"

दीवाली को अभी चार दिन बाकी थे। विवाह के बाद उसकी पहली दीपावली थी ! गाव से शिवशकरन के पास बुलावा आया था । परतु उसने गाव न जाने का निर्णय कर लिया था । अपने न जाने की सूचना पहले ही दे देने पर गाव से कोई न कोई आकर लिवा ले जायेगा । यह सोचकर शिवशकरन ने काफी देर से एक पत्र लिखा जो दीपावली से एक दिन पूर्व ही गाव पहुच सकता था । उसने पत्र मे लिखा था, 'मुझे वहुत पढाई करनी है अत मैं दीपावली पर गाव नही आ सकता ।'

उसके निश्चय का असली कारण यह था कि अपनी फोटो खिचवाकर दीपावली के दिन उसे स्वय अपने हाथो से धनकोटि को देना चाहता था । तदनुसार दीपावली के दिन उसने सुवह उठ कर स्नान किया और नयी धोती पहन कर धनकोटि के घर गया । धनकोटि उसे देखते ही चकित होकर बोली, "अरे यह क्या ! आप दीपावली के लिए गाव नही गये ?"

वह बोला, "नही । इस दीपावली के दिन मैं तुझे एक पुरस्कार देना चाहता था ।" धनकोटि ने फोटो लेकर कहा, "मुझको बहुत खुशी है ।" परतु उसके चेहरे से या उसकी वाणी से उसकी खुशी व्यक्त नही हुई ।

उसके इस व्यवहार से शिवशकरन हतोत्साहित होकर घर से बाहर आ गया । वह चेतना-शून्य-सा होकर सडक पर चलने लगा । कुछ दूर चलने के बाद उसने सामने से अपने पिता को आते देखा । 'हाय ! उन्होने मुझे धनकोटि के घर से निकलते हुए देख लिया होगा ।'

उसका दिल जोर-जोर से धडकने लगा । उसने पिता से पूछा, "क्यो पिताजी कैसे आये ?"

पिता ने उत्तर दिया, "तुझे लेने के लिए ही आया हू ।"

घर पहुचते ही उन्होने कमरे को खाली करने का प्रबंध किया । "क्यो पिताजी ऐसा क्यो कर रहे है," यह पूछे जाने पर वह बोले, "वस तू काफी पढ चुका है । ऐसी पढाई हमे नही चाहिए जिसके कारण तू दीपावली के अवसर पर भी गाव नही आ सका ।"

इस संसार में एक ही काम ऐसा था जिसे शिवशंकरन नहीं कर सकता था, वह था पिता की आज्ञा का उल्लंघन करना। अतः वह अपने पिता के कहे अनुसार तुरंत गांव चला गया। कुछ समय तक वह खोया-खोया-सा रहा। एक ओर धनकोटि से न मिल सकने का दुख था, दूसरी ओर यह चिंता उसे खाये जा रही थी कि पिता ने उसकी पढ़ाई को क्यों रोक दिया। अंत में उसने पिता के निर्णय का कारण खोज लिया। एक दिन वह एक लोहे के संदूक को खोलकर किसी आभूषण को ढूंढ रहा था। सहसा एक पत्र उसके हाथ लगा। पत्र पर तिरुच्चिनाप्पल्ली के डाकघर की मुहर अंकित थी। उसने पत्र को खोल कर पढ़ा। सुंदर गोल-गोल अक्षरों में पत्र में लिखा था—

'श्रीमन,

आपने अपने लड़के के विवाह के अवसर पर भरतनाट्यम का अच्छा प्रबंध किया। लगता है कि कोवलन[1]-माधवी[2] की कथा आपके लड़के पर भी ठीक बैठेगी। इसके आगे मुझे कुछ नहीं कहना है। यदि आप पुत्र की रक्षा करना चाहते हैं तो आप कोशिश कीजिए कि वह मलैक्कोट्टै की के घर में न जाने पाये।

आपका

सच्चा हितैषी।'

अब शिवशंकरन की समझ में सारी बातें आ गयीं। वह सोचने लगा इस पत्र को लिखनेवाला पापी जीव कौन है? क्या धनकोटि के घर आनेजानेवाले किसी दूसरे व्यक्ति ने यह पत्र लिखा है, अथवा मेरे कालेज के किसी मित्र ने ही लिखाई बदल कर यह पत्र लिख डाला है? वह चाहे कोई भी हो, शिवशंकरन का मन उसके प्रति अपार क्रोध से भर गया। दो एक साल बाद जब उसके मन में धनकोटि के प्रति प्रेम का भाव न रहा तो उसका वह क्रोध भी शांत हो गया। वह सोचने लगा कि पत्र लिखनेवाले ने उसे एक बहुत बड़े अपराध से मुक्त करके, उसका बहुत उपकार किया है। 'हाय! मैं कैसा नीच कर्म करने जा रहा था? मेरे उस आचरण से परिवार की कितनी निंदा होती। जिन दिनों मैं धनकोटि के घर जाता था उन दिनों धनकोटि की मां तथा अन्य लोगों

---

[1]तमिल महाकाव्य शिलप्पदिकारम का नायक।

[2]शिलप्पदिकारम की प्रति नायिका (एक नर्तकी) जिसके प्रेम में पड़कर कोवलन अपनी पत्नी को भुला बैठा था।

न अपने घर आनेवाले बडे-बडे लोगो की किस तरह निंदा की थी ? एक दिन वह लोग मेरी भी तो उसी तरह निंदा करेंगे ? पत्र मे लिखा है कोवलन-माधवी की कथा . इसमे गलती कहा है ? यह कितने आश्चर्य की बात है कि मुझे उन दिनो इन बातो का ज्ञान न था ।' कालातर मे वह इस बात को पूर्णत भूल गया

५

खाट पर लेटे हुए शिवशकरन पिल्लै को उक्त सभी घटनाए इस तरह याद आयी मानो वह कल ही घटित हुई हो । 'यह कितने आश्चर्य की बात है ? यह फोटो यहा कैसे आ गयी ? कही यह स्त्री—सफेद बालोवाली यह बुढिया धनकोटि तो नही है जिसने मुझे अपने मोहजाल मे फसा लिया था ? मेरा इस प्रकार सोचना क्या ठीक है ? यदि ऐसा ही है तो क्या ससार मे इससे अद्भुत कोई बात हो सकती है ?'

वह स्त्री कमरे के भीतर आयी । शिवशकरन पिल्लै ने दिल को कडा करके धीरे से पूछा, "यह फोटो किस लडके की है ? लगता है मैंने उसे कही देखा है ।"

"श्रीमन, वह मेरे पति है । मैं बचपन मे ही उन्हे खो बैठी ।" पिल्लै ने चौककर पूछा, "क्या तुम सच कह रही हो ?"

वह बोली, "वह बडी लबी कथा है । मैंने आज तक उसे किसी से नही कहा । न जाने क्यो मन चाह रहा है कि मैं आपको वह कथा सुना दू ।"

शिवशकरन पिल्लै ने उसकी कथा को सुनने की अपनी इच्छा व्यक्त की । पास पडे हुए झूले पर बैठकर उसने अपनी कथा कहनी आरभ की ।

"श्रीमन, शायद आप मेरी बात सुनकर मुझसे घृणा करने लगेगे । मै वेश्या कुल की हू " इन शब्दो के साथ उसने अपनी कथा आरभ की । आगे की अधिकाश बातें शिवशकरन पिल्लै पहले से ही जानते थे । वह स्त्री और कोई नही, स्वय धनकोटि थी । नदीतट की घटना से लेकर दीपावली के दिन पुरस्कार प्राप्ति तक की सभी घटनाओ का वर्णन करने के उपरात वह बोली, "इसके बाद मैं उनसे नही मिल पायी ।" इस पर पिल्लै बोले, "तू अब तक ऐसे व्यक्ति की याद क्यो कर रही है ?"

"इसमे उनका कोई दोष नही है," कहकर धनकोटि क्षणभर के लिए चितामग्न हो गयी। कुछ देर बाद वह बोली, "इसके बाद मैंने अधिक दिन तक भरतनाट्यम नही किया। सभा मे पहुचते ही मेरी आखें घूम-घूमकर उन्हे खोजती थी। उनका चेहरा न दीख पडने पर मेरा उत्साह मिट जाया करता था। कुछ साल बाद मैंने पूर्ण रूप से नृत्य करना छोड दिया। मलैक्कोट्टै मे रहने की इच्छा नही रही अतः मैं इस गाव मे आकर रहने लगी। इस समय मेरे मन मे बस एक ही इच्छा शेष है। मरने से पहले मैं एक बार उनसे मिलना चाहती हू। मुझे पूर्ण विश्वास है कि मेरी यह इच्छा अवश्य पूर्ण होगी। भगवान अवश्य मुझ पर कृपा करेंगे।" धनकोटि की कथा समाप्त हुई।

शिवशकरन पिल्लै ने दिन और रात का समय उसी घर मे बिताया। उनके मन मे विचारो का गहन सघर्ष चल रहा था। एक ओर वह सोचते, 'मुझे कह देना चाहिए कि मैं ही शिवशकरन हू। यह मेरी भक्त है। अब इसका धन मुझे मिल जायेगा। कोर्ट मे केस हार गया तो कौन सी बडी बात हो गयी?' दूसरी ओर वह सोचते, 'छि छि' यह कैसा घृणित जीवन है? इस तरह इसके धन का उत्तराधिकारी होना क्या मुझे शोभा देता है, वह जिस युवा शिवशकरन की याद मे खोई हुई है उसमे और इस बूढे शिवशकरन मे कितना अतर है। यदि मैं कह दू कि मैं ही शिवशकरन हू तो क्या उसका प्रेम चूर-चूर न हो जायेगा? नही मुझे कदापि ऐसा नही कहना चाहिए।' अत मे इस दूसरी विचारधारा ने उन पर विजय पाली।

'टन-टन-टन,' घडी मे तीन बज गये। घर के सभी लोग गहरी नीद मे थे। शिवशकरन पिल्लै धीरे से उठे और बिना किसी आहट के दरवाजा खोलकर बाहर गली मे पहुच गये। 'आहा! यह क्या! शरीर इतना हल्का क्यो है? शरीर मे थकान नाम मात्र को भी नही है। लगता है कि हवा की तरह आकाश मे सचरण कर सकता हू! हा, हा तो यह मृत्यु के बाद की स्थिति है न? मेरा स्थूल शरीर धनकोटि के घर मे पलग पर पडा हुआ है। मैं अपने सूक्ष्म शरीर सहित बाहर आ गया हू। आहा! मृत्यु क्या इतनी सुखदायक है?'

गलियो मे पटाखो के बजने की आवाज सुनायी दी। परतु उन्हे बच्चो की याद हो आयी। 'इस ससार को छोडने से पहले एक बार अवश्य उनसे

मिलना है। इस सूक्ष्म शरीर को धारण किए हुए मैं जहा चाहे जा सकता हू न ?'

अगले ही क्षण शिवशकर पिल्लै अपने घर के दरवाजे पर पहुच गये। उन्होने दरवाजा खटखटाया परतु अदर से कोई आवाज नही सुनायी दी। उन्होने बच्चो का नाम लेकर उन्हे बुलाने की चेष्टा की परतु मुह से आवाज नही निकली। हा, मर जाने मे यही तो कठिनाई है।

'शिवशकर मुदलियार। शिवशकर मुदलियार।' यह शब्द उनके कानो मे पडे। 'अरे यह क्या ? किट्टू अय्यर यहा कैसे आ गये ?'

शिवशकरन पिल्लै को मुदलियार कहनेवाले एक मात्र व्यक्ति किट्टू अय्यर ही थे। पहली बार उनसे मिलते समय किट्टू अय्यर ने उन्हे भूल से मुदलियार कह दिया था परतु उसके बाद वह जान बूझकर उन्हे मुदलियार कहने लगे।

'भूलोक मे रहते हुए वकील के इस क्लर्क ने मुझे जितना कष्ट दिया वह क्या कम था कि यह यहा भी आ पहुचा है ?'

'शिवशकर मुदलियार। शिवशकर मुदलियार।' किसी के जोर-जोर से पुकारने की आवाज सुनायी दी ।

वह कह उठे, "आप कहा है ?" सहसा उनकी आखे खुल गयी। सामने किट्टू अय्यर पलथी मारकर बैठे हुए थे।

उन्होने पूछा, "मुदलियार जी ऐसा, अन्याय करने पर क्यो तुल गये ?"

शिवशकरन पिल्लै को पूर्ण रूप से सचेत होने मे कुछ देर लगी। उन्होने देखा कि वह समुद्र किनारे पडे हुए है घना अधेरा छा गया था। उनके पास दो-तीन लोग और खडे थे। किट्टू अय्यर ने लोटे मे से काफी गिलास मे डालकर उन्हे पीने के लिए दी।

काफी पीने पर उनमे कुछ स्फूर्ति आ गयी और उन्होने पूछा, "आपने मुझे कैसे खोज लिया ?"

केस समाप्त होते ही मैं और वकील कमरे मे आये तब आप वहा नही दिखाई दिये। मैंने मजाक-मजाक मे जो बात आपसे कही थी वह वकील को भी बता दी। तुरतु वह गरज पडे, "अरे पापी ! चाडाल कही के। यह तूने क्या किया ! वह तो केस जीतने की आशा से आये होगे। तेरी बात सुनकर वह कही जाकर आत्महत्या कर लेंगे।" मैं जानता था कि आप समुद्रतट पर

ही मिलेंगे। इसी से मैं आपको खोजता हुआ यहा आ पहुचा। यहा पहुचने पर मुझे मालूम हुआ कि वकील की बात कितनी सच थी। मछियारे आपको किनारे पर लाकर न डालते तो आप दूसरे लोक पहुच जाते और इस किट्टू अय्यर पर मुसीबत आ जाती।

पिल्लै ने पूछा, "केस का हुआ ?"

"केस का क्या हुआ, आप जीत गये। जिला न्यायधीश यदि पागल हो तो हाईकोर्ट का जज भी पागल थोड़े ही होगा ?"

६

उस वर्ष शिवशकरन पिल्लै के घर मे दीपावली धूमधाम से मनायी गयी क्योकि वह केस जीत गये थे और उनकी दस वेली जमीन ऋणदाता के हाथ मे जाने से बच गयी थी।

इतने पर भी शिवशकरन पिल्लै के मन मे शाति नही थी। समुद्र मे गिरकर बेहोश हो जाने के बाद उन्हे जिन विचित्र काल्पनिक अनुभवो की प्राप्ति हुई थी उन्हे वह न भुला पाये। 'क्या धनकोटि सचमुच जीवित है ? क्या वह अब भी मुझे याद करती है ?'

एक दिन उनके पास एक पार्सल आया उसे खोलने पर उनके आश्चर्य की सीमा न रही। उसमे वह फोटो थी जो उन्होने पैंतीस वर्ष पहले तिरुच्चिना-प्पल्ली मे रहते हुए खिचवायी थी और धनकोटि को दी थी। उसके साथ एक पत्र भी था।

'मैं ससार छोडने से पहले आप से एक बार मिलना चाहती थी। मेरी वह इच्छा कल पूरी हो गयी शाम के समय मे अनजाने ही सो गयी और स्वप्न मे मुझे आप दिखायी दिये।

वैद्यो ने मुझे बता दिया है कि मैं दो-एक दिन ही जीवित रहूगी। मैंने अपनी सपत्ति दान कर दी है। आपको अपनी सपत्ति का 'ट्रस्टी' चुना है। कृपया मेरी इस प्रार्थना को स्वीकार कीजिए। अपने दीपावली पर जो पुरस्कार दिया था वह मे लौटा रही हूँ। इसे आप मेरी याद के लिए रख लीजिए।

आपकी ही'

धनकोटि

यह बताने की आवश्यकता नही कि इस पत्र को पाकर शिवशकरन पिल्लै कितने चकित हुए होगे। पत्र मे लिखे हुए विषय की अपेक्ष अधिक चकित कर देनेवाली बात थी उस पत्र की लिखावट। यह पत्र कापते हुए हाथो से लिखा गया था। तथापि आज से पैतीस वर्षपूर्व शिवशकरन पिल्लै के पिता को उनके पुत्र के आचरण के विषय मे चेताते हुए जो पत्र लिखा गया था उसकी लिखावट और इस पत्र की लिखावट मे अपूर्व साम्य था।

सत्य के लिए बस एक क्षण

'क्या समय भी सहसा पगु होकर गतिहीन हो गया है? ऐमा लग रहा है मानो चारो ओर खडे व्यक्ति और प्राणी बडी लापरवाही से, मदगति से, धीरे-धीरे असावधान से चल रहे हैं। कूलर लगे हुए इस कमरे की ठडक मे भी मेरा शरीर और मेरा मन इस प्रकार ताप मे क्यो जल रहे हैं। छि·! छि! मैंने आज तक ऐसे असहनीय सताप का अनुभव नही किया है। इन बारह वर्षों मे 'लक्ष्मी प्रोडक्शस' मे इस प्रकार का आर्थिक सकट कभी नही उत्पन्न हुआ है। झूठ बोल कर, धोखा देकर या और किसी तरह मे बडी से बडी रकम इकट्ठा कर लेने की होशियारी मुझ मे थी। परतु आज मेरी होशियारी नाकामयाब रही।'

मन मे तिल भर शाति नही है, वह बीती बातो को लेकर पछता रहा है। 'अभी कुछ ही देर मे टेलीफोन पर और सामने आकर लोग मुझे झाडेंगे। कौन-कौनसी झूठी बातें बनाकर उनसे बचू। कौन-कौनसे बहाने बनाकर उन्हे लौटाऊ?' आदि बातें सोचते हुए 'लक्ष्मी प्रोडक्शस' के अधिपति पोन्नुरगम इधर उधर घूम रहे थे। उनके माथे पर चिता की रेखाए खिची हुई थी। निद्रा और शाति के अभाव मे आखें कुम्हला गयी थी और उनसे आकुलता व्यक्त हो रही थी। चेहरे मे मानो चेतना ही नही थी।

इन बारह वर्षों मे न उनके पास पर्याप्त धन हुआ और न ही फिल्म व्यवसाय मे सफलता पा सके। जैसा कि लोग उनके विषय मे कहते थे, वह अवसरवादी थे। उनकी समयोचित बुद्धि और अवसर देखकर काम करने की क्षमता ने ही उन्हे बडा बना दिया था। अपने निजी धन का आधार उनके पास कभी भी, किसी समय भी, नही रहा। दूसरो की शक्ति ही उनका एक मात्र आधार थी। इसी से सभवत उनके नाम के साथ बहुत बडे सिनेमा डायरेक्टर, प्रबल चलचित्र अधिपति आदि शब्द जुड गये थे। वह मानो उनके दूसरो के बल पर निर्भर रहने की घोषणा करते थे। तमिल प्रबल शब्द के सभी रूप उन पर ठीक बैठते थे। जैसे 'पिरर' यानी दूसरो का, बलम अर्थात बल, पिररबलम—दूसरो की शक्ति।

किसी तरह इधर उधर से पैसे इकट्ठे करके चलचित्र तैयार कर लेने पर

वह पैसे कमाकर पिछले कर्ज को चुकाते जाते थे। परतु साथ ही नया कर्ज भी चढ जाता था। वडे लोग कह गये है 'मेरा कर्त्तव्य, कर्म करते रहना है।' सर्वश्री पोन्नुरगम ने इस उक्ति को 'मेरा कर्त्तव्य कर्म, कर्ज लेते रहना है' इस प्रकार वदल कर दृढता से अपना लिया था। यदि स्पष्ट रूप से कहा जाये तो कहा जा सकता है कि इन बारह वर्षों मे सिनेमा निर्माण के कार्यों को सफलतापूर्वक करने का श्रेय उनको नही उनकी झूठ बोलने की सामर्थ्य को है। जव तक उन पर लक्ष्मी देवी की कृपा थी, उनके सत्कर्म उनके सहायक थे। तव तक लोगो ने उनकी झूठी, छलभरी बातो को सच माना जिनसे वह इतनी बडी सफलता प्राप्त कर सके। लक्ष्मी की कृपा दृष्टि के हट जाने पर तथा सत्कर्मों का साथ छूट जाने पर लोगो ने उनकी सच वातो को भी झूठ मान लिया और उनका साथ छोड दिया। भाग्य सभवत. इसी को कहते है।

घूम-घूमकर थक जाने के वाद पोन्नुरगम कुर्सी पर वैठ जाते है। दोनो हाथ अनायास ही गालो से जा लगते है। दीर्घ निश्वास लेने लगते है। सामने दीवार पर, कमल पर खडी हुई लक्ष्मी का एक वडा चित्र टगा हुआ था। वह 'लक्ष्मी प्रोडक्शस' का चिह्न था। सहसा उन्हे भ्रम होता है कि चित्र मे खडी लक्ष्मी हस-हसकर उनका उपहास कर रही है। पुष्प को पैरो से कुचलती हुई वह देवी क्या उनके मन को भी कुचल रही है? क्या? विधिवत पूजा करके आरभ किये गये तीन चलचित्र अधूरी अवस्था मे पडे हुए है। उनकी रीलें डिव्बो मे वद पडी है। जिन डिस्ट्रीव्यूटर्स ने अग्रिम धन दिया था वह उन्हे खदेड रहे है। अभिनेताओ की ओर से कोई उत्तर नही मिला। कर्ज देने के लिए कोई पूजीपति भी नही मिला। चलचित्र के लिए जिन प्रचारक कार्यालयो ने विज्ञापन दिये थे, उन्होने विल भेजे है। वाहर किही से कुछ कहना लज्जा की वात थी। उन्होने अपनी कार सर्विसिग के लिए भेजी थी परतु विल चुकाकर उसे वापस लाने के लिए उनके पास पैसे नही है। अत वह चुपचाप एक वातानुकूलित कमरे मे वैठे हुए है।

मोटर कपनी से फोन आया, "कार तैयार है। सर्विसिग कर दी है। किसी आदमी को भेज दीजिए, विल चुकाकर गाडी ले जाये।" "मैं आजकल फिलम वनाने मे व्यस्त हू। कार का मुझे विल्कुल ध्यान नही रहा प्राकृतिक दृश्यो का चित्र लेने के लिए मैं आज ऊटकमड जा रहा हू। वहा से मुझे वैगलूर जाना है। मुझे विल्कुल फुरसत नही है। इस समय कार की क्या जल्दी है? लौटकर

देखूगा ।" फोन पर उस तरह झूठ बोलकर उन्होंने मोटर कंपनीवालों से अपना पिंड छुडाया । 'फिल्म बनाना कहा ? प्राकृतिक दृश्य कहा ? यहा तो चारो ओर सूना-सूना दिखायी दे रहा है । पैसा बटोरने पर ही फिल्म बनायी जा सकती है न ?'

'झूठ मुझ जैसे व्यक्तियों के लिए बहुत बड़ा वरदान है । इतने सालों तक मैंने इस व्यवसाय में 'झूठ' नामक उस धन को ही तो लगाया था ।' यह सोच-कर वह मन ही मन कुछ प्रसन्न हो उठे । पोन्नुरंगम ने सिर उठाकर देखा । चित्र में खडी लक्ष्मी हस रही थी ।

'तुम फूल को कुचलती हुई खडी रहो, मेरे मन को मत कुचलो ।'

उस वातानुकूलित कमरे का शीशे का दरवाजा खुलता है । सिर उठाकर देखते हैं, उनका नौकर अपने सिर को अदर करके कहता है, "श्रीमन, कलाज्योति कदप्पन मिलने आये हैं । बहुत गुस्से में लगते हैं. ."

"यहा आने को कहो ।"

'मैं सब कुछ जानता हू । मैंने कल जो चैक दिया था उसे बैंकवालो ने 'डिसआनर' कर दिया होगा । और 'रेफर टु ड्रायर' कहकर लौटा दिया होगा । अब मैं कौनसा झूठ बोलकर पिंड छुडाऊ ?' क्षण भर के लिए वह सोच में पड जाते है, अपने रसिको से कलाज्योति की उपाधि प्राप्त कदप्पन बड़े क्रोध मे कमरे का दरवाजा खोलकर अदर आते हैं । उस अभिनेता का सुदर मुख क्रोध से लाल हो रहा था ।

"आपने अपने कार्यालय का क्या नाम रखा है—'लक्ष्मी प्रोडक्शस' । बाहर टगे हुए बोर्ड को उतार फेंकिए । अपने कार्यालय का नाम 'चाडाली प्रोडक्शस' रख लीजिए ।" सिनेमा का कथा नायक, वह अभिनेता खलनायक की तरह क्रोध से गरज उठता है ।

वह चैक को मोड-मराड कर फेंक देता है । वह पोन्नुरंगम के मुह पर आकर लगता है ।

"कदप्पन, आप एकदम क्यो गुस्सा हो गये ? .. जरा सुनिए तो...मैंने बैंक मे पैसा जमा कराके आप को चैक काटकर देने के लिए कहा था । यह लडके लोग जरा आलस कर बैठे " पोन्नुरंगम हस कर टाल देते है । उनकी अन-रात्मा, पुकार उठती है, 'झूठ ! झूठ ! बारह साल के अनुभवो से पका हुआ झूठ !' परन्तु बाहर मे बडी चतुराई से झूठ बोलकर, आए हुए व्यक्ति से पिंड

छुडा लेते है।

"ए लडके, श्री कदप्पन के लिए अच्छा सा 'ऐपल जूस' . "

"मुझे 'ऐपल जूस' नही चाहिए। आप ऐसा एक चैक दे दे तो काफी है जिसको बैंकवाले लेने से इकार न करे।"

"जरा सुनिए तो सही कदप्पन जी! आप तो तमिलनाडु का नाम रोशन करनेवाले समृद्ध कलाकार हैं। अनजाने ही हमारे प्रोडक्शस के कर्मचारियो ने यह गलती कर दी। इसका मुझे बहुत खेद है ।"

"खेद करने से क्या लाभ ? कलाकार का सम्मान करना चाहिए। इस तरह ।"

"बिल्कुल ठीक! इसी बात को मैं भी पिछले बारह वर्षो से कहता आ रहा हू। कलाकार की दृष्टि मे धन का मूल्य नही है उसे सम्मान दिया जाना चाहिए।"

'अरे पापी! तू कितनी चतुराई से बातो को बदलता जा रहा है' उनकी अतरात्मा उन्हे धिक्कारती है।

फिल्म निर्माता पोन्नुरगम आधे घटे तक न जाने क्या-क्या बोलते रहे। वह कई तरह के बहाने बनाने के बाद अभिनेता कदप्पन को 'ऐपल जूस' पिलाकर भेज देते है। लोगो को किसी तरह से टालने की कला मे वह महामहिम बन चुके थे।

टेलीफोन की घटी बज उठती है। रिसीवर उठाकर बाते करते है। "हलो नमस्ते श्रीमन, 'पब्लिसिटी बिल' के बारे मे पूछ रहे है ? आप जरा सुनिए तो सही आज तो शुक्रवार है। किसी को एक दमडी भी क्यो न देनी हो मैं शुक्रवार के दिन चैकबुक को हाथ से नही छूता। कहते है कि शुक्रवार के दिन लक्ष्मी को घर से बाहर नही जाने देना चाहिए।[1] कल शनिवार है, बैंक आधे दिन के लिए ही खुलेगा। आपको सोमवार को चैक भेज दूगा। बुरा मत मानिएगा अच्छा तो ठीक है न हा हा, सोमवार को अवश्य भेज दूगा।"

रिसीवर को नीचे रखकर सिर उठाते है। सामने लक्ष्मी का चित्र दिखायी देता है। 'छि! छि! लगता है कि लोग क्षण भर के लिए भी मुझे सच नही बोलने देंगे। सभी मेरी जान खाये जा रहे है। मन करता है कि कही भाग जाऊ। कार होती तो बैंगलूर जाकर दो-चार दिन चैन से रहकर लौटता। उसे भी

[1]दक्षिण मे शुक्रवार लक्ष्मी का विशेष दिन माना जाता है।

सर्विसिंग के लिए भेज दिया। बड़ा बुरा हुआ। लगता है कि इस बार मेरा उद्धार नहीं हो सकता।' यह सोच-सोचकर उनका मन चिंतित हो उठता है। उंगलियों के फेरने से उनके बाल बिखर जाते हैं। वह अपनी ऐनक उतार कर मेज पर रख देते हैं। उनका चेहरा अब पहले की अपेक्षा अधिक क्रूर दिखायी देता है।

वह सामने मेज पर रखे 'पिन कुशन' पर से एक-एक 'आलपीन' को निकाल उसे पुनः खोंसने लगते हैं। ऐसा करते हुए ऊब जाने पर वह अंगूठे के नाखून को कुतरते हुए कुछ समय काटते हैं। दीवार पर लगी घड़ी में ग्यारह बजते हैं। कितने ही बज जायें इससे क्या? वातानुकूलित कमरे में उन्हें तेज धूप कहां लगती?

टेलीफोन की घंटी फिर बज उठती है। "हलो. कौन अच्छा! हरिणी स्टूडियो? अपने 'बिल' के बारे में पूछ रहे हैं? 'मनडे' के दिन चैक भेज दूंगा? क्या? नहीं भाई आज नहीं भेज सकता - 'इंपासिबल' बिल्कुल नहीं हो सकता। आज मैं जरूरी काम से बैंगलूर जा रहा हूं -चैक काटने के लिए दफ्तर में कोई नहीं है। मेरी खातिर दो दिन सिर्फ दो दिन ठहर जाइए 'मनडे' को चैक अवश्य भेज दूंगा। 'थैंक यू' ।"

रिसीवर को नीचे रखकर वह फिर कमरे में घूमने लगते हैं। गुस्से से बुडबुदा उठते हैं "मुझे वही करना पड़ेगा जैसा कि वह कहकर गया है। यह 'लक्ष्मी प्रोडक्शंस' है? इस समय तो यह 'पाडाली प्रोडक्शंस' बन गया है।" उनके सिर में दर्द होने लगता है। लगता है कि दर्द के मारे उनका सिर फट जायेगा। उन्हें लगता है कि सुबह से उन्होंने जितने झूठ बोले हैं वे सब जाकर उनके सिर में इकट्ठे हो गये हैं। इसी से उन्हें सिर भारी लग रहा है और पीड़ा हो रही है। क्षण भर के के लिए अपने किसी अंतरंग मित्र के पास जाकर सच बात कहकर, रोकर, दिल हल्का करने के लिए वह तड़प उठते हैं। सिनेमा जगत में रहते हुए उन्हें बारह वर्ष हो गये थे। आज पहली बार उनके मन में यह दुर्बल भावना उदित हुई। इन बारह वर्षों में वह कभी एक क्षण के लिए भी इस प्रकार नहीं तड़पे थे। हमेशा धैर्यशाली बने रहे। परिस्थिति का सामना करने की शक्ति कभी क्षीण नहीं हुई थी। उन्होंने अपने पास धन न होते हुए भी अपनी बातों से लोगों को वश में करके, लाखों रुपये वसूल करके, फिल्म बनाने में सफलता प्राप्त की थी। उनका हृदय आज पहली बार इस प्रकार

घबराहट, भय और बेचैनी का अनुभव कर रहा था ।

आज पहली बार लक्ष्मी के चित्र को देखकर उनका मन रो पडा था ।

'तुम पुष्प को ही कुचलती रहो ! मेरे मन को कुचलो मत ! मैं इसे सहन नही कर सकता हू ।'

'श्रीमन' कहता हुआ उनका नौकर कमरे के भीतर झाकता है ।

"एक वृद्ध व्यक्ति एक युवती कन्या को लेकर आये है आपसे मिलना चाहते है "

"क्यो रे वह कौन हैं ?"

"पता नही जी "

पोन्नुरगम स्वय अपने वातानुकूलित कमरे से बाहर आये । वहा एक सुदर नवयुवती सजी-धजी खडी थी । पास मे फटी पुरानी कमीज पहने हुए एक वृद्ध खडे थे । उन्हे देखते ही दोनो ने अत्यत श्रद्धापूर्वक हाथ जोडकर उनका अभिवादन किया । लडकी बहुत सुदर थी । वह दिव्य लक्षणो से युक्त थी उसे देखकर ऐसा लगता था मानो कमरे मे टगा हुआ लक्ष्मी का चित्र ही कुछ विशाल रूपाकार पाकर और सजीव होकर वहा खडा हो गया हैं । पोन्नुरगम ने कठोर स्वर मे पूछा, "क्या चाहिए ? कहा से आये है ?"

"श्रीमन, कुछ दया कीजिए । आपकी कृपादृष्टि से हमारे परिवार का उद्धार हो जायेगा । मदुरै से रेल के किराये के लिए कर्ज लेकर, वडे भरोसे के साथ यहा आया हू । आपके मित्र ने हमारी सिफारिश करते हुए आपके नाम एक पत्र भी दिया है ।"

पोन्नुरगम ने वडी उपेक्षा से पत्र को हाथ मे लिया । वह पत्र ऐसे वडे व्यक्ति द्वारा लिखा गया था जिसने कई बार उनकी आर्थिक सहायता की थी ।

पोन्नुरगम के मित्र ने सिफारिश करते हुए यह पत्र लिखा था, 'इस पत्र को लानेवाले सज्जन कदसामी अत्यत निर्धन है । उनका परिवार बहुत वडा है । उनकी आठ लडकिया है । वह बडी कठिनाई से गुजारा कर रहे है । उनकी सबसे बडी लडकी अच्छी तरह से नाचना और गाना जानती है । देखने मे भी काफी सुदर है । यहा कुछ नाटको मे अभिनय करके उसने काफी नाम पाया है । यदि आप मेरी खातिर उस लडकी को सिनेमा मे अभिनय करने का एक 'मौका' देकर उसकी जिदगी वना दें तो मै आपका कृतज्ञ रहूगा ।' वह समझ नही पाये कि उस पत्र को पढकर हसें या रोये ।

उन्होने पुन उस लडकी को देखा। वह मधुर हसी हस रही थी। लगा कि चित्र मे खडी लक्ष्मी ही हस रही है।

सुबह से निरतर झूठ बोलते रहने के कारण वह दुखी हो गये थे। हृदय मे बडी वेदना थी। वह सोचने लगे कि यह लडकी हसकर क्या उनकी वेदना के भार को दूर कर रही है ?

पोन्नुरगम मन ही मन हस पडे। "भाई साहब ! एक क्षण के लिए आप अकेले ही मेरे साथ अदर आइए," कहकर पोन्नुरगम उस वृद्ध को लेकर अपने वातानुकूलित कमरे मे गये। वृद्ध के चेहरे पर अपार हर्ष, दीनता और विश्वास के भाव उदित होकर विलीन हो गये।

"उस ओर बैठ जाइए. "

वृद्ध बैठ गया। अपने जीवन मे पहली बार वातानुकूलित कमरे मे बैठा था वह।

"महानुभाव ! क्या आप प्रण कर सकते ह कि इस क्षण मैं जो सत्य कहूगा उसे आप जीवन भर नही भूलेगे।"

वृद्ध घबरा उठा। उसकी समझ म कुछ नही आया।

"आप जो कुछ कहे सो ठीक ही है "

"अपनी लडकी को सिनेमा मे भेजने का विचार छोड दीजिए। वह अपने गाव लौटकर, दो चार घरो मे काम करके कमाये तो भी कोई बुरा नही। यह व्यवसाय तो झूठ से भरा हुआ है। मेरी ही दशा देखिए। आज इस क्षण मैं खाली हाथ हू। सिर पर कर्ज का भार है। मैं ऐसे किसी नये व्यक्ति की खोज मे हू जो मुझे कर्ज दे दे। परतु यदि मैं इस सच्चाई को प्रकट कर दूगा तो मेरी इज्जत खाक मे मिल जायेगी।" इतना कहते ही पोन्नुरगम की आखें भर आयी। लगा कि वह अभी रो पडेगे।

वृद्ध धीरे से उठे। "देश लौट कर जाने के लिए रेल के किराये के पैसे आपके पास होगे ?"

वृद्ध ने होठ विचकाकर मना किया। पोन्नुरगम ने अपने बटुए को उलटा-कर देखा। उस समय उनके पास ४७ रुपये और ८ आने थे। उन्होंने तीस रुपये वृद्ध की ओर बढा दिये।

"आप देश जाकर सम्मान पूर्वक जीवन बिताइए। इस क्षण मैंने आपसे जो बात कही, उसे किसी से मत कहिए। आप लौट जाइए।" वृद्ध नोटो को लेकर

उन्हे नमस्कार करके चल पडे । पोन्नुरगम ने जब मन की वास्तविक स्थिति को व्यक्त किया तो उन्हे लगा कि उस एक क्षण मे उनकी हजारो वर्षों की अशाति दूर हो गयी है।

टेलीफोन की घटी बज उठती है। रिसीवर उठाते है। दूसरी ओर से "हलो...कौन ? पोन्नुरगम ? एक बहुत अच्छा 'फाईनासियर' मिल गया है। वह एक लाख तक दे देगा। यदि तुम कहोगे कि फिल्म की लबाई दो हजार फीट के लगभग है तो रुपये नही मिलेगे। फिल्म की लबाई तेरह हजार फीट बताओगे तो बहुत-सा रुपया मिल जायेगा। मैं तुम्हारी हालत अच्छी तरह जानता हू। इसी से फौरन फोन करके बता रहा हू। क्यो, झूठ बोल दो न ?" मित्र के इन शब्दो को सुनते ही उनका चेहरा खिल उठा।

पोन्नुरगम ने मित्र को उत्तर दिया, "हा, अवश्य बोल देगे। कम क्यो, ज्यादा ही झूठ बोल देगे। तो मै आऊ ?"

"अच्छी बात है ! आ जाओ. एक बजे 'वुडलैंड होटल' आ जाना वही बात कर लेगे...।"

पोन्नुरगम बोले, "वह तो ठीक है, परतु मेरी समझ मे नही आता कि किसमे आऊ। मैंने अपनी कार अपने एक मित्र को दो दिन के लिए दे दी है। तुम जरा अपनी 'प्लिमथ' भेज दोगे ?"

"हा, भेज दूगा। इसके वास्ते झूठ क्यो बोल रहे हो ? तुमने अपनी कार सर्विसिग के लिए दी है न ? झूठ क्यो बोल रहे हो कि मित्र को दी है ? बिल चुकाने के लिए पैसे नही होगे . । कोई बात नही मै अपनी गाडी भेज दूगा आ जाना . ।"

"मैंने झूठ बोला था परतु तुम सच्चाई जान गये। इस समय मैं झूठ बोला हू उसके प्रायश्चित के रूप मे मैं थोडी देर पहले, एक क्षण के लिए ही सही सच बोला था। क्या तुम इसे जानते हो ?"

"अच्छा। गाडी भेज दूगा. आ जाना। मैंने तुम्हे डूबने से बचा लिया है।"

पोन्नुरगम रिसीवर को नीचे रख देते हैं। सामने चित्र मे खडी लक्ष्मी हस पडती हैं। क्या वह इसलिए हसी थी कि सत्य के लिए भी एक क्षण का समय मिल गया ?

झरने के किनारे

इस वर्ष, वर्षा के दिनो मे ही हमे वह आनददायक दुर्लभ, मधुर पत्र प्राप्त हुआ, जिसकी प्राप्त की आशा हमे नही थी।

प्रतिवर्ष जन्मभूमि-प्रेम और पोदिर्क पर्वत मे गिरनेवाले मुदर सुखदायक झरने मिलकर हमे तिरुक्कुट्रालम जाने को बाध्य करते हैं। प्रतिवर्ष वहा जाते समय हम अपने मित्र और हमारे परिवार के डाक्टर, डाक्टर मुत्तुक्कुमारस्वामी और उनके परिवार को भी अपने साथ रहने के लिए निमत्रित किया करते थे। वह प्रतिवर्ष हमारे निमत्रण को अस्वीकार कर देते थे।

मैं यह कहकर, "आप दो महीने न सही दो सप्ताह ही हमारे साथ आकर रहिये," उनको चलने के लिए बाध्य करता था।

डाक्टर साहब कोरा जवाब दे देते, "अरे बाप रे! दो सप्ताह! मैं तो मद्रास शहर छोडकर दो दिन के लिए भी कही नही जा सकता!"

मुत्तुक्कुमारस्वामी का इस प्रकार जवाब दे देना उचित ही था। इतने बडे मद्रास शहर मे ऐसे सैकडो डाक्टर थे जिन्होने लदन और एडिनबरा जाकर उपाधिया प्राप्त करके, अग्रेजी भाषा के छब्बीसो अक्षरो को अपने नाम के साथ जोड लिया था। फिर भी सभी रोगी बिना नागा इस ६० वर्षीय डाक्टर मुत्तुक्कुमारस्वामी के पास ही आया करते थे। बडी-बडी शल्य-चिकित्साओ के लिए लोग मुत्तुक्कुमारस्वामी के पास ही आया करते थे। सरकारी अस्पताल मे भी बडे-बडे लोग मुत्तुक्कुमारस्वामी के शल्य-क्रिया सबधी औजारो की प्रतीक्षा करते रहते थे।

डा० मुत्तुक्कुमारस्वामी को खाने के लिए भी समय नही मिलता था। उनकी पत्नी से उनके विषय मे पूछे जाने पर वह दुखी होकर कहती थी, "उन्हे तो आसन लगाकर बैठने का भी समय नही मिलता है।" वास्तव मे उनकी पत्नी एक थाली मे भात डालकर साम्भर[1] और अवियल[2] मिलाकर उन्हे देती थी। डाक्टर साहब खडे-खडे ही खाकर कोई बडा आपरेशन करने के लिए जल्दी-जल्दी वहा से भाग निकलते थे। मैने स्वय अनेक बार इसे देखा है। मेरी पत्नी ने मुझे कई बार समझाया कि ऐसे डाक्टर को उनके रोगियो से दूर ले जाकर

[1, 2] दक्षिण भारतीय घरो मे बनायी जानेवाली सब्जियो के नाम

कुट्रालम मे रहने के लिए बाध्य करने पर हमे उन सभी रोगियो का शाप लगेगा ।

ऐसे मुत्तुक्कुमारस्वामी नामक डाक्टर के पास से ही वह दुर्लभ पत्र आया था । हमारे कुट्रालम पहुचने के दो सप्ताह के भीतर ही हमे वह पत्र मिला । मन मे एक ओर अपार प्रसन्नता थी तो दूसरी ओर आश्चर्य । प्रसन्नता इसलिए कि डाक्टर ने लिखा था कि वह अपने परिवार सहित कुट्रालम आकर हमारे साथ ठहरेंगे । आश्चर्य इस बात का कि डाक्टर मुत्तुक्कुमारस्वामी ने अपने पत्र मे लिखा था कि वह वर्षा समाप्त होने तक दो महीने हमारे साथ रहेगे ।

२

तिरुक्कुट्रालम मे हम जिस स्थान पर ठहरे थे, वह हमारे एक सबधी का घर था, जिसमे वह गर्मियो मे रहते थे । वह मकान पर्वत की ढलान और मदिर के पास खडी पहाडी के मिलन स्थल से पाच झरनो की ओर बढते हुए सुदर पर्वतीय मार्ग पर, वृक्षो और फूलो से लदे हुए पौधो से युक्त एक मोड पर था । छोटे झरने से निकली हुई एक जलधारा मकान के भीतर प्रविष्ट होकर, पूरे मकान का चक्कर काटकर, मकान के पिछले भाग मे पर्वत की ढलान से होकर बहने-वाली छोटी नदी मे जाकर मिल जाती थी । मकान मालिक ने उस मकान को इस रूप मे बनवाया था ।

मकान बहुत बडा था । उसके चारो ओर आम, नारियल, कटहल आदि के वृक्ष और नाना प्रकार के पौधो और लताओ का घना कुज था । मकान के दक्षिणी भाग मे स्थित एक कमरा जैसे प्रेमपूर्वक उस लघु जलधारा का आलिंगन कर रहा था । उस कमरे को और उसके पास के हिस्से को हमने डाक्टर के परि-वार के लिए खाली कर दिया । मद्रास शहर के भयानक तेज गतिवाले जीवन मे छुटकारा पाकर इस शात कमरे मे आकर, उसकी दक्षिणी खिडकी को खोल देने पर सभी रोगो को भगा देनेवाली स्वास्थ्यवर्धक दक्षिणी पवन का सचार वहा होने लगता था । पर्वत की जडी-बूटियो पर से होकर बहती हुई वह पवन, उनकी शीतलता और पुष्पो की सुगध को ग्रहण कर तेजी से आकर हमारे शरीर का स्पर्श करती थी । प्रात॰ उठने पर उदित होते हुए सूर्य को तथा प्रात॰कालीन सूर्य के प्रकाश मे बिखरते हुए हीरो के समान दीख पडनेवाली उस श्वेत जल-धारा को अपनी आखो से निहारा जा सकता था । रात्रि को चद्रमा दीख पडता

था। चद्रमा के प्रकाश मे वह जलधारा इस प्रकार प्रतीत होती थी मानो पिघली हुई चादी बह रही हो। वे दृश्य नेत्रो को अत्यत रमणीय प्रतीत होते थे। डाक्टर साहब यहा आकर बहुत प्रसन्न होगे, यही सोचकर हम बडी प्रसन्नता से उनके आगमन की प्रतीक्षा कर रहे थे।

डाक्टर साहब आये। उनके साथ उनकी पत्नी, दिल्ली मे काम करनेवाला उनका युवा पुत्र और मद्रास के क्वीन मेरी कालेज मे पढनेवाली उनकी लडकी भी आयी थी। हम सबको बहुत प्रसन्नता हुई। डाक्टर साहब का लडका और लडकी प्रति दिन प्रात झरने मे जाकर नहाते थे। भूख लगने पर घर आकर दोशा खाते और फिर झरने के किनारे जा बैठते। वहा से लौटने पर वह तिरु-नेलवेली के आनैक्कोवन नामक प्रसिद्ध चावल से बनाये गये भात पर इमली डालकर बनायी तरकारी डालकर खाते थे और फिर झरने के किनारे चले जाते थे इस प्रकार वे कुट्रालम के जीवन का आनद लेने लगे। डाक्टर की पत्नी ने पहले दो-तीन दिन तक प्रात काल झरने मे जाकर स्नान किया और सारा दिन अन्य स्त्रियो के साथ इलजि, तेनकाशी, शकोट्टै, मत्तयमपारै आदि आसपास के स्थानो का भ्रमण करते हुए आनदपूर्वक समय बिताया। इसके बाद डाक्टर मुत्तुक्कुमारस्वामी के कारण वह उलझन मे पड गयी।

जिस दिन डाक्टर साहब कुट्रालम पहुचे, उसी दिन मैंने उनमे एक परिवर्तन देखा। वही डाक्टर जो हमेशा, हरेक से हस-हस कर बाते करते थे, इधर-उधर भाग दौड करते रहते थे, अब किसी गहन सोच-विचार मे मग्न होकर मौन रहने लगे। वह अब किसी से भी अधिक नही बोलते थे। प्रात जाकर झरने मे स्नान करके लौट आते थे। नाश्ता करके अपने कमरे मे चले जाते थे। इसके बाद दोपहर के भोजन के लिए जाकर उन्हे बुलाना पडता था। तब तक वह दक्षिणी भाग मे स्थित उस कमरे मे अकेले ही, चुपचाप बैठे रहते थे। वह कमरे से बाहर नही निकलते थे। चार बजे के लगभग वह अपनी छडी लेकर 'पाच झरने' वाले मार्ग पर अथवा शेण्बकाटवी की ओर जाते हुए पर्वतीय मार्ग पर अकेले ही घूमने निकल जाते थे। वह हमे शिष्टाचार के नाते भी नही बुलाते थे। अधेरा होने पर ही वह घर लौटते थे। उनकी उन चेष्टाओ को देखकर मैं हैरान हुआ।

चार-पाच दिन के बाद मेरा आश्चर्य और बढ गया। एक दिन प्रात झरने से लौटने के बाद, नाश्ता करके वह फिर बाहर चले गये। वह अल्यूमीनियम के

डिब्बे मे एक दोशा रखकर अपने साथ ले गये थे ।

"आज मै चढाई पर कुछ दूर तक जाकर लौटूगा ।"

ऐसा कहकर गये हुए वह सज्जन शाम को अधेरा होने के बाद ही घर लौटे ।

लगातार एक सप्ताह तक डाक्टर साहब इसी तरह अकेले ही दूर तक जाकर लौटते । इसे देखकर डाक्टर साहब की पत्नी चिंतित होने लगी । एक दिन उन्होने बातो-बातो मे अपनी चिंता का कारण मुझे बताया ।

कुट्रालम पहुचने के अगले दिन ही मैंने समाचारपत्रो मे पढा था कि राजस्थान से तमिल प्रात को आयी हुई एक कला-गोष्ठी सहसा एक भयकर रेल दुर्घटना का शिकार हो गयी और डाक्टर मुत्तुक्कुमारस्वामी ने स्वय सरकारी अस्पताल जाकर घायलो की चिकित्सा की । अब डाक्टर साहब की पत्नी ने मुझे बताया कि उन घायलो की चिकित्सा करने के बाद से ही डाक्टर साहब के व्यवहार मे यह परिवर्तन आने लगा था ।

डाक्टर साहब की पत्नी बोली, "भैया, उस दिन से तुम्हारे डाक्टर किसी से भी अधिक नही बोलते है । हमेशा किसी सोच-विचार मे डूबे रहते हे । इस कारण ही उन्होने कुट्रालम चलने के लिए कहा था । मैं पहले तो बहुत हैरान हुई परतु फिर मैंने सोचा कि कुट्रालम जाकर रहने से डाक्टर साहब का यह मौन रहना और उनमे आया यह परिवर्तन सब दूर हो जायेंगे । यहा आकर भी वह किसी से मिलते-जुलते नही है । कही भी चलने के लिए मैं कहू तो मना कर देते है । एकात के लिए उनकी इच्छा और पर्वतीय वनो मे घूमना आदि बाते मुझे विचित्र लगती है । आप जरा उनकी चेष्टाओ को ध्यान से देखिए ।"

३

एक दिन डाक्टर साहब के बिना जाने ही मैं उनके पीछे-पीछे चल पडा । वह हाथ की छडी को चट्टानो पर टेक कर 'ठक-ठक' करते हुए उस पर्वतीय मार्ग पर तेजी से बढे चले जा रहे थे । वह रास्ता बहुत टेढा-मेढा था । अत. हर मोड पर उनकी दृष्टि से बचने के लिए झाडियो और चट्टानो के पीछे छिपते हुए मैंने उनका पीछा किया ।

घोर दुपहरी मे वह शेण्बकाटवी जा पहुचे । मैं झाडी मे छिपकर उन्हे

ध्यान से देखने लगा।

शेण्बका देवी के मंदिर के पास खड़े पर्वत की ढलान में एक सुंदर गुफा है न? झरझर निनाद कर उछलते हुए झरने के किनारे प्रभु की कृपा चाहनेवाले किसी भक्त के उदार हृदय के समान दिखायी देनेवाली उस गुफा के विषय में बहुत से लोग जानते हैं। कुछ दूर आगे बढ़ने पर पर्वत के उतार पर और कई छोटी-छोटी गुफाएं और छोटी-छोटी कंदराएं दिखायी देती थीं। हमारे डाक्टर साहब इस प्रकार की एक पर्वतीय कंदरा में घुसकर आंखें मूंदकर बैठ गये।

बहती हुई जलधारा की मंद ध्वनि तानपुरे के समान सुर दे रही थी। उस सुर से स्वर मिलाते हुए पक्षीगण कलरव कर रहे थे। झरने का कल-कल नाद मानो ताल दे रहा था। नाना ध्वनियां मिलकर उस पर्वतीय प्रदेश में मधुर संगीत की सृष्टि कर रही थीं। क्या डाक्टर मुत्तुक्कुमारस्वामी उस संगीत में तन्मय होकर आंखें मूंद कर बैठे हुए थे? अथवा उनका मन किसी चिंता की गुफा में जाकर फंस गया था?

छिपे हुए स्थान से बाहर निकल कर मैं जल्दी-जल्दी चला।

"डाक्टर साहब! डाक्टर साहब!"

मैं सीधे डाक्टर साहब के पास जाकर उनके सामने बैठ गया।

घबराकर डाक्टर साहब ने आंखें खोलीं। मेरा उनके काम में दखल देना उन्हें जैसे अच्छा नहीं लगा। उन्होंने मुझे तीखी नजरों से देखा। उनकी खुली हुई आंखें जैसे मुझ पर चुभ गयीं।

"मुझे माफ कर दीजिए डाक्टर साहब! आपका इस प्रकार अकेले आकर यहां बैठना, उत्साहशून्य होकर किसी गंभीर चिंता में डूबे रहना, मौन रहना हमें चिंतित कर रहा है। आपकी पत्नी भी यह सब कुछ देखकर चिंतित हो रही है। इसी से ."

"मैं आपकी चिंता को समझ रहा हूं। यदि आप वचन दें कि आप मुझे तंग नहीं करेंगे और मेरे कामों में दखल नहीं देंगे तभी मैं आगे कुछ कहूंगा, अन्यथा "

मैं घबराहट के साथ बोला, "नहीं, नहीं, ऐसा कुछ नहीं करूंगा, मैं वचन देता हूं। आप आगे बोलिये डाक्टर साहब!"

डाक्टर साहब बोले, "भैया, राजस्थान में एक कला-गोष्ठी तमिल प्रांत आयी थी। वह गोष्ठी अचानक एक रेल दुर्घटना का शिकार हो गयी। उन

कलाकारो की सरकारी अस्पताल मे चिकित्सा की गयी। यह सभी समाचार आपने पढा होगा। उन कलाकारो मे तीन व्यक्ति बुरी तरह घायल हो गये थे। वे मौत के मुह मे पडे हुए थे। उनकी चिकित्सा का भार मुझे सौपा गया। उनकी चिकित्सा मे सबसे बडी कठिनाई यह थी कि उन तीनो मे एक युवती थी। उसकी एक टाग को काटकर अलग करना था। दूसरा नवयुवक था। उसकी आखो मे शीशे के टुकडे गहरे घस गये थे। उसे अपने सहायक नेत्र चिकित्सक के पास ले जाकर अपनी ही निगरानी मे उसका आपरेशन करवाना था। तीसरे व्यक्ति के सीधे हाथ को कधे से अलग करने पर ही वह बच सकता था। आप मुझे अच्छी तरह जानते है। आपरेशन करते समय इधर-उधर झाककर देखने की आदत मुझ मे नही है। मैं तो मनुष्यो को गाजर-मूली की तरह काट डालता हू।"

डाक्टर की इन बातो को सुनकर मैं दग रह गया।

"डाक्टर साहब आप ऐसा क्यो कह रहे है? इस तरह चीर-फाड रोगी की जान बचाने के लिए ही तो करते है। इसमे गलती कैसी?"

"इन तीनो व्यक्तियो का आपरेशन करने तक मैं भी यही सोचा करता था।"

मैंने पूछा, "क्या वे तीनो बच नही सके?"

"बच गये, इसी से मैं चिंतित हू। यदि वे मर जाते तो मैं इतना चिंतित नही होता।"

इतना कहते ही डाक्टर की आखें भर आयी।

"क्यो डाक्टर साहब, आप मुझे क्यो चकरा रहे है?"

"भैया, जब वे तीनो कलाकार जी उठे, सचेत होकर इस ससार मे लौट आये तो वे घोर पीडा से छटपटाने लगे। उन्हे दुखी देखकर मुझे जितना दुख हुआ उसका वर्णन मैं नही कर सकता। 'मुझे दुख हुआ' ऐसा कहना गलत है क्योकि मैंने जिस वेदना का अनुभव किया, जिस वेदना का मैं अनुभव कर रहा हू और जिस वेदना का अनुभव करता रहूगा—उसकी कोई सीमा नही है। मैंने जिसकी टाग को काटकर अलग किया था वह युवती राजस्थान की प्रसिद्ध नर्तकी थी, जिसकी बराबरी करनेवाला कोई न था। जिसके नेत्र निकाले गये वह एक प्रसिद्ध चित्रकार था और जिसके सीधे हाथ को मैंने निर्दयता से काट-कर फेंक दिया था वह बेजोड सारगी वादक था। वे तीनो राजस्थान से भ्रमण

के लिए आयी हुई उस कला-गोष्ठी में प्रमुख थे। उस युवती की दृष्टि में उसकी टांग उसके प्राणों से अधिक मूल्यवान थी। चित्रकार के लिए उसकी आंखें ही उसके प्राण थीं। सारंगी वादक के लिए सारंगी पर खेलता हुआ उसका दायां हाथ, दायें हाथ की उंगलियां ही उसका जीवन थीं। मैंने उन्हें काटकर अलग कर दिया।"

ऐसा कहते ही डाक्टर साहब की आंखों में टप-टप आंसू गिरने लगे। उनको उत्तर देने के लिए मेरे मुख से शब्द नहीं निकले।

डाक्टर साहब बोले, "भाई, मैं सोचता था कि मैं लोगों के प्राण बचा रहा हूं। मुझे अपनी चातुरी और सेवा भावना पर घमंड हो गया था। मन में यह विश्वास बना रहा कि चाहे मैं मद्रास छोड़कर दो दिन के लिए कुट्रालम आ जाऊं, तब भी यमराज अवसर देखकर अवश्य मुझ से बदला ले लेंगे। इसी से मैं अपने आपको दंड दे रहा हूं। मैंने तीनों कलाकारों को प्राणदान देकर, उनकी रक्षा करके, उन्हें जीवित शवों के रूप में संसार में खड़ा कर दिया है न? इसी दुख से मैं दुखी हूं मेरे प्राण जैसे निकले जा रहे हैं। उन तीनों कलाकारों ने अपने प्राणरूप अपने विभिन्न अंगों को खो देने के कारण आंसू बहाये। उनको आंसू बहाते देख मैं संतप्त हो उठा। कुट्रालम का यह झरना भी मुझे शीतलता नहीं दे सका। शीतल दक्षिणी पवन भी मेरे हृदय के ताप को शांत न कर सकी। मेरा मन अशांत है। मुझे अपने शरीर, अपने प्राणों के प्रति कोई मोह नहीं है। वनों और पर्वतों से युक्त इस एकांत स्थान पर आंखें मूंदकर बैठकर मैं अपनी चिंताओं से मुक्त होने का प्रयत्न कर रहा हूं। कहा गया है कि 'मधुर मधुर, एकांत मधुर है'। तदनुसार मैं भी एकांत की खोज में यहां आ बैठता हूं। परंतु इससे कोई लाभ नहीं हुआ। मृत्यु और जीवन के मर्मों को मैं साक्षात अपने नेत्रों से नहीं देख सका। मैंने आंखें मूंद कर उन्हें जानने की चेष्टा की परन्तु उन्हें न जान सका। मैं उद्विग्न हूं, उद्विग्न होता जा रहा हूं।"

६

इस घटना के बाद डाक्टर साहब के व्यवहार में और अधिक परिवर्तन नजर आये। पहले उन्होंने जंगलों में जाकर आंखें मूंदकर ज्ञान प्राप्त करना चाहा, परन्तु अब वह घर के भीतर भी मौन रहने लगे और आंखें मूंदकर ध्यान

मे जा बैठने की चेष्टा करने लगे। उनके इस व्यवहार मे सभी अधिक चिंतित हुए। इसी से जब कभी मैं बाहर जाता, सब मिलकर जबरदस्ती डाक्टर साहब को भी साथ चलने के लिए बाध्य करते। डाक्टर नुत्तुवकुमारस्वामी को मद्रास शहर का तथा अपने असख्य रोगियो का तनिक भी ध्यान न रहा। उन्होने हम सब को एक मानसिक व्याधि का शिकार बना दिया था और स्वय भी एक अत्यत कष्टकर व्याधि से ग्रस्त होकर तडप रहे थे। ऐसे समय मे अचानक पालैयकोट्टै से एक समाचार मिला। उसमे लिखा था कि रात के समय मद्रास शहर के घरो मे घुसकर, बदूक के निशाने पर लोगो की धन सपत्ति लूटनेवाले डाकुओ मे तीन प्रमुख डाकू पालैयकोट्टै नामक स्थान पर पकडे गये। उनके द्वारा लूटी गयी वस्तुओ की छानबीन करने पर पाच वर्ष पूर्व हमारे मद्रासवाले घर से चुराये गये चादी के कुछ बर्तन मिले है। अतः मुझे पालैयकोट्टै जाकर उन वस्तुओ की और मनुष्यो की पहचान करनी होगी। "कार से जाकर दोपहर तक लौट आयेगे," ऐसा कहकर मैं जबरदस्ती डाक्टर साहब को भी अपने साथ लेकर पालैयकोट्टै के लिए चल पडा।

पकडे गये तीनो डाकुओ मे एक बदूक चलाने मे बहुत पटु था अर्थात उसकी आखे बहुत तेज थी। दूसरा व्यक्ति सेंध लगाकर घर के भीतर जाने मे पटु था। तीसरा व्यक्ति, कितने ही बोझ को कधे पर ढोते हुए मिनटो मे मीलो दूर भागकर बचने की सामर्थ्य रखता था। पालैयकोट्टै पहुचने पर हमे उन तीनो के दर्शन हुए। यह बडे आश्चर्य की बात थी कि मेरे साथ आये हुए डाक्टर को देखते ही उन तीनो चोरो ने सिर के ऊपर दोनो हाथो को जोडे हुए बहुत जोर-शोर मे नमस्ते की। डाक्टर ने इन बातो की ओर ध्यान नही दिया। यही बहुत बडी बात थी कि पर्वतीय प्रदेश के जगलो को भूलकर वह मेरे साथ उतनी देर तक रहे। इसके बाद वहा ठहरने की आवश्यकता न होने के कारण हम कुट्रालम लौट आये।

हमारे आने के बाद पुलिस के अफसरो ने चोरो की तलाशी ली।

अफसरो द्वारा यह पूछे जाने पर, "तुम इस डाक्टर को पहले से जानते हो?" उन्होने जो कुछ कहा उससे बहुत-सी बातें ज्ञात हुई।

वे तीनो डाकू अनेको बार तरह-तरह के कष्टो से पीढित होने पर, अलग-अलग नाम धारण कर हस्पताल गये थे और उनकी उस डाक्टर ने चिकित्सा की थी। उनमे प्रमुख घटना यह है कि एक बार सेंध लगाने मे पटु चोर कण्णु-

स्वामी ऊपर से गिर पड़ा और उसका हाथ कट गया। वह इलाज कराने के लिए उनके पास गया था। उसके हाथ को बिल्कुल ठीक कर पहले जैसे काम करने योग्य बनाने का श्रेय डाक्टर मुत्तुक्कुमारस्वामी को ही है। उसी हाथ से वह अब भी सेंध लगाता है। बंदूक चलाने में पटु दुरैस्वामी भी एक दुर्घटना में फंस गया था। उसकी आंखों में सुई चुभ गयी। उसकी आंखों को ठीक कर, उसे एक आंख से अंधा होने से बचाने का काम डा० मुत्तुक्कुमारस्वामी और उनके सहायक आंखों के डाक्टर ने किया था और किसी ने नहीं। बोझा ढोनेवाले पहलवान मुत्तुपक्किरी नामक चोर को क्या हुआ? एक बार पेट पालने का कोई उपाय न देख उसने खटमल मारने की जहरीली दवाई पी ली। बिल्कुल मरने को था, परंतु डाक्टर मुत्तुक्कुमारस्वामी उसे मरने कैसे देते? उन्होंने उसे प्राण-दान दिया। उसे पेटभर विटामिन की गोलियां खिलाकर तगड़ा बनाकर संसार में भेज दिया।

खोई आंख को डाक्टर के हाथों पा लेने के बाद से बंदूकवाला दुरैस्वामी फिर से अच्छी तरह निशाना बांधकर गोली चलाने लगा। उनसे खोये हुए हाथ को पा लेनेवाला कण्णुस्वामी सेंध लगाने में पटु समझा जाने लगा। पहलवान मुत्तुपक्किरी डाक्टर की सहायता से प्राप्त शक्ति से अपने धंधे को भली प्रकार करने लगा। अब यह प्रमाणित हो गया कि उन तीनों के पास प्राप्त ये चांदी के बर्तन हमारे ही थे।

५

जिस दिन हमें जासूसी विभाग के अधिकारियों से यह समाचार मिला, उसके अगले दिन ही डाक्टर साहब मद्रास चल पड़े।

मैंने कुछ आश्चर्य से उत्कंठा से डाक्टर साहब से पूछा, "क्यों डाक्टर साहब, एकाएक चल क्यों पड़े?"

"एक महीने तक मैं अपने रोगियों को भूलकर स्वयं रोगी हो गया था। अब मेरा रोग ठीक हो गया है। अब मुझे अपने रोगियों का इलाज करना चाहिए। मद्रास में अब तक न जाने कितने लोग मेरी प्रतीक्षा कर रहे होंगे।"

"आप क्या कह रहे हैं?"

"अब तक मे यह सोचकर दुखी, उद्विग्न और व्यथित होता रहा कि मैंने नृत्य करनेवाली युवती का पैर काट डाला, चित्रकार की आखे निकाल दी और सारगी वादक का हाथ काट डाला, परतु अब मैं क्या देखता हू ? मैंने अत्यत परिश्रम से एक व्यक्ति को आखे दी। अन्य दो व्यक्तियो को हाथ-पैर दिये। उनका प्रयोग वे किन कामो के लिए कर रहे है, इसे आप देख चुके हे। किसी के अगो को काट कर अलग करने का भार यदि मुझ पर है तो किसी को खोये हुए अगो को फिर से लौटा देने का भार भी तो मुझ पर ही होगा न ?"

डाक्टर साहब ने एक क्षण के लिये आखे मूद ली। ज्ञानोदय की दशा मे डाक्टर साहब बोले, "भाई, शल्य-चिकित्सा करना मेरा व्यवसाय है। इसके बाद की बाते मुझे नही सोचनी चाहिए। अपना काम पूरा करने के साथ ही मेरा कर्त्तव्य भी पूरा हो जाता है। भगवान जो कुछ करता है उसे अपने द्वारा किया हुआ (काम) समझना मूर्खता है। आख, हाथ-पैर काटकर फेक देना या ठीक कर देना एक चिकित्सक का काम है जिसका सबध उसकी चिकित्सा से है। विभिन्न अगो को लोग काम मे लाते है अथवा नही, किन कामो के लिए, कैसे और कितने समय के लिए उनका उपयोग करते है आदि बातो से मेरा कोई सरोकार नही है। वह तो उनके अपने-अपने भाग्य पर निर्भर है।

"भाग्य को बदलना ही तो आपका काम है "

"नही ! एक बार मैंने ऐसा सोचा था, परतु ऐसा सोचना ठीक नही। जनम, मरण, रोग, स्वास्थ्य आदि के विषय मे चिकित्सा-शास्त्र की सीमा से आगे बढकर सोचना मूर्खता है। यदि डाक्टर प्रभु की लीलाओ पर शोध करने लगे तो वह रोगी हो जायेगा। उसके उस रोग का कोई निदान नही। आइए जाकर झरने मे नहा आये। इसके बाद मैं देश चला जाऊगा। मद्रास मे अनेक रोगी मेरी प्रतीक्षा करते होगे। मेरा कर्त्तव्य मुझे पुकार रहा है।"

ऐसा कहते हुए डाक्टर मुत्तुक्कुमारस्वामी काल प्रवाह के समान सतत प्रवाहित झरने की ओर चल पडे।

कहानीकारो का परिचय

राजाजी (चक्रवर्ती राजगोपालाचारी)

इनका जन्म १८७८ ई० मे होसूर मे हुआ। १९०० ई० मे आपने सेलम नामक स्थान मे वकालत शुरु की लेकिन असहयोग आदोलन के दिनो मे अपना व्यवसाय छोडकर गाधी जी के साथी बन गये और कई बार जेल गये। दो बार मद्रास के मुख्य-मत्री रहे। केद्रीय मत्री, पश्चिमी बगाल के राज्यपाल और स्वतत्र भारत के प्रथम गवर्नर जनरल के प्रतिष्ठित पदो को भी आपने सुशोभित किया। आप एक चितनशील कलाकार है। राजाजी ने अपने गभीर विचारपूर्ण भाषणो और रचनाओ के द्वारा साहित्य को समृद्ध किया है।

पुदुमैपित्तन

इनका वास्तविक नाम चो० वृद्धाचलम है। इनका जन्म १९०६ ई० मे हुआ था। आपने तिरुनेलवेली मे रहकर बी० ए० की डिग्री प्राप्त की और मद्रास आकर पत्रकार जगत मे प्रवेश किया। अपने लेखो द्वारा आपने साहित्य जगत मे नयी चेतना उत्पन्न की। 'दिनमणि' नामक समाचारपत्र के सहायक सपादक के रूप मे काम करते हुए आपने 'मणिक्कोडि' आदि पत्रिकाओ के लिए गभीर विचार प्रधान कहानियो की रचना की। अपनी कहानियो की नवीनता, विचारो की गभीरता तथा अनुपम प्रभावशीलता के कारण ही पुदुमैपित्तन तमिल कहानी जगत मे अमर है। १९४८ ई० मे इनका स्वर्गवास हुआ।

कु० प० रा० (कु० पा० राजगोपालन)

इनका जन्म १९०६ ई० मे और स्वर्गवास १९४४ ई० मे हुआ। श्री राजगोपालन तमिल के साथ-साथ तेलुगु, सस्कृत, अग्रेजी, बगला आदि भाषाओ के

जाता थे। तिरुच्चि के सरकारी महाविद्यालय मे शिक्षा प्राप्त करने के उपरात सरकारी नौकरी करने लगे। स्वास्थ्य बिगड जाने पर उन्होने नौकरी छोड दी और साहित्य जगत मे प्रवेश किया। गभीर चिंतन और प्रवाह पूर्ण अनेक कहानियो की रचना करके उन्होने पाठको और लेखको का आदर पाया। श्री कु० पा० रा० ने कहानियो को एक नयी शैली प्रदान की।

बी० एस० रामय्या

इनका जन्म १९०५ ई० मे वद्दलुगुड नामक स्थान मे हुआ। श्री रामय्या कहानियो के साथ-साथ नाटक लिखने मे भी सिद्धहस्त हैं। इन्होने चलचित्र जगत की भी बहुत सेवा की है। 'मणिक्कोडि' नामक श्रेष्ठ साहित्यिक पत्रिका के सपादक के रूप मे इन्होने तमिल साहित्य की जो सेवा की है, वह चिरतन है। तमिलनाडु के सर्वश्रेष्ठ कहानीकारो मे से एक हैं।

मौनी

इनका जन्म १९०७ ई० मे तजौर जिले मे हुआ। कहानीकार के रूप मे इनका तमिल जनता से परिचय 'मणिक्कोडि' नामक पत्रिका के माध्यम से हुआ। १९३६ ई० तक इन्होने अपने लिए एक नवीन शैली का निर्माण कर लिया था। उस शैली की ओर पाठक ही नही अपितु अनेक प्रसिद्ध लेखक भी आकृष्ट हुए। जीवन की अखडता को यह कहानी के लघु आकार मे भी अभिव्यक्त करने की क्षमता रखते है।

त० ना० कुमारस्वामी

इनका जन्म १९०७ ई० मे दडलम नामक ग्राम मे हुआ। यह सस्कृत, बगला, अग्रेजी आदि कई भाषाओ के पडित है। अनुवाद कला मे भी दक्ष है। आज से बीस वर्ष पूर्व ही इनकी कहानियो को 'आनद विकटन' नामक साप्ताहिक तमिल पत्रिका के माध्यम से प्रसिद्धि मिल चुकी है।

तूरन (एम० पी० पेरियसामी तूरन)

इनका जन्म १९०८ ई० मे ईरोड के पास स्थित एक ग्राम मे हुआ। अनेक वर्षो तक स्कूल मे प्रधानाचार्य के रूप मे कार्य करने के उपरात इन्होने 'कलैक्कलल्यिजयम' नामक (कला भडार) तमिल एनसाइक्लोपीडिया के प्रधान सपादक के पद पर काम किया। इस समय श्री तूरन बच्चो के लिए एक 'कलैक्कलल्यिजयम' (कला भडार) तैयार करने मे लगे हुए है। इन्होने सैकडो कविताओ, कहानियो, निबधो, नाटको, बाल साहित्य तथा शोध सबधी ग्रथो की रचना कर तमिल और तमिल भाषी जन समुदाय की अपार सेवा की है।

ति० ज० र० (ति० ज० रगनाथन)

इनका जन्म १९०१ ई० मे हुआ। १९३३ ई० मे नमक सत्याग्रह मे भाग लेने के कारण इन्हे जेल जाना पडा। इन्होने अनेक पत्रिकाओ की सेवा की है। यह आजकल 'मजरी' नामक पत्रिका के सपादक है। इनकी कहानियो ने अनेक युवा कथाकारो को प्रभावित किया। रगनायन उच्च शिक्षा प्राप्त, अत्यन्त जिज्ञासु विद्वान है।

ती० जानकीरामन

इनका जन्म १९२१ ई० मे हुआ। बी० ए० पास करने के बाद इन्होने अध्यापन की ट्रेनिग ली और कई वर्षों तक अध्यापन कार्य करते रहे। आजकल यह आकाशवाणी के स्कन्ध-राष्ट्रीय विभाग मे प्रमुख कार्यक्रम सयोजक के रूप मे काम कर रहे है। इनकी कहानियो का विशिष्ट गुण है, मनोभावो का सूक्ष्म और सजीव चित्रण।

आर० वी० (आर० वेंकटरामन)

आर० वेंकटरामन 'कण्णन' नामक बाल पत्रिका के सपादक है। आपने अनेक कहानियां एव उपन्यास लिख कर ख्याति अर्जित की है। बच्चो के लिए

विशिष्ट ढग की रचना करने की योग्यता आप मे है। जीवन की साधारण बातो को भी आकर्षक ढग से प्रस्तुत करने मे पटु हैं। जीवन के सुख-दुख का चित्रण कर पाठको की चितन शक्ति को जगाने की क्षमता इनकी कहानियो की विशेषता है।

एल० एस० रामामृतम

इनका जन्म १९१६ ई० मे हुआ। युवावस्था मे ही यह अग्रेजी तथा तमिल मे लिखने लगे। इनकी कहानियो ने तमिल पाठको को प्रभावित किया है। कहानी के माध्यम से किसी गभीर विचार को व्यक्त करने की क्षमता इनमे है। इसी से इनकी कहानियो मे एक सौदर्य, एक विशिष्टता पायी जाती है। इन का विचार है कि साहित्य के माध्यम से उच्च से उच्च उद्देश्यो की पूर्ति हो सकती है। कला सबधी इन मान्यताओ के साथ साहित्य जगत मे प्रवेश करके इन्होने अनेक सुदर कथा-कृतिया प्रदान की है।

रघुनाथन (तो० मु० चिदंबर रघुनाथन)

यह तिरुनेलवेली के प्रसिद्ध चित्रकार मुत्तैया तोडैमान के कनिष्ठ पुत्र है। बचपन से ही कविता मे आपकी विशेष रुचि रही है। लघु कथा और लबी कहानियो की रचना करने की क्षमता भी इनमे है। पुदुमैपित्तन के साथ रहकर रघुनाथन ने भी उनके समान अपनी एक निजी शैली का निर्माण कर लिया। उस शैली मे अनेक श्रेष्ठ कथा-कृतियो की रचना कर यह तमिल भाषा एव साहित्य की सेवा समुचित रूप से कर रहे है।

डी० जयकांतन

इनका जन्म १९३४ मे कडलूर नामक स्थान मे हुआ। अपने क्रातिकारी विचारो के कारण इन्होने सिनेमा जगत मे एव साहित्य जगत मे सभी को प्रभावित किया। श्री जयकातन ने लगभग दो सौ से अधिक कहानिया लिखी है।

विभिन्न कलाओ मे आपकी रुचि है। इनका दृढ मत है कि प्रत्येक क्षेत्र मे हमारा अपना एक निश्चित मतव्य होना चाहिए। क्रातिकारी विचारधारा और कला की सूक्ष्मता के दर्शन आपकी कहानियो मे होते हैं।

श्रीमती राजम कृष्णन

इनका जन्म १९२५ ई० मे तिरुच्चि जिले मे हुआ। इजीनियर पति के साथ अनेक वर्ष पर्वतीय क्षेत्र के लोगो के साथ व्यतीत किये। इन्होने अपने जीवन के विनोदपूर्ण अनुभवो को कहानियो का रूप दिया है। श्रीमती कृष्णन ने अनेक उपन्यासो, कहानियो तथा नाटको की रचना करके पर्याप्त ख्याति अर्जित की है। लगभग पिछले तीन वर्षों से तमिल मे साहित्य रचना करने मे सलग्न राजम कृष्णन की कहानियो मे चिंतन और सूक्ष्म कलात्मक सौदर्य के दर्शन होते है।

कु० अलगिरिसामी

इनका जन्म १९२१ ई० मे तिरुनेलवेली जिले के इडैशेवल नामक गाव मे हुआ। इन्होने १९४२ ई० मे लिखना आरभ किया। विभिन्न पत्रिकाओ के लिए नाना प्रकार की सुदर रचनाए लिखी तथा पत्रिका के सहायक सपादक भी रहे। इन्होने दस कहानी सग्रहो, छ' निबध सग्रहो, दो नाटको तथा बच्चो के लिए दो कहानी सग्रहो का प्रकाशन करने के साथ-साथ साहित्यिक शोध सबधी ग्रथो का प्रकाशन भी किया है। यह गाधीवादी विचारधारा के प्रबल समर्थक है। इन्होने अनेक कृतियो का अनुवाद किया है। आकाशवाणी से बराबर प्रसारण करते रहे है।

न० पिच्चमूर्त्ति

इनका जन्म १९०० ई० मे हुआ। अट्ठतीस वर्ष की आयु तक आप वकालत करते रहे। इसके बाद वकालत छोडकर पत्रकारिता के क्षेत्र मे आ गये। विचारोत्तेजक कहानिया लिखकर आप जनता की प्रशसा के पात्र बने और

साहित्य जगत मे अपना विशिष्ट स्थान बना लिया। अपनी कहानियो मे जीवन की झाकी प्रस्तुत करने के साथ-साथ मानसिक प्रवृत्तियो और अलौकिक अनुभवो को भी मार्मिक, प्रभावशाली भाषा मे व्यक्त करने मे सिद्धहस्त है।

अखिलन (अखिलांडम)

इनका जन्म १९२३ ई० मे हुआ। युवावस्था मे ही साहित्य जगत मे प्रवेश किया। इन्होने उपन्यासो तथा कहानियो द्वारा सैकडो पाठको को आकृष्ट किया। कुछ समय तक चलचित्रो मे काम किया है। आजकल यह आकाशवाणी के मद्रास केंद्र मे वार्ता सयोजक के रूप मे काम कर रहे है। श्री अखिलन तमिल साहित्य जगत के प्रसिद्ध एव गौरव प्राप्त रचनाकारो मे अग्रगण्य है।

कल्कि (रा० कृष्णमूर्ति)

इनका जन्म १८९९ ई० मे हुआ था। श्री कल्कि कृष्णमूर्ति ने असख्य कहानियो, निबधो, गीतो, समालोचनात्मक ग्रथो की रचना की और सभी क्षेत्रो मे अपार ख्याति अर्जित की। कुछ समय तक 'आनद विकटन' नामक साप्ताहिक पत्रिका के प्रधान सपादक रहे। बाद मे 'कल्कि' नाम से अपनी निजी पत्रिका आरभ की।

साहित्य जगत मे यह 'साहित्य सम्राट' कहलाते है। १९५४ ई० मे इन का स्वर्गवास हुआ।

ना० पार्थसारथी

इनका जन्म १९३२ ई० मे रामनाथपुरम जिले के निदिवकुडि नामक गाव मे हुआ। इन्होने अनेक उच्चतर माध्यमिक विद्यालयो मे तमिल शिक्षक के रूप मे काम किया है। इन्होने कुछ वर्ष 'कल्कि' नामक पत्रिका के कार्यालय मे भी काम किया। इस समय ये स्वय 'दीपम' नामक एक मासिक पत्रिका निकाल रहे है। श्री पार्थसारथी अनेक उपन्यास एव कहानिया लिखकर प्रसिद्धि प्राप्त

कर चुके हैं। इन्होने अपनी कहानियो मे मानव-मन का विश्लेषण एक नये दृष्टिकोण से किया है।

सोमु (मी० प० सोमसुदरम)

इनका जन्म १६२१ ई० मे तिरुनेलवेली नामक स्थान मे हुआ। इन्होंने तमिल के साथ-साथ हिंदी, सस्कृत आदि भाषाओं का भी अध्ययन किया है। साहित्य की विभिन्न विधाओ जैसे कविता, कहानी, निबध आदि के अतर्गत इन्होंने अनेक श्रेष्ठ कृतियो की रचना की है। इन्हे इनकी कृतियों पर 'आनद विकटन' पत्रिका के श्रेष्ठ कहानी प्रतियोगिता पुरस्कार प्राप्त हो चुके हैं। कुछ वर्ष तक 'कल्कि' पत्रिका के सपादक के रूप मे कार्य करते रहे। इन्होंने इग्लैंड जाकर प्रसारण कला मे विशेष प्रशिक्षण प्राप्त किया। श्री सोमु आकाशवाणी के एक प्रमुख कार्यक्रम सयोजक हैं।

हमारी पुस्तक-मालाएं

नेशनल बुक ट्रस्ट अब तक ४०० से कुछ ऊपर पुस्तकें विभिन्न भारतीय भाषाओ मे प्रकाशित कर चुका है। ट्रस्ट के वर्तमान प्रकाशन कार्यक्रम मे निम्नलिखित पुस्तक-मालाए सम्मिलित है

(१) **भारत—देश और लोग** इस माला का उद्देश्य सामान्य शिक्षित व्यक्ति को, देश के विभिन्न पहलुओ, भूगोल, कृषि, मानव-शास्त्र, भाषा, साहित्य, सस्कृति आदि का ज्ञान कराना है। सक्षेप मे, उद्देश्य यह है कि माला, सरल सुबोध शैली मे, एक प्रकार का विश्वकोश बन जाये।

(२) **राष्ट्रीय जीवन-चरित माला** इस माला की लगभग १०० पुस्तको मे भारत के उन महान स्त्री-पुरुषो की सक्षिप्त जीवनिया देने की योजना है जिनका धर्म और दर्शन, इतिहास और समाज-सेवा, साहित्य, सगीत और कला तथा विज्ञान आदि विभिन्न क्षेत्रो मे, समय-समय पर, आविर्भाव होता रहा है।

(३) **लोकोपयोगी विज्ञान-माला :** विज्ञान ने जो असाधारण विकास और उन्नति इस युग मे की है, उससे जन-साधारण को अवगत कराना तथा आज के युग मे विज्ञान का योग और महत्व दर्शाना इस माला का उद्देश्य है।

(४) **विश्व के महत्वपूर्ण ग्रथ** इस माला के अतर्गत जनसाधारण को उन विश्वविख्यात ग्र थो, जिन्होने विश्व चिंतन मे महत्वपूर्ण योग दिया है, के सरल अनुवाद भारत की भाषाओ मे उपलब्ध कराये जायेंगे।

(५) **आज का ससार** इस पुस्तक-माला मे जन-साधारण के लिए सरल सुबोध भाषा मे विश्व के विभिन्न देशो का इतिहास तथा प्रमुख तथ्य प्रस्तुत किये जायेंगे।

(६) **भारतीय लोक-सस्कृति** इस माला मे देश के कुछ खास प्रदेशो की लोक-सस्कृति पर पुस्तके प्रकाशित की जायेगी जो उनमे अतर्निहित राष्ट्रीय एकता को दर्शायेंगी।

(७) **तरुण-भारती** भारतीय युवा पीढी की आवश्यकता को दृष्टिगत रखते हुए इस माला का आरभ किया गया है। इसके अतर्गत वीरतापूर्ण प्रेरक

प्रसंगों और देश के इतिहास के गरिमामय पृष्ठों को प्रस्तुत किया जायेगा। आज की दुनिया में उपलब्ध वैज्ञानिक और तकनीकी जानकारी रोचक और सुबोध ढंग से प्रस्तुत की जायेगी।

राष्ट्रीय एकता में योगदान

(८) नेहरू बाल-पुस्तकालय इस पुस्तक-माला में बच्चों के लिए सहायक पाठ्य सामग्री प्रस्तुत की जायेगी, जिसका आधारभूत उद्देश्य होगा राष्ट्रीय एकता की भावना का बीजारोपण। इस पुस्तक-माला में सभी भारतीय भाषाओं में सौ पुस्तकें प्रकाशित की जायेंगी। सभी का आकार और मूल्य समान होगा।

(९) आदान-प्रदान इस परियोजना में प्रत्येक भारतीय भाषा की दस सर्वोत्कृष्ट पुस्तकें दूसरी सभी प्रमुख भारतीय भाषाओं में अनूदित की जायेंगी।

महत्वपूर्ण पूर्व-प्रकाशित और अब अनुपलब्ध पुस्तकों तथा विशेष महत्व की नयी पुस्तकों का प्रकाशन भी ट्रस्ट द्वारा किया जाता है।

इन सभी पुस्तक-मालाओं की पुस्तकें अपने-अपने क्षेत्र के अधिकारी विद्वानों द्वारा लिखी जाती हैं। और इस बात का भी ध्यान रखा जाता है कि छपाई-सफाई की दृष्टि से पुस्तकें अच्छे स्तर की हों और साथ ही उनका मूल्य कम से कम हो।

भारत—देश और लोग

प्रकाशित पुस्तकें

१	फूलों वाले पेड	एम० एस० रधावा	६ ५०
२	असमिया साहित्य	हेम बरुआ	६ ००
३	कुछ परिचित पेड	एच० सतापाऊ	४ ००
४	भारत के सर्प	पी० जे० देवरस	४.७५
५	धरती और मिट्टी	एस० पी० रायचौधरी	४ ५०
६	भारत के खनिज पदार्थ	मेहर डी० एन० वाडिया	४ ००
७	पालतू पशु	हरबस सिंह	४ २५
८	वन और वानिकी	के० पी० सागरीय	४.५०
९	राजस्थान का भूगोल	विनोदचद्र मिश्र	५ ५०
१०.	बगीचे के फूल	विष्णु स्वरूप	६ ००
११	जनसंख्या	श्रीनारायण अग्रवाल	३ ७५
१२	निकोबार द्वीप	कौशल कुमार माथुर	४ ५०
१३	हमारे परिचित पक्षी	सालिम अली और लईक फतेहअली	९ ००
१४	मणिपुरा	विश्वजीत चौधरी	५ ५०
१५	भारत का आर्थिक भूगोल	वी० एस० गणनाथन	४.५०
१६	औषधीय पौधे	सुधांशु कुमार जैन	५ ५०
१७	असम	सकलनकर्त्ता एस० बरकटकी	५.२५
१८	राजस्थान	डा० धर्मपाल	४ ५०

राष्ट्रीय जीवन-चरित माला

प्रकाशित पुस्तकें

१	गुरु गोविंद सिंह	गोपालसिंह	२ ००
२	गुरु नानक	गोपालसिंह	२ २५
३	कबीर	पारसनाथ तिवारी	२ ००
४	रहीम	समरबहादुर सिंह	१ ७५
५	महाराणा प्रताप	राजेंद्र शंकर भट्ट	१ ७५
६	अहिल्या बाई	हीरालाल शर्मा	१ ७५
७	त्यागराज	पी० साम्बमूर्ति	१ ७५
८	पंडित भातखंडे	एस० एन० रतनजनकर	१ ७५
९	पंडित विष्णु दिगंबर	वी० आर० आठवले	१ २५
१०	रानी लक्ष्मीबाई	वृन्दावनलाल वर्मा	१ ७५
११	सुब्रह्मण्य भारती	प्रेमा नंदकुमार	२ ७५
१२	हर्ष	वी० डी० गंगल	१ ५०
१३	चंद्रगुप्त मौर्य	लल्लनजी गोपाल	१ ७५
१४	काजी नजरुल इस्लाम	बसुधा चक्रवर्ती	१ ५०
१५	शंकराचार्य	टी० एम० पी० महादेवन	१ ७५
१६	समुद्रगुप्त	लल्लनजी गोपाल	१ २५
१७	मिर्ज़ा गालिब	मलिक राम	२ ००
१८	हरिनारायण आप्टे	महेश्वर ए० करंदीकर	१ ७५
१९	सूरदास	ब्रजेश्वर वर्मा	१ ७५
२०	स्वामी दयानंद	बी० के० सिंह	२ ५०
२१	रणजीत सिंह	आर० सूद	२ ००
२२	अमीर खुसरो	सैयद गुलाम समनानी	१ ७५